दा'वतुलअमीर

(अफ़गा नस्तिान के बादशाह के नाम निमंत्रण-पत्र)

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत

सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादियान

दा'वतुलअमीर

(अफ़गानिस्तान के बादशाह के नाम निमंत्रण-पत्र)

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि.

ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय

पुस्तक का नाम : **दा'वतुलअमीर**
(अफ़गानिस्तान के बादशाह के नाम निमंत्रण-पत्र)

लेखक : हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि.

अनुवादक एवं प्रूफ रीडर :
अन्सार अहमद बी.ए.बी.एड., मौलवी फ़ाज़िल

संस्करण : फरवरी 2012 ई.

संख्या : 1000

प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अन्जुमन अहमदिय्या क़ादियान - 143516
ज़िला गुरदासपुर, पंजाब, (भारत)

मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

ISBN : 978-81-7912-346-1

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चौदहवीं शताब्दी (हिज्री) में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार अवतरित हुए और जीवन-पर्यन्त इस्लाम की सेवा करते हुए इस्लाम के विरोधियों और शत्रुओं के सामने सीना ताने खड़े रहे तथा इस्लाम को संसार के समक्ष एक जीवित धर्म के रूप में स्थापित कर दिया । आप(अ) ने अपने जीवन में इस्लाम को पुनर्जीवन देने के उद्देश्य से लगभग अस्सी पुस्तकों की रचना की । आप(अ) ने ख़ुदा से ज्ञान पाकर एक महान सुपुत्र का शुभ समाचार प्रकाशित किया जो भिन्न-भिन्न विशेषताओं का समाहार होने के साथ-साथ उसमें एक यह विशेषता भी थी कि **''वह उलूमे ज़ाहिरी और बातिनी से पुर किया जाएगा ।''** (अर्थात् वह भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञानों से परिपूर्ण किया जाएगा) ।

अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद(अ) को मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद के रूप में वह बेटा-प्रदान किया जो बाद में जमाअत अहमदिया के दूसरे ख़लीफ़ा के रूप में आसीन हुए ।

सांसारिक विद्याओं की दृष्टि से आपकी शिक्षा दसवीं से अधिक न थी, परन्तु अल्पायु में ही ईश्वर-प्रदत्त कथित ज्ञानों द्वारा लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया ।

जब ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए तो आप पच्चीस वर्ष के नव युवक थे । लोग, विशेषकर ख़िलाफ़त के विरोधी आपको एक अल्पायु युवा समझते थे, परन्तु अल्लाह तआला ने आप से वे आश्चर्यजनक काम लिए कि दर्शक दांतों तले उंगली दबाने लगे ।

अल्लाह तआला ने आपको भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञानों से परिपूर्ण किया । आपको लेखन और भाषण की एक अदभुत प्रतिभा प्रदान की गई थी । आपने क़ुर्आन करीम की अनुपम और नितान्त सराहनीय व्याख्या ''तफ़्सीरे कबीर'' नाम से कई भागों में की, जो इस्लाम में एक नवयुग

को जन्म देती है । इसके अतिरिक्त आप ने नैतिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में पुस्तकों की रचना की । आप जब भाषण देने के लिए खड़े होते तो श्रोताओं पर सन्नाटा छा जाता, आपके मुख से निकले हुए शब्द लोगों के हृदयों में उतरते चले जाते, आप की जीभ से आध्यात्म ज्ञानों का सागर ठाठे मारता दिखाई देता था, लोगों को ख़ुदा की ओर दा'वत (निमंत्रण) देने की भावना इतनी प्रबल कि जिस का उदाहरण मिलना कठिन है, इसी भावना के अन्तर्गत आपने यह ख्याति प्राप्त पुस्तक ''दा'वतुल अमीर'' तत्कालीन अफ़गानिस्तान के बादशाह अमीर अमानुल्लाह खान को एक पत्र के रूप में लिखी । इस से पूर्व इसके ग्यारह संस्करण जिनमें प्रथम संस्करण फारसी भाषा में था, शेष दस संस्करण उर्दू भाषा में प्रकाशित हो चुके हैं। वर्तमान समय की आवश्यकता की दृष्टि से हिन्दी जानने वाले सज्जनों के पथ-प्रदर्शन के लिए इसका बारहवां संस्करण हिन्दी भाषा में प्रथम बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम की अनुमति से प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है । इसका हिन्दी भाषा में सरल और आसान अनुवाद श्री अन्सार अहमद साहिब बी.ए., बी.एड, मौलवी फ़ाज़िल ने किया है । ख़ुदा तआला उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे । इसी प्रकार पुस्तक की कम्पोज़िंग और सैटिंग में आदरणीय सय्यद ऐजाज़ अहमद साहिब आफ़ताब, प्रूफ़ रीडिंग और अनुवाद में विभिन्न रंग में सहयोग करने वाले आदरणीय सय्यद शहामत अली साहिब, मुहम्मद वसीम ख़ान साहिब, बिलाल अहमद शमीम साहिब, क़ुरैशी फ़ज़्लुल्लाह साहिब तथा नवीद अहमद फ़ज़्ल साहिब को अल्लाह तआला प्रतिफल प्रदान करे । आमीन !

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह इस के प्रकाशन को हर प्रकार से लाभप्रद करे और जमाअत के लोगों तथा अन्य सत्याभिलाषियों के मार्ग-दर्शन का कारण हो । आमीन

वस्सलाम

ख़ाकसार

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत, क़ादियान

ज़िला गुरदासपुर, पंजाब

विषय सूची

क्रमांक | **विषय** | **पृष्ठ**

क्रमांक	विषय	पृष्ठ

क्रमांक	विषय	पृष्ठ

✻✻✻

नोट :- पुस्तक में भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रमाणों को प्रस्तुत न करके वहां क्रमानुसार एक संख्या दी गई है, उस संख्या द्वारा पुस्तक के अन्त में ''प्रमाणों का उल्लेख'' शीर्षक के अन्तर्गत उस का प्रमाण देखा जा सकता है ।

अऊज़ुबिल्लाहे मिनश्शैतानिर्रजीम
बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम
नहमदोहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम
ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ
हुवन्नासिर

अल्लाह के अशक्त दास मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह तथा इमाम जमाअत अहमदिया की ओर से

मान्यवर जनाब अमीर अमानलुल्लाह ख़ान बहादुर बादशाह अफ़ग़निस्तान तथा अधीन देशों की ओर

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे व बरकातोहू

आदरणीय महोदय ! ये कुछ पृष्ठ जो आपकी सेवा में आप के श्रेष्ठ पद को दृष्टिगत रखते हुए तथा जन साधारण को लाभ पहुँचाने की नीयत से छपवाकर प्रेषित हैं । मैं आशा करता हूँ आप बावजूद फुरसत के अभाव के इनके अध्ययन का कष्ट स्वीकार करके मुझे कृतज्ञ करेंगे । तथा ख़ुदा के निकट सम्मान प्राप्त करेंगे ।

इस पत्र के लिखने के दो उद्देश्य हैं । (1) यह कि आप तक मैं उस आवाज़ को पहुँचा दूँ जो अल्लाह तआला की ओर से दुनिया को मुहम्मदियत के केन्द्र पर एकत्र करने के लिए उठाई गई है । (2) यह कि आप की छत्र छाया में **जमाअत अहमदिया** के कुछ सदस्य रहते हैं । उनकी आस्थाओं और परिस्थितियों से आपको सूचित करूँ ताकि यदि उन के संबंध में कोई बात आप की सेवा में प्रस्तुत हो तो आप अपने व्यक्तिगत ज्ञान से उसमें निर्णय करने योग्य हों ।

आदरणीय महोदय ! पूर्व इसके कि मैं कोई और बात कहूँ यह बता देना चाहता हूँ कि **जमाअत अहमदिया** किसी नए धर्म की पाबन्द नहीं है अपितु इस्लाम उस का धर्म है तथा उस से एक कदम इधर-उधर होना वह अवैध तथा दुर्भाग्य का कारण समझती है । उसका नया नाम उस के नए धर्म को सिद्ध नहीं करता है अपितु उसका केवल यह उद्देश्य है कि यह जमाअत उन अन्य लोगों से जो उसी की भाँति स्वयं को इस्लाम से सम्बद्ध करते हैं प्रमुख हैसियत में दुनिया के सामने प्रस्तुत हो सके ।

इस्लाम एक प्रिय नाम है जो ख़ुदा तआला ने स्वयं उम्मते मुहम्मदिया को प्रदान किया है तथा उस नाम को उस ने ऐसी श्रेष्ठता प्रदान की है कि उसके संबंध में वह पूर्व नबियों के द्वारा भविष्यवाणियाँ करता चला आया है । अत: अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है कि -

هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۬ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا[1]

(हुवा सम्माकुमुल मुस्लिमीना मिन क़ब्लो व फ़ी हाज़ा) अर्थात् उसने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है पहली किताबों में भी और इस किताब में भी । अत: जब हम पहली किताबों को देखते हैं तो 'यसइयाह' में यह भविष्यवाणी अब तक लिखी हुई पाते हैं कि -

"तू एक नए नाम से कहलाएगा जिसे ख़ुदावन्द का मुँह स्वयं रख देगा ।"[2]

अत: इस नाम से अधिक पवित्र नाम और कौन सा हो सकता है जिसे स्वयं ख़ुदा ने अपने बन्दों के लिए चुना तथा जिसे इतना सम्मान दिया कि पूर्व नबियों के मुख से उसके लिए भविष्यवाणियाँ कराईं । कौन है जो इस पवित्र नाम को छोड़ना पसन्द कर सकता है ? हम इस नाम को अपने प्राण से अधिक प्रिय समझते हैं तथा इस धर्म को अपने यथार्थ जीवन का कारण । परन्तु चूँकि इस युग में विभिन्न लोगों ने अपने-अपने विचारानुसार अपने विभिन्न नाम रख लिए हैं, इसलिए आवश्यक था स्वयं को उनसे प्रमुख करने के लिए कोई नाम अपनाया जाता । इस युग की दशा को ध्यान में रखते हुए उत्तम नाम **अहमदी** ही था, क्योंकि यह युग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लाए हुए संदेश को प्रचारित करने का युग है तथा अल्लाह तआला की प्रशंसा का युग है । अत: आप (स.अ.व.) की **अहमदियत** की विशेषता के प्रकटन के समय की दृष्टि से इस नाम से श्रेष्ठ कोई प्रमुखता वाला नाम इस समय नहीं हो सकता था ।

अत: हम लोग सच्चे हृदय से मुसलमान हैं तथा प्रत्येक ऐसी बात को जिस का स्वीकार करना एक सच्चे मुसलमान के लिए आवश्यक है स्वीकार करते हैं और प्रत्येक वह बात जिसका खंडन करना एक सच्चे मुसलमान के लिए आवश्यक है उसका खण्डन करते हैं । वह व्यक्ति जो बावजूद समस्त सच्चाइयों के सत्यापन के तथा अल्लाह तआला के समस्त आदेशों को स्वीकार करने के हम पर कुफ्र का आरोप लगाता है तथा

किसी नए धर्म का मानने वाला ठहराता है वह हम पर अन्याय करता है तथा ख़ुदा के यहाँ उत्तरदायी है । मनुष्य अपने मुख की बात पर पकड़ा जाता है न कि अपने हृदय के विचार पर । कौन कह सकता है कि किसी के हृदय में क्या है ? जो व्यक्ति किसी अन्य पर आरोप लगाता है कि जो कुछ यह मुख से कहता है वह उसके हृदय में नहीं है, वह ख़ुदा होने का दावा करता है क्योंकि हृदयों का जानने वाला केवल अल्लाह है, उसके अतिरिक्त कोई नहीं कह सकता कि किसी के हृदय में क्या है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अधिक आध्यात्म ज्ञान वाला कौन होगा । आप (स.अ.व.) अपने संबंध में फ़रमाते हैं -

اِنَّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ اِلَيَّ وَاِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ وَّلَعَلَّ بَعْضَكُمْ اَنْ يَّكُوْنَ اَلْحَنَ بِحُجَّتِهٖ
مِنْ بَعْضٍ فَاِنْ قَضَيْتُ لِاَحَدٍ مِّنْكُمْ بِشَيْءٍ مِّنْ حَقِّ اَخِيْهِ فَاِنَّمَا اَقْطَعُ لَهٗ
قِطْعَةً مِّنَ النَّارِ فَلَا يَاْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا[3]

(इन्नकुम तख़तसिमूना इलय्या व इन्नमा अना बशरुन व तअल्ला बअज़कुम अंय्यकूना अलहना बि हुज्जतिही मिन बअज़िन फ़इन क़जयतो लिअहदिन मिनकुम मिन हक़्क़े अख़ीहे फ़इन्नमा अक़्तओ लहू क़ितअतन मिनन्नारे फ़ला याख़ुज़ मिन्हो शयअन)

अर्थात् तुम में से कुछ लोग मेरे पास झगड़ा लेकर आते हैं और मैं भी आदमी हूँ । संभव है कि कोई आदमी तुम में से दूसरे की अपेक्षा उत्तम तौर पर झगड़ा करने वाला हो । अत: यदि मैं तुम में से किसी को उसके भाई का हक़ दिला दूँ तो मैं उसे आग का एक टुकड़ा काट कर देता हूँ, उसे चाहिए कि उसे न ले ।

इसी प्रकार हदीस में आता है कि उसामा बिन ज़ैद रज़ि को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक फ़ौज का अफसर बना कर भेजा, काफ़िरों में से एक व्यक्ति उन को मिला जिस पर उन्होंने आक्रमण किया । जब वह उसे क़त्ल करने लगे तो उस ने शहादत का कलिमा पढ़ लिया परन्तु इसके बावजूद उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह सूचना पहुँची तो आपने उन से पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया है । इस पर उसामा(रज़ि.) ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! वह भय से इस्लाम प्रकट करता था । आप ने

फ़रमाया - اَلَا شَقَقْتَ عَنْ قَلْبِهٖ[4] **(अला शक़क़्ता अन क़ल्बिही)** तूने उसका हृदय फाड़ कर क्यों न देखा अर्थात् तुझे क्या मालूम था कि उसने इस्लाम का प्रकटन भय से किया अथवा सच्चे हृदय से, क्योंकि हृदय का हाल मनुष्य से गुप्त होता है ।

अतः फ़त्वा मुख की बात पर लगाया जाता है न कि हृदय के विचारों पर, क्योंकि हृदय के विचारों से केवल अल्लाह तआला अवगत होता है और जो व्यक्ति किसी के हृदय के विचारों पर फ़त्वा लगाता है वह झूठा है और अल्लाह तआला के निकट गिरफ़्त योग्य ।

अतः हम लोग अर्थात् **जमाअत अहमदिया** के सदस्य जब कि स्वयं को मुसलमान कहते हैं तो किसी का अधिकार नहीं कि हम पर वह यह फ़त्वा लगाए कि इनका इस्लाम केवल दिखावे का है अन्यथा ये हृदय से इस्लाम के इन्कारी हैं या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नहीं मानते तथा कोई नया कलिमा पढ़ते हैं या इन्होंने नया क़िब्ला* बना रखा है । यदि हमारे संबंध में इस प्रकार की बातें कहना उचित हैं तो हम पर इस प्रकार के आरोप लगाने वालों के संबंध में हम भी कह सकते हैं कि वे प्रत्यक्ष में इस्लाम का दावा करते हैं तथा अपने घरों में जाकर ये लोग हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को और इस्लाम को नाऊज़ुबिल्लाह गालियाँ देते हैं, परन्तु हम लोग किसी के विरोध के कारण सत्य को नहीं त्याग सकते । हम किसी पर फ़त्वा इस आधार पर नहीं लगाते कि यह प्रकट कुछ और करता है तथा इस के हृदय में कुछ और है अपितु हम शरीअत के आदेश के अन्तर्गत इसी बात पर बहस करते हैं जिसे मनुष्य स्वयं प्रकट करता है ।

तत्पश्चात मैं आपके समक्ष अपनी जमाअत की आस्थाओं को प्रस्तुत करता हूँ ताकि आप विचार कर सकें कि इन आस्थाओं में कौन सी बात इस्लाम के विरुद्ध है ।

1. हम लोग विश्वास रखते हैं कि ख़ुदा तआला विद्यमान है तथा उसके अस्तित्व पर ईमान लाना सब से बड़े सत्य का इक़रार करना है न कि भ्रम और संभावना का अनुसरण ।

---

* जो मक्का में है जिसकी ओर मुख करके समस्त विश्व के मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं - अनुवादक ।

2. हम विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला एक है, उसका कोई भागीदार नहीं, न पृथ्वी में न आकाश में । उसके अतिरिक्त सब कुछ सृष्टि है, हर पल उस की सहायता और सहारे की मुहताज है, न उसका कोई बेटा है, न बेटी, न बाप, न माँ, न पत्नी, न भाई । वह अपने अद्वैतवाद और एकत्व में अकेला है ।

3. हम विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला का अस्तित्व पवित्र है तथा समस्त दोषों से पावन है और समस्त विशेषताओं का संकलन है । कोई दोष नहीं जो उस में पाया जाता हो और कोई विशेषता नहीं जो उसमें न पाई जाती हो । उसकी क़ुदरत अनन्त है, उसका ज्ञान असीमित, उस ने प्रत्येक वस्तु को परिधि में लिया हुआ है तथा कोई वस्तु नहीं जो उसको परिधि में कर सके । वह प्रथम है वह आख़िर है, वह बाह्य है वह आन्तरिक है, वह स्रष्टा है सम्पूर्ण विश्व का और स्वामी है सम्पूर्ण सृष्टियों का, उसका अधिकार न कभी पहले असत्य हुआ न अब असत्य है न भविष्य में असत्य होगा, वह जीवित है उस पर कभी मृत्यु नहीं, वह स्थापित है उस पर कभी पतन नहीं, उसके समस्त कार्य इरादे से होते हैं न कि विवशता पूर्वक, वह अब भी संसार पर शासन कर रहा है जिस प्रकार वह पहले करता था, उसकी विशेषताएँ किसी समय भी स्थगित नहीं होतीं, वह हर समय अपनी क़ुदरत का प्रदर्शन कर रहा है ।

4. हम विश्वास रखते हैं कि फ़रिश्ते अल्लाह तआला की एक सृष्टि (मख़लूक़) हैं तथा يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ5 (अर्थात् वे वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है) के चरितार्थ हैं, उसकी पूर्ण नीति ने उन्हें विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए उत्पन्न किया है, वे यथार्थ में विद्यमान हैं । उनकी चर्चा रुपक के तौर पर नहीं है तथा वे ख़ुदा तआला के उसी प्रकार मुहताज हैं जिस प्रकार कि मनुष्य या अन्य सृष्टियाँ । अल्लाहतआला अपनी क़ुदरत के प्रकटन के लिए उन का मुहताज नहीं । वह यदि चाहता तो उन्हें उत्पन्न किए बिना अपनी इच्छा प्रकट करता, परन्तु उसकी पूर्ण नीति ने उस सृष्टि को उत्पन्न करना चाहा और वह उत्पन्न हो गई । जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश द्वारा मानवीय आँखों को प्रकाशमान करने और रोटी से उसका पेट भरने से अल्लाह तआला सूर्य और रोटी का मुहताज नहीं हो जाता । इसी प्रकार फ़रिश्तों के माध्यम

से अपने कुछ इरादों के प्रकटन में वह फ़रिश्तों का मुहताज नहीं हो जाता ।

5. हम विश्वास रखते हैं कि ख़ुदा अपने बन्दों से कलाम (बात) करता है तथा उन पर अपनी इच्छा प्रकट करता है । यह कलाम (वाणी) विशेष शब्दों में उतरता है । इसके उतरने में बन्दे का कोई हस्तक्षेप नहीं होता न उसका मतलब बन्दे का सोचा हुआ होता है, न उसके शब्द बन्दे के प्रस्तावित होते हैं । अर्थ भी अल्लाह तआला की ओर से आते हैं तथा शब्द भी उसी की ओर से । वही कलाम मनुष्य का वास्तविक आहार है तथा उसी से मनुष्य जीवित रहता है और उसी के माध्यम से उसका अल्लाह तआला से सम्बन्ध उत्पन्न होता है । वह कलाम अपनी शक्ति और शान में अनुपम होता है, उसका उदाहरण कोई बन्दा नहीं ला सकता, वह ज्ञानों के असंख्य ख़ज़ाने अपने साथ लाता है और एक खान की भाँति होता है, उसे जितना खोदो उसमें से उतने ही बहुमूल्य रत्न निकलते चले आते हैं अपितु खानों से भी बढ़ कर क्योंकि उनके भण्डार समाप्त हो जाते हैं परन्तु उस कलाम के आध्यात्म ज्ञान समाप्त नहीं होते। यह कलाम एक समुद्र की भाँति होता है जिसकी सतह पर अम्बर तैरता फिरता है और जिसकी तह पर रत्न बिछे होते हैं । जो उसके प्रत्यक्ष पर दृष्टि डालता है उस की सुगंध से मस्तिष्क को सुगंध में बसा हुआ पाता है और जो उसके अन्दर डुबकी लगाता है, ज्ञान और इरफ़ान के धन से समृद्ध हो जाता है ।

यह कलाम कई प्रकार का होता है । कभी आदेशों और शरीअतों (धार्मिक विधानों) को शामिल किए होता है, कभी सदुपदेशों और प्रवचनों को, कभी उसके द्वारा परोक्ष-ज्ञान के द्वार खोले जाते हैं, कभी आध्यात्मिक ज्ञान के गड़े हुए ख़ज़ाने प्रकट किए जाते हैं, कभी इस के द्वारा अल्लाह तआला अपने बन्दे पर अपनी प्रसन्नता का प्रकटन करता है, कभी अपनी अप्रसन्नता का ज्ञान देता है, कभी प्रेम और अनुराग से उसके हृदय को प्रसन्न करता है, कभी डांट-डपट करके उसे उसके कर्तव्य की ओर ध्यान दिलाता है, कभी श्रेष्ठ सदाचारों के सूक्ष्म रहस्य प्रकट करता है, कभी गुप्त बुराइयों का ज्ञान देता है । अत: हम ईमान रखते हैं कि ख़ुदा अपने बन्दों से कलाम करता है तथा वह कलाम विभिन्न परिस्थितियों

और विभिन्न मनुष्यों के अनुसार विभिन्न स्तरों का होता है और विभिन्न रूपों में उतरता है और समस्त कलामों से जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों से किए हैं, क़ुर्आन करीम श्रेष्ठ और पूर्णतम है । इसमें जो शरीअत उतरी है और जो पथ-प्रदर्शन किया गया है वह सदा के लिए है । कोई भविष्य का कलाम उसे निरस्त नहीं करेगा ।

6. इसी प्रकार हम विश्वास रखते हैं कि जब कभी भी दुनिया अंधकार से भर गई है और लोग पापों और दुराचारों में ग्रसित हो गए हैं तथा आकाशीय सहायता के अभाव में शैतान के पंजे से मुक्ति पाना उनके लिए कठिन हो गया है तो अल्लाह तआला अपनी पूर्ण सहानुभूति और असीम दया के कारण अपने नेक, पवित्र और निश्छल बन्दों में से कुछ को चुन कर दुनिया के पथ-प्रदर्शन के लिए भेजता रहा है । जैसा कि वह फ़रमाता है - وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ[6] **(व इम्मिन उम्मतिन इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर)** अर्थात् कोई जाति नहीं है जिसमें हमारी ओर से नबी न आ चुका हो और ये बन्दे पवित्र कार्य और शुद्ध आचरण से लोगों के लिए पथ प्रदर्शक बनते रहे हैं तथा उनके द्वारा वह अपनी इच्छा से दुनिया को सूचित करता रहा है । जिन लोगों ने उन से मुख फेरा वे मौत के सुपुर्द किए गए तथा जिन्होंने उन से प्रेम किया वे ख़ुदा के प्रिय हो गए तथा उनके लिए बरकतों के द्वार खोले गए तथा उन पर अल्लाह तआला की कृपाएँ उतरीं और अपने बाद आने वालों के लिए वे सरदार नियुक्त किए गए और दोनों संसारों की अच्छाई उनके लिए प्रारब्ध की गई ।

हम यह भी विश्वास रखते हैं कि ये ख़ुदा के भेजे हुए जो दुनियाँ को बुराई के अन्धकार से निकाल कर भलाई के प्रकाश की ओर लाते रहे हैं विभिन्न श्रेणियों और विभिन्न पदों पर आसीन थे तथा इन सब के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे, जिनको अल्लाह तआला ने आदम की समस्त सन्तान का सरदार ठहराया और **काफ़्फ़तुन लिन्नास** करके भेजा, जिन पर उसने सम्पूर्ण ज्ञान प्रकट किए और जिन की उसने इस रोब और शान से सहायता की कि बड़े-बड़े अत्याचारी बादशाह उनके नाम को सुनकर कांप उठते थे, जिनके लिए उसने सम्पूर्ण पृथ्वी को मस्जिद बना दिया यहाँ तक कि पृथ्वी के कोने-कोने पर उनकी उम्मत ने उस ख़ुदा के लिए जो एक है उसका कोई

भागीदार नहीं सज्दह किया तथा पृथ्वी न्याय और इन्साफ़ से भर गई बाद इसके कि वह अत्याचार और अन्याय से भरी हुई थी । हम विश्वास रखते हैं कि यदि पूर्व-कालीन नबी भी इस कामिल नबी के समय में होते तो उन्हें उसके अनुसरण के अतिरिक्त कोई चारा न होता जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ط 7

(व इज़ अख़ज़ल्लाहो मीसाक़न्नबिय्यीना लमा आतयतोकुम मिन किताबिन व हिकमतिन सुम्मा जाआकुम रसूलुन मुसद्दिक़ुन लिमा माअकुम ल तोमिनुन्ना बिही व लतनसुरुन्नहू) और जैसा कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि -

لَوْ كَانَ مُوسٰى وَعِيسٰى حَيَّيْنِ لَمَا وَسِعَهُمَا إِلَّا اتِّبَاعِيْ 8

(लौ काना मूसा व ईसा हय्ययने लमा वसिआहुमा इल्लत्तिबाई) यदि मूसा और ईसा जीवित होते तो उन्हें भी मेरे अनुसरण के अतिरिक्त कोई चारा न था ।

7. हम यह भी विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की दुआओं को सुनता है तथा उन की कठिनाइयों को दूर करता है । वह एक जीवित ख़ुदा है जिस के जीवन को मनुष्य प्रत्येक युग में और हर समय महसूस करता है । उसका उदाहरण उस सीढ़ी का नहीं जिसे कुआँ बनाने वाला बनाता है और जब वह कुआँ पूर्ण हो जाता है तो सीढ़ी को तोड़ डालता है कि अब किसी काम की नहीं रही यह कार्य में बाधा डालेगी अपितु उस का उदाहरण उस प्रकाश का है कि जिस के बिना सब कुछ अन्धकार है और उस आत्मा का है जिसके बिना चारों ओर मौत ही मौत है । उसके अस्तित्व को बन्दों से पृथक कर दो तो वे एक निष्प्राण शरीर रह जाते हैं । यह नहीं है कि उसने कभी दुनिया को उत्पन्न किया और अब चुप होकर बैठ गया है अपितु वह हर समय अपने बन्दों से सम्बन्ध रखता है तथा उन की विनम्रता और विनीतता पर ध्यान देता है और यदि वे उसे भूल जाएँ तो वह स्वयं अपना अस्तित्व उन्हें स्मरण कराता है तथा अपने विशेष रसूलों के द्वारा

उन को बताता है कि-

اِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ وَلۡیُؤۡمِنُوۡا بِیۡ لَعَلَّہُمۡ یَرۡشُدُوۡنَ 9

(इन्नी क़रीबुन उजीबो दावत्तदाए इज़ा दआने फ़लयस्तजीबू ली वल यूमिनो बी लअल्लहुम यरशुदून) मैं निकट हूँ । प्रत्येक पुकारने वाले की आवाज़ को जब वह मुझे पुकारता है सुनता हूँ । अत: चाहिए कि वे मेरी बातों को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि पथ-प्रदर्शन प्राप्त हो ।

८. हम यह भी विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला अपने अत्यन्त विशेष प्रारब्ध (तक़दीर) को दुनियाँ में जारी करता है । उसकी ओर से केवल यही प्रकृति का नियम जारी नहीं जो स्वाभाविक क़ानून कहलाता है अपितु उसके अतिरिक्त उसकी एक विशेष तक़दीर भी जारी है जिसके द्वारा वह अपनी शक्ति और प्रताप का प्रकटन करता है तथा अपनी क़ुदरत को प्रकट करता है और अपनी क़ुदरत का परिचय देता है। यह वही क़ुदरत है जिस का कुछ मूर्ख अपनी अज्ञानता के कारण इन्कार कर देते हैं और सिवाए स्वाभाविक कानून के और किसी क़ानून के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते तथा इसे प्रकृति का नियम कहते हैं। यद्यपि वह स्वाभाविक नियम तो कहला सकता है परन्तु प्रकृति का नियम नहीं कहला सकता, क्योंकि इस के अतिरिक्त उसके और भी नियम हैं जिन के द्वारा वह अपने प्रियजनों की सहायता करता है तथा उनके शत्रुओं को तबाह करता है । भला यदि ऐसे कोई नियम विद्यमान न होते तो किस प्रकार संभव था कि निर्बल और कमज़ोर मूसा फ़िरऔन जैसे अत्याचारी बादशाह पर विजयी हो जाता और यह अपने असहाय होने के बावजूद बुलन्दी पा जाता और वह अपनी शक्ति के बावजूद बरबाद हो जाता। फिर यदि कोई और नियम नहीं तो किस प्रकार हो सकता था कि समस्त अरब मिलकर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तबाही के लिए तैयार होता परन्तु अल्लाह तआला आपको प्रत्येक मैदान में विजयी करता तथा शत्रु के हर आक्रमण से सुरक्षित रखता और अन्त में दस हज़ार क़ुद्दूसियों के साथ

आप उस पृथ्वी पर चढ़ आते, जिसमें से केवल एक बलिदान करने वाले के साथ आपको निकलना पड़ा था । क्या स्वाभाविक नियम ऐसी घटनाएँ प्रस्तुत कर सकता है, कदापि नहीं । वह नियम तो हमें यही बताता है कि छोटी शक्ति श्रेष्ठ शक्ति के मुकाबले पर तोड़ दी जाती है तथा प्रत्येक निर्बल सबल के हाथों मारा जाता है ।

9. हम इस बात पर भी विश्वास रखते हैं कि मृत्योपरांत मनुष्य फिर उठाया जाएगा तथा उस के कर्मों का उससे हिसाब लिया जाएगा । जो शुभ कार्य करने वाला होगा उस से शुभ व्यवहार किया जाएगा और जो अल्लाह तआला के आदेशों को तोड़ने वाला होगा उसे कठोर दण्ड दिया जाएगा । कोई युक्ति नहीं जो मनुष्य को इस उठाने से बचा सके, चाहे उसके शरीर को वायु के पक्षी या जंगल के दरिन्दे (हिसंक जानवर) खा जाएँ, चाहे पृथ्वी के कीड़े उसके कण-कण को पृथक कर दें फिर उन्हें अन्य शक्लों में परिवर्तित कर दें, चाहे उसकी हड्डियाँ तक जला दी जाएँ, वह फिर भी उठाया जाएगा और अपने स्रष्टा के समक्ष हिसाब देगा क्योंकि उसकी पूर्ण क़ुदरत इस बात की मुहताज नहीं कि उसका पहला शरीर ही विद्यमान हो तब ही वह उसे उत्पन्न कर सकता है अपितु मूल बात यह है कि वह उसके सूक्ष्म से सूक्ष्म कण या रूह के सूक्ष्म भाग से भी फिर उसे उत्पन्न कर सकता है और होगा भी इसी प्रकार शरीर मिट्टी हो जाते हैं परन्तु उनके सूक्ष्म कण नष्ट नहीं होते और न वह आत्मा जो मानव शरीर में होती है, ख़ुदा की आज्ञा के बिना नष्ट हो सकती है ।

10. हम विश्वास रखते हैं कि अल्लाह तआला के इन्कारी और उसके धर्म के विरोधी यदि वह उनको अपनी पूर्ण कृपा से क्षमा न कर दे एक ऐसे स्थान पर रखे जाएँगे जिसे नरक कहते हैं जिसमें अग्नि और कठोर सर्दी का प्रकोप होगा, जिसका उद्देश्य मात्र कष्ट देना न होगा अपितु उन में उन लोगों के भविष्य का सुधार दृष्टिगत होगा, उस स्थान पर रोने, चीखने, दांत पीसने के अतिरिक्त उन के लिए कुछ न होगा, यहाँ तक कि वह दिन आ जाए जब अल्लाह तआला की दया जो प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखती है उनको ढ़क ले और - يَأْتِيْ عَلٰى جَهَنَّمَ زَمَانٌ لَيْسَ فِيْهَا اَحَدٌ وَ نَسِيْمُ الصَّبَا تُحَرِّكُ اَبْوَابَهَا[10] **(याती अला जहन्नमा ज़मानुन लयसा फ़ीहा अहदुन व नसीमुस्सबा तुहर्रिको अबवाबहा)** (कि नरक पर एक ऐसा समय भी आएगा कि उसमें

कोई भी नहीं रहेगा तथा प्रातःकाल की शीतल वायु उसके द्वारों को खटखटा रही होगी (अनुवादक) । का वायदा पूर्ण हो जाए ।

11. हम यह भी विश्वास रखते हैं कि वे लोग जो अल्लाह तआला के नबियों और उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों पर ईमान लाने वाले हैं तथा उसके आदेशों पर तन-मन से ईमान लाते हैं और विनम्रता और विनीतता के मार्गों पर चलते हैं, बड़े होकर छोटे बनते हैं, धनवान होकर निर्धनों की भाँति जीवन व्यतीत करते हैं, अल्लाह की सृष्टि की सेवा करते हैं, अपने आराम पर लोगों के आराम को प्रमुखता देते हैं, अत्याचार, अन्याय और विश्वासघात से बचते हैं तथा सदाचारों को अपनाते हैं, दुराचारों से दूर रहते हैं । ये लोग एक ऐसे स्थान पर रखे जाएँगे जिसे स्वर्ग कहते हैं जिसमें शान्ति और संतोष के अतिरिक्त कष्ट और संकट का नामो-निशान तक न होगा, मनुष्य को ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त होगी तथा उसका दर्शन उसे प्राप्त होगा, वह उसकी दया की चादर में लपेटा जाएगा उसे ऐसा सानिध्य प्राप्त होगा कि जैसे उसका दर्पण हो जाएगा तथा उसमें ख़ुदाई विशेषताएँ पूर्ण रूप से प्रकट होंगी, उसकी समस्त तुच्छ इच्छाएँ समाप्त हो जाएँगी, उसकी इच्छा ख़ुदा की इच्छा हो जाएगी और वह अनश्वर जीवन प्राप्त करके ख़ुदा का द्योतक हो जाएगा ।

ये हमारी आस्थाएँ हैं । इनके अतिरिक्त हम नहीं जानते कि इस्लाम में सम्मिलित करने वाली आस्थाएँ क्या हैं । इस्लाम के समस्त इमाम इन्हीं बातों को इस्लाम की आस्थाएँ ठहराते चले आए हैं और इस मामले में हम उनसे पूर्ण रूप से सहमत हैं ।

अन्य लोगों से हमारा मतभेद

कदाचित मान्यवर आश्चर्य चकित हों कि जब हम लोग समस्त इस्लामी आस्थाओं को मानते हैं तो फिर हम में और अन्य लोगों में क्या मतभेद है तथा कुछ विद्वानों को हमारे विरुद्ध इतनी उत्तेजना और द्वेष क्यों है और वे क्यों हम पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाते हैं ? अतः हे वैभवशाली अमीर ! अल्लाह तआला आप को संसार की बुराइयों से सुरक्षित रखे तथा आप के लिए अपनी अनुकम्पा के द्वार खोल दे । अब मैं उन आरोपों का

वर्णन करता हूँ जो हम पर किए जाते हैं और जिनके कारण हमें इस्लाम से बाहर बताया जाता है ।

1. हमारे विरोधियों का सब से पहला आरोप तो हम पर यह है कि हम हज़रत **मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम** को मृत्यु-प्राप्त मानते हैं और कहा जाता है कि इस प्रकार हम हज़रत मसीह का अनादर करते हैं, क़ुर्आन करीम को झुठलाते हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फैसले का खण्डन करते हैं, परन्तु यद्यपि कि यह बात तो बिल्कुल सत्य है कि हम हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम को मृत्यु-प्राप्त मानते हैं परन्तु यह उचित नहीं कि हम इस प्रकार मसीह अलैहिस्सलाम का अनादर करते हैं और क़ुर्आन करीम को झुठलाते हैं तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़ैसले का खण्डन करते हैं, क्योंकि हम जितना विचार करते हैं हमें यही ज्ञात होता है कि हम पर ये आरोप मसीह अलैहिस्सलाम को स्वर्गवासी मानने से आरोपित नहीं होते अपितु इसके विपरीत यदि हम उनको जीवित मानें तब ये आरोप हम पर लग सकते हैं ।

हम लोग मुसलमान हैं और मुसलमान होने की दृष्टि से हमारा सर्वप्रथम विचार अल्लाह तआला की श्रेष्ठता और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के सम्मान की ओर जाता है और यद्यपि हम समस्त रसूलों को मानते हैं, परन्तु हमारा प्रेम और स्वाभिमान स्वाभाविक तौर पर उस नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के लिए अधिक जोश में आता है जिसने हमारे लिए स्वयं को कष्ट में डाला और हमारे भारों को हल्का करने के लिए अपने सर पर भार उठाया, हमें मरता हुआ देख कर उसने इतना शोक किया कि जैसे स्वयं अपने ऊपर मौत ले ली, हमें सुख पहुँचाने के लिए हर प्रकार के सुखों का परित्याग किया, हमें ऊपर उठाने के लिए स्वयं नीचे झुका, उसके दिन हमारी भलाई की चिन्ता में व्यतीत हुए, उसकी रातें हमारे लिए जागते हुए कटीं यहाँ तक कि खड़े-खड़े उसके पैर सूज जाते और स्वयं निष्पाप होते हुए हमारे पापों को दूर करने के लिए तथा हमें प्रकोप से बचाने के लिए उसने इतना रुदन किया कि उसकी सज्दहगाह (सज्दह करने का स्थान) भीग गई तथा उस की आर्द्रता हमारे लिए इतनी बढ़ गई कि उसके सीने की आवाज़ उबलती हुई हांडी से भी अधिक बढ़ गई ।

उसने ख़ुदा तआला की करुणा को हमारे लिए खींचा और उसकी प्रसन्नता को हमारे लिए आत्मसात किया, उसकी अनुकम्पा की चादर हमें उढ़ाई तथा उसकी कृपा का लिबास हमारे कन्धों पर डाल दिया और उसके मिलन के मार्ग हमारे लिए तलाश किए और उससे एकता का उपाय हमारे लिए खोज निकाला तथा हमारे लिए वे सुगमताएँ उपलब्ध कराईं कि उस से पूर्व किसी नबी ने अपनी उम्मत के लिए उपलब्ध नहीं कराई थीं।

हमें कुफ़्र के सम्बोधन अत्यन्त भले मालूम होते हैं इसकी अपेक्षा कि हम अपने स्रष्टा और प्रतिपालक, अपने जीवनदाता, अपने सुरक्षक, अन्नदाता, अपने ज्ञानदाता, अपने पथ-प्रदर्शक ख़ुदा के समान पद मसीह नासिरी को दें और यह सोचें कि जिस प्रकार वह आकाशों पर बिना खाने-पीने के जीवित है मसीह नासिरी भी मानवीय आवश्यकताएँ पूर्ण किए बिना आकाश पर जीवित बैठा है । हम मसीह अलैहिस्सलाम का आदर करते हैं परन्तु केवल इसलिए कि वह हमारे ख़ुदा का नबी है, हम उस से प्रेम करते हैं परन्तु केवल इसलिए कि ख़ुदा से उसे प्रेम था। उस से हमारा सारा सम्बन्ध ख़ुदा के माध्यम से है फिर किस प्रकार हो सकता है कि उस के लिए हम अपने ख़ुदा का अपमान करें तथा उसके उपकारों को भुला दें और मसीही पादरियों की जो इस्लाम और क़ुर्आन के शत्रु हैं सहायता करें तथा उनको यह कहने का अवसर प्रदान करें कि देखो वह जो जीवित आकाश पर बैठा है क्या वह ख़ुदा नहीं । यदि वह मनुष्य होता तो क्यों शेष मनुष्यों की भाँति मर न जाता । हम अपने मुख से किस प्रकार ख़ुदा के अद्वैतवाद पर आक्रमण करें तथा अपने हाथ से क्योंकर उसके धर्म पर तलवार रख दें । इस युग के मौलवी और विद्वान हमें जो चाहें कहें और जिस प्रकार चाहें हम से व्यवहार करें और करवाएँ, चाहे हमें फांसी दें, चाहे पत्थरों से मार डालें, हम से तो मसीह के लिए ख़ुदा नहीं छोड़ा जा सकता । हम उस क्षण से मृत्यु को हज़ार श्रेणी उत्तम समझते हैं जब हमारी जीभें यह कुफ़्र का वाक्य कहें कि हमारे ख़ुदा के साथ वह भी जीवित बैठे हैं जिसे मसीही ख़ुदा का बेटा कह कर हमेशा क़ायम रहने वाले ख़ुदा का अपमान करते हैं । यदि हमें ज्ञान न होता तो निसन्देह हम ऐसी बात

कह सकते थे, परन्तु जब ख़ुदा के भेजे हुए ने हमारी आँखें खोल दीं और उसका अद्वैतवाद, उसका प्रताप, उसका वैभव, उसकी महानता, उसकी क़ुदरत के पद को हमारे लिए प्रकट कर दिया तो अब चाहे कुछ भी हो हम अल्लाह तआला को त्याग कर किसी मनुष्य को नहीं अपना सकते और यदि हम ऐसा करें तो हम नहीं जानते कि हमारा ठिकाना कहाँ होगा, क्योंकि सब सम्मान तथा सब श्रेणियाँ उसी की ओर से हैं । हमें जब स्पष्ट दिखाई देता है कि मसीह के जीवित रहने में हमारे ख़ुदा का अपमान है तो हम इस आस्था को क्योंकर उचित स्वीकार कर लें । यद्यपि यह बात हमारी समझ से बाहर है कि क्यों मसीह की मृत्यु मानने से उसका अपमान हो जाता है। जब उस से श्रेष्ठ श्रेणी के नबी मृत्यु को प्राप्त हो गए, उनका अपमान नहीं हुआ तो मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो जाने से उनका अनादर किस प्रकार हो जाएगा, परन्तु हम कहते हैं कि यदि किसी समय हमें इस बात से चारा न हो कि ख़ुदा तआला का अपमान करें या मसीह अलैहिस्सलाम का, तो हम प्रसन्नतापूर्वक इस आस्था को स्वीकार कर लेंगे जिस से मसीह अलैहिस्सलाम का अपमान होता हो, परन्तु हम उसको कदापि स्वीकार नहीं करेंगे जिसमें ख़ुदा तआला का अपमान होता हो और हम विश्वास रखते हैं कि मसीह अलैहिस्सलाम भी जो अल्लाह तआला के प्रेमियों में से थे कभी सहन न करेंगे कि उनका सम्मान तो स्थापित किया जाए और अल्लाह तआला के अद्वैतवाद को आघात पहुँचाया जाए ।

لَنۡ یَّسۡتَنۡکِفَ الۡمَسِیۡحُ اَنۡ یَّکُوۡنَ عَبۡدًا لِّلّٰہِ وَلَا الۡمَلٰٓئِکَۃُ الۡمُقَرَّبُوۡنَ 11

(लंय्यस्तनकिफ़ल मसीहा अंय्यकूना अब्दन लिल्लाहे वलल मलाइकतुल मुक़र्रबून) हम ख़ुदा के कलाम को कहाँ ले जाएँ और जिस मुख से -

وَکُنۡتُ عَلَیۡہِمۡ شَہِیۡدًا مَّا دُمۡتُ فِیۡہِمۡ فَلَمَّا تَوَفَّیۡتَنِیۡ کُنۡتَ اَنۡتَ الرَّقِیۡبَ
عَلَیۡہِمۡ وَاَنۡتَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ شَہِیۡدٌ 12

(व कुन्तो अलयहिम शहीदन मा दुमतो फ़ीहिम फ़लम्मा तवफ़्फ़यतनी कुन्ता अन्तर्रक़ीबा अलयहिम व अन्ता अला कुल्ले शयइन शहीद) की आयत पढ़ें जिस में अल्लाह तआला ने स्वयं हज़रत मसीह

नासिरी अलैहिस्सलाम के मुख से वर्णन करवाया है कि मसीही लोग हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के उपरांत बिगड़े हैं, उनके जीवन में वे अपने सच्चे धर्म पर क़ायम रहे हैं, उसी मुख से यह कहें कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जीवित आकाश पर बैठे हैं । हम ख़ुदा तआला के कलाम -

يٰعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ[13]

(या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका व राफ़िओका इलय्या व मुतहिहरोका मिनल्लज़ीना कफ़रू व जाइलुज़्ज़ीनत्तवऊका फौक़ल्लज़ीना कफ़रू इला यौमिल क़ियामते) को किस प्रकार अनदेखा कर दें, जिस से ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का रफ़आ उनकी मृत्यु के उपरान्त हुआ । निसन्देह वे जो ख़ुदा तआला से अधिक सुगम और सरल भाषा जानने के दावेदार हैं कह दें कि उसने **मुतवफ़्फ़ीका** को जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु की सूचना देता है पहले वर्णन कर दिया है। वास्तव में **राफ़िओका** पहले चाहिए था, परन्तु हम तो अल्लाह तआला के कलाम को समस्त कलामों से अधिक सुगम जानते हैं और हर गलती से पवित्र समझते हैं । हम सृष्टि (मख़लूक) होकर अपने स्रष्टा की गलतियाँ क्योंकर निकालें और मूर्ख होकर ज्ञानी को पाठ क्योंकर पढ़ाएँ । हम से कहा जाता है कि तुम यह कहो कि ख़ुदा के कलाम में गलती हो गई परन्तु यह न कहो कि स्वयं हम से ख़ुदा का कलाम समझने में गलती हो गई, परन्तु हम इस परामर्श को किस प्रकार स्वीकार कर लें कि इसमें हमें स्पष्ट बरबादी दिखाई देती है । आँखें होते हुए हम गड्ढे में किस प्रकार गिर जाएँ और हाथ होते हुए हम विष के प्याले को अपने मुख से क्यों न हटाएँ ।

ख़ुदा तआला के पश्चात् हमें **ख़ातमुलअंबिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** से प्रेम है और क्या इस दृष्टि से कि ख़ुदा तआला ने उन को समस्त नबियों से श्रेष्ठ श्रेणी प्रदान की है और क्या इस दृष्टि से कि हमें जो कुछ प्राप्त हुआ है और जो कुछ आपने हमारे लिए किया है उसका दसवां भाग भी और किसी मनुष्य ने चाहे

नबी हो या नबी न हो, हमारे लिए नहीं किया । हम आप से अधिक किसी अन्य व्यक्ति को सम्मान नहीं दे सकते । हमारे लिए यह बात समझना बिल्कुल असंभव है कि हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम को जीवित आकाश पर चढ़ा दें और **मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** को पृथ्वी के नीचे दफ़्न किया हुआ समझें और फिर साथ ही यह भी विश्वास रखें कि आप (स.अ.व.) मसीह(अ) से श्रेष्ठतम भी हैं । किस प्रकार संभव है कि वह जिसे अल्लाह तआला ने तनिक सा ख़तरा देख कर आकाश पर उठा लिया निम्न श्रेणी का हो और वह जिस का दूर-दूर तक शत्रुओं ने पीछा किया परन्तु ख़ुदा तआला ने उसे सितारों तक भी न उठाया श्रेष्ठतम हो । यदि वास्तव में **मसीह अलैहिस्सलाम** आकाश पर हैं तथा हमारे सरदार और स्वामी पृथ्वी में दफ़्न हैं तो हमारे लिए इस से बढ़कर और कोई मृत्यु नहीं और हम मसीहियों को मुख भी नहीं दिखा सकते, परन्तु नहीं यह बात नहीं, ख़ुदा तआला अपने पवित्र रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से यह व्यवहार नहीं कर सकता । वह सब न्याय करने वालों से उत्तम न्याय करने वाला है । यह क्योंकर संभव था कि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को समस्त विश्व के लोगों का सरदार भी बनाता और फिर **मसीह अलैहिस्सलाम** से अधिक प्रेम करता और उन के कष्टों का अधिक ध्यान रखता । जब उसने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्मान को स्थापित करने के लिए एक संसार को अस्त-व्यस्त कर दिया और जिसने आप का तनिक भी अपमान करना चाहा उसे अपमानित कर दिया, तो क्या यह हो सकता था कि वह स्वयं अपने हाथ से आप (स.अ.व.) की शान को गिराता और शत्रु को आरोप का अवसर देता । मैं तो जब यह विचार भी करता हूँ कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो पृथ्वी के नीचे दफ़्न हैं और हज़रत **मसीह नासिरी** आकाश पर जीवित बैठे हैं तो मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और मेरे प्राण घटने लगते हैं तथा उसी समय मेरा हृदय पुकार उठता है कि ख़ुदा तआला ऐसा नहीं कर सकता । वह **मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** से सर्वाधिक प्रेम करने वाला था वह इस बात को कदापि पसन्द नहीं कर सकता था कि आप तो मृत्यु प्राप्त करके पृथ्वी के नीचे दफ़्न हों और

हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जीवित रह कर आकाश पर जा बैठें । यदि कोई मनुष्य जीवित रहने और आकाश पर जा बैठने का पात्र था तो वह हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम थे और यदि वह मृत्यु को प्राप्त कर चुके हैं तो समस्त नबी मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं । हम **मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** की महान प्रतिष्ठा और आप के उच्चतम पद को देखते और पद को पहचानते हुए किस प्रकार स्वीकार कर लें कि जब प्रवास (स्वदेश त्याग) के दिन सौर पर्वत की ऊँची चट्टानों पर हज़रत अबू बकर(रज़ि.) के कन्धों पर पैर रख कर आप (स.अ.व.) को चढ़ना पड़ा तो ख़ुदा तआला ने कोई फ़रिश्ता आपके लिए नहीं उतारा, परन्तु जब मसीह अलैहिस्सलाम को यहूदी पकड़ने आए तो उसने तुरन्त आपको आकाश पर उठा लिया और चौथे आकाश पर आपको स्थान दिया। इसी प्रकार हम क्योंकर स्वीकार कर लें कि जब 'उहद' के युद्ध में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को शत्रुओं ने केवल कुछ साथियों में घिरा पाया है तो उस समय तो अल्लाह तआला ने यह न किया कि आप को कुछ देर के लिए आकाश पर उठा लेता और किसी शत्रु की आकृति आप (स.अ.व.) की आकृति में परिवर्तित करके उसके दांत तुड़वा देता, अपितु उसने आज्ञा दी कि शत्रु आप पर आक्रमणकारी हो । आप शव की भाँति अचेत होकर पृथ्वी पर जा पड़ें और शत्रु खुशी के उद्घोष करे कि हमने मुहम्मद रसूलुल्लाह का वध कर दिया है, परन्तु मसीह अलैहिस्सलाम के संबंध में उसे यह बात पसन्द न आई कि उन को कोई कष्ट हो तथा ज्यों ही यहूद ने आप पर आक्रमण करने का इरादा किया, उसने आप को आकाश की ओर उठा लिया और आप के स्थान पर आपके किसी शत्रु को आप की शक्ल में परिवर्तित करके सलीब पर लटकवा दिया।

हम आश्चर्यचकित हैं कि लोगों को क्या हो गया कि एक ओर तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम का दावा करते हैं और दूसरी ओर आपके सम्मान पर प्रहार करते हैं, फिर इसी पर सन्तुष्ट नहीं होते अपितु जो लोग आपके प्रेम से विवश होकर आप (स.अ.व.) पर किसी को श्रेष्ठता देने से इन्कार कर देते हैं, उन को कष्ट देते हैं, उनके इस कार्य को कुफ्र ठहराते हैं । क्या कुफ्र मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

अलैहि व सल्लम के सम्मान को स्थापित करने का नाम है, क्या अधर्म आपकी वास्तविक पद के इक़रार करने का नाम है, क्या धर्म से विमुख होना आप से प्रेम को कहते हैं ? यदि यही कुफ़्र है तो ख़ुदा की सौगन्ध हम इस कुफ़्र को लोगों के ईमान से और इस अधर्म को लोगों की धार्मिकता से और इस धर्म से विमुख होने को लोगों के स्थायित्व से हज़ार दर्जे अधिक अच्छा समझते हैं तथा अपने स्वामी और पेशवा हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ सहमत होकर भर्त्सना का भय किए बिना इस बात की घोषणा करते हैं कि -

بعد از خدا بعشق محمد مخمرم گر کفر ایں بود بخدا سخت کافرم[14]

बाद अज़ ख़ुदा ब इश्क़े मुहम्मद मुख़म्मरम,
गर कुफ़्र ईं बुवद बख़ुदा सख़्त काफ़िरम ।

(अनुवाद :- मैं ख़ुदा के बाद मुहम्मद के प्रेम में मदोन्मत (नशे में चूर) रहता हूँ और यदि यह कुफ़्र है तो ख़ुदा की सौगंध मैं सख़्त काफ़िर हूँ । अनुवादक)

सब को अन्तत: एक दिन मरना है और अल्लाह तआला के सामने प्रस्तुत होना है और उसी के साथ मामला पड़ना है फिर हम लोगों से क्यों भयभीत हों ? लोग हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं, हम अल्लाह तआला ही से डरते हैं और उसी से प्रेम करते हैं और इसके पश्चात सर्वाधिक प्रेम और आदर हमारे हृदय में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का है । यदि आप के लिए संसार के सारे सम्मान और संसार के सारे संबंध और संसार के समस्त आराम त्यागने पड़ें तो यह हमारे लिए आसान है, परन्तु आप का अपमान हम सहन नहीं कर सकते । हम दूसरे नबियों का अपमान नहीं करते, परन्तु आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की पवित्र शक्ति और आप के ज्ञान और आप के इरफ़ान (ब्रह्मज्ञान) और आपके ख़ुदा तआला से संबंध की दृष्टि से हम यह कभी भी स्वीकार नहीं कर सकते कि आपकी अपेक्षा किसी अन्य नबी से अल्लाह तआला को अधिक प्रेम था और यदि हम ऐसा करें तो हम से अधिक दण्डनीय अन्य कोई नहीं होगा । हम आँखें रखते हुए इस बात को कैसे स्वीकार कर लें कि अरब के लोग जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहें कि اَوۡ تَرۡقٰی فِی السَّمَآءِ وَ لَنۡ نُّؤۡمِنَ لِرُقِیِّکَ حَتّٰی تُنَزِّلَ عَلَیۡنَا کِتٰبًا نَّقۡرَؤُہٗ[15] (औ

तरक़ा फ़िस्समाए व लन नोमिना लिरुक़िय्येका हत्ता तुनज़्ज़िला अलयना किताबन नक़रओहू) अर्थात् हम तुझे नहीं मानेंगे जब तक कि तू आकाश पर न चढ़ जाए और हम तेरे आकाश पर चढ़ने का विश्वास नहीं करेंगे, जब तक कि तू कोई किताब भी आकाश पर से न लाए, जिसे हम पढ़ें। तो अल्लाह तआला आप (स.अ.व.) से कहे कि قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا16 **(क़ुल सुब्हाना रब्बी हल कुन्तो इल्ला बशरन रसूलन)** तू उन से कह दे कि मेरा रब्ब प्रत्येक कमज़ोरी से पवित्र है मैं तो केवल एक मनुष्य रसूल हूँ, परन्तु हज़रत मसीह को वह आकाश पर उठा कर ले जाए, जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रश्न आए तो इन्सानियत को आकाश पर चढ़ने के विरुद्ध बताया जाए, परन्तु जब मसीह का प्रश्न आए तो अकारण उनको आकाश पर ले जाया जाए । क्या इस से यह परिणाम न निकलेगा कि मसीह अलैहिस्सलाम मनुष्य नहीं थे अपितु ख़ुदा थे । ऐसी बात से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं या फिर यह परिणाम निकलेगा कि आप रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से श्रेष्ठतम थे तथा अल्लाह तआला को अधिक प्रिय थे, परन्तु जब कि यह बात सूर्य से भी अधिक प्रकट है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सब रसूलों और समस्त नबियों से श्रेष्ठतम हैं तो फिर बुद्धि किस प्रकार स्वीकार कर सकती है कि आप तो आकाश पर न जाएँ अपितु इसी पृथ्वी पर मृत्यु पाएँ और पृथ्वी के नीचे दफ़्न हों, परन्तु मसीह अलैहिस्सलाम आकाश पर चले जाएँ और हज़ारों वर्ष तक जीवित रहें ।

फिर यह प्रश्न केवल स्वाभिमान का ही नहीं अपितु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई का भी प्रश्न है । आप (स.अ.व.) फ़रमाते हैं कि -

لَوْ كَانَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى حَيَّيْنِ لَمَا وَسِعَهُمَا اِلَّا اتِّبَاعِيْ

(लौ काना मूसा व ईसा हय्ययने लमा वसिआहुमा इल्लत्तिबाई) अर्थात यदि मूसा तथा ईसा जीवित होते तो मेरे अनुसरण के अतिरिक्त उनको कोई चारा न था । यदि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं तो फिर आप का यह कथन 'नाऊज़ुबिल्लाह' असत्य हो जाता है क्योंकि आप **'लौ काना'** कह कर और मूसा(अ) के साथ ईसा(अ) को मिलाकर दोनों

नबियों की मृत्यु की सूचना देते हैं । अत: नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साक्ष्य के पश्चात् किस प्रकार कोई व्यक्ति आप का उम्मती कहला कर यह विश्वास रख सकता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं । यदि वह जीवित हैं तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई और आप(अ) के ज्ञान पर आरोप आता है, क्योंकि आप तो उनको मृत्यु प्राप्त ठहराते हैं।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह भी बयान किया गया है कि आप (स.अ.व.) ने उस बीमारी में जिस में आप स्वर्गवासी हुए हज़रत फ़ातिमा(रज़ि.) से फ़रमाया कि -

إِنَّ جِبْرِيْلَ كَانَ يُعَارِضُنِي الْقُرْاٰنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَرَّةً وَإِنَّهُ عَارَضَنِي بِالْقُرْاٰنِ
الْعَامَ مَرَّتَيْنِ وَاَخْبَرَنِيْ اَنَّهُ لَمْ يَكُنْ نَبِيٌّ اِلَّا عَاشَ نِصْفَ الَّذِيْ قَبْلَهُ
وَاَخْبَرَنِيْ اَنَّ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ عَاشَ عِشْرِيْنَ وَمِأَةَ سَنَةٍ وَّ لَا اَرَانِيْ اِلَّا
ذَاهِبًا عَلٰى رَأْسِ السِّتِّيْنَ 17

(इन्ना जिब्रीला काना युआरिज़ोनिलक़ुर्आना फ़ी कुल्ले आमिन मर्रतन व इन्नहू आरज़निल क़ुर्आनल आमा मर्रतयने व अख़बरनी इन्नहू लम यकुन नबिय्युन इल्ला आशा निस्फ़ल्लज़ी क़ब्लहू व अख़बरनी अन्ना ईसब्ना मरयमा आशा इश्रीना व मिअता सनतिन वला अरानी इल्ला ज़ाहिबन अला रासिस्सित्तीन) अर्थात् जिब्राईल प्रत्येक वर्ष मुझे एक बार क़ुर्आन सुनाते थे परन्तु इस बार दो बार सुनाया है तथा उन्होंने मुझे सूचना दी है कि कोई नबी नहीं गुज़रा कि जिसकी आयु पूर्व नबी से आधी न हुई हो और उन्होंने मुझे यह भी सूचना दी है कि ईसा इब्ने मरयम एक सौ बीस वर्ष की आयु तक जीवित रहे थे । अत: मैं समझता हूँ कि मेरी आयु साठ वर्ष के लगभग होगी। इस बयान का विषय इल्हामी है, क्योंकि इसमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी ओर से कोई बात वर्णन नहीं करते अपितु जिब्राईल अलैहिस्सलाम की बताई हुई बात बताते हैं जो यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की आयु एक सौ बीस वर्ष की थी । अत: लोगों का यह विचार कि आप बत्तीस-तेंतीस वर्ष की आयु में आकाश पर उठाए गए थे ग़लत हुआ, क्योंकि यदि हज़रत

मसीह(अ) इस आयु में आकाश पर उठाए गए थे तो आप की आयु एक सौ बीस वर्ष के स्थान पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग तक लगभग छः सौ वर्ष बनती है । इस स्थिति में चाहिए था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कम से कम तीन सौ वर्ष तक आयु पाते, परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तिरेसठ वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हो जाना और इल्हाम के तौर पर आप को बताया जाना कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम एक सौ बीस वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हो गए, सिद्ध करता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जीवन और आकाश पर आप का बैठा होना रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा के सरासर विरुद्ध है तथा आप के इल्हाम उस का खण्डन करते हैं । जब वास्तविकता यह है तो हम लोग किसी के कहने से किस प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित होने को स्वीकार कर सकते हैं तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ सकते हैं ।

कहा जाता है कि यह समस्या तेरह सौ वर्ष की अवधि में केवल इन पर ही प्रकट हुई है तथा पूर्व बुज़ुर्ग इस से परिचित और अवगत न थे, परन्तु खेद कि ऐतिराज़ करने वाला अपनी दृष्टि को केवल एक विशेष विचार के लोगों तक सीमित करके उसका नाम सर्वमान्य रख लेते हैं और यही नहीं देखते कि इस्लाम के पहले विद्वान स्वयं सहाबा*(रज़ि.) हैं और उनके पश्चात् उन के विद्वानों का सिलसिला नितान्त विशाल होता हुआ समस्त संसार में फैल गया है । सहाबा(रज़ि.) को जब हम देखते हैं तो वे सर्वसम्मति से हमारे विचार से सहमत हैं और यह हो भी कब सकता था कि वे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अत्यन्त प्रेमी आप की प्रतिष्ठा को पतित करने वाली आस्था को एक क्षण के लिए भी स्वीकार करते । वे इस संबंध में हम से सहमत ही नहीं हैं अपितु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मृत्योपरान्त सब से प्रथम इज्माअ (सर्व सम्मति) ही इस समस्या पर किया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं । अतः हदीस और

* नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुयायी मुसलमान जिन्होंने आपको देखा हो - अनुवादक

इतिहास की किताबों में यह बयान लिखा हुआ है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मृत्यु का सहाबा(रज़ि.) पर इतना प्रभाव हुआ कि वे घबरा गए और कुछ से तो बोला भी न जाता था और कुछ से चला भी न जाता था, कुछ अपने होश और बुद्धि को क़ाबू में न रख सके और कुछ पर तो इस आघात का इतना प्रभाव पड़ा कि वे कुछ ही दिनों में घुल-घुल कर मृत्यु को प्राप्त हो गए । हज़रत उमर(रज़ि.) पर इस आघात का इतना प्रभाव हुआ कि आप ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मृत्यु की सूचना को स्वीकार ही न किया और तलवार लेकर खड़े हो गए और कहा कि यदि कोई व्यक्ति यह कहेगा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निधन हो गया है तो मैं उसकी हत्या कर दूँगा । आप स.अ.व. तो मूसा अलैहिस्सलाम की भाँति बुलाए गए हैं । जिस प्रकार वह चालीस दिनों के पश्चात् वापस आ गए थे इसी प्रकार आप स.अ.व. कुछ समय के पश्चात वापिस पधारेंगे और जो लोग आप स.अ.व. पर आरोप लगाने वाले हैं और द्वयवादी हैं उनका वध करेंगे और सूली देंगे । आप(अ) इतने जोश से अपने दावे पर अड़े हुए थे कि सहाबा में से किसी को साहस न हुआ कि आप की बात का खण्डन करता और आपके इस जोश को देखकर कुछ लोगों को तो यह विश्वास हो गया कि यही बात उचित है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मृत्यु नहीं हुई तथा उन के मुख-मण्डलों पर प्रसन्नता के लक्षण प्रकट होने से उन्होंने सर उठा लिए। इस स्थिति को देखकर कुछ दूरदर्शी सहाबा ने एक सहाबी को दौड़ाया कि वह हज़रत अबू बकर(रज़ि.) को जो इस कारण कि मध्य में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तबियत कुछ संभल गई थी आप (स.अ.व.) की आज्ञा से मदीना के पास ही एक गाँव की ओर गए हुए थे, शीघ्र ले आएँ । वह चले ही थे कि हज़रत अबू बकर(रज़ि.) उन को मिल गए, उन को देखते ही उन की आँखों से आँसू जारी हो गए तथा रोने के उद्वेग को रोक न सके । हज़रत अबू बकर(रज़ि.) समझ गए कि क्या मामला है । उन सहाबी से पूछा कि क्या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं । उन्होंने उत्तर दिया कि हज़रत उमर(रज़ि.) कहते हैं कि जो व्यक्ति कहेगा कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं मैं उसकी गर्दन तलवार से उड़ा दूँगा । इस पर आप(रज़ि.) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर गए, आप के मुबारक शरीर पर जो चादर पड़ी थी, उसे हटाकर देखा तथा मालूम किया कि आप (स.अ.व.) की वास्तव में मृत्यु हो चुकी है । अपने प्रियतम के वियोग के आघात से उनके आँसू जारी हो गए और नीचे झुक कर आप के मस्तक पर चुम्बन दिया और कहा कि ख़ुदा की सौगंध ख़ुदा तआला तुझ पर दो मौतें एकत्र नहीं करेगा । तेरी मृत्यु से संसार को वह क्षति पहुँची है जो किसी नबी की मृत्यु से नहीं पहुँची थी, तेरा अस्तित्व वर्णन से श्रेष्ठ और तेरी प्रतिष्ठा वह है कि कोई शोक तेरे वियोग के आघात को कम नहीं कर सकता । यदि तेरी मृत्यु का रोकना हमारी शक्ति में होता तो हम सब अपने प्राण देकर तेरी मृत्यु को रोक देते ।

यह कह का कपड़ा फिर आपके ऊपर डाल दिया और उस स्थान की ओर आए जहाँ हज़रत उमर(रज़ि.) सहाबा का घेरा बनाए बैठे थे और उन से कह रहे थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का निधन नहीं हुआ अपितु जीवित हैं । वहाँ आकर आपने हज़रत उमर रज़ि, से कहा आप तनिक चुप हो जाएँ, परन्तु उन्होंने उन की बात न मानी तथा अपनी बात करते रहे। इस पर हज़रत अबू बकर(रज़ि.) ने एक ओर होकर लोगों से कहना प्रारंभ किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वास्तव में मृत्यु हो चुकी है । आदरणीय सहाबा(रज़ि.) हज़रत उमर(रज़ि.) को छोड़कर आप के इर्द-गिर्द एकत्र हो गए और अन्ततः हज़रत उमर(रज़ि.) को भी आप की बात सुनना पड़ी । आप (रज़ियल्लाहो अन्हो) ने फ़रमाया -

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ج قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ط اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ
انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ 18 اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ19

(वमा मुहम्मदुन इल्ला रसूल क़द ख़लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुल अफ़इम्मिाता औ कुतिलन्क़लबतुम अला आ'क़ाबेकुम)

يَا اَيُّهَا النَّاسُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللّٰهَ
فَاِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ20

(या अय्यहन्नासो मन काना याबुदो मुहम्मदन फ़इन्ना मुहम्मदन क़द माता व मन काना याबुदुल्लाह फ़इन्नल्लाहा हय्युन ला यमूतो) अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी एक रसूल हैं आप से पहले समस्त रसूलों की मृत्यु हो चुकी है, फिर यदि आप (स.अ.व.) की मृत्यु हो जाए या क़त्ल (हत्या) हो जाएँ तो क्या तुम लोग अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे । निश्चय ही तेरी भी मृत्यु होगी तथा इन लोगों की भी मृत्यु होगी। हे लोगो ! जो कोई मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की उपासना करता था वह सुन ले कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की मृत्यु हो गई और जो कोई अल्लाह की उपासना करता था उसे स्मरण रहे कि अल्लाह जीवित है उस पर कभी मृत्यु नहीं आती ।

जब आप(रज़ि.) ने उपर्युक्त दोनों आयतें पढ़ीं और लोगों को बताया कि रसूलुल्लाह की मृत्यु हो चुकी है तो सहाबा(रज़ि.) पर वास्तविकता प्रकट हुई और वे अचानक रोने लगे । हज़रत उमर(रज़ि.) स्वयं बयान करते हैं कि जब हज़रत अबू बकर(रज़ि.) ने क़ुर्आन की आयतों से आप (स.अ.व.) की मृत्यु सिद्ध की तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे ये दोनों आयतें आज ही उतरी हैं तथा मेरे घुटनों में मेरे सर को उठाने की शक्ति न रही ! मेरे पैल लड़खड़ा गए और मैं अचानक सख्त आघात के कारण पृथ्वी पर गिर पड़ा। [21]

इस बयान से तीन बातें सिद्ध होती हैं । **प्रथम** - यह कि **रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम** की मृत्यु पर सर्वप्रथम सहाबा(रज़ि.), की सर्व सम्मति इसी बात पर हुई थी कि आप से पूर्व समस्त नबियों की मृत्यु हो चुकी है, क्योंकि यदि सहाबा(रज़ि.) में से किसी को भी यह सन्देह होता कि कुछ नबियों की मृत्यु नहीं हुई तो क्या उन में से कुछ उसी समय खड़े न हो जाते कि आप आयतों से जो सिद्ध कर रहे हैं यह उचित नहीं, क्योंकि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो छः सौ वर्ष से आकाश पर जीवित बैठे हैं । अतः यह ग़लत है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले समस्त नबियों की मृत्यु हो चुकी है और जबकि उनमें से कुछ जीवित हैं तो क्या कारण है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जीवित न रह सकें ।

द्वितीय – यह कि समस्त पूर्वकालीन नबियों की मृत्यु पर उन का

विश्वास किसी व्यक्तिगत विचार के कारण न था अपितु इस बात को वे क़ुर्आन करीम की आयतों से लिया गया समझते थे, क्योंकि यदि यह बात न होती तो कोई सहाबी तो उठकर कहता कि यदि यह सही है कि समस्त नबियों की मृत्यु हो चुकी है, परन्तु इस आयत से जो आप ने पढ़ी है यह सिद्ध नहीं होता कि आप (स.अ.व.) से पूर्व समस्त नबियों की मृत्यु हो चुकी है । अतः सिद्दीक अकबर(रज़ि.) (हज़रत अबू बकर(रज़ि.)) का आयत قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ **क़द ख़लत मिन क़ब्लिहिर्रुसुल** से समस्त पूर्वकालीन नबियों की मृत्यु का सबूत निकालना तथा समस्त सहाबा(रज़ि.) का न केवल इस पर खामोश रहना अपितु इस तर्क से आनन्द उठाना तथा गली कूचों में इसको पढ़ते फिरना इस बात का प्रमाण है कि वे समस्त इस तर्क से सहमत थे ।

तृतीय – इस बयान से यह बात सिद्ध होती है कि चाहे किसी अन्य नबी की मृत्यु का उन्हें विश्वास था या नहीं परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवित होने का उन्हें निश्चय ही कोई ज्ञान न था क्योंकि जैसा कि समस्त सही हदीसों तथा विश्वसनीय वर्णनों से सिद्ध होता है कि हज़रत उमर(रज़ि.) अत्यन्त जोश की स्थिति में थे तथा शेष सहाबा(रज़ि.) से कह रहे थे कि जो कहेगा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मृत्यु हो गई है मैं उस का सर उड़ा दूँगा । उस समय अपने विचार के प्रमाण में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चालीस दिन पर्वत पर चले जाने की घटना तो वे प्रस्तुत करते थे, परन्तु हज़रत ईसा के आकाश पर चले जाने की घटना उन्होंने एक बार भी प्रस्तुत नहीं की । यदि सहाबा(रज़ि.) की आस्था यह होती कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश पर जीवित जा बैठे हैं, तो क्या हज़रत उमर(रज़ि.) या उनसे सहमत सहाबी(रज़ि.) इस घटना को अपने विचार के समर्थन में प्रस्तुत न करते ? उनका हज़रत मूसा की घटना से सिद्ध करना तथा इस घटना से सिद्ध न करना बताता है कि उनके मस्तिष्क में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के संबंध में कोई ऐसी घटना थी ही नहीं । आदरणीय सहाबा(रज़ि.) की सर्वसम्मति के अतिरिक्त हम देखते हैं कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के संबंध में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के परिवार की भी सहमति है । अतः तबक़ात इब्ने सा'द की जिल्द 3 में हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हहू की मृत्यु की परिस्थितियों के संबंध में हज़रत

इमाम हसन(रज़ि.) ने वर्णन किया है कि आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया -

اَيُّهَا النَّاسُ قَدْ قُبِضَ اللَّيْلَةَ رَجُلٌ لَمْ يَسْبِقْهُ الْاَوَّلُوْنَ وَلَا يُدْرِكُهُ
الْاٰخِرُوْنَ قَدْكَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَبْعَثُهُ الْمَبْعَثَ
فَيَكْتَنِفُهٗ جِبْرَئِيْلُ عَنْ يَّمِيْنِهٖ وَمِيْكَائِيْلُ عَنْ شِمَالِهٖ فَلَا يَنْثَنِيْ حَتّٰى يَفْتَحَ
اللّٰهُ لَهٗ وَمَا تَرَكَ اِلَّا سَبْعَ مِائَةِ دِرْهَمٍ اَرَادَ اَنْ يَّشْتَرِىَ بِهَا خَادِمًا وَلَقَدْ
قُبِضَ فِي اللَّيْلَةِ الَّتِيْ عُرِجَ فِيْهَا بِرُوْحِ عِيْسَى بْنِ مَرْيَمَ لَيْلَةَ سَبْعٍ
وَّعِشْرِيْنَ مِنْ رَمْضَانَ[22]

(अय्योहन्नासो क़द कुबिज़ल्लयलता रजुलुन लम यस्बिक़हुल अव्वलूना वला युदरिकुहुल आख़िरूना क़द काना रसूलुल्लाहे यबअसुल मबअसा फ़यकतनिफ़ुहू जिब्राईलो मिंय्यमीनिही व मीकाईलो मिन शिमालिही फ़ला युनशिआ हत्ता यफ़्तहल्लाहो लहू व मा तरका इल्ला सब्आ मिअते दिरहमिन अरादा अंय्यशतरिया बिहा ख़ादिमन व लक़द कुबिज़ा फ़िल्लयलतिल्लती उरिजा फ़ीहा बिरूहे ईसब्ने मरयमा लयलता सबइन व इश्रीना मिन रमज़ान ।) अर्थात हे लोगो ! आज उस व्यक्ति की मृत्यु हुई है कि उसकी कुछ बातों को न पूर्वकालीन पहुँचे हैं और न बाद को आने वाले पहुँचेंगे । रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसे युद्ध के लिए भेजते थे तो जिब्राईल उसके दायीं ओर हो जाते थे और मीकाईल बायीं ओर । अत: वह विजय प्राप्त किए बिना वापस नहीं होता था, उसने सात सौ दिरहम अपनी सम्पत्ति पीछे छोड़ी है, जिससे उसका इरादा यह था कि एक दास ख़रीदे । उसकी उस रात को मृत्यु हुई है जिस रात को ईसा इब्ने मरयम की आत्मा आकाश की ओर उठाई गई थी अर्थात रमज़ान की सत्ताईसवीं तिथि को ।

इस वर्णन से ज्ञात होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहले बैत (घर वाले) के निकट भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी थी, क्योंकि यदि उनका यह विचार न होता तो इमाम हसन(रज़ि.) यह क्यों फ़रमाते कि जिस रात हज़रत ईसा(अ) की आत्मा (रूह) आकाश की ओर उठाई गई थी, उसी रात को हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो की मृत्यु हुई है ।

आदरणीय सहाबा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहले बैत (घर वाले) के अतिरिक्त बाद को आने वाले बुज़ुर्ग भी अवश्य मसीह(अ) की मृत्यु को ही मानने वाले होंगे, क्योंकि वे लोग क़ुर्आन करीम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन तथा सहाबा के कथन और अहले बैत (घर वाले) की रायों के ही आसक्त थे, परन्तु चूँकि वे इस बात को साधारण समझते थे इसलिए ज्ञात होता है कि उनके कथन विशेष तौर पर सुरक्षित नहीं रखे गए, परन्तु जो कुछ भी मालूम होता है वह इस बात का सत्यापन करता है कि उनका मत भी यही था कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है । अतः मजमउलबहार में है कि قَالَ مَالِكٌ مَاتَ23 **(क़ाला मालिकुन माता)** अर्थात इमाम मालिक रहमतुल्लाह फ़रमाते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है ।

अतः क़ुर्आन करीम और हदीसों के अतिरिक्त, सहाबा(रज़ि.) की सर्वसम्मति, अहले बैत की रायें तथा इमामों के कथनों से भी हमारे ही विचार का सत्यापन होता है । अर्थात् यह ज्ञात होता है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी । अतः हम पर यह आरोप लगाना कि हम हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु की आस्था रख कर हज़रत मसीह का अनादर करते हैं और क़ुर्आन करीम तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों का इन्कार करते हैं उचित नहीं । हम मसीह अलैहिस्सलाम का अनादर नहीं करते अपितु इस आस्था की दृष्टि से ख़ुदा तआला के अद्वैतवाद को स्थापित करते हैं तथा उसके रसूल के सम्मान को सिद्ध करते हैं और स्वयं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की सेवा करते हैं क्योंकि वह भी कभी पसन्द नहीं करेंगे कि उन को एक ऐसे पद पर आसीन किया जाए जिस से ख़ुदा तआला के अद्वैतवाद को आघात पहुँचता हो और द्वैतवाद को सहायता प्राप्त होती हो तथा नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान होता हो ।

अब हे बादशाह ! आप स्वयं ही विचार करके देख लें कि क्या हमारे विरोधी इस आरोप में सत्य पर हैं या हम ? क्या उनका अधिकार है कि हम से रुष्ट हों या हमारा अधिकार है कि उन से रुष्ट हों, क्योंकि उन्होंने हमारे ख़ुदा का भागीदार नियुक्त किया तथा हमारे रसूल का

अपमान किया और अपने बन कर शत्रुओं की भाँति आक्रमणकारी हुए ।

दूसरा आरोप हम पर यह किया जाता है कि हम लोग दूसरे मुसलमानों की आस्था के विरुद्ध इसी उम्मत में से एक व्यक्ति को मसीह मौऊद मानते हैं हालाँकि यह बात नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस के विपरीत है, क्योंकि उन से ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह आकाश से उतरेंगे ।

यह बात अत्यन्त उचित है कि हम लोग सिलसिला अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब, निवासी क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर, प्रान्त पंजाब, देश हिन्दुस्तान को मसीह मौऊद और महदी मसऊद समझते हैं, परन्तु जबकि क़ुर्आन करीम, हदीसों और सद्‌बुद्धि से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो चुकी है तो फिर हम नहीं समझते कि हमारी यह आस्था क़ुर्आन करीम और हदीसों के विरुद्ध क्योंकर होगी, जबकि क़ुर्आन करीम से हज़रत मसीह की मृत्यु सिद्ध है और हदीसें भी इस पर साक्षी हैं और जबकि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों से एक मौऊद (जिसका वायदा दिया गया हो) के जिसे इब्ने मरयम कहा गया है आगमन की सूचना मालूम होती है । अतः स्पष्ट मालूम होता है कि आने वाला मौऊद इसी उम्मत का एक सदस्य होगा न कि मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम जिनकी मृत्यु हो चुकी है ।

कहा जाता है कि यदि क़ुर्आन करीम और हदीसों से हज़रत मसीह की मृत्यु भी सिद्ध होती हो तब भी हदीसों में चूँकि मसीह इब्ने मरयम के आने की सूचना दी गई है उन्हीं के आने पर विश्वास रखना चाहिए, क्योंकि क्या अल्लाह तआला क़ादिर (शक्तिशाली) नहीं कि उनको फिर जीवित करके संसार के सुधार हेतु भेज दे । हम पर ऐतिराज़ किया जाता है कि हम मानो अल्लाह तआला की क़ुदरत के इन्कारी हैं, परन्तु बात यह नहीं अपितु इस के बिल्कुल विपरीत है । हम ख़ुदा तआला की क़ुदरत के इन्कार के कारण नहीं अपितु उस की क़ुदरत पर ईमान रखने के कारण इस बात को स्वीकार करते हैं कि हज़रत मसीह नासिरी को ख़ुदा तआला जीवित करके नहीं भेजेगा अपितु इसी उम्मत के एक सदस्य को उसने मसीह मौऊद बना कर भेज दिया है । हम नहीं समझ सकते

और न हम आशा करते हैं कि कोई व्यक्ति भी जो पूर्ण रूप से इस बात पर विचार करेगा स्वीकार करेगा कि मसीह का दोबारा जीवित करके भेजना अल्लाह तआला के शक्तिमान होने का लक्षण है । हम संसार में देखते हैं कि जो धनवान होता है वह प्रयोग किए कपड़ों को उलटवा कर नहीं सिलवाता अपितु उसे उतार कर आवश्यकता पड़ने पर अन्य नया कपड़ा सिलवाता है। निर्धन और असहाय लोग एक ही वस्तु को कई-कई शक्लों में बदल-बदल कर पहनते हैं और अपनी वस्तुओं को संभाल-संभाल कर रखते हैं । अल्लाह तआला का हाथ कब ऐसा संकीर्ण हुआ था जब उसके बन्दों को पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता हुई तो उसे किसी स्वर्गवासी (जिसकी मृत्यु हो चुकी हो) नबी को जीवित करके भेजना पड़ा । वह सदा बन्दों के पथ-प्रदर्शन हेतु उन्हीं के युग के लोगों में से किसी का चयन करके उनके सुधार हेतु भेजता रहा है । हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के युग से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग तक एक बार भी उस ने ऐसा नहीं किया कि किसी पूर्व नबी को जीवित करके संसार के पथ-प्रदर्शन के लिए भेजा हो । इस बात पर वह तब विवश हो जब किसी युग के लोगों के हृदयों की स्वच्छता उसकी क़ुदरत से बाहर हो जाए तथा उसका शासन मनुष्यों पर से समाप्त हो जाए परन्तु चूँकि ऐसा कभी नहीं हो सकता, इसलिए यह भी नहीं हो सकता कि वह एक स्वर्गीय नबी को स्वर्ग से निकाल कर संसार के सुधार हेतु भेज दे । वह सर्वशक्तिमान है । जब उसने मसीह अलैहिस्सलाम के पश्चात मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा मनुष्य उत्पन्न कर दिया तो उसकी शक्ति से यह बाहर नहीं कि एक और व्यक्ति मसीह अलैहिस्सलाम जैसा अपितु उनसे श्रेष्ठतम उत्पन्न कर दे ।

अतः मसीह नासिरी नबी के दोबारा संसार में आने का इन्कार हम इस कारण नहीं करते कि हम अल्लाह तआला को शक्तिमान नहीं समझते अपितु इसलिए करते हैं कि हम अल्लाह तआला को शक्तिमान समझते हैं कि वह जब चाहे अपने बन्दों में से किसी को पथ-प्रदर्शन के पद पर खड़ा कर दे तथा उसके माध्यम से मार्ग से भूले-भटके लोगों को अपनी ओर बुलाए और जो लोग यह विचार करते हैं कि वह ऐसा नहीं कर सकता अपितु आवश्यकता पड़ने पर किसी पूर्व नबी को लाएगा, ग़लती पर

हैं । وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ[24] (उन्होंने अल्लाह तआला के महत्त्व को नहीं पहचाना ।)

इस बात के अतिरिक्त मसीह नासिरी के दोबारा वापस आने में अल्लाह तआला की क़ुदरत पर दोष आता है । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र शक्ति पर भी आरोप आता है, क्योंकि यदि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को ही दोबारा संसार में वापस आना है तो इस का मतलब यह होगा कि पूर्वकालीन समस्त उम्मतें जब बिगड़ती थीं तो उनसे सुधार हेतु अल्लाह तआला उन्हीं में से एक व्यक्ति को खड़ा कर देता था, परन्तु हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में जब ख़राबी होगी तो उसके सुधार के लिए अल्लाह तआला पूर्वकालीन नबियों में से एक नबी को वापस लाएगा, स्वयं आप की उम्मत में से कोई सदस्य उसके सुधार की शक्ति नहीं रखेगा । यदि हम यह बात स्वीकार कर लें तो हम निश्चय ही मसीहियों और यहूदियों से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शत्रुता में कम न होंगे, क्योंकि वे भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र शक्ति पर ऐतिराज़ करते हैं और इस आस्था के साथ हम भी आप की पवित्र शक्ति पर ऐतिराज़ करने वाले हो जाते हैं । जब दीपक जल रहा हो तो उस से अन्य दीपक निश्चय ही जलाए जा सकते हैं । वह बुझा हुआ दीपक होता है जिसे से दूसरा दीपक नहीं जल सकता । अतः यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत पर कोई युग ऐसा भी आना है कि उस की दशा ऐसी बिगड़ जाएगी कि उसमें से कोई व्यक्ति उसके सुधार के लिए खड़ा नहीं हो सकेगा तो साथ ही यह भी मानना पड़ेगा कि उस समय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दानशीलता भी नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका (हम ऐसी बात से अल्लाह से क्षमा याचक हैं) समाप्त हो जाएगी । कौन मुसलमान इस बात को नहीं जानता कि जब तक अल्लाह तआला को हज़रत मूसा का सिलसिला चलाने की इच्छा थी, उस समय तक आप ही के अनुयायियों में से ऐसे लोग उत्पन्न होते रहे जो आप की उम्मत का सुधार करते रहे, परन्तु जब उसकी यह इच्छा हुई कि आप के सिलसिले को समाप्त कर दे तो उसने आप की कौम में से नुबुव्वत का सिलसिला बन्द करके बनी इस्माईल में से नबी

भेज दिया । अत: यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात कोई नबी मूसा के सिलसिले से आएगा तो उसका अर्थ यही होगा कि अल्लाह तआला नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिलसिले को भी समाप्त कर देगा और कोई अन्य सिलसिला जारी करेगा और नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र शक्ति उस समय कमज़ोर हो जाएगी तथा आप की दानशीलता किसी उम्मती को भी इस बात के लिए तैयार न कर सकेगी कि वह आप से प्रकाश प्राप्त करके आप (स.अ.व.) की उम्मत का सुधार करे और उसे सद्‌मार्ग पर लाए ।

खेद है कि लोग अपने लिए तो अत्यधिक स्वाभिमान दिखाते हैं तथा किसी प्रकार का दोष अपनी ओर सम्बद्ध होना पसन्द नहीं करते, परन्तु ख़ुदा के रसूल की ओर प्रत्येक दोष बड़े साहस के साथ सम्बद्ध करते हैं उस प्रेम को हम क्या करें जो मुख तक रहता है परन्तु हृदय में उसका कोई प्रभाव नहीं और उस दावे को क्या करें जो अपने साथ कोई प्रमाण नहीं रखता । यदि वास्तव में लोग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम रखते तो एक क्षण के लिए भी पसन्द न करते कि एक इस्राईली नबी आकर आप (स.अ.व.) की उम्मत का सुधार करेगा । क्या कोई स्वाभिमानी अपने घर में सामान होते हुए दूसरे से माँगने जाता है, या सामर्थ्य होते हुए दूसरे को सहायता के लिए पुकारता है । वे ही मौलवी जो कहते हैं कि नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए तथा उसको कठिनाइयों से सुरक्षित रखने के लिए मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम आएँगे । अपने अस्तित्वों के लिए इतना स्वाभिमान प्रदर्शित करते हैं कि यदि बहस में पराजित भी हो रहे हों तो अपनी पराजय को स्वीकार नहीं करते और किसी दूसरे को अपनी सहायता के लिए बुलाना पसन्द नहीं करते और यदि कोई स्वयं उनकी सहायता के लिए तैयार हो जाए तो उसका उपकार मानने के स्थान पर उस से नाराज़ होते हैं कि क्या हम मूर्ख हैं कि तू हमारे मुख में कौर देता है, परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में किस लापरवाही से वर्णन करते हैं कि आपकी सहायतार्थ एक अन्य सिलसिले से नबी बुलवाया जाएगा और स्वयं आपकी

पवित्र शक्ति कुछ न कर सकेगी । आह ! क्या हृदय मर गए हैं या बुद्धि पर पत्थर पड़ गए हैं, क्या समस्त स्वाभिमान अपने ही लिए व्यय हो जाता है तथा ख़ुदा और उसके रसूल के लिए स्वाभिमान का कोई भाग शेष नहीं रहता, क्या सब क्रोध अपने शत्रुओं पर ही निकल जाता है तथा ख़ुदा और उसके रसूल पर आक्रमणकारियों के लिए कुछ शेष नहीं रहता ।

हम से कहा जाता है कि तुम एक इस्राईली नबी के आगमन के इन्कारी हो, परन्तु हम अपने हृदयों को कहाँ ले जाएँ और अपने प्रेम के चिन्हों को किस प्रकार मिटाएँ । हमें तो मुहम्मद रसूलुल्लाह के सम्मान से बढ़कर किसी और का सम्मान प्रिय नहीं । हम तो एक मिनट के लिए भी यह सहन नहीं कर सकते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किसी अन्य के उपकार के कृतज्ञ हों, हमारा हृदय तो एक मिनट के लिए भी इस विचार को सहन नहीं कर सकता कि प्रलय के दिन जब समस्त सृष्टि आदि से अन्त तक एकत्र होगी तथा गवाहों के सामने प्रत्येक के कर्म वर्णन किए जाएँगे, उस समय मुहम्मद रसूलुल्लाह का सर इस्राईली मसीह के उपकार से झुका जा रहा होगा और समस्त सृष्टि के सामने उच्च स्वर से फ़रिश्ते पुकार कर कहेंगे कि जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की पवित्र शक्ति जाती रही तो उस समय इस्राइली मसीह ने उन पर उपकार करके अपने लिए स्वर्ग से निकलना पसन्द किया और संसार में जाकर उन की उम्मत का सुधार किया तथा उसे तबाही से बचाया । हम तो इस बात को अधिक पसन्द करते हैं कि हमारी जीभें कट जाएँ उस की अपेक्षा कि ऐसी अपमानजनक बात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर सम्बद्ध करें, और हमारे हाथ शिथिल हो जाएँ बजाए इसके कि ऐसे वाक्य आप के पक्ष में लिखें । मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला के प्रिय हैं आप की पवित्र शक्ति कभी निष्फल नहीं हो सकती, आप (स.अ.व.) ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, आपकी दानशीलता कभी रुक नहीं सकती, आपका सर किसी के उपकार के आगे झुक नहीं सकता अपितु आप का उपकार समस्त नबियों पर है । कोई नबी नहीं जिसने आपको स्वीकार कराया हो तथा आपकी सच्चाई आप के इन्कार करने वालों से स्वीकार कराई हो, परन्तु क्या लाखों-करोड़ों लोग नहीं जिनसे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शेष नबियों की

नुबुव्वत स्वीकार कराई है । हिन्दुस्तान में आठ करोड़ मुसलमान बयान किए जाते हैं उनमें से बहुत ही कम हैं जो विदेश के रहने वाले हैं, शेष समस्त हिन्दुस्तान के निवासी हैं जो किसी नबी का नाम तक नहीं जानते थे, परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान लाकर इब्राहीम, मूसा और ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए हैं । यदि इस्लाम ने उनके घरों में प्रवेश न किया होता तो आज वे इन नबियों को गालियाँ दे रहे होते तथा उनको झूठे लोगों में से समझ रहे होते, जिस प्रकार कि उनके शेष भाई-बन्धुओं का आज तक विचार है । इसी प्रकार अफ़गानिस्तान के लोग और चीन के लोग और ईरान के लोग कब हज़रत मूसा(अ) और हज़रत ईसा(अ) को मानते थे उनसे उन नबियों का इक़रार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ही कराया है । अत: आपका समस्त पूर्वकालीन नबियों पर उपकार है कि उनकी सच्चाई लोगों पर गुप्त थी, आप ने उसे प्रकट किया, परन्तु आप पर किसी का उपकार नहीं। आप पर अल्लाह तआला वह दिन कभी नहीं लाएगा जब आप की वरदान बन्द हो जाए और कोई दूसरा नबी आ कर आप (स.अ.व.) का सुधार करे अपितु जब कभी भी आप की उम्मत को सुधार की आवश्यकता होगी अल्लाह तआला आप (स.अ.व.) ही के शिष्यों में से तथा आप ही के उम्मतियों में से ऐसे लोग जिन्होंने सब कुछ आप ही से लिया होगा और आप ही से सीखा होगा नियुक्त करेगा ताकि वे बिगड़े हुए लोगों का सुधार करें तथा भटके हुए लोगों को वापस लाएँ तथा उन लोगों का कार्य आप (स.अ.व.) ही का कार्य होगा क्योंकि शिष्य अपने गुरू से पृथक नहीं हो सकता और उम्मती अपने नबी से पृथक नहीं ठहराया जा सकता, उनकी गर्दनें आप के उपकार के आगे झुकी हुई होंगी तथा उनके हृदय आप (स.अ.व.) के प्रेम की मदिरा से भरे होंगे, उनके सर आप के अनुराग की मादकता से बेसुध होंगे ।

अत: किसी नबी के दोबारा आगमन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान है और इस से आप का वह पद मिथ्या हो जाता है जो अल्लाह तआला ने आपको प्रदान किया है । अल्लाह तआला फ़रमाता है إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ 25 **(इन्नल्लाहा ला युग़य्यिरो मा बिक़ौमिन हत्ता युग़य्यिरू मा बि अन्फुसेहिम)** अल्लाह

तआला किसी को कोई नेमत प्रदान करके छीना नहीं करता जब तक कि स्वयं उनके अन्दर कोई खराबी न उत्पन्न हो जाए । अब इस आस्था को मान कर या तो नाऊज़ुबिल्लाह यह मानना पड़ता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में कोई परिवर्तन हो गया है या फिर यह मानना पड़ता है कि अल्लाह तआला ने अपना वायदा तोड़ दिया तथा शेष लोगों से तो वह यह व्यवहार करता है कि उनको नैमत प्रदान करके वापस नहीं लेता, परन्तु मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से उसने इसके विपरीत व्यवहार किया है । ये दोनों बातें कुफ्र हैं क्योंकि एक में ख़ुदा तआला का इन्कार है और दूसरी में उस के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का । अतः हम इन कारणों से इसी प्रकार की आस्थाओं से अप्रसन्न हैं । हमारी आस्था है कि मसीह अलैहिस्सलाम जिन के आगमन का वायदा दिया गया है इसी उम्मत में से आने वाले हैं । यह ख़ुदा तआला का अधिकार है कि जिसे चाहे किसी पद पर सुशोभित करे ।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों से भी यही सिद्ध होता है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى[26] **(ललमहदी इल्ला ईसा)** ईसा के अतिरिक्त कोई महदी नहीं । दूसरी ओर फ़रमाते हैं كَيْفَ اَنْتُمْ اِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيْكُمْ وَاِمَامُكُمْ مِنْكُمْ[27] **(कैफ़ा अन्तुम इज़ा नज़ला फ़ीकुमुब्नो मरयमा व इमामोकुम मिन्कुम)** तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम में इब्ने मरयम उतरेगा और तुम्हारा इमाम तुम में से होगा । नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इन दोनों प्रवचनों को मिला कर देखें तो स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के समय में उनके अतिरिक्त कोई अन्य महदी नहीं और वह इस उममत के इमाम होंगे, परन्तु इसी उम्मत में से होंगे, कहीं बाहर से नहीं आएँगे । अतः यह विचार कि मसीह अलैहिस्सलाम कोई पृथक अस्तित्व होंगे और महदी पृथक अस्तित्व, मिथ्या विचार है तथा **'ललमहदी इल्ला ईसा'** के विरुद्ध है । मौमिन का काम यह है कि वह अपने स्वामी के कथनों पर विचार करे तथा जो भिन्नता उसे प्रत्यक्षतया दिखाई दे उसे अपनी समझ से दूर करे । यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक बार यह फ़रमाया है कि पहले महदी प्रकट होंगे फिर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

उतरेंगे जो महदी के अनुसरण में नमाज़ अदा करेंगे और दूसरी बार यह फ़रमाया है कि मसीह अलैहिस्सलाम ही महदी हैं तो क्या हमारा यह काम है कि आप के कथन का खण्डन करें या यह काम है कि दोनों पर विचार करें । यदि दोनों कथनों में से कोई समन्वय की स्थिति हो तो उसे अपना लें और यदि कोई थोड़ा सा विचार भी करेगा तो उसे ज्ञात हो जाएगा कि इन दोनों कथनों में समन्वय की सूरत भी है कि **'लल महदी इल्ला ईसा'** दूसरी हदीस की व्याख्या है अर्थात् पहले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो मसीह अलैहिस्सलाम के उतरने की सूचना ऐसे शब्दों में दी थी जिस से यह संदेह होता था कि वह पृथक-पृथक अस्तित्व हैं उसको **ललमहदी इल्ला ईसा** वाली हदीस से स्पष्ट कर दिया और बता दिया कि वह कलाम रूपक के तौर पर था उस से अभिप्राय केवल यह था कि उम्मते मुहम्मदिया (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत) का एक सदस्य पहले संसार के सुधार के लिए आदिष्ट किया जाएगा, परन्तु किसी रसूल का पद उसे नहीं दिया जाएगा, हाँ बाद में ईसा इब्ने मरयम के उतरने की भविष्यवाणी भी उस के पक्ष में पूरी की जाएगी और वह ईसा होने का दावा करेगा । इस प्रकार जैसे उसके दो भिन्न-भिन्न पदों के प्रकटन का समय वर्णन किया गया है । अर्थात् पहले सुधार का सामान्य दावा होगा फिर मसीहियत का दावा होगा। भविष्यवाणियों में इस प्रकार का कलाम सामान्य होता है अपितु यदि इस प्रकार के रूपक भविष्यवाणियों से पृथक कर दिए जाएँ तो उनका समझना ही बिल्कुल असंभव हो जाए ।

यदि उन हदीसों के यह अर्थ न किए जाएँ, तो दो बातों में से एक बात अवश्य स्वीकार करना पड़ेगी और वे दोनों ही ख़तरनाक हैं या तो यह मानना पड़ेगा कि **'लल महदी इल्ला ईसा'** वाली हदीस मिथ्या है और या यह मानना पड़ेगा कि इस हदीस का यह मतलब नहीं कि महदी का कोई पृथक अस्तित्व नहीं अपितु मसीह और महदी की श्रेणियों का मुकाबला किया गया है और बताया गया है कि वास्तविक महदी तो मसीह ही होंगे, दूसरा महदी तो उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं । जिस प्रकार कह देते हैं कि لَا عَالِمَ اِلَّا فُلَانٌ **(ला आलिमा इल्ला फुलानुन)** इस से यह अभिप्राय नही होता है कि यह अपने ज्ञान में दूसरों से इतना

अधिक है कि उसके मुकाबले में उनका ज्ञान तुच्छ हो जाता है । ये दोनों अर्थ ख़तरनाक परिणाम उत्पन्न करने वाले हैं, क्योंकि एक हदीस को अकारण मिथ्या कर देना भी खतरनाक है, विशेषकर ऐसी हदीस को जो अपने साथ साक्ष्य भी रखती है और यह कहना कि महदी मसीह के मुकाबले में कुछ भी महत्व न रखेंगे, उन हदीसों के विषयों के विपरीत है जिनमें उन्हें इमाम ठहराया गया है तथा मसीह को उनका अनुयायी । अत: इन अर्थों के अतिरिक्त कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की उम्मत में एक ऐसे अस्तित्व की सूचना दी गई है जो पहले सुधारक होने का दावा करेगा तदोपरांत मसीह मौऊद होने का । इन हदीसों के और कोई अर्थ नहीं हो सकते ।

मूल बात यह है कि लोगों को सारा धोखा इस बात से लगा है कि हदीस में 'नुज़ूल' (उतरना) का शब्द है तथा इस शब्द से समझ लिया गया है कि मसीह प्रथम ही दोबारा संसार में उतरेंगे । हालाँकि 'नुज़ूल' के वे अर्थ नहीं हैं जो लोग समझते हैं अपितु जब एक ऐसी वस्तु की चर्चा करते हैं जो लाभप्रद हो या फिर एक ऐसे परिवर्तन की चर्चा करते हैं जो बरकत वाली हो या ख़ुदा के प्रताप को प्रकट करने वाली हो तो अरबी भाषा में इसका अभिप्राय 'नुज़ूल' होता है । अत: अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है - ثُمَّ اَنۡزَلَ اللّٰهُ سَكِيۡنَتَهٗ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ 28 **(सुम्मा अन्ज़लल्लाहो सकीनतहू अला रसूलिही)** और फिर फ़रमाता है - ثُمَّ اَنۡزَلَ عَلَيۡكُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ الۡغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا 29 **(सुम्मा अन्ज़ला अलयकुम मिन बादिलग़म्मे अमनतन नुआसन)** और फ़रमाता है - وَاَنۡزَلَ لَكُمۡ مِّنَ الۡاَنۡعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزۡوَاجٍ 30 **(व अन्ज़ला लकुम मिनल अन्आमे समानियता अज़्वाजिन)** और फ़रमाता है -

قَدۡ اَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمۡ لِبَاسًا يُّوَارِىۡ سَوۡاٰتِكُمۡ وَرِيۡشًا ؕ وَلِبَاسُ التَّقۡوٰى ۙ
ذٰلِكَ خَيۡرٌ ؕ ذٰلِكَ مِنۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمۡ يَذَّكَّرُوۡنَ 31

(क़द अन्ज़ल्ना अलयकुम लिबासंय्युवारी सौआतेकुम व रीशा व लिबासुत्तक़्वा ज़ालिका ख़ैरुन् ज़ालिका मिन आयातिल्लाहे लअल्लहुम यज़्ज़क्करून) और फ़रमाता है وَاَنۡزَلۡنَا عَلَيۡكُمُ الۡمَنَّ وَالسَّلۡوٰى 32 **(व अन्ज़लना अलयकुमुलमन्ना वस्सल्वा)** और फ़रमाता है -

وَاَنۡزَلۡنَا الۡحَدِيۡدَ فِيۡهِ بَاۡسٌ شَدِيۡدٌ وَّ مَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعۡلَمَ اللّٰهُ مَنۡ يَّنۡصُرُهٗ
وَرُسُلَهٗ بِالۡغَيۡبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِىٌّ عَزِيۡزٌ 33

(व अन्ज़लनलहदीदा फ़ीहे बासुन शदीदुन व मनाफ़िओ लिन्नास व लिया'लमल्लाहो मंय्यन्सुरोहू व रुसुलहू बिलग़ैब इन्नल्लाहा क़विय्युन अज़ीज़ुन) और फ़रमाता है -

وَلَوۡ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزۡقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَلٰـكِنۡ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ
اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيۡرٌۢ بَصِيۡرٌ 34

(व लौ बसतल्लाहुर्रिज़्क़ा लिइबादिही ल बग़ौ फ़िलअर्ज़े वलाकिंय्युनज़्ज़िलो बिक़दरिम्मायशाओ इन्नहू बिइबादिही ख़बीरुन बसीर) अब यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि शान्ति हृदय में उत्पन्न की जाती है, निद्रा मानसिक क्रिया का नाम है और चौपाए, लिबास, खेतियाँ, बटेर, लोहा तथा संसार की शेष समस्त वस्तुएँ ऐसी ही हैं जो इसी पृथ्वी पर उत्पन्न होती हैं, आकाश से उतरती हुई न किसी ने देखी हैं और न उनका आकाश से उतरना क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध होता है, अपितु अल्लाह तआला स्पष्ट तौर पर क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है -

وَجَعَلَ فِيۡهَا رَوَاسِىَ مِنۡ فَوۡقِهَا وَبٰرَكَ فِيۡهَا وَقَدَّرَ فِيۡهَاۤ اَقۡوَاتَهَا فِىۡۤ
اَرۡبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيۡنَ 35

(व जअला फ़ीहा रवासिया मिन फ़ौक़िहा व बारका फ़ीहा व क़द्दरा फ़ीहा अक़्वातहा फ़ी अरबअते अय्यामिन सवाअन लिस्साइलीन) अर्थात् हमने पृथ्वी में उसके धरातल पर पर्वत उत्पन्न किए तथा पृथ्वी में बहुत से सामान उत्पन्न किए और उसमें हर प्रकार के आहार भी उत्पन्न किए । ये समस्त कार्य, पृथ्वी का उत्पन्न होना फिर उसमें हर प्रकार के पदार्थों और जानवरों का उत्पन्न होना चार समयों में पूर्ण हुआ और यह बात प्रत्येक प्रकार के प्रश्नकर्ताओं के लिए समान है । अर्थात् यह विषय यद्यपि बड़ी-बड़ी भौतिक समस्याओं और ज्ञान संबंधी बारीकियों को सम्मिलित किए हुए है जो कुछ तो इस युग में प्रकट हो चुकी हैं और कुछ भविष्य के युगों में प्रकट होंगी तथा उस के सन्दर्भ में नए-नए प्रश्न

उत्पन्न होंगे, परन्तु हम ने इसको ऐसे शब्दों में अदा कर दिया है कि प्रत्येक वर्ग तथा युग के लोग अपने-अपने ज्ञान और अपने-अपने युग की ज्ञान संबंधी उन्नति के अनुसार इसमें से उचित उत्तर प्राप्त कर लेंगे जो उनके लिए सन्तुष्टि का कारण होगा ।

अतः कुर्आन करीम से सिद्ध होता है कि ये सब पदार्थ जिनकी चर्चा कुर्आन करीम में 'अन्ज़लना' के शब्द के साथ हुई है आकाश से नहीं उतरीं अपितु अल्लाह तआला ने उन को इसी पृथ्वी में उत्पन्न किया है । अतः इसी प्रकार आने वाले मसीह के सम्बन्ध में भी शब्द 'नुज़ूल' (उतरना) उस के पद की प्रतिष्ठा और उसकी श्रेणी की महानता के लिए प्रयोग हुआ है, न कि इससे यह अभिप्राय है कि वास्तव में आकाश से उतरेगा । अतः स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में भी यह शब्द कुर्आन करीम में प्रयोग हुआ है और समस्त व्याख्याकार इससे आपके प्रतिष्ठा का प्रकटन अभिप्राय लेते हैं तथा वे ऐसा करने पर विवश हैं, क्योंकि समस्त लोग जानते हैं कि आप स.अ.व. मक्का शरीफ़ में कुरैश के एक सम्नाननीय घराने में उत्पन्न हुए और आप (स.अ.व.) के पिता का नाम अब्दुल्लाह था तथा आप की माता का नाम आमिना था । वह आयत जिसमें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के 'नुज़ूल' (उतरने) की चर्चा है यह है -

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۙ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ
لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ 36

(क़द अन्ज़लल्लाहो इलयकुम ज़िकरन रसूलन यतलूअलयकुम आयातिल्लाहे मुबय्यिनातिन लि युख़रिजल्लज़ीना आमनू व अमिलुस्सालिहाते मिनज़्ज़ुलुमाते इलन्नूर) अर्थात् अल्लाह तआला ने तुम पर 'ज़िक्र' अर्थात् रसूल नाज़िल किया (उतारा) जो तुम्हें अल्लाह की स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाता है ताकि मोमिनों और शुभकर्मियों को अन्धकारों से निकालकर प्रकाश की ओर लाए ।

कितने आश्चर्य की बात है कि एक ही शब्द रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में और मसीह के सम्बन्ध में प्रयोग किया जाता है, परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संबंध में उस के अर्थ और कर दिए जाते हैं तथा मसीह के सम्बन्ध में उसके और अर्थ कर दिए

जाते हैं । जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इसी पृथ्वी पर उत्पन्न हुए और आप के लिए 'नुज़ूल' का शब्द प्रयोग किया गया तो कौन से आश्चर्य की बात है । यदि यही शब्द आने वाले मसीह के लिए प्रयोग किया जाए और उस से अभिप्राय उसका उत्पन्न होना और अवतरण हो ।

तीसरा सन्देह यह किया जाता है कि हदीसों में आने वाले का नाम ईसा इब्ने मरयम रखा गया है । अतः इस से यह ज्ञात होता है कि बिल्कुल वही दोबारा पधारेंगे, परन्तु आरोप करने वाले यह नहीं सोचते कि उनके शेरों (कविता) में ईसा का शब्द दूसरों के सम्बन्ध में प्रयोग होता है परन्तु उसे ये आरोप योग्य नहीं समझते, परन्तु अल्लाह तआला के कलाम में यदि एक व्यक्ति का नाम भी ईसा रख दिया गया तो उस पर आश्चर्य होता है। फिर प्रतिदिन दानशील लोगों के सम्बन्ध में हातिमताई तथा दार्शनिक-मानसिकता रखने वालों के लिए 'आविष्कारक तूसी' तथा समस्याओं को निकालने की योग्यता रखने वालों के सम्बन्ध में 'फ़ख़्रे राज़ी' का शब्द प्रयोग करते हैं परन्तु इब्ने मरयम के शब्द उनके हृदयों में सन्देह उत्पन्न कर देते हैं। यदि इब्ने मरयम के शब्द निश्चय के अर्थ देते हैं तो क्या 'ताई' 'तूसी' और 'राज़ी' निश्चय के अर्थ नहीं देते ।' फिर यदि इन शब्दों के प्रयोग के बावजूद उनका यह अभिप्राय नहीं होता कि वह व्यक्ति वास्तव में 'तै' के कुटुम्ब का एक सदस्य है या 'तूस' या 'रे' का निवासी है तो इब्ने मरयम के शब्दों से क्यों यह परिणाम निकाला जाता है कि आने वाला ईसा इब्ने मरयम अल्लाह का नबी होगा जो आज से उन्नीस सौ वर्ष पूर्व गुज़र चुका है । हालाँकि 'तै' और 'तूस' और 'राज़ी' ऐसे नाम नहीं हैं जो काल्पनिक तौर पर किसी अन्य अर्थ में प्रयोग हों, परन्तु मरयम एक ऐसा नाम है जिसे एक विशेष परिस्थिति के प्रकटन हेतु क़ुर्आन करीम में प्रयोग किया गया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ آمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ وَمَرْيَمَ
ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِيْٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ
بِكَلِمَاتِ رَبِّهَا وَ كُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِيْنَ 37

(व ज़रबल्लाहो मसलन लिल्लज़ीना आमनुमरअता फ़िरऔना इज़ क़ालत रब्बिबने ली इन्दका बैतन फ़िलजन्नते व नज्जिनी मिन फ़िरऔना व अमलिही व नज्जिनी मिनल क़ौमिज़्ज़ालिमीन व मरयमब्नता इमरानल्लती अहसनत फ़र्जहा फ़नफ़ख़्ना फीहे मिन रूहिना व सद्दक़त बिकलिमाते रब्बिहा व कुतुबिही व कानत मिनल क़ानितीना) अर्थात् अल्लाह तआला मौमिनों का उदाहरण फ़िरऔन की पत्नी से देता है जबकि उसने कहा कि हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए स्वर्ग में अपने सानिध्य में एक घर बना तथा मुझे फ़िरऔन और उसके कार्यों से सुरक्षित रख और मुझे अत्याचारी क़ौम के पंजे से छुड़ा ले और या मौमिनों का उदाहरण मरयम पुत्री इमरान से देता है जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की । फिर हमने उसके हृदय पर अपना कलाम उतारा और उसने हमारी बातों और हमारी किताबों का सत्यापन किया और आज्ञाकारी लोगों में से हो गई । अत: जबकि मोमिन की एक अवस्था का नाम अल्लाह तआला मरयमी अवस्था रखता है और ऐसे मोमिन को 'मरयम' कहता है तो यदि किसी मौऊद (वादा दिया गया) के सम्बन्ध में अल्लाह तआला इब्ने मरयम के शब्दों को प्रयोग करता है तो क्या उसके यही अर्थ न होंगे कि वह इस मरयमी अवस्था से उन्नति करते-करते ईसवी अवस्था तक पहुँच जाएगा । उसका प्रारंभिक जीवन तो मरयम की भाँति पवित्र और निर्दोष होगा तथा उसका अन्तिम जीवन ईसा अलैहिस्सलाम की भाँति रूहुलक़ुदुस (पवित्र आत्मा) से समर्थित होगा और संसार के सुधार और सच्चाई को स्थापित करने में व्यय होगा ।

क़ुर्आन करीम के अर्थों पर विचार करना तथा उसके उद्देश्यों के समुद्र में डुबकी लगाकर अध्यात्मिक ज्ञान के रत्न निकालना तो इस युग के विद्वानों के लिए तो अवैध ही हो गया है । यदि वे इन्हीं ज्ञानों पर दृष्टि करते जो आध्यात्मिक विद्वानों ने क़ुर्आन-करीम पर विचार करके तथा नबियों के जीवन पर दृष्टि डाल कर तथा उन की बातों की ओर ध्यान देकर परिणाम निकाले हैं तथा अपनी किताबों में लिख दिए हैं, तब भी ये लोग ठोकर न खाते । हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी अपनी किताब 'अवारिफ़ुलमआरिफ' में लिखते हैं कि एक जन्म शारीरिक जन्म के अतिरिक्त होता है जिसे आन्तरिक जन्म कहते हैं तथा उसके समर्थन में

और भी किसी का नहीं स्वयं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कथन प्रस्तुत करते हैं । आप फ़रमाते हैं -

يَصِيْرُ الْمُرِيْدُ جُزْءَ الشَّيْخِ كَمَا اِنَّ الْوَلَدَ جُزْءُ الْوَالِدِ فِي الْوِلَادَةِ الطَّبْعِيَّةِ وَتَصِيْرُ هٰذِهِ الْوَلَادَةُ اٰنِفًا وِلَادَةً مَعْنَوِيَّةً كَمَا وَرَدَ عَنْ عِيْسٰى صَلٰوتُ اللّٰهِ عَلَيْهِ لَنْ يَلِجَ مَلَكُوْتَ السَّمَآءِ مَنْ لَّمْ يُوْلَدْ مَرَّتَيْنِ فَبِالْوِلَادَةِ الْاُوْلٰى يَصِيْرُ لَهٗ اِرْتِبَاطٌ بِعَالَمِ الْمَلَكِ وَبِهٰذِهِ الْوِلَادَةِ يَصِيْرُ لَهٗ اِرْتِبَاطٌ بِالْمَلَكُوْتِ قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرَاهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ 38

(यसीरुल मुरीदो जुज़्अश्शैख़े कमा इन्नल वलदा जुज़्उल वालिदे फ़िलविलादतित्तबइय्यते व तसीरो हाज़िहिल विलादतो आनिफ़न विलादतन मा'नविय्यतन कमा वरदा अन ईसा सलवातुल्लाहे अलयहे लंय्यलिजा मलकूतुस्समाए मन लम यूलद मर्रतयने फ़बिलविलादतिलऊला यसीरो लहू इरतिबातुन बिआलमिल मलके व बिहाज़िहिल विलादते यसीरो लहू इरतिबातुन बिलमलकूते क़ालल्लाहो तआला व कज़ालिका नुरी इब्राहीमा मलकूतस्समावाते वलअर्ज़े वलियकूना मिनल मूक़िनीना ।) अर्थात् मुरीद (अनुयायी) शैख़ का भाग हो जाता है जिस प्रकार भौतिक जन्म में पुत्र पिता का भाग होता है और यह जन्म उस समय आन्तरिक जन्म हो जाता है जिस प्रकार हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वर्णन करते हैं कि - ''कोई व्यक्ति आकाश की बादशाहत में प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वह दो बार जन्म न ले'' फिर शैख़ अपनी ओर से फ़रमाते हैं कि प्रथम जन्म से तो उसे भौतिक संसार से सम्बन्ध उत्पन्न हो जाता है और द्वितीय जन्म से उसे आध्यात्मिक संसार से सम्बन्ध उत्पन्न हो जाता है । अल्लाह तआला भी फ़रमाता है कि इसी प्रकार आकाश और पृथ्वी पर जो प्रभुत्व हमें प्राप्त है हम इब्राहीम को दिखाते थे ताकि वह विश्वास करने वाले लोगों में से हो जाए । शैख़ का कथन समाप्त ।

उपर्युक्त इबारत से स्पष्ट है कि शैख़ शहाबुद्दीन साहिब सहरवरदी के निकट प्रत्येक मनुष्य के लिए एक आन्तरिक जन्म आवश्यक है तथा वह

उसके समर्थन में एक तो क़ुर्आन करीम की आयत प्रस्तुत करते हैं और दूसरे हज़रत मसीह का एक कथन प्रस्तुत करते हैं । अत: जब आन्तरिक जन्म एक आवश्यक वस्तु है और हज़रत मसीह उसे आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक ठहराते हैं तो क्या मसीह के समरूप के लिए ही उस जन्म का अस्तित्व दुर्लभ और असंभव है ।

कथन का सारांश यह है कि हज़रत मसीह का दोबारा जीवित होकर आना अल्लाह तआला के वैभव और उस के कलाम के विरुद्ध है तथा उसके रसूल की महानता के विपरीत है तथा उसकी बातों के बिल्कुल ही विरुद्ध है । जिन बातों पर इस आस्था का आधार रखा गया है वह विचार की कमी के कारण उत्पन्न हुई हैं तथा चिन्तन की कमी का परिणाम हैं । मूल बात यही है कि इसी उम्मत में से एक व्यक्ति को मसीह के रंग में रंगीन होकर आना था और वह आ भी चुका, उसके वरदान से अधिकांश लोगों ने पथ-प्रदर्शन प्राप्त किया और बहुत से मार्ग से भटके हुए सीधे मार्ग पर आ गए ।

चौथा आरोप हम पर यह किया जाता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात् वह्यी और नुबुव्वत के सिलसिले को जारी समझते हैं । यह आरोप भी या तो सोच-विचार की कमी का परिणाम है या शत्रुता और वैर का । मूल बात यह है कि हमें तो शब्दों से कुछ लेना-देना नहीं, जिस बात में ख़ुदा और उसके रसूल का सम्मान हो, हमें तो वही पसन्द है । हम कभी एक पल के लिए भी इस बात को वैध नहीं समझते कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात कोई ऐसा व्यक्ति आए जो आप की रिसालत (पैग़म्बरी) को समाप्त कर दे तथा कलिमा और नया काबा बनाए तथा अपने साथ नई शरीअत लाए या शरीअत का कोई आदेश परिवर्तित कर दे या जो लोगों को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आज्ञापालन से निकालकर अपने आज्ञापालन में ले आए अथवा स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आज्ञा पालन से बाहर हो या कुछ भी लाभ उसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम के बिना प्राप्त हुआ हो । यदि ऐसा कोई व्यक्ति आए तो हमारे निकट इस्लाम असत्य और मिथ्या हो जाता है और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अल्लाह

तआला के जो वायदे थे झूठे हो जाते हैं, परन्तु हम इस बात को भी कभी पसन्द नहीं कर सकते कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्तित्व को ऐसा समझा जाए कि जैसे आप (स.अ.व.) ने ख़ुदा तआला के समस्त कल्याणों को रोक दिया है और आप (स.अ.व.) संसार के उत्थान में सहायक होने के स्थान पर उस के मार्ग की बाधा बन गए हैं और जैसे नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका आप (स.अ.व.) संसार को ख़ुदा तआला तक पहुँचाने के स्थान पर उसे अल्लाह तआला की प्राप्ति के उच्च पदों से वंचित करने वाले हैं । जिस प्रकार पहला विचार इस्लाम को तबाह करने वाला है उसी प्रकार यह दूसरा विचार भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्तित्व पर एक भयंकर आक्रमण है । हम न उसे स्वीकार करते हैं और न उसे सहन कर सकते हैं। हमारा विश्वास है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम संसार के लिए रहमत (दया) थे और हमारा दृढ़ विश्वास है कि यह बात प्रत्येक आँख रखने वाले को दिखाई दे रही है । आप स.अ.व. ने आकर संसार को आकाशीय लाभों से वंचित नहीं किया अपितु आप (स.अ.व.) के आने से अल्लाह तआला के वरदानों की निरन्तरता पहले से अत्यधिक हो गई है । यदि पहले वह एक नहर की तरह बहते थे तो अब एक नदी की भाँति बहते हैं, क्योंकि पहले ज्ञान अपनी पूर्णता को नहीं पहुँचा था और पूर्ण ज्ञान के अभाव में ख़ुदा को पहचानने का पूर्ण ज्ञान भी प्राप्त नहीं हो सकता और अब ज्ञान अपनी पूर्णता को पहुँच गया है । क़ुर्आन करीम में वह कुछ वर्णन किया गया है जो इस से पूर्व की किताबों में वर्णन नहीं किया गया था । अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कारण लोगों को ख़ुदा तआला को पहचानने में बढ़ोतरी प्राप्त हुई है और इसी बढ़ोतरी के कारण अब वे उन उच्च पदों पर पहुँच सकते हैं जिन पर पहले लोग नहीं पहुँच सकते थे और यदि यह ईमान न रखा जाए तो फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूसरे नबियों पर क्या श्रेष्ठता रह जाती है । अत: हम इस प्रकार की नुबुव्वत से तो इन्कारी हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पृथक होकर प्राप्त होती हो और इसी कारण हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात मसीह नासिरी[अ] के आगमन के इन्कारी हैं, परन्तु हम इस प्रकार की

नुबुव्वत का इन्कार नहीं कर सकते जिस से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सम्मान श्रेष्ठ होता हो ।

हे अमीर ! अल्लाह तआला आप के हृदय को प्रकाशों के उतरने का स्थल बनाए और आप के सीने को सत्य की स्वीकारिता के लिए विशाल करे । वही नुबुव्वत पहले नबी के सिलसिले को समाप्त कर सकती है जो शरीअत वाली नुबुव्वत हो और वही पहले नबी की शरीअत को निरस्त कर सकती है जो बिना माध्यम के प्राप्त हो, परन्तु जो नुबुव्वत कि पहले नबी के वरदान और उसके अनुसरण से प्राप्त हो और जिस का उद्देश्य पहले नबी की नुबुव्वत का प्रसार हो और उस की महानता तथा उसकी श्रेष्ठता का प्रकटन हो वह पहले नबी का अपमान करने वाली नहीं अपितु उसके सम्मान को प्रकट करने वाली है और इसी प्रकार की नुबुव्वत क़ुर्आन करीम से ज्ञात होती है और सद्बुद्धि इस बात को सिद्ध करती है कि इस प्रकार की नुबुव्वत इस उम्मत में प्राप्त हो सकती है, और यदि यह नुबुव्वत इस उम्मत को प्राप्त न हो तो फिर इस उम्मत को दूसरे नबियों की उम्मतों पर कोई श्रेष्ठता नहीं रहती ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मुहद्दिस हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उम्मत में भी बहुत से गुज़रे हैं।[39] अतः यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र शक्ति भी मनुष्य को मुहद्दिसियत के पद तक ही पहुँचा सकती है तो फिर आप को दूसरे नबियों पर क्या श्रेष्ठता रही और आप (स.अ.व.) समस्त लोगों के स्वामी और नबियों के सरदार क्योंकर ठहरे । नबियों में उत्तम होने के लिए आवश्यक है कि आप में कुछ ऐसे कौशल पाए जाएँ जो पहले नबियों में नहीं पाए जाते थे । हमारे निकट यह कौशल आप (स.अ.व.) में ही है कि पहले नबियों के उम्मती (अनुयायी) उनकी पवित्र शक्ति से केवल मुहद्दिसियत के पद तक पहुँच सकते थे परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उम्मती (अनुयायी) नुबुव्वत के पद तक भी पहुँच सकते हैं और यही आप की पवित्र शक्ति का कौशल है जो एक मोमिन के हृदय को आप (स.अ.व.) के प्रेम और आप के अनुराग की भावना से भर देता है ।

यदि आप (स.अ.व.) के आने से इस प्रकार की नुबुव्वत का भी

अन्त हो गया है तो आप की सहायता संसार के लिए एक प्रकोप बन जाती है तथा क़ुर्आन का अस्तित्व अलाभकारी हो जाता है । इस स्थिति में यह मानना पड़ेगा कि आप स.अ.व. के अवतरण से पूर्व तो मनुष्य बड़े-बड़े पदों तक पहुँच जाता था, परन्तु आप स.अ.व. के अवतरण के पश्चात उन्हें उन पदों की प्राप्ति से रोक दिया गया तथा यह मानना पड़ेगा कि क़ुर्आन करीम से पूर्व की किताबें तो नुबुव्वत का पद पाने में सहायक हुआ करती थीं अर्थात् उन के द्वारा मनुष्य उस स्थान तक पहुँच जाता था जहाँ से अल्लाह तआला उसे नुबुव्वत के पद के प्रशिक्षण हेतु चुन लेता था, परन्तु क़ुर्आन करीम का अनुसरण करके मनुष्य उस पद तक नहीं पहुँच सकता । यदि वास्तव में यह बात हो तो अल्लाह तआला के सच्चे उपासकों के हृदय ख़ून हो जाएँ और उन की कमरें टूट जाएँ क्योंकि वे तो समस्त संसारों के लिए दया (रहमत) और समस्त नबियों के सरदार के आगमन पर यह समझे बैठे थे कि अब हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए नए द्वार खुल जाएँगे और अपने प्रियतम, समस्त संसारों के प्रतिपालक के और भी निकट हो जाएँगे, परन्तु नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका, परिणाम यह निकला कि आप (स.अ.व.) ने आकर जो द्वार पहले खुले थे उनको भी बन्द कर दिया ।

क्या कोई मोमिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में इस प्रकार का विचार एक क्षण के लिए भी अपने हृदय में ला सकता है ? क्या कोई आप का प्रेमी एक क्षण के लिए भी इस आस्था पर क़ायम रह सकता है । ख़ुदा की सौगंध आप बरकत का एक समुद्र थे तथा आध्यात्मिक उन्नति का एक आकाश थे जिसकी विशालता को कोई नहीं पा सकता । आप स.अ.व. ने रहमत के द्वार बन्द नहीं कर दिए अपितु खोल दिए हैं । आप में और पूर्वकालीन नबियों में यह अन्तर है कि उनके शिष्य तो मुहद्दिसियत तक पहुँच सकते थे और नुबुव्वत का पद प्राप्त करने के लिए उनको अलग प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती थी, परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिष्यता में मनुष्य नुबुव्वत के पद तक पहुँच जाता है और फिर भी आप (स.अ.व.) का उम्मती (अनुयायी) रहता है तथा जितनी भी उन्नति करे आप स.अ.व. की ग़ुलामी से बाहर नहीं आ सकता । उसके पद की श्रेष्ठता उसे उम्मती

कहलाने से स्वतंत्र नहीं कर सकती अपितु वह अपनी श्रेणी की श्रेष्ठता के अनुसार आप के उपकार के भार के नीचे दबता चला जाता है, क्योंकि आप सानिध्य के उस स्थान तक पहुँच गए हैं जिस तक दूसरों की पहुँच नहीं हुई और आप (स.अ.व.) ने इतनी उच्चता को तय कर लिया है जिस तक दूसरों का हाथ तक नहीं पहुँचा और आप (स.अ.व.) की उन्नति इस तीव्रगति से जारी है कि कल्पना शक्ति भी उसका अनुमान लगाने से असमर्थ है । अतः आप (स.अ.व.) की उम्मत ने भी आपके क़दम बढ़ाने से क़दम बढ़ाया है तथा आप (स.अ.व.) के उन्नति कहने से उन्नति की है ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह पद जो ऊपर वर्णन हुआ है हमें विवश करता है कि हम इस प्रकार की नुबुव्वत का सिलसिला आप (स.अ.व.) के बाद जारी समझें क्योंकि इसमें आप (स.अ.व.) का सम्मान है और इसके बन्द करने में आप का घोर अपमान है । कौन नहीं समझ सकता कि योग्य शिक्षक का लक्षण यह है कि उसके योग्य शिष्य हों तथा महाराजा का लक्षण यह है कि उसके अधीन बड़े-बड़े शासक हों। यदि किसी शिक्षक के शिष्य निम्न स्तर के हैं तो उसे कोई योग्य शिक्षक नहीं कह सकता और यदि किसी राजा के अधीनस्थ निम्न श्रेणी के लोग हों तो उसे कोई महाराजा नहीं कह सकता। महाराजा संसार में सम्मान का पद है न कि अपमान और तिरस्कार का । इसी प्रकार वह नबी उन नबियों से बड़ा है जिसके अनुयायी नुबुव्वत का पद प्राप्त करते हैं और फिर भी उम्मती ही रहते हैं।

वास्तव में यह ग़लती जिस में इस समय के मुसलमान पड़ गए हैं (इस समय मैं इसलिए कहता हूँ कि पूर्वकालीन बुज़ुर्गों की किताबें इस ग़लत आस्था के विपरीत प्रकट कर रही हैं, जैसे हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह, हज़रत मुल्ला अली क़ारी और प्रकाण्ड विद्वान इब्ने क़य्यिम की किताबें, हज़रत मौलाना रूम की मस्नवी, हज़रत मुजद्दिद अलिफ सानी, शैख़ अहमद सरहिन्दी के पत्र इत्यादि) इस से उत्पन्न हुई है कि उन्होंने नुबुव्वत के अर्थ समझने में गलती की है तथा वे समझते हैं कि नबी वही होता है जो कोई नवीन शरीअत लाए अथवा पहली शरीअत के कुछ आदेशों को निरस्त करे या पहले नबी के आज्ञापालन से बाहर

हो, परन्तु मूल बात यह है कि ये बातें नबी के लिए आवश्यक नहीं । यह भी हो सकता है कि नबी इन तीनों प्रकारों में से किसी एक में सम्मिलित हो और यह भी हो सकता है कि एक व्यक्ति में ये तीनों बातें न हों । न वह कोई नवीन किताब लाए, न पहली शरीअत के किसी आदेश को निरस्त करे और न नुबुव्वत उसे सीधे तौर पर प्राप्त हो और फिर भी वह नबी हो, क्योंकि नुबुव्वत एक विशेष सानिध्यता के पद का नाम है । जिस पद पर पदासीन व्यक्ति का यह काम होता है कि वह संसार का सुधार करे और लोगों को ख़ुदा तआला की ओर खींच कर लाए और निराश हृदयों को जीवन प्रदान करे तथा शुष्क पृथ्वी को हरा भरा करे और ख़ुदा तआला की ओर से जो कलाम लोगों के पथ-प्रदर्शन के लिए उतरा हो उसे लोगों तक पहुँचाए और एक ऐसी जमाअत उत्पन्न करे जो अपने जीवन को सत्य के प्रचार में लगा दे तथा उसके उदाहरण को देखकर अपने हृदयों का सुधार करे और अपने कर्मों को ठीक करे ।

अत: नुबुव्वत का इन्कार नुबुव्वत के अर्थ को ग़लत समझने से उत्पन्न हुआ है अन्यथा कुछ प्रकार की नुबुव्वतें तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान घटाने के स्थान पर आप की शान बढ़ाने वाली हैं ।

कहा जाता है कि क़ुर्आन करीम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात नुबुव्वत का सिलसिला बन्द करता है क्योंकि फ़रमाता है مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ 40 **(मा काना मुहम्मदुन अबा अहदिम्मिन रिजालेकुम वलाकिन रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबिय्यीन)** कि मुहम्मद तुम में से किसी पुरुष के पिता नहीं हैं परन्तु अल्लाह के रसूल और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं । अत: अब कोई नबी नहीं आ सकता, परन्तु क़ुर्आन करीम खोल कर नहीं देखा जाता कि अल्लाह तआला ख़ातमन्नबिय्यीन 'त' को फ़तह (ज़बर) के साथ फ़रमाता है न कि कसरा (ज़ेर) के साथ । और ख़ातम 'त' की फ़तह (ज़बर) के अर्थ मुहर के होते हैं न कि खत्म (समाप्त) कर देने के । और मुहर सत्यापन के लिए लगाई जाती है । अत: इस आयत का अर्थ तो यह होगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नबियों की मुहर हैं । अत: इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह ने अपनी किताब सही बुख़ारी में ख़ातमन्नबिय्यीन का अर्थ नबियों की मुहर वाले नबी के ही किए हैं तथा

इस आयत की व्याख्या में वे हदीसें नकल की हैं जिन से ज्ञात होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुबारक शरीर पर एक नुबुव्वत की मुहर थी। [41]

काश लोग क़ुर्आन करीम के शब्दों पर विचार करते तो उनको यह धोखा न होता । यदि वे देखते कि इस आयत में विषय क्या वर्णन हो रहा है तो उन्हें ज्ञात हो जाता कि पहले इस आयत में यह बताया गया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं और फिर तत्पश्चात 'लाकिन' लाकर रसूल और ख़ातमन्नबिय्यीन के शब्द प्रयोग किए गए हैं । अब यह बात स्पष्ट है कि 'लाकिन' सन्देह को दूर करने के लिए आया करता है और यह बात प्रत्येक मुसलमान जानता है कि पहले वाक्य से यही सन्देह उत्पन्न हो सकता है कि सूरह कौसर में तो अल्लाह तआला फ़रमाता है - اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ[42] **(इन्ना शानिअका हुवल अबतर)** तेरा शत्रु ही **अबतर** (नर सन्तान से वंचित) है तू **अबतर** नहीं है और यहाँ स्वयं स्वीकार करता है कि आप (स.अ.व.) की नर सन्तान न होगी । अतः इस सन्देह के निवारण हेतु शब्द 'लाकिन' प्रयोग करके बताया कि इस वर्णन से कुछ लोगों के हृदयों में एक सन्देह उत्पन्न हो सकता है इस का हम निवारण कर देते हैं और वह इस प्रकार कि यद्यपि शारीरिक तौर पर यह पुरुषों में से किसी का पिता नहीं तो भी यह अबतर नहीं कहला सकता क्योंकि यह अल्लाह तआला का रसूल है । अतः इस का आध्यात्मिक सिलसिला विशाल होगा और इसकी आध्यात्मिक सन्तान असंख्य होगी फिर ख़ातमन्नबिय्यीन कह कर पहले विषय पर और उन्नति की कि न केवल बहुत से मोमिन उसकी सन्तान में होंगे अपितु यह नबियों की भी मुहर है । उसकी मुहर से मनुष्य नुबुव्वत के पद पर पहुँच सकेगा । अतः न केवल सामान्य लोगों का यह पिता होगा अपितु नबियों का भी पिता होगा । अतः इस आयत में तो इस प्रकार की नुबुव्वत का द्वार खोला गया है जो पहले वर्णन हो चुकी है न कि बन्द किया गया है। हाँ उस नुबुव्वत का द्वार निसन्देह इस आयत से बन्द कर दिया गया है जो नई शरीअत वाली हो या बिना माध्यम हो, क्योंकि वह नुबुव्वत यदि शेष हो तो उस से आप (स.अ.व.) की

आध्यात्मिक पितृता समाप्त हो जाएगी और उसको इस आयत में नकारा गया है ।

यह भी कहा जाता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - فَاِنِّیْ اٰخِرُ الْاَنْبِیَآءِ[43] **(फ़इन्नी आख़िरुल अंबियाए)** और इसी प्रकार यह फ़रमाया - لَانَبِیَّ بَعْدِیْ[44] **(ला नबिय्या बा'दी)** अत: इन हदीसों की दृष्टि से आप के पश्चात कोई नबी नहीं आ सकता, परन्तु खेद कि ये लोग आख़िरुलअंबिया को तो देखते हैं, परन्तु मुस्लिम की हदीस में जो इसके साथ ही وَاِنَّ مَسْجِدِیْ اٰخِرُ الْمَسَاجِدِ[45] **(व इन्ना मस्जिदी आख़िरुल मसाजिद)** आया है उसे नहीं देखते । यदि فَاِنِّیْ اٰخِرُ الْاَنْبِیَآءِ **(फ़इन्नी आख़िरुल अंबिया)** के अर्थ हैं कि आप के पश्चात् किसी प्रकार का नबी नहीं तो मस्जिदी आख़िरुल मसाजिद के भी यही अर्थ होंगे कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मस्जिद के पश्चात कोई मस्जिद नहीं बनवाई जा सकती, परन्तु वे ही लोग जो **'फ़इन्नी आख़िरुल अंबिया'** के शब्दों से सिद्ध करके हर प्रकार की नुबुव्वत को नकार देते हैं । वह مَسْجِدِیْ اٰخِرُ الْمَسَاجِدِ **(मस्जिदी आख़िरुल मसाजिद)** के शब्दों की मौजूदगी में न केवल और मस्जिदें बनवा रहे हैं अपितु इतनी मस्जिदें तैयार करा रहे हैं कि आज कुछ शहरों में मस्जिदों की बहुतात के कारण बहुत सी मस्जिदें खाली पड़ी हैं । कुछ स्थानों पर तो मस्जिदों में बीस-बीस गज़ का फ़ासला भी बड़ी मुश्किल से पाया जाता है । यदि आख़िरुल अंबिया के आने के कारण कोई मनुष्य नबी नहीं हो सकता तो **'आख़िरुल मसाजिद'** के पश्चात दूसरी मस्जिदें क्यों बनवाई जाती हैं ।

इस प्रश्न का उत्तर यह दिया जाता है कि ये मस्जिदें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ही मस्जिदें हैं, क्योंकि उन में उस ढंग पर उपासना की जाती है जिस ढंग की उपासना के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मस्जिद बनवाई थी । अत: प्रतिबिम्ब होने के कारण ये उस से पृथक नहीं हैं । इसलिए उस के आख़िर होने को नकारती नहीं । यह उत्तर ठीक है । परन्तु हम कहते हैं कि इसी प्रकार **'फ़इन्नी आख़िरुल अंबिया'** के बावजूद ऐसे नबी भी आ सकते हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए बतौर प्रतिबिम्ब के हों और जो बजाए नवीन शरीअत लाने के आप (स.अ.व.) ही की शरीअत

के अनुयायी हों तथा आप (स.अ.व.) की शिक्षा के प्रसार के लिए ही भेजे गए हों और सब कुछ उन को आप (स.अ.व.) ही के वरदान से प्राप्त हुआ हो। इस प्रकार के नबियों के आने से आप के आख़िरुलअंबिया होने में उसी प्रकार अन्तर नहीं आता जिस प्रकार आप की मस्जिद के नमूने पर नई मस्जिदों के तैयार कराने से आप (स.अ.व.) की मस्जिद के आख़िरुल मसाजिद होने में कोई अन्तर नहीं आता ।

इसी प्रकार 'ला नबिय्या बा'दी' के भी ये अर्थ नहीं कि आप (स.अ.व.) के अवतरण के पश्चात कोई नबी नहीं आ सकता अपितु इसके भी ये अर्थ हैं कि ऐसा नबी नहीं आ सकता जो आप की शरीअत को स्थगित करे, क्योंकि बाद वही वस्तु हो सकती है जो पहली के समाप्त होने पर आरंभ हो । अत: जो नबी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत के समर्थन के लिए आए वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नबी नहीं कहला सकता, वह तो आप (स.अ.व.) की नुबुव्वत के अन्दर है, बाद तो तब होता जब आप (स.अ.व.) की शरीअत का कोई आदेश स्थगित करता । बुद्धिमान मनुष्य का कर्त्तव्य होता है कि प्रत्येक विषय पर पूर्ण रूप से विचार करे और शब्दों की गहराई तक पहुँचे । शायद इन्हीं लोगों के सम्बन्ध में इसी प्रकार के धोखे में पड़ जाने का भय था, जिस के कारण हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा ने फ़रमाया कि قُوْلُوْا اِنَّهٗ خَاتَمُ الْاَنْبِيَآءِ وَلَا تَقُوْلُوْا لَا نَبِیَّ بَعْدَهٗ[46] **(क़ूलू इन्नहू ख़ातमुल अंबियाए वला तक़ूलू ला नबिय्या बा'दहू)** अर्थात् हे लोगो ! यह तो कहो कि आप (स.अ.व.) ख़ातमुन्नबिय्यीन थे, परन्तु यह न कहो कि आप के बाद कोई नबी न होगा । यदि हज़रत आइशा(रज़ि.) के निकट रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद किसी प्रकार का भी नबी नहीं आ सकता था तो आप(रज़ि.) ने لَا نَبِیَّ بَعْدَهٗ **(ला नबिय्या बा'दहू)** कहने से लोगों को क्यों रोका और यदि उनका विचार उचित न था तो क्यों सहाबा(रज़ि.) ने उनके कथन का खण्डन न किया । अत: उन का **'ला नबिय्या बा'दहू'** कहने से रोकना बताता है कि उनके निकट आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद नबी तो आ सकता था परन्तु शरीअत वाला नबी या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से स्वतंत्र (पृथक होकर) नबी नहीं आ सकता था और सहाबा(रज़ि.) का आप(रज़ि.) के कथन पर खामोश रहना बताता है कि शेष सभी

सहाबा(रज़ि.) भी उनकी भांति इस मसअले को मानते थे ।

खेद लोगों पर कि वे क़ुर्आन करीम पर विचार नहीं करते और स्वयं ठोकर खाते हैं और दूसरों की ठोकर का कारण भी बनते हैं, फिर खेद उन पर कि वे उन लोगों पर जो उनकी भाँति ठोकर नहीं खाते, क्रोधित होते हैं और उन्हें अधर्मी और काफ़िर समझते हैं परन्तु मोमिन लोगों की बातों से भयभीत नहीं होता । वह ख़ुदा की अप्रसन्नता से भयभीत होता है । मनुष्य दूसरे का क्या बिगाड़ सकता है वह अधिक से अधिक यह करेगा कि उसकी हत्या कर दे, परन्तु मोमिन मृत्यु से भयभीत नहीं होता। उसके लिए तो मृत्यु मित्र-मिलन का माध्यम होती है । काश ! यदि वे क़ुर्आन करीम पर विचार करते तो उन्हें ज्ञात हो जाता कि वह एक विशाल ख़ज़ाना है तथा एक न समाप्त होने वाला भण्डार है जो मनुष्य की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला है । उसके अन्दर आध्यात्मिक उत्थानों के इतने मार्ग वर्णन किए गए हैं कि उस से पूर्व की किताबों में उनका दसवां भाग भी वर्णन नहीं हुआ । यदि उन्हें यह बात ज्ञात हो जाती तो वे कुएँ के मेंढक की भाँति अपनी परिस्थितियों पर प्रसन्न न होते अपितु अल्लाह तआला के सानिध्य के मार्ग तलाश करने में क़दम मारते और यदि वे शब्दों की बजाए हृदयों के सुधार के महत्व को जानते तो प्रत्यक्ष ज्ञानों के पढ़ लेने पर संतोष न करते अपितु ख़ुदा तआला से सम्बन्ध उत्पन्न करने का प्रयास करते और यदि यह इच्छा उनके हृदय में उत्पन्न हो जाती तो फिर उन में यह जिज्ञासा भी उत्पन्न होती कि क़ुर्आन करीम ने किस सीमा तक मनुष्य के लिए उन्नति के मार्ग खोले हैं । तब उन्हें ज्ञात हो जाता कि वे एक छिल्के पर प्रसन्न होकर बैठ रहे थे और एक ख़ाली प्याला मुख से लगाकर मस्त होना चाहते थे । क्या कारण है कि वे सूरह फ़ातिहा पढ़ते हैं परन्तु उनके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न नहीं होती कि वे पुरस्कार (इनाम) जो उसके अन्दर वर्णन किए गए हैं हैं हमें भी प्राप्त हों । वे रात-दिन में पचास बार اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ○ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡهِمۡ 47 **(इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलयहिम)** पढ़ते हैं, परन्तु उनके हृदय में यह विचार जन्म नहीं लेता कि वह कौन सा पुरस्कार (इनाम) है जो हम मांग रहे हैं । यदि वे एक बार भी समझ कर नमाज़ पढ़ते तो

उन का हृदय इस विचार में पड़ जाता कि صِرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ **(सिरातल मुस्तक़ीम)** और صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ **(सिरातल्लज़ीना अनअम्ता अलयहिम)** से क्या अभिप्राय है और फिर उनका ध्यान स्वयं ही सूरह निसाअ की उन आयतों की ओर फिर जाता कि -

وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيْتًا ٥ وَّإِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّا اَجْرًا عَظِيْمًا ٥ وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ٥ وَّمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصّٰلِحِيْنَ وَحَسُنَ أُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ٥ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا 48

(व लौ अन्नहुम फ़अलू मा यूअज़ूना बिही लकाना ख़ैरल्लहुम व अशद्दा तस्बीतन व इज़ल्लआतयनाहुम मिल्ला दुन्ना अजरन अज़ीमन वलहदयनाहुम सिरातम्मुस्तक़ीमा व मंय्युतिइल्लाहा वर्रसूला फ़उलाइका मअल्लज़ीना अनअमल्लाहो अलयहिम मिनन्नबिय्यीना वस्सिद्दीक़ीना वश्शुहदाए वस्सालिहीन व हसुना उलाइका रफ़ीक़ा - ज़ालिकलफ़ज़्लो मिनल्लाहे व कफ़ा बिल्लाहे अलीमा)

अर्थात् यदि लोग इसी प्रकार अनुसरण करते जिस प्रकार उन से कहा जाता है तो उनके लिए अच्छा होता तथा उनके हृदयों को यह बात दृढ़ कर देती और इस स्थिति में हम उनको बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करते और हम उन्हें **सद्मार्ग दिखा देते और जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करेंगे वे उन लोगों में सम्मिलित होंगे, जिन पर हम ने इनाम किया है अर्थात् नबियों में, सदात्मा लोगों में, शहीदों में और सदाचारियों में ।** ये लोग अत्यन्त उत्तम मित्र हैं । यह अल्लाह तआला की अनुकम्पा है तथा अल्लाह भली भाँति जानने वाला है ।

इन आयतों से स्पष्ट है कि इनाम प्राप्त वर्ग का मार्ग दिखाने से अभिप्राय नबियों, सदात्मा लोगों, शहीदों और सदा-चारियों के वर्ग में सम्मिलित करना है । अत: जब कि अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से हमारा पथ-प्रदर्शन किया है कि हम दिन में लगभग चालीस बार उस से सदमार्ग हेतु प्रार्थना करें । वह

स्वयं सदमार्ग की व्याख्या यह करता है कि नबियों, सदात्माओं, शहीदों और सदाचारियों के वर्ग में सम्मिलित कर दिया जाए, तो किस प्रकार संभव है कि इस उम्मत के लिए नुबुव्वत का द्वार प्रत्येक प्रकार से बन्द हो । क्या यह उपहास नहीं बन जाता और क्या अल्लाह तआला की शान उपहास से श्रेष्ठतम नहीं । क्या यह सम्भव है कि वह एक ओर तो हम पर बल देकर कहे कि मुझसे नबियों, सदात्माओं, शहीदों और सदाचारियों के इनाम माँगो और दूसरी ओर स्पष्ट कह दे कि मैंने तो ये इनाम इस उम्मत पर हमेशा के लिए रोक दिया । कदापि नहीं, कभी नहीं, अल्लाह का अस्तित्व समस्त दोषों से पवित्र है तथा समस्त दुराचारों से पावन है । यदि उसने यह इनाम रोक दिया होता तो वह कभी सूरह फ़ातिहा में पुरस्कृत (इनाम प्राप्त) वर्ग के मार्ग की ओर पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना की शिक्षा न देता, और फिर कभी उस मार्ग की यह व्याख्या न करता कि हमारे इस रसूल के अनुसरण से मनुष्य नबियों के वर्ग में भी सम्मिलित हो जाता है ।

कहा जाता है कि सूरह निसाअ की आयत में مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ **(मअल्लज़ीना अनअमल्लाहो अलयहिम)** है न कि مِنَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ **(मिनल्लज़ीना अनअमल्लाहो अलयहिम)** । अतः इस से अभिप्राय यह है कि इस उम्मत के सदस्य नबियों के साथ होंगे न कि नबियों में सम्मिलित, परन्तु इस आरोप को प्रस्तुत करने वाले यह नहीं सोचते कि इस आयत में केवल नबियों की ही चर्चा नहीं अपितु उनके साथ ही सदात्माओं, शहीदों और सदाचारियों की भी चर्चा है और यदि مَعَ 'साथ' के कारण इस आयत के वे अर्थ हैं जो ये लोग करते हैं तो फिर साथ ही यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इस उम्मत में कोई सदात्मा भी नहीं होगा अपितु केवल कुछ लोग सदात्माओं के साथ रखे जाएँगे और शहीद भी कोई नहीं होगा, केवल कुछ लोग शहीदों के साथ रखे जाएँगे, सदाचारी भी कोई नहीं होगा, केवल कुछ लोग सदाचारियों के साथ रखे जाएँगे । दूसरे शब्दों में यह कि इस उम्मत के समस्त लोग नेकी और संयम की समस्त श्रेणियों से वंचित होंगे केवल इनाम में उन लोगों के साथ सम्मिलित कर दिए जाएँगे जो पहली उम्मतों में से इन श्रेणियों पर पहुँचे हैं परन्तु क्या कोई मुसलमान भी इस प्रकार का विचार हृदय में ला

सकता है । इससे अधिक इस्लाम और क़ुर्आन और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपमान क्या होगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से नेक लोग भी न हों अपितु केवल कुछ लोग नेक लोगों (सदात्माओं) के साथ सम्मिलित करके रख दिए जाएँ । अतः यदि 'साथ' के शब्द पर बल देकर नुबुव्वत का सिलसिला बन्द किया जाएगा तो फिर उसके साथ ही मुसलमानों के लिए सत्य-निष्ठा, वीरगति, और सच्चरित्रता का द्वार भी बन्द करना पड़ेगा ।

मूल बात यह है कि 'साथ' के अर्थ यही नहीं होते कि एक स्थान या एक युग में दो वस्तुओं की भागीदारी है अपितु कभी साथ श्रेणी में साझेदारी के लिए भी आता है । जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है -

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ٥ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا 49

(इन्नल मुनाफ़िक़ीना फ़िद्दरकिल अस्फले मिनन्नार – वलनतजिदा लहुम नसीरन – इल्लल्लज़ीना ताबू व असलहू वातसमू बिल्लाहे व अख़लसू दीनहुम लिल्लाहे फ़उलाइका मअलमौमिनीन व सौफ़ा यूतिल्लाहुल्मौमिनीना अज्रन अज़ीमन) अर्थात् निश्चय ही द्वयवादी (मुनाफ़िक़) नर्क के निचले तल में होंगे और तू किसी को उन का सहायक नहीं पाएगा, परन्तु उनमें से वे अपवादित हैं जिन्होंने तौबा कर ली और सुधार कर लिया तथा अल्लाह तआला को दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया और अपने धर्म को मात्र अल्लाह ही के लिए कर दिया तथा शुभ कर्म करने वालों तथा अल्लाह तआला ही के हो के रहने वालों और आज्ञा पालन को विशेष कर लेने वालों के संबंध में مَعَ الْمُؤْمِنِينَ **(मअलमौमिनीन)** के शब्द प्रयोग किए गए हैं । अतः यदि 'मआ' के अर्थ इस स्थान पर 'साथ' के लिए जाएँ तो उसका अर्थ यह होगा कि बावजूद इन सब बातों के वे मोमिन नहीं बनेंगे अपितु केवल मोमिनों के साथ रखे जाएँगे और यह बात स्पष्ट तौर पर मिथ्या है । अतः **'मआ'** के अर्थ कभी श्रेणी की साझेदारी के भी होते हैं और उन्हीं अर्थों में أُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم **उलाइका मअल्लज़ीना अनअमल्लाहो**

अलयहिम की आयत में यह शब्द प्रयोग हुआ है ।

क़ुर्आन करीम के और भी बहुत से स्थानों से ज्ञात होता है कि उस नुबुव्वत का द्वार इस उम्मत में खुला है जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत की प्रतिबिम्ब हो तथा आपकी नुबुव्वत के प्रसार के लिए तथा आपकी दासता और आज्ञा पालन से प्राप्त हो । अतः अल्लाह तआला सूरह आराफ़ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप की उम्मत की चर्चा के मध्य फ़रमाता है -

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطَانًا وَّأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ٥ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُونَ٥ يَا بَنِيْٓ اٰدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ اٰيَاتِيْ فَمَنِ اتَّقٰى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ50

(इन्नमा हर्रमा रब्बियल फ़वाहिशा मा ज़हरा मिन्हा वमा बतना वल इस्मा वल बग़या बिग़ैरिल हक़्क़े व अन्तुशरिकू बिल्लाहे मालम युनज़्ज़िल बिही सुल्तानन व अन तक़ूलू अलल्लाहे मा ला ता'लमून– वलिकुल्ले उम्मतिन अजल फ़इज़ा जाआ अजलोहुम ला यस्ताख़िरूना साअतन वला यस्तक़दिमून – या बनीआदमा इम्मा यातियन्नकुम रुसुलुम्मिन्कुम यकुस्सूना अलयकुम आयाती – फ़मनित्तक़ा व अस्लहा फ़ला ख़ौफ़ुन अलयहिम व ला हुम यहज़नून ।)

अर्थात् उनको कह दे कि मेरे रब्ब ने मुझ पर बुरी बातें जो चाहे प्रत्यक्षतः बुरी हों चाहे सूक्ष्म दृष्टि से उनकी बुराई ज्ञात हो, अवैध की हैं तथा पाप में ग्रसित होना, अवज्ञा करना जो अकारण होती है और अल्लाह तआला से द्वैतवाद करना जिसके लिए अल्लाह तआला ने कोई तर्क नहीं उतारा, तथा अल्लाह तआला के सम्बन्ध में ऐसी बातें कहना जिनकी सच्चाई का तुम्हें ज्ञान नहीं है अवैध की हैं और प्रत्येक जमाअत के लिए एक समय नियुक्त है । जब उनका समय आ जाता है तो वे उस से न एक पल पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं । हे आदम की सन्तान ! यदि तुम्हारे पास मेरे रसूल आएँ जो तुम ही में से हों और

तुम्हें मेरे निशान पढ़-पढ़ कर सुनाएँ तो जो लोग संयम धारण करेंगे और सुधार करेंगे उनको न भविष्य का भय होगा और न पिछली बातों का शोक होगा। इस आयत से स्पष्ट तौर पर प्रकट है कि इस उम्मत में से भी नबी आएँगे, क्योंकि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत की चर्चा में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम्हारे पास नबी आएँ तो उनको स्वीकार कर लेना अन्यथा कष्ट उठाओगे । यह नहीं कहा जा सकता कि यहाँ 'इम्मा' का शब्द आया है तथा यह शर्त को सिद्ध करता है । क्योंकि हज़रत आदम(अ) के निष्कासन की घटना के पश्चात भी अल्लाह तआला ने यही शब्द प्रयोग किया है । इसके अतिरिक्त यदि उसको शर्त भी समझ लिया जाए तो भी उससे यह तो ज्ञात हो जाता है कि अल्लाह तआला के निकट नुबुव्वत का सिलसिला बन्द नहीं क्योंकि यह अल्लाह तआला की शान के विरुद्ध है कि जिस बात को वह स्वयं नकार चुका हो उसका शर्त के तौर पर भी वर्णन करे ।

कुर्आन करीम की साक्ष्यों के अतिरिक्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम से भी यही ज्ञात होता है कि नुबुव्वत का द्वार क्वचित बन्द नहीं । अतः आने वाले मसीह को आपने बार-बार नबी के शब्द से स्मरण किया है। [51] यदि आप (स.अ.व.) के बाद किसी प्रकार की भी नुबुव्वत नहीं हो सकती थी तो आप ने मसीह को 'नबियुल्लाह' (ख़ुदा का नबी) कह कर क्यों सम्बोधित किया है ।

चौथा आरोप हम पर यह किया जाता है कि हम जिहाद के इन्कारी हैं । मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि मनुष्य इतना झूठ क्योंकर बोल सकता है, क्योंकि यह बात कि हम जिहाद के इन्कारी हैं बिल्कुल झूठ है। हमारे निकट तो जिहाद के बिना ईमान ही पूर्ण नहीं हो सकता। समस्त कमज़ोरी जो इस्लाम और मुसलमानों को पहुँची हैं और ईमान की कमज़ोरी अपितु उसका अभाव जो उन में दिखाई दे रहा है यह सब केवल जिहाद में आलस्य के कारण है । अतः यह कहना कि हम जिहाद के इन्कारी हैं हम पर मिथ्यारोप है । जब कुर्आन करीम के बीसियों स्थानों पर जिहाद की शिक्षा दी गई है तो एक मुसलमान होने तथा कुर्आन करीम के आसक्त होने की दृष्टि से हम जिहाद के इन्कारी कैसे हो सकते हैं । हाँ हम एक बात के अत्यन्त विरोधी हैं और वह

यह है कि इस्लाम के नाम पर रक्तपात, उपद्रव, देशद्रोह, डाका डालना तथा अपहरण किए जाएँ, क्योंकि इससे इस्लाम के सुन्दर मुखमंडल पर नितान्त कुरूप धब्बा लग जाता है । हम इस बात को सहन नहीं कर सकते कि लोभ, लालच, अहंवाद और स्वार्थपरता के लिए इस्लाम के पवित्र आदेशों को बिगाड़ा जाए । अतः हम जिहाद के इन्कारी नहीं हैं अपितु इस बात के विरोधी हैं कि कोई व्यक्ति अत्याचार और अन्याय का नाम जिहाद रख दे ।

हे अमीर ! आप इस बात को समझ सकते हैं कि यदि किसी के प्रियतम पर कोई आरोप लगाए तो प्रेमी को यह बात कितनी बुरी मालूम होती है और वह व्यक्ति जो इस आरोप लगाने का प्रेरक हो उसे उस पर कितना क्रोध आता है । हमें भी इन लोगों से शिकायत है जो इस्लाम को अपने नाम से बदनाम करते हैं, क्योंकि वे मुसलमान कहला कर इस्लाम से शत्रुता करते हैं । आज संसार इस्लाम को एक असभ्य धर्म तथा इस्लाम के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को एक अत्याचारी बादशाह समझता है। क्या इसलिए कि उसने रसूले करीम के जीवन में कोई ऐसी बात देखी है जो संयम और ईमानदारी के विरुद्ध है । नहीं, अपितु इस कारण से कि मुसलमानों ने अपने कर्मों से उस के मस्तिष्क में कुछ ऐसी बातें प्रविष्ट कर दी हैं कि वह उनको एक पल के लिए भी भुला नहीं सकता । मेरे निकट इन भयंकर अत्याचारों में से जो रसूले मक़बूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) पर किए गए हैं, एक यह अत्याचार है कि स्वयं मुसलमानों ने आप (स.अ.व.) को जो साक्षात दया थे जो एक चींटी को भी क्षति पहुँचाना पसन्द नहीं करते थे, इस्लाम के शत्रुओं के सामने ऐसे रूप में प्रस्तुत किया है कि उनके हृदय आप (स.अ.व.) से घृणा करने लगे हैं तथा उनके मस्तिष्क आप (स.अ.व.) के विरुद्ध विचारों से भर गए हैं ।

मैं चारों ओर से जिहाद-जिहाद का स्वर सुनता हूँ, परन्तु वह कौन सा जिहाद है जिसकी ओर ख़ुदा और उस का रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों को बुलाते थे और आज कौन सा जिहाद है जिसकी ओर लोगों को बुलाया जाता है । क़ुर्आन करीम हमें जिस जिहाद की ओर बुलाता है वह तो यह है कि فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا [52]

(फ़ला तुतिइलकाफ़िरीना व जाहिदहुम बिही जिहादन कबीरन) अर्थात काफ़िरों की बात स्वीकार न कर और इस क़ुर्आन के द्वारा काफ़िरों के साथ एक महान जिहाद कर, परन्तु आज क्या मुसलमान इसी क़ुर्आन द्वारा जिहाद की ओर लोगों को बुलाते हैं । कितने लोग हैं जो क़ुर्आन करीम हाथ में लेकर काफिरों के साथ जिहाद करने के लिए निकल खड़े हुए हैं, क्या इस्लाम और क़ुर्आन में कोई भी व्यक्तिगत जौहर नहीं जिस से वह लोगों के हृदयों को अपनी ओर आकर्षित कर सकें । यदि यह बात सत्य है तो फिर इस्लाम के सच्चे होने का क्या प्रमाण है । मनुष्यों के कलाम लोगों का हृदय वश में कर लेते हैं, परन्तु केवल ख़ुदा ही का कलाम ऐसा निष्प्रभावी है कि उसके द्वारा लोगों के हृदय नहीं जीते जा सकते इसलिए तलवार की आवश्यकता है जिस से लोगों को मनवाया जाए, परन्तु आज तक नहीं देखा गया कि तलवार द्वारा हृदयों पर विजय प्राप्त की जा सकी हो। इस्लाम तो इस बात को धिक्कारता है कि धर्म भय या लालच से स्वीकार किया जाए । अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है -

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ
لَرَسُوْلُهٗ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ 53

(इजा जाअकल मुनाफ़िक़ून क़ालू नशहदो इन्नका लरसूलुल्लाहे वल्लाहो यालमो इन्नका लरसूलोहू – वल्लाहो यशहदो इन्नल मुनाफ़िक़ीना लकाज़िबून) अर्थात् द्वयवादी जब तेरे पास आते हैं तो कहते हैं हम गवाही देते हैं कि तू अल्लाह का रसूल है और अल्लाह जानता है कि तू उसका रसूल है, परन्तु अल्लाह यह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ (द्वयवादी) झूठे हैं । यदि इस्लाम के प्रसार के लिए तलवार का जिहाद वैध होता तो क्या वे लोग जो इस्लाम को स्वीकार कर चुके थे, परन्तु हृदय में द्वयवादी थे उनकी चर्चा क़ुर्आन करीम इन शब्दों में करता जो ऊपर वर्णन हुए हैं, क्योंकि इस परिस्थिति में तो ये लोग जैसे क़ुर्आनी शिक्षा का परिणाम होते । कौन आशा कर सकता है कि तलवार के साथ वह निश्छल लोगों की जमाअत उत्पन्न कर लेगा । अत: यह बात ग़लत है कि इस्लाम तलवार द्वारा अन्य धर्म वालों को इस्लाम में दाखिल करने का आदेश देता है। इस्लाम तो सबसे पहला धर्म है जो यह कहता है

कि धर्म के सम्बन्ध में स्वतंत्रता होनी चाहिए । अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है لَاۤ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ 54 **(ला इकराहा फ़िद्दीन क़द तबय्यनरुश्दो मिनल ग़य्ये)** धर्म के मामले में कोई बल प्रयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि हिदायत (पथ-प्रदर्शन) गुमराही (पथ-भ्रष्टता) से स्पष्ट हो गई है । अत: प्रत्येक व्यक्ति तर्कों के साथ सत्य को स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने का अधिकार रखता है । इसी प्रकार फ़रमाता है -

وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ 55

(व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीना युक़ातिलूनकुम वला ता'तदू – इन्नल्लाहा ला युहिब्बुल मौ'तदीन) और धर्म की लड़ाई उन लोगों से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं, परन्तु यह ध्यान रखो कि अत्याचार न कर बैठो। अत: जब कि इस्लाम केवल उन से ही धार्मिक युद्ध करने की आज्ञा देता है जो धर्म के नाम पर मुसलमानों से युद्ध करें तथा मुसलमानों को बलपूर्वक इस्लाम से विमुख करना चाहें और उनके सम्बन्ध में भी यह आदेश देता है कि अत्याचार न करो अपितु यदि वे रुक जाएँ तो तुम भी इस प्रकार की लड़ाई को त्याग दो । तो फिर यह क्योंकर कहा जा सकता है कि इस्लाम का आदेश है कि अन्य धर्म वालों से अपने धर्म के प्रसार के लिए युद्ध करो। अल्लाह तआला तो विभिन्न धर्मों को नष्ट करने के लिए नहीं अपितु विभिन्न धर्मों की सुरक्षा के लिए युद्ध की आज्ञा देता है। जैसा कि फ़रमाता है -

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ o نِ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ 56

(उज़िना लिल्लज़ीना युक़ातलूना बिअन्नहुम ज़ुलिमू व इन्नल्लाहा अला नसरेहिम लक़दीरुन अल्लज़ीना उख़रिजू मिन दियारेहिम बिग़ैरे हक़्क़िन इल्ला अंय्यक़ूलू रब्बुनल्लाह – व लौला दफ़उल्लाहिन्नासा

बाज़ाहुम बिबाज़िन लहुद्दिमत सवामिओ व बियउन व सलवातुन व मसाजिदो युज़करो फ़ी हस्मुल्लाहे कसीरन वलयन्सुरन्नल्लाहो मंय्यन्सुरहू इन्नल्लाहा लक़विय्युन अज़ीज़ ।) अर्थात आज्ञा दी गई है उन लोगों को जिन से अकारण युद्ध किया जाता है युद्ध की, इसलिए कि उन पर अत्याचार किया गया है और अल्लाह तआला उनकी सहायता करने पर सामर्थ्यवान है । ये वे लोग हैं जो अपने घरों से निर्दोष निकाले गए हैं, उन का कोई दोष न था सिवाए इस के कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा पालने वाला है और यदि अल्लाह तआला कुछ लोगों के द्वारा कुछ लोगों का हाथ न रोकता तो ईसाइयों के गिरजा घर, बैरागियों के एकान्तवास, यहूदियों के सिनेगाग और मस्जिदें जिन में अल्लाह तआला का नाम बाहुल्य के साथ लिया जाता है गिरा दी जातीं, और अल्लाह तआला उसकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करेगा । अल्लाह तआला शक्तिशाली और बलवान है ।

यह आयतें कितने स्पष्ट शब्दों में बताती हैं कि धार्मिक युद्ध तभी वैध हैं जबकि कोई क़ौम **'रब्बुनल्लाह'** (अल्लाह ही हमारे पालने वाला है) कहने से रोके अर्थात धर्म में हस्तक्षेप करे तथा उनका उद्देश्य यह नहीं कि अन्य जातियों के उपासना-गृहों को उनके द्वारा गिराया जाए और उनसे उनके धर्म का त्याग कराया जाए या उनकी हत्याएँ की जाएँ अपितु उनका उद्देश्य यह है कि उन के द्वारा समस्त धर्मों के उपासना-गृहों को स्थापित रखा जाए और यही उद्देश्य इस्लामी शिक्षा के अनुकूल है, क्योंकि इस्लाम संसार में साक्षी और रक्षक के तौर पर आया है न कि अत्याचारी और अन्यायी के ।

अत: जिहाद जिसकी इस्लाम ने आज्ञा दी है यह है कि उस जाति के विरुद्ध युद्ध किया जाए जो लोगों को इस्लाम से बलपूर्वक विमुख करे या उसमें प्रवेश करने से बलपूर्वक रोके तथा इसमें सम्मिलित होने वालों को केवल इस्लाम को स्वीकार करने के अपराध में क़त्ल करे, उस जाति के अतिरिक्त दूसरी जाति से जिहाद नहीं हो सकता । यदि युद्ध होगा तो केवल राजनैतिक और देश के लिए युद्ध होगा जो दो मुसलमान क़ौमों में भी परस्पर हो सकता है ।

यह अत्याचारपूर्ण युद्ध जो कई बार डाका और रक्तपात से अधिक

और कुछ नहीं होता, दुर्भाग्य से मुख्य धर्मों से इस्लाम में आया है अन्यथा इस्लाम में उसका नामोनिशान तक नहीं था तथा सबसे अधिक इस आस्था के प्रसार का आरोप ईसाइयों पर है जो आज इसके कारण सब से अधिक मुसलमानों पर ऐतिराज़ करते हैं । मध्य की शताब्दियों में इस प्रकार के धार्मिक युद्दों की इतनी चर्चा थी कि सम्पूर्ण यूरोप कई प्रकार के युद्धों में व्यस्त रहता था। एक ओर ये मुसलमानों की सीमाओं पर इसी प्रकार छापे मारते रहते थे जिस प्रकार आज अर्धस्वतंत्र सरहदी (सीमा पर रहने वाले) ख़ानदान हिन्दुस्तानी सीमाओं पर आक्रमण कर रहे हैं तथा दूसरी ओर यूरोप की उन जातियों पर आक्रमण कर रहे थे जो उस समय तक ईसाइयत में प्रविष्ट नहीं हुई थीं । उन अत्याचारपूर्ण आक्रमणों में ख़ुदा तआला की प्रसन्नता समझते थे । मालूम होता है जैसा कि नियम है क्रोध में आकर मनुष्य की बुद्धि पर पर्दा पड़ जाता है, मुसलमानों ने ईसाइयों की इन चालों से प्रभावित होकर स्वयं भी उन्हीं की तरह छापे मारने आरंभ कर दिए हैं तथा अपने धर्म की शिक्षा को अन्ततः बिल्कुल ही भुला बैठे हैं यहाँ तक कि वह युग आ गया कि वे ही जो उन के गुरू थे उन पर ऐतिराज़ करने लग गए, परन्तु खेद यह है कि बावजूद आरोपों के फिर भी मुसलमान नहीं समझते । आज सारे संसार में इस्लाम के विरुद्ध यही हथियार प्रयोग किया जाता है, परन्तु मुसलमानों की आँखें नहीं खुलतीं, वे शत्रु के हाथ में तलवार पकड़ा रहे हैं कि इसे लो और इस्लाम पर आक्रमण करो । वे नहीं देखते कि ये अत्याचारपूर्ण युद्ध जिनका नाम जिहाद रखा जाता है इस्लाम के हित में न होकर उसे हानि पहुँचा रहे हैं। वह कौन सी शक्ति है जिसने इस हथियार द्वारा विजय प्राप्त की हो। युद्ध में संख्या काम नहीं आया करती अपितु कौशल, व्यवस्था, शिक्षा, सामान, उत्तेजना और दूसरी जातियों की सहानुभूति काम आती है। कुछ छोटी-छोटी जातियां इन बातों के कारण बड़ी-बड़ी सरकारों को पराजित कर देती हैं और यदि यह बातें न हों तो बड़ी-बड़ी सेनाएँ भी कमज़ोर और अलाभकारी होती हैं । अतः उचित होता कि मुसलमान अपनी सुरक्षा के लिए उन साधनों को प्राप्त करने का प्रयास करते न कि जिहाद का ग़लत अर्थ लेकर इस्लाम को बदनाम करते तथा स्वयं भी हानि सहन करते, क्योंकि जब लोगों को यह ज्ञात हो जाए कि कोई जाति

अपने धर्म की आड़ में सांसारिक युद्ध करती है तो समस्त जातियां उस के विरोध में एकत्र हो जाती हैं, क्योंकि वे इस से ऐसा खतरा महसूस करती हैं, जिस से न्यायवान से न्यायवान सरकार भी सुरक्षित नहीं रह सकती, अन्य धर्म की प्रत्येक सरकार विचार कर लेती है कि मैं इस से कितना भी उचित व्यवहार करूँ मुझे इससे शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती क्योंकि इस का युद्ध अन्याय या उपद्रव के आधार पर नहीं अपितु धर्म के मतभेद के कारण है ।

अत: हम जिहाद के इन्कारी नहीं अपितु जिहाद के उन ग़लत अर्थों के विरोधी हैं जिस से इस समय इस्लाम को अत्यन्त आघात पहुँचा है । हमारे निकट मुसलमानों की उन्नति का रहस्य इस समस्या के समझने में छुपा हुआ है । यदि वे इस बात को भली-भाँति समझ लें कि जिहाद कबीर[57] (बड़ा जिहाद) क़ुर्आन करीम के माध्यम से हो सकता है न कि तलवार से, और यदि वे समझ लें कि धर्म का मतभेद किसी के प्राण या उसके माल अथवा उस की प्रतिष्ठा[58] को कदापि वैध नहीं कर देता, तो उनके हृदयों में इस प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न हो जाएँ जिस से स्वयं उनको सद्मार्ग पर चलने की ओर ध्यान हो और

لَيۡسَ الۡبِرُّ بِاَنۡ تَاۡتُوا الۡبُیُوۡتَ مِنۡ ظُهُوۡرِهَا وَلٰكِنَّ الۡبِرَّ مَنِ اتَّقٰی ۚ وَاۡتُوا الۡبُیُوۡتَ مِنۡ اَبۡوَابِهَا ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ[59]

(लैसलबिर्रो बिअन तातुल बुयूता मिन ज़ुहूरिहा वलाकिन्नल बिर्रा मनित्तक़ा वातुलबुयूता मिन अबवाबिहा वत्तक़ुल्लाहा लअल्लकुम तुफ़लिहून) पर कार्यरत होकर उन्नति के सही उद्देश्य को समझें और उन पर कार्यरत हों ।

हे बादशाहे अफ़ग़ानिस्तान ! जिस प्रकार आप के नाम में अमान (अमन, शान्ति) की ओर संकेत है, इसी प्रकार ख़ुदा करे कि आप के द्वारा अफ़ग़ानिस्तान देश और सीमाओं पर शान्ति स्थापित हो । मैंने सैद्धान्तिक तौर पर जमाअत अहमदिया की आस्थाएँ तथा उन पर होने वाले आरोप और उनके उत्तर बता दिए हैं । अब मैं चाहता हूँ कि संक्षेप में सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब[अ] के दावे तथा उसके सबूतों के संबंध में भी कुछ वर्णन करूँ, ताकि अल्लाह

तआला के समक्ष सफल ठहरूँ कि मैंने उस का संदेश आपको पहुँचा दिया था और ताकि आप अल्लाह तआला की इच्छा पर सूचना पाकर उसके अनुसार कार्य करने का प्रयास करें और अल्लाह तआला की अनुकम्पाओं के उत्तराधिकारी हों तथा उसके प्रेम को आत्मसात करें ।

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का दावा

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का दावा था कि आप को अल्लाह तआला ने प्रजा के पथ-प्रदर्शन और हिदायत के लिए अवतरित किया है और यह कि आप वही मसीह हैं जिन की चर्चा हदीसों में आती है और वही महदी हैं जिन का वादा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा दिया गया है । आप उन समस्त भविष्यवाणियों को पूर्ण करने वाले हैं जो विभिन्न धर्मों की किताबों में एक सुधारक के सम्बन्ध में, जो अन्तिम युग में प्रकट होगा चर्चित हैं, और यह कि आपको अल्लाह तआला ने इस्लाम की सहायता और समर्थन के लिए भेजा है तथा क़ुर्आन करीम का ज्ञान आप(अ) को प्रदान किया है, उसके आध्यात्मिक ज्ञान और उसकी वास्तविकताएँ आप पर प्रकट की हैं, संयम के सूक्ष्म मार्गों से आपको अवगत किया है, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वैभव और महानता के प्रकटन का कार्यभार आप के सुपुर्द किया है तथा इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजयी करने की सेवा आप के सुपुर्द की है, आप को संसार में इसलिए भेजा है ताकि संसार को बताएँ कि वह इस्लाम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम रखता है तथा लोगों का उन से दूर रहना और लापरवाह रहना उसे रुचिकर नहीं ।

इसी प्रकार आप का यह दावा था कि चूँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सम्पूर्ण संसार की ओर अवतरित हुए थे तथा अल्लाह तआला की इच्छा थी कि सम्पूर्ण संसार को आप के हाथ पर एकत्र करे । इसलिए अल्लाह तआला समस्त धर्मों के पूर्वकालीन बुज़ुर्गों के मुख से

अन्तिम युग में उसी धर्म के एक पूर्वकालीन नबी के दोबारा आगमन की भविष्यवाणी करा दी थी ताकि जातिगत घृणा खातमुन्नबिय्यीन अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने में बाधित न हो । इन भविष्यवाणियों में वास्तव में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक उम्मती आदिष्ट (मामूर) की सूचना दी गई थी ताकि उसके द्वारा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का सत्यापन होकर समस्त धर्म आप के हाथ पर एकत्र हो जाएँ । अतः ये समस्त भविष्यवाणियाँ आप के आने से पूर्ण हो गईं तथा आप ईसाइयों और यहूदियों के लिए मसीह, ज़रतश्तियों के लिए मसियोदरबहमी और हिन्दुओं के लिए कृष्ण के समरूप होकर आए हैं ताकि समस्त धर्मावलम्बियों पर उन्हीं की किताबों से आपका सत्य होना सिद्ध हो फिर आप के माध्यम से इस्लाम की सच्चाई का ज्ञान होकर वे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दासता की परिधि में बांधे जाएँ ।

आप के दावे के सबूत

आप के दावे को संक्षिप्त शब्दों में वर्णन कर देने के पश्चात् मैं सैद्धान्तिक तौर पर इस बात के संबंध में कुछ वर्णन कर देना उचित समझता हूँ कि एक ख़ुदा की ओर से आदिष्ट (मामूर) के दावे की सच्चाई के क्या सबूत होते हैं, फिर यह कि उन सबूतों द्वारा आपके दावे पर क्या प्रकाश पड़ता है, क्योंकि जब यह सिद्ध हो जाए कि एक व्यक्ति वास्तव में ख़ुदा की ओर से आदिष्ट है तथा उसी की ओर से भेजा हुआ है तो फिर संक्षिप्त तौर पर उसके समस्त दावों पर ईमान लाना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि सद्‌बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती कि एक व्यक्ति ख़ुदा तआला का आदिष्ट (मामूर) भी हो और लोगों को धोखा देकर सत्य से दूर भी ले जाता हो । यदि ऐसा हो तो यह अल्लाह तआला के ज्ञान पर एक बड़ा प्रहार होगा और सिद्ध होगा कि हम इस बात से ख़ुदा की शरण चाहते हैं, उसने अपने चुनाव में बहुत बड़ी ग़लती की और एक ऐसे व्यक्ति को अपना आदिष्ट (मामूर) बना दिया जो हृदय से अपवित्र और दूषित था तथा सत्य और सत्यता के प्रसार के स्थान पर

अपनी महानता और सम्मान चाहता और अल्लाह तआला के अस्तित्व पर स्वयं को प्रमुखता देता था ।

इसके अतिरिक्त कि यह आस्था सद्‌बुद्धि के विरुद्ध है, क़ुर्आन करीम भी इसे मिथ्या ठहराता है क्योंकि अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है कि -

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّؤْتِيَهُ اللّٰهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبَّانِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝ وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ60

(मा काना लिबशरिन अंय्यूतियहुल्लाहुलकिताबा वलहुक्मा वन्नुबुव्वता सुम्मा यक़ूलो लिन्नासे कूनू इबादन ली मिन दूनिल्लाहे वलाकिन कूनू रब्बानिय्यीना बिमा कुन्तुम तुअल्लिमूनलकिताबा व बिमा कुन्तुम तदरुसून – वला यामुराकुम अन तत्तख़िज़ुलमलाइकता वन्नबिय्यीना अरबाबन अयामुरोकुम बिलकुफ़्रे बादा इज़ अन्तुम मुस्लिमून) यह नहीं हो सकता कि एक व्यक्ति को अल्लाह तआला किताब, आदेश और नुबुव्वत देकर भेजे और फिर वह लोगों से यह कहे कि ख़ुदा को त्याग कर मेरे बन्दे (दास) बन जाओ अपितु वह तो यही कहेगा कि ख़ुदा तआला के हो जाओ इस कारण कि तुम ख़ुदा के कलाम (वाणी) की लोगों को शिक्षा देते हो और पढ़ते हो, और न यह हो सकता है कि ऐसा व्यक्ति लोगों से यह कहे कि फ़रिश्तों या नबियों को रब्ब समझ लो क्योंकि यह संभव नहीं कि वह प्रयास करके लोगों को मुसलमान बनाए और फिर उन्हें काफ़िर कर दे ।

अत: मूल प्रश्न यह उठता है कि मामूरियत (आदिष्टता) का दावा करने वाला वास्तव में सच्चा है या नहीं ? यदि उसकी सच्चाई सिद्ध हो जाए तो उसके समस्त दावों का सत्य भी साथ ही सिद्ध हो जाता है और यदि उसका सत्य होना ही सिद्ध न हो तो उसके संबंध में विवरण में पड़ना समय को नष्ट करना है । अत: मैं इसी सिद्धान्त के अनुसार आप के दावे पर दृष्टि डालना चाहता हूँ, ताकि आप मान्यवर को उन सबूतों से संक्षिप्त रंग में ज्ञान प्राप्त हो जाए जिन के आधार पर आपने इस दावे

को प्रस्तुत किया है और जिन पर दृष्टि डालते हुए लाखों लोगों ने आप को इस समय तक स्वीकार किया है ।

प्रथम सबूत

समय की आवश्यकता (समय की मांग)

सब से पहला सबूत जिस से किसी मामूर (आदिष्ट) की सच्चाई सिद्ध होती है वह 'युग की आवश्यकता' है । अल्लाह तआला का नियम है कि वह अनुचित और कुसमय कोई कार्य नहीं करता, जब तक किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं होती वह उसे नहीं उतारता । जब किसी वस्तु की वास्तव में आवश्यकता उत्पन्न हो जाए तो वह उसे रोक कर नहीं रखता। मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं में से कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसे अल्लाह तआला ने उपलब्ध न किया हो । उसकी छोटी से छोटी आवश्यकता पूर्ण कर दी है । अत: जब कि उसने सांसारिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने की इतनी व्यवस्था की है तो यह उसकी प्रतिष्ठा, उसकी श्रेष्ठता के विरुद्ध है कि वह उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं का ध्यान न रखे तथा उन्हें पूर्ण करने के लिए कोई साधन उत्पन्न न करे । यद्यपि कि शरीर एक नश्वर वस्तु है और उसके कष्ट अस्थायी हैं, उसकी उन्नति सीमित है तथा इस के मुक़ाबले में मानव आत्मा (रूह) के लिए हमेशा का जीवन नियुक्त किया गया है, उसके कष्ट एक असीम अवधि तक लम्बे हो सकते हैं तथा उसकी उन्नति के मार्ग मानव-बुद्धि की सीमा से अधिक हैं ।

जो व्यक्ति भी उस प्रकाश की सहायता से ख़ुदा तआला की विशेषताओं पर दृष्टि डालेगा जो क़ुर्आन करीम से प्राप्त होती हैं वह कभी इस बात को स्वीकार नहीं करेगा कि प्रजा की आध्यात्मिक परिस्थिति तो किसी सुधारक की मुहताज हो, परन्तु अल्लाह तआला की ओर से कोई ऐसा प्रबन्ध न किया जाए जिसके द्वारा उसकी आवश्यकता पूर्ण हो सके । यदि ऐसा हो तो मनुष्य का जन्म ही निरर्थक हो जाता है । परन्तु अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ٥ وَمَا خَلَقْنٰهُمَا اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ 61

(वमा ख़लक़्नस्समावाते वलअर्ज़ा वमा बैनहुमा लाइबीना – व मा ख़लक़्नाहुम इल्ला बिल्हक़्क़े वला किन्ना अकसरहुम ला या'लमून) अर्थात् हम ने आकाशों और पृथ्वी को तथा इन दोनों के मध्य जो कुछ है उसको यों ही व्यर्थ बतौर खेल के उत्पन्न नहीं किया अपितु हम ने उसे अपरिवर्तनीय सिद्धान्त के अन्तर्गत उत्पन्न किया है, परन्तु अधिकांश लोग इस बात से परिचित नहीं ।

अत: वास्तविकता यही है कि जब कभी प्रजा की आध्यात्मिक दशा बिगड़ जाती है तथा किसी सुधारक की मुहताज होती है तो अल्लाह तआला अपनी ओर से एक सुधारक भेज देता है जो लोगों को सद्मार्ग की ओर लाता है तथा उनके आन्तरिक दोषों को दूर करता है ।

यद्यपि अल्लाह तआला की विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए यह बात बुद्धि की दृष्टि से भी असंभव ज्ञात हेती है कि आवश्यकता के समय अल्लाह तआला अपने बन्दों को असहाय छोड़ दे, परन्तु अल्लाह तआला ने इस विषय को क़ुर्आन करीम में विवरण सहित भी वर्णन कर दिया है । जैसा कि फ़रमाता है - وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ 62 **(व इम्मिन शैइन इल्ला इन्दना ख़ज़ाइनुहू वमा नुनज़्ज़िलोहू इल्ला बिक़दरिम्मा'लूम)** अर्थात् प्रत्येक वस्तु के भण्डार हमारे पास हैं, हम उसे नहीं उतारते परन्तु विशेष अनुमानों के अन्तर्गत । अर्थात प्रत्येक वस्तु को अल्लाह तआला आवश्यकतानुसार उतारता है, न उसके कार्य बिना किसी नीति के हैं कि आवश्यकता न होते हुए किसी वस्तु को प्रकट करे और न उसके हाथ संकीर्ण हैं कि आवश्यकता के समय भी प्रकट न कर सके।

इसी प्रकार फ़रमाता है -

وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا 63

(व आताकुम मिन कुल्ले मा सअलतुमूहो व इन तउद्दू नैमतल्लाहे ला तुहसूहा) अर्थात् अल्लाह तआला ने हर वह वस्तु जो तुम ने माँगी तुमको प्रदान कर दी है, और यदि तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनना चाहो तो गिन नहीं सकते । इस आयत में माँगने से अभिप्राय

वास्तविक आवश्यकता ही है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु जिसे मनुष्य मांगता है उसे प्राप्त नहीं हो जाती, परन्तु यह अवश्य है कि प्रत्येक वास्तविक आवश्यकता जिसकी आकांक्षा मनुष्य के स्वभाव में रखी गई है अथवा प्रत्येक आकांक्षा जिसका प्रभाव मनुष्य के असीमित जीवन पर पड़ता है उसके पूरा होने का सामान अल्लाह तआला अवश्य करता है ।

यह तो सामान्य नियम है परन्तु पथ-प्रदर्शन के सन्दर्भ में तो ख़ुदा तआला विशेषत: फ़रमाता है कि जब उसके बन्दे पथ-प्रदर्शन के मुहताज हों तो वह उनके लिए अवश्य पथ-प्रदर्शन के सामान उपलब्ध करता है अपितु उसने यह कार्य अपने ही दायित्व में ले रखा है दूसरे को इसमें भागीदार ही नहीं बनाया । अत: फ़रमाता है - اِنَّ عَلَيۡنَا لَلۡهُدٰى 64 **(इन्ना अलयना ललहुदा)** मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करना हमारा दायित्व है तथा इस कार्य की व्यवस्था को स्वयं से ही सम्बद्ध कर रखा है ।

क़ुर्आन करीम समय की आवश्यकतानुसार लोगों के पथ-प्रदर्शन का सामान उत्पन्न करने को न केवल अनिवार्य ही ठहराता है अपितु उस से ज्ञात होता है कि यदि ऐसा प्रबन्ध अल्लाहतआला की ओर से न होता तो बन्दों का अधिकार होता कि प्रलय के दिन अल्लाह तआला पर ऐतिराज़ करते कि जब उसने उनके पास पथ-प्रदर्शक नहीं भेजे तो वह उनसे उत्तर क्यों माँगता है तथा उनको प्रकोपित क्यों करता है । अत: सूरह 'ताहा' में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَلَوۡ اَنَّاۤ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ بِعَذَابٍ مِّنۡ قَبۡلِهٖ لَقَالُوۡا رَبَّنَا لَوۡلَاۤ اَرۡسَلۡتَ اِلَيۡنَا
رَسُوۡلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ نَّذِلَّ وَنَخۡزٰى 65

(व लौला अन्ना अहलकनाहुम बिअज़ाबिम्मिनक़ब्लिही लक़ालू रब्बना लौला अरसल्ता इलयना रसूलन फ़नत्तबिआ आयातिका मिन क़ब्ले अन नज़िल्ला व नख़्ज़ा) अर्थात् यदि रसूल के अवतरण से पूर्व हम उन पर प्रकोप उतार देते तो ये हम पर आरोप करते कि जब हम पथ-भ्रष्ट थे तथा पथ-प्रदर्शन के मुहताज थे तो तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम अपमानित और बदनाम होने से पूर्व ही तेरे आदेशों को स्वीकार कर लेते । अल्लाह तआला उनके इस ऐतिराज़ को स्वीकार करता है, उसका खण्डन नहीं करता अपितु इस विषय को क़ुर्आन

करीम अनेकों स्थानों पर वर्णन करके इसके महत्व को सिद्ध करता है ।

इससे भी बढ़कर यह है कि अल्लाह तआला आवश्यकतानुसार पथ-प्रदर्शक भेजे बिना प्रकोपित करने को अन्याय ठहराता है । अत: फ़रमाता है -

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ اَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيَاتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰى أَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوْا كَافِرِيْنَ ۝ ذٰلِكَ أَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّأَهْلُهَا غَافِلُوْنَ 66

(या माशरलजिन्ने वलइन्से अलम यातिकुम रुसुलुम्मिन्कुम यक़ुस्सूना अलयकुम आयाती व युन्ज़िरूनकुम लिक़ाआ यौमिकुम हाज़ा – क़ालू शहिदना अला अन्फ़ुसिना व ग़र्रतहुमुलहयातुद्दुनया व शहिदू अला अन्फ़ुसिहिम अन्नहुम कानू काफ़िरीन – ज़ालिका अल्लम यकुन रब्बुका मुहलिकलक़ुरा बिज़ुल्मिन व अहलोहा ग़ाफिलून) हे जिन्नों तथा मनुष्यों की समूहो ! क्या तुम्हारे पास हमारे रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें हमारे आदेश पढ़-पढ़ कर सुनाते थे और तुम पर जो यह दिन आने वाला था उस से तुम्हें डराते थे । उन्होंने कहा हम अपने विरुद्ध स्वयं गवाही देते हैं और उन्हें भौतिक जीवन ने धोखा दे दिया । उन्होंने अपने विरुद्ध स्वयं गवाही दे दी कि वे काफ़िर थे । यह (रसूलों का भेजना तथा काफ़िरों पर हुज्जत स्थापित करना) इसलिए किया कि तेरा ख़ुदा शहरों को इस दशा में कि लोग लापरवाह थे अन्यायपूर्ण ढंग पर नष्ट नहीं कर सकता था ।

इन आयतों के विषय से ज्ञात होता है कि सतर्क किए बिना किसी जाति पर हुज्जत स्थापित कर देना तथा उसको नष्ट कर देने का फ़त्वा लगा देना अन्याय है अथवा दूसरे शब्दों में यह कि यदि कोई जाति पथ-प्रदर्शन की मुहताज हो और अल्लाह तआला उसके लिए पथ-प्रदर्शक न भेजे, परन्तु प्रलय के दिन उसे दण्ड दे दे कि तुम ने क्यों ख़ुदा के आदेशों का पालन न किया था तो यह अन्याय होगा और अल्लाह तआला अन्याय करने वाला नहीं । अत: संभव नहीं कि लोग पथ-प्रदर्शन के मुहताज हों, परन्तु वह उनके पथ-प्रदर्शन का उपाय न करे ।

पहले जो विषय गुज़रा उस से यह सिद्ध होता है कि इस्लाम की दृष्टि से जब किसी युग के लोग हिदायत (पथ-प्रदर्शन) के मुहताज हों तो अल्लाह तआला उनकी हिदायत का सामान उत्पन्न करता रहता है परन्तु क़ुर्आन करीम से हमें यह भी मालूम होता है कि इस सामान्य नियम के अतिरिक्त मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की उम्मत से उस का एक विशेष वादा भी है, वह यह है إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ[67] **(इन्ना नहनो नज़्ज़लनज़्ज़िकरा व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून)** अर्थात् हमने ही इस शिक्षा को उतारा है और हम ही इसकी सुरक्षा करेंगे ।

अब सुरक्षा दो प्रकार की होती है एक तो 'प्रत्यक्ष सुरक्षा' और दूसरी 'अर्थों की सुरक्षा' । जब तक दोनों प्रकार की सुरक्षा न हो कोई वस्तु सुरक्षित नहीं कहला सकती । उदाहरणतया यदि एक पक्षी की खाल, चोंच और पैर सुरक्षित कर दिए जाएँ तथा उसमें भूसा भर कर रख लिया जाए तो वह पक्षी समय के प्रभाव से सुरक्षित नहीं कहलाएगा । इसी प्रकार यदि उसकी चोंच टूट जाए, पैर टूट-फूट जाएँ और बाल उखड़ जाएँ तो वह भी सुरक्षित नहीं कहला सकता । एक किताब जिसके अन्दर लोगों ने अपनी ओर से कुछ इबारतें बढ़ा दी हों या उस की कुछ इबारतें लुप्त कर दी हों या जिस की भाषा मुर्दा हो गई हो तथा उसके समझने की कोई योग्यता न रखता हो या जो उस उद्देश्य को पूर्ण करने से असमर्थ रह गई हो, जिस के लिए उसे उतारा गया था सुरक्षित नहीं कहला सकती, यद्यपि कि उसके शब्द सुरक्षित हैं परन्तु उस के अर्थ नष्ट हो गए हैं, जबकि अर्थ ही मूल वस्तु हैं । शब्दों की सुरक्षा भी केवल अर्थों की सुरक्षा हेतु ही की जाती है। अतः क़ुर्आन करीम की सुरक्षा से अभिप्राय उसके शब्दों तथा उस के अर्थों दोनों की सुरक्षा है ।

इस वादे के एक भाग को पूर्ण करने अर्थात् क़ुर्आन करीम की प्रत्यक्ष सुरक्षा के लिए अल्लाह तआला ने जो उपाय किए हैं उनका अध्ययन मनुष्य को आश्चर्यचकित कर देता है । जब तक क़ुर्आन करीम नहीं उतरा था, न अरबी भाषा संगृहित हुई थी न उसके नियम सम्पादित हुए थे, न शब्दकोष था, न मुहावरों को परिधि में लिया गया था, न अर्थ और बयान की नियमावली बनाई गई थी और न लेख की सुरक्षा का सामान ही कुछ उपलब्ध था, परन्तु क़ुर्आन करीम के उतरने के पश्चात अल्लाह तआला ने

विभिन्न लोगों के हृदयों में इल्क़ा (ख़ुदा की ओर से किसी बात का हृदय में डाला जाना - अनुवादक) करके इन समस्त ज्ञानों को संकलित करवाया और केवल क़ुर्आन करीम ही की सुरक्षा के विचार से व्याकरण की विद्या, अर्थ और बयान की विद्या, शब्दों के सही उच्चारण की विद्या, भाषा के शब्दों की बनावट और उसके मुहावरों की विद्या, इतिहास की विद्या, इतिहास को संकलित करने के नियमों की शिक्षा, और धार्मिक नियमों की विद्या इत्यादि विद्याओं की बुनियाद पड़ी तथा इन विद्याओं ने इतनी अधिक उन्नति प्राप्त की जितना कि इन विद्याओं का क़ुर्आन करीम की सुरक्षा से सम्बन्ध था । अत: प्रत्यक्ष विद्याओं में केवल व्याकरण और शब्दों के ज्ञान का सम्बन्ध क़ुर्आन की सुरक्षा के साथ सर्वाधिक है तथा इन शिक्षाओं को इतनी उन्नति प्राप्त हुई है कि यूरोप के लोग इस युग में भी अरबी व्याकरण और शब्दकोष को सब भाषाओं से श्रेष्ठ और अधिक संगृहीत समझते हैं ।

इन विद्याओं की उन्नति के अतिरिक्त क़ुर्आन करीम की सुरक्षा के लिए हज़ारों, लाखों लोगों के हृदय में क़ुर्आन को कंठस्थ करने की इच्छा उत्पन्न कर दी गई तथा उस की इबारत को ऐसा बनाया गया कि न गद्य है न पद्य, जिससे इस का कंठस्थ करना बहुत ही आसान होता है । प्रत्येक व्यक्ति जिसे भिन्न-भिन्न प्रकार की इबारतों को कंठस्थ करने का अवसर प्राप्त हुआ है जानता है कि क़ुर्आन करीम की आयतों का कंठस्थ करना समस्त इबारतों से अधिक सरल और सुगम होता है । अत: एक ओर यदि क़ुर्आन करीम ऐसी इबारत में उतारा गया है कि उसका कंठस्थ करना नितान्त सरल हो गया है तो दूसरी ओर लाखों लोगों के हृदय में उसके कंठस्थ करने की जिज्ञासा उत्पन्न कर दी गई है तथा नमाजों में क़ुर्आन करीम की तिलावत (क़ुर्आन करीम को ऊँचे स्वर में पढ़ना) अनिवार्य करके हर मुसलमान को उसके किसी न किसी भाग की सुरक्षा का दायित्व दे दिया गया है । यहाँ तक कि यदि क़ुर्आन करीम की समस्त प्रतियों को भी 'नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका' कोई शत्रु नष्ट कर डाले, तब भी क़ुर्आन करीम संसार से मिट नहीं सकता ।

यह कुछ उदाहरण जो मैंने वर्णन किए हैं इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि क़ुर्आन करीम की प्रत्यक्ष सुरक्षा के लिए अल्लाहतआला

ने बहुत से साधन उत्पन्न कर दिए हैं जिन की उपस्थिति में उस का नष्ट हो जाना बिल्कुल असंभव हो गया है ।

अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब शब्दों की सुरक्षा हेतु जो उसके अस्तित्व का उद्देश्य नहीं है अल्लाह तआला ने इतने साधन लपलब्ध किए तो क्या संभव है कि वह अर्थों को यों ही छोड़ दे तथा उन की सुरक्षा न करे ? प्रत्येक व्यक्ति जो बुद्धि और विवक से काम लेने की परिपाटी रखता है, इस प्रश्न का यही उत्तर देगा कि नहीं यह बात संभव नहीं है । यदि अल्लाह तआला ने प्रत्यक्ष सुरक्षा का प्रबन्ध किया है तो आन्तरिक सुरक्षा का प्रबन्ध उस से कहीं अधिक किया होगा और यही बात उचित है । इस आयत - **इन्ना नहनो नज़्ज़ल्नज़्ज़िकरा व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून** में दोनों ही प्रकार की सुरक्षा की चर्चा है, शाब्दिक भी और अर्थों की भी । अर्थों की सुरक्षा का सब से बड़ा भाग यह है कि जब लोग क़ुर्आन के पथ-प्रदर्शन से दूर हो जाएँ और क़ुर्आन करीम का प्रकाश संकुचित हो कर शब्दों में आ जाए और लोगों के हृदय उसके प्रभाव और अधिकार से रिक्त हो जाएँ तो अल्लाह तआला अपने पास से ऐसे साधन उत्पन्न करे जिन के द्वारा उस के प्रभाव को पुन: स्थापित करे तथा उसके अर्थों को पुन: प्रकट करे तथा एक कहानी को निर्जीव स्थिति से निकाल कर एक सफल निदान द्वारा जीवन और नवीनता प्रदान करे । अत: इन अर्थों का सत्यापन सही हदीसों से भी होता है । हज़रत अबू हुरैरा(रज़ि.) वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि -

إِنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ لِهٰذِهِ الْأُمَّةِ عَلٰى رَأْسِ كُلِّ مِائَةِ سَنَةٍ مَّنْ يُجَدِّدُ لَهَا دِيْنَهَا 68

(इन्नल्लाहा यबअसो लिहाज़िहिल उम्मते अला रासे कुल्ले मिअते सनतिन मंय्युजद्दिदो लहा दीनहा)* अल्लाह तआला इस उम्मत के लिए प्रत्येक शताब्दी के सर पर अवश्य ऐसे लोग खड़े करता रहेगा जो उसके धर्म

---

* وَقَدِ اتَّفَقَ الْحُفَّظُ عَلٰى تَصْحِيْحِ هٰذَا الْحَدِيْثِ مِنْهُمُ الْحَاكِمُ فِي الْمُسْتَدْرَكِ وَالْبَيْهِقِي فِي الْمُدْخَلِ 69

हाफ़िज़ ने इस हदीस के सत्यापन पर सहमति प्रकट की है । उनमें से अलहाकिम ने अपनी पुस्तक 'अलमुस्तदरक' और बैहक़ी ने 'अलमुदख़ल' में ।

को उसके लाभ और हित के लिए उसको नवीनता प्रदान करते रहेंगे ।

यह हदीस वास्तव में **इन्ना नहनो नज़्ज़ल्नज़्ज़िकरा व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून** की व्याख्या है तथा आयत के विषय के एक भाग को सामान्य तौर पर समझे जाने वाले शब्दों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वर्णन फ़रमाया है ताकि प्रत्यक्ष के पुजारी तथा थोड़ी समझ वाले लोग इस आयत के अर्थों को केवल प्रत्यक्ष से सम्बद्ध न करें तथा इस्लाम धर्म की सुरक्षा के एक शक्तिशाली माध्यम को छोड़ कर अपने लिए तथा दूसरों के लिए ठोकर का कारण न हों ।

इस हदीस से भी ज्ञात होता है कि इन लोगों के अवतरण का समय जो इन दोषों के सुधार हेतु आएँगे जो क़ुर्आन करीम के अर्थों और अभिप्रायों को न समझने से और क़ुर्आन करीम से दूर हो जाने के कारण उत्पन्न होंगे, शताब्दी का सर (प्रारंभ) होगा, जैसे कि क़ुर्आन करीम की सुरक्षा हेतु दुर्गों की ऐसी श्रृंखला बना दी गई है कि कभी भी इस्लाम ऐसे लोगों से खाली नहीं रह सकता जो या तो किसी मुजद्दिद के संगत प्राप्त लोग हों या संगत प्राप्त लोगों के संगत प्राप्त हों । इस प्रकार वह दोष जो अन्य समस्त धर्मों में उत्पन्न हो चुका है कि उन का अर्थ बिगड़ कर कुछ का कुछ हो गया है इस से इस्लाम बिल्कुल सुरक्षित है तथा उस वादे के अनुसार बिल्कुल सुरक्षित रहेगा ।

(1) सारांश यह है कि क़ुर्आन करीम से ज्ञात होता है कि मनुष्य की भौतिक अथवा आध्यात्मिक आवश्यकताओं को अल्लाह तआला अवश्य पूर्ण करता है, विशेषतया आध्यात्मिक आवश्यकताओं को जो अपने विशालतम प्रभाव और महत्व की दृष्टि से भौतिक आवश्यकताओं पर प्रमुख हैं । यदि अल्लाह तआला ऐसा न करे तो विश्व के उत्पन्न करने की क्रिया निरर्थक हो जाए ।

(2) यह कि अल्लाह तआला ने इस बात का वादा भी किया है कि बन्दे को जब पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता होगी तो वह उसको पथ-प्रदर्शन प्रदान करेगा ।

(3) यदि वह ऐसा न करे तो बन्दे का अधिकार है कि उस के कार्य पर ऐतिराज़ करे ।

(4) यदि वह आवश्यकता के समय पथ-प्रदर्शन का प्रबंध न करे और

पथ-भ्रष्ट लोगों को दण्ड दे तो यह अन्याय होगा और ख़ुदा अन्यायी नहीं ।

(5) मुसलमानों के सुधार के लिए इस प्रकार के लोग सदा भेजते रहने का जो क़ुर्आन करीम के अर्थों की सुरक्षा करने वाले हों विशेषतौर पर वादा है ।

(6) हदीसों से ज्ञात होता है कि ये लोग कम से कम प्रत्येक शताब्दी के सर पर अवश्य प्रकट होंगे ।

हे बादशाहे अफ़ग़ानिस्तान ! अब अल्लाह तआला आपके हृदय को अपनी बातों को स्वीकार करने के लिए खोल दे । आप विचार करें कि क्या इस समय युग को किसी ख़ुदाई सुधारक की आवश्यकता है या नहीं ? हदीसें तो यह बताती हैं कि साधारणतया एक शताब्दी के सर पर इस प्रकार की आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है कि अल्लाह तआला की ओर से कोई व्यक्ति अवतरित होकर क़ुर्आन करीम के अर्थों का वर्णन करे तथा इस्लाम धर्म की सही वास्तविकता लोगों पर प्रकट करे । इस समय शताब्दी का सर छोड़ कर अर्ध शताब्दी के लगभग गुज़र चुकी है, परन्तु हम इन हदीसों को भी अनदेखा कर देते हैं और केवल घटनाओं को देखते हैं कि क्या इस समय किसी सुधारक की आवश्यकता है अथवा नहीं । यदि इस समय मुसलमानों तथा अन्य जातियों की स्थिति ऐसी उत्तम है कि वह किसी ख़ुदाई सुधारक की मुहताज नहीं तो हमें किसी दावेदार के दावे पर कान रखने की आवश्यकता नहीं, परन्तु यदि इसके विपरीत मुसलमानों की स्थिति पुकार पुकार कर कह रही हो कि यदि इस समय किसी सुधारक की आवश्यकता नहीं तो फिर कभी भी किसी सुधारक की आवश्यकता नहीं हुई अथवा यदि इस्लाम के शत्रुओं की शत्रुता और इस्लाम को मिटाने का प्रयास सीमा से बढ़ा हुआ हो तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि इस समय ख़ुदा तआला की ओर से कोई व्यक्ति आना चाहिए जो इस्लाम को पुन: उसके मूल रूप में प्रस्तुत करके इस्लाम के शत्रुओं के आक्रमणों को ध्वस्त करे तथा मुसलमानों को सच्चा इस्लाम समझा कर, उनके हृदयों में धार्मिक प्रेम जागृत करके इस्लाम की जीवनदायिनी शक्ति को प्रकट करे ।

इन प्रश्नों के उत्तर कि इस समय मुसलमानों की दशा कैसी है तथा उनके शत्रुओं का अन्याय किस सीमा तक बढ़ा हुआ है मेरे निकट दो नहीं

हो सकते । प्रत्येक व्यक्ति जो किसी विशेष हित को ध्यान में रखते हुए वास्तविकता को गुप्त रखना नहीं चाहता या मानवता से इतना दूर नहीं हो गया कि वह अच्छे और बुरे में अन्तर करने की भी योग्यता नहीं रखता, इस बात को स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता कि इस समय मुसलमान व्यवहार और आस्था के तौर पर इस्लाम से बिल्कुल दूर जा पड़े हैं। यदि किसी युग के लोगों के पक्ष में यह आयत अक्षरश: चरितार्थ हो सकती है कि يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِی اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا[70] **(या रब्बे इन्ना क़ौमित्तख़ज़ू हाज़ल कुर्आना महजूरन)** (हे मेरे रब्ब ! निश्चय ही मेरी क़ौम ने इस क़ुर्आन को पीठ पीछे फेंक दिया है) तो वे इस युग के लोग हैं । आज यह प्रश्न नहीं रहा कि लोगों ने कौन सी बात इस्लाम की छोड़ी है अपितु प्रश्न यह उत्पन्न हो गया है कि इस्लाम की कौन सी बात मुसलमानों में शेष रह गई है । किसी ने सत्य कहा है कि मुसलमान दरगौर व मुसलमानी दर किताब (अर्थात मुसलमान तो क़ब्र में चले गए पर मुसलमानी किताब में शेष है) इस्लाम का निशान केवल क़ुर्आन करीम और सही हदीसों और बुज़ुर्गों की किताबों में मिलता है, उसका निशान लोगों के जीवन में कहीं नहीं मिलता । प्रथम तो लोग इस्लामी शिक्षा से परिचित ही नहीं और यदि परिचित होना भी चाहें तो उनके लिए इस्लाम से परिचित होना लगभग असंभव हो गया है, क्योंकि इस्लाम की प्रत्येक वस्तु ही विकृत कर दी गई है । अल्लाह तआला के पवित्र अस्तित्व के संबंध में ऐसी आस्थाएँ निकाली गई हैं कि जिन्हें स्वीकार करके سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ[71] **सुब्हानल्लाह वबिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम** मुख से निकालना एक सच्चे मनुष्य के लिए कठिन है, फ़रिश्तों के सन्दर्भ में ऐसी बातें बनाई गई हैं कि 'ख़ुदा की शरण ! वे अस्तित्व जिन के सन्दर्भ में अल्लाह तआला फ़रमाता है - يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ **(यफ़अलूना मा योमरून)** (जिस बात का उन्हें आदेश दिया जाता है वही करते हैं) कहीं उनको ख़ुदा पर आरोप करने वाला ठहराया जाता है, कहीं मनुष्य के रूप में उतार कर अपवित्र स्त्रियों का प्रेमी बनाया जाता है, नबियों की ओर झूठ और पाप को सम्बद्ध करके उनसे जो प्रेम का नाता होना चाहिए उसे एक ही प्रहार से काट दिया जाता है तथा ख़ुदा के कलाम को शैतानी हस्तक्षेप का शिकार बना कर उसे बिल्कुल ही अविश्वसनीय

कर दिया जाता है, शराब, स्वर्ग और नरक का वह विवरण प्रस्तुत किया जाता है कि या तो ये आस्थाएँ कवियों के मृदुल और कोमल विचार बन जाती हैं या फिर विचित्र उपहासयुक्त कहानियाँ हो जाती हैं ।

दूसरे नबी तो दूर के लोग थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर कहीं ज़ैनब की प्रेम कहानी और कहीं चुपके-चुपके एक दासी से सम्बन्ध की घटना तथा इसी प्रकार की सदाचार से गिरी हुई अन्य घटनाओं को सम्बद्ध करके आप (स.अ.व.) के पूर्ण तथा श्रेष्ठतम सदाचारों से सुशोभित व्यक्तित्व को कुरूप करके दिखाया जाता है और كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْآنُ[72] **(काना ख़ुलुक़ुहुल क़ुर्आन)** की इस साक्ष्य को जो आप की सर्वाधिक रहस्यवेत्ता (हज़रत आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा) की साक्ष्य है उसकी अवहेलना की जाती है ।

निरसन (नसख) की समस्या का आविष्कार करके तथा क़ुर्आन करीम जैसी पूर्ण किताब में अपने हृदय से मतभेद निकाल कर उसकी बहुत सी आयतों को शरीअत लाने वाले के स्पष्ट तर्क या आयत के बिना निरस्त ठहराया जाता है तथा इस प्रकार एक विचारक व्यक्ति के लिए उसकी कोई आयत भी अनुसरणीय और विश्वसनीय शेष नहीं छोड़ी जाती । मूसा[अ] के सिलसिले के एक मृत्यु प्राप्त नबी को वापस लाकर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की उम्मत की अयोग्यता और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की विवशता का प्रकटन किया जाता है ।

यह तो आस्थाओं की स्थिति है, कर्मों की स्थिति भी कुछ कम खेदजनक नहीं । पचहत्तर प्रतिशत लोग नमाज़-रोज़ा से लापरवाह हैं, ज़कात (इस्लामी नियमों के अनुसार सामर्थ्यवान और धनवान लोगों से 2.5 प्रतिशत धन प्रतिवर्ष लेकर अपाहिज, असहाय, साधनहीन और विधवाओं इत्यादि को दिया जाता है - अनुवादक) प्रथम तो लोग देते ही नहीं और जो देते हैं उनमें से जो स्वेच्छा से देते हों वे शायद सौ में से दो निकलें, जिन पर हज अनिवार्य है वे उसका नाम नहीं लेते तथा जिन के लिए न केवल यह कि अनिवार्य नहीं अपितु कुछ परिस्थितियों में अवैध है, वे अपनी बदनामी तथा इस्लाम की बदनामी करते हुए हज के लिए जा पहुँचते हैं और जो थोड़े-बहुत लोग इन क्रियाओं को पूर्ण करते हैं वे इस प्रकार पूर्ण करते हैं कि इन आदेशों के मुख्य उद्देश्य के पूर्ण होने की

बजाए उनके लिए तो शायद वे आदेश फटकार का कारण होते होंगे, दूसरों के लिए अपमान का कारण होते हैं, नमाज़ का अनुवाद तो अरबी बोलने वाले देशों के अतिरिक्त शायद ही कोई जानता हो, परन्तु वह अर्थ समझे बिना नमाज़ भी जो लोग पढ़ते हैं, उसे इस प्रकार दण्ड समझकर पढ़ते हैं कि रुकूअ और सज्दह में अन्तर करना कठिन हो जाता है तथा नमाज़ में अपनी भाषा में दुआ (प्रार्थना) मांगना तो कुफ्र ही समझा जाने लगा है, रोज़ा (उपवास) प्रथम तो लोग रखते नहीं तथा जो लोग रखते हैं तो झूठ और चुगली के कारण पुण्य की बजाए वह उनके लिए प्रकोप का कारण होता है ।

उत्तराधिकार (बिरसा) के आदेशों को पीठ पीछे डाल देते हैं, ब्याज जिस का लेना ख़ुदा से युद्ध करने का पर्याय ठहराया गया है, विद्वानों की सहायता से हज़ारों हीले-बहानों के साथ उसकी वह परिभाषा बनाई गई है तथा उसके लिए ऐसी शर्तें लगा दी हैं कि अब शायद ही कोई ब्याज की लानत (फटकार) से सुरक्षित हो, परन्तु बावजूद इसके मुसलमानों को ख़ुशी और धन प्राप्त नहीं जो अन्य जातियों को प्राप्त है ।

उत्तम सदाचार जो किसी समय मुसलमानों का उत्तराधिकार और उसका अधिकार समझे जाते थे, अब मुसलमानों से इतनी दूर हैं जितना कुफ्र इस्लाम से । किसी युग में मुसलमानों का कथन अटल लेख समझा जाता था और उसका वादा एक अपरिवर्तनीय कानून, परन्तु आजकल मुसलमान की बात से अधिक कोई अन्य अविश्वसनीय कथन नहीं मिलता, उसके वादे से अधिक कोई और व्यर्थ वस्तु दिखाई नहीं देती, वफ़ादारी का नाम नहीं रहा, सच्चाई खोई गई, वास्तविक साहस मिट गया, ग़द्दारी, झूठ, बेईमानी, कायरता और अदूरदर्शिता ने उसका स्थान ले लिया । परिणाम यह हुआ कि सम्पूर्ण संसार शत्रु है, व्यापार तबाह हो गए हैं, दबदबा जाता रहा है, ज्ञान और शिक्षा जो किसी समय मुसलमानों का साथी थी तथा उनकी रिकाब* हाथ से न छोड़ता था, आज उनसे कोसों दूर भागता है ।

सूफ़ियों की दशा ख़राब है । वे धर्म को अधर्म और कानून को वैध बना रहे हैं, विद्वान नफ़रत और विरोध फैलाने के अतिरिक्त अपने

* रिकाब - लोहे का वह कड़ा जो घोड़े की ज़ीन के दोनों ओर लटकता रहता है और सवार उस पर पैर रखकर घोड़े पर चढ़ता है - अनुवादक ।

कथनों को ख़ुदा और रसूल के कथन प्रकट करके इस्लाम और मुसलमानों की जड़ें काटने में व्यस्त हैं, धनी लोग यद्यपि दूसरी क़ौमों के धनी लोगों की अपेक्षा कुछ भी हैसियत नहीं रखते, परन्तु फिर भी अपनी थोड़ी सी पूंजी और धन पर इतना अभिमान है कि धर्म से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं। धार्मिक कार्यों में भाग लेना तो दूर, उनके हृदयों में धर्म का आदर तक शेष नहीं रहा । यूरोप के धनवानों में मसीहियत के प्रचारक मिल सकते हैं परन्तु मुसलमान धनवानों में धर्म की प्रारंभिक बातें जानने वाले भी बहुत कम मिलेंगे । शासकों का हाल यह है कि घूस लेना और अन्याय उनका चलन है । वे शासन को सेवा का एक माध्यम नहीं समझते अपितु ख़ुदाई का एक भाग समझते हैं, बादशाह अपने भोग-विलास में मस्त हैं तथा मंत्री विश्वासघात और बेईमानी में, जन साधारण जंगली जानवरों से अधिक दुष्ट हो रहे हैं तथा लाखों हैं जो अनुवाद जानना तो अलग रहा अद्वैतवाद, तथा रिसालत (पैग़म्बरी) के शब्दों तक को मुख से अदा नहीं कर सकते, वह इस्लाम जो एक अजगर की भाँति अन्य धर्मों को खाता जा रहा था आज वह निर्जीव की भाँति पड़ा है तथा कुत्ते और चीलें उसके मांस के टुकड़ों को नोंच-नोंच कर खा रहे हैं । अपने कार्यों और अपनी आवश्यकताओं के लिए प्रत्येक को रुपया प्राप्त हो जाता है, परन्तु धार्मिक आवश्यकताओं तथा उसके प्रसार-प्रचार हेतु एक पैसा निकालना कठिन है, व्यर्थ बकवास करने, हास्यक बातें सुनाने, मित्रों की सभाएँ लगाने के लिए पर्याप्त समय है परन्तु ख़ुदा का कलाम पढ़ने तथा उसको अन्य लोगों तक पहुँचाने के लिए एक मिनट की भी फ़ुरसत नहीं । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो एक समय की नमाज़ न पढ़ने वाले को नहीं, जमाअत में शामिल न होने वाले को नहीं अपितु केवल इशा और प्रात: काल की नमाज़ की जमाअत में शामिल न होने वाले को द्वयवादी ठहराते हैं और बावजूद साक्षात दया होने के फ़रमाते हैं कि -

وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِہٖ لَقَدْ ھَمَمْتُ اَنْ اٰمُرَ بِحَطَبٍ فَیُحْطَبُ ثُمَّ اٰمُرَ بِالصَّلٰوۃِ
فَیُؤَذَّنُ لَھَا ثُمَّ اٰمُرَ رَجُلًا فَیَؤُمُّ النَّاسَ ثُمَّ اُخَالِفَ اِلٰی رِجَالٍ فَاُحَرِّقَ
عَلَیْھِمْ بُیُوْتَھُمْ 73

(वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही लक़द हमम्तो अन आमुरा बिहतबिन फ़युहतबो सुम्मा आमुरा बिस्सलाते फ़युअज़्ज़नो लहा सुम्मा आमुरा रजुलन फ़यउम्मुन्नासा सुम्मा उख़ालिफ़ा इला रिजालिन फ़उहर्रिक़ा अलयहिम बुयूतहुम) ''मुझे उसी ख़ुदा की सौगंध जिस के हाथ में मेरे प्राण हैं, मेरा दिल चाहता है कि लकड़ियाँ एकत्र करूँ फिर नमाज़ के लिए अज़ान का आदेश दूँ फिर अपने स्थान पर किसी अन्य को इमाम नियुक्त करूँ फिर उन लोगों के घरों पर जाकर जो जमाअत में शामिल नहीं होते उसके निवासियों सहित मकानों को आग लगा दूँ ।'' परन्तु आज मस्जिद में पैर रखना तो बड़ी बात है दोनों ईदों के अतिरिक्त करोड़ों मुसलमानों को नमाज़ ही की फ़ुरसत नहीं मिलती तथा उनमें से भी अधिकांश ऐसे हैं जो नमाज़ की शर्तों को पूर्ण किए बिना मात्र दिखाने के लिए नमाज़ आरंभ कर देते हैं तथा वुज़ू (नमाज़ के लिए नियमानुसार हाथ, मुख और पैर धोना) के मसअले तक से भी परिचित नहीं होते ।

सारांश यह कि इस्लाम आज अनाथ हो रहा है । प्रत्येक का कोई न कोई उत्तराधिकारी है परन्तु इसका कोई उत्तराधिकारी नहीं । हज़रत इमामुज़्ज़मान (युग के इमाम) मसीह मौऊद तथा महदी-ए-मसऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में उसकी दशा इन दिनों यह है :-

(1)	مے سزد گر خوں ببارد دیدۂ ہر اہلِ دیں	بر پریشاں حالئ اسلام و قحط المسلمیں
(2)	دینِ حق را گردش آمد صعبناک و سہمگیں	سخت شورے اوفتاد اندر جہاں از کفر و کیں
(3)	آنکہ نفسِ اوست از ہر خیر و خوبی بے نصیب	مے تراشد عیب ہا در ذات خیر المرسلین
(4)	آنکہ در زندان ناپاکی ست محبوس و اسیر	ہست در شانِ امام پاکباز اں نکتہ چیں
(5)	تیر بر معصوم می بارد خبیث بد گہُر	آسماں را مے سزد گر سنگ بارد بر زمیں
(6)	پیشِ چشمانِ شُما اسلام در خاک اوفتاد	چیست عذرے پیشِ حق اے مجمع متنعّمیں
(7)	ہر طرف کفر است جوشاں ہمچو افواج یزید	دینِ حق بیمار و بے کس ہمچو زین العابدین
(8)	مردم ذی مقدرت مشغول عشرتہائے خویش	خرم و خنداں نشستہ با بُتانِ ناز نیں
(9)	عالماں را روز و شب باہم فساد از جوشِ نفس	زاہداں غافل سراسر از ضرورت ہائے دیں
(10)	ہر کسے از بہر نفسِ دونِ خود طرفے گرفت	طرفے دیں خالی شد و ہر دشمنے جست از کمیں

(11)	ایں زمانے آنچناں آمد کہ ہر ابنُ الجہُول	از سفاہت می کند تکذیب ایں دین متیں
(12)	صد ہزاراں ابلہاں از دیں بروں و بردند رخت	صد ہزاراں جاہلاں گشتند صید الماکریں
(13)	بر مسلماناں ہمہ ادبار زیں رہ اوفتاد	کز پئے دیں ہمتِ شاں نیست با غیرت قریں
(14)	گر بگردد عالمے از راہِ دین مصطفیٰؐ	از رہِ غیرت نمی جنبند ہم مثلِ جنیں
(15)	فکر ایشاں غرق ہر دم در رہِ دنیائے دوں	مالِ ایشاں غارت اندر راہ نسوان و بنیں
(16)	ہر کُجا در مجلسے فسق است ایشاں صدرِ شاں	ہر کُجا ہست از معاصی حلقۂ ایشاں نگیں
(17)	باخرا بات آشنا بیگانہ از کوئے ہدیٰ	نفرت از اربابِ دیں بادے پرستاں ہمنشیں
(18)	ایں دو فکر دین احمدؐ مغزِ جانِ ما گداخت	کثرتِ اعدائے ملت قلتِ انصارِ دیں
(19)	اے خدا زود آ و برما آبِ نصرت ہا ببار	یا مرا بردار یارب زیں مقام آتشیں
(20)	اے خدا نورِ ہدیٰ از مشرقِ رحمت برار	گمرہاں را چشم کُن روشن ز آیاتِ مبیں
(21)	چوں مرا بخشیدہ صدق اندریں سوز و گداز	نیست امیدم کہ ناکامم بمیرانی دریں
(22)	کاروبارِ صادقاں ہرگز نماند ناتمام 74	صادقاں را دستِ حق باشد نہاں در آستین

अनुवाद :- (1) मुसलमानों के अभाव और इस्लाम की दुर्दशा पर उचित है कि प्रत्येक धार्मिक मनुष्य की आंख रक्त के आँसू बहाए ।

(2) ख़ुदा के धर्म पर संकट और भयंकर मुसीबत आ पड़ी हैं तथा संसार में कुफ़्र और द्वेष के कारण उपद्रव मचा हुआ है ।

(3) ऐसा व्यक्ति जिसकी आत्मा प्रत्येक प्रकार की विशेषता और ख़ूबी से वंचित है वह भी समस्त नबियों में श्रेष्ठ नबी के अस्तित्व में दोष निकालता है ।

(4) वह व्यक्ति जो स्वयं ही अपवित्रता के कारावास में गिरफ़्तार है वह भी पवित्र लोगों के इमाम की प्रतिष्ठा में आलोचना करता है ।

(5) एक दुष्ट और नीच निर्दोष इमाम पर तीर बरसाता है, आकाश के लिए उचित है कि वह पृथ्वी पर पत्थर बरसाए ।

(6) तुम्हारी दृष्टि के सामने इस्लाम धूल में मिल गया । हे समृद्धिशाली लोगों के गिरोह ! ख़ुदा के सामने तुम्हारा क्या बहाना है ।

(7) यज़ीद की सेना की भाँति कुफ़्र हर ओर जोश में है और ख़ुदा

का धर्म हज़रत ज़ैनुल आबिदीन की भाँति बीमार और असहाय है ।

(8) सामर्ध्यवान लोग भोग-विलास में व्यस्त हैं और वे मृदुलांगनाओं के साथ आनंदमग्न हैं ।

(9) विद्वान रात-दिन उत्तेजित भावनाओं के काराण परस्पर लड़ रहे हैं और संयमी लोग धार्मिक आवश्यकताओं से बिल्कुल लापरवाह हैं ।

(10) प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी अधम आत्मा के लिए एक पहलू ग्रहण कर लिया है और धार्मिक पहलू रिक्त है और प्रत्येक शत्रु घात में से कूद पड़ा ।

(11)यह ऐसा युग आ गया है कि प्रत्येक मूर्ख अपनी मूर्खता के कारण इस सुदृढ़ धर्म को झुठलाता है ।

(12) लाखों मूर्ख धर्म से विमुख हो गए और लाखों मूर्ख छल-कपट करने वालों का शिकार बन गए ।

(13) समस्त मुसलमानों पर अवनति इस प्रकार आई कि धर्म के लिए उनका साहस आत्मसम्मान वाला नहीं रहा ।

(14) यदि एक संसार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म से विमुख हो जाए तो वे स्वाभिमान से एक भ्रूण जितनी भी हलचल नहीं करते ।

(15) इनके विचार हमेशा तिरस्कृत संसार की चिन्ता में लगे रहते हैं और इनका धन-दौलत स्त्रियों और बच्चों पर व्यय होता रहता है ।

(16) जिस समारोह में दुराचार है ये उसके प्रमुख होते हैं तथा जहाँ पापियों का जमावड़ा हो तो वे वहां मूल्यवान पत्थर के समान होते हैं ।

(17) मदिरा के रसिया परन्तु हिदायत से अपरिचित धार्मिक लोगों से घृणा और मदिरापान करने वालों से संगत है ।

(18) अहमद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के धर्म की दो चिन्ताओं ने मेरे प्राण रूपी मस्तिष्क को घुला दिया है । धार्मिक शत्रुओं का बाहुल्य और धार्मिक सहायकों का अभाव ।

(19) हे अल्लाह तू शीघ्र आ और हम पर अपनी सहायता की वृष्टि कर अन्यथा हे मेरे रब्ब ! मुझे इस अग्नि रूपी संसार से उठा ले ।

(20) हे ख़ुदा तू हिदायत (पथ-प्रदर्शन) का प्रकाश दया के उदयस्थल

से उदय कर और पथ-भ्रष्टों की आँखों को स्पष्ट निशानों द्वारा प्रकाशमान कर दे ।

(21) जब तूने मेरे लिए इस तपन और द्रवण की अवस्था में सच्चाई प्रदान की है तो मुझे यह आशा नहीं कि तू मुझे असफलता की स्थिति में मृत्यु देगा ।

(22) सदात्मा लोगों का कार्य कदापि अपूर्ण नहीं रहता क्योंकि उनकी आस्तीन में अल्लाह तआला का गुप्त हाथ होता है ।*

अतएव युग की दशा पुकार-पुकार कर कह रही है कि इस समय अल्लाह तआला की ओर से कोई सुधारक आना चाहिए और वह भी महान प्रतिष्ठावान, जो इस्लाम को अपने पैरों पर खड़ा करे तथा भ्रम निवारक तर्कों से कुफ़्र का मुकाबला करे और तर्कों की तलवार से उस को काटे । इस शताब्दी के सर पर समस्त संसार में से केवल एक ही व्यक्ति ने इस्लाम की सहायता हेतु ख़ुदा तआला की ओर से अवतरित किए जाने का दावा किया है अर्थात् सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने। अतएव प्रत्येक मनीषी और बुद्धिमान व्यक्ति का कार्य है कि उन के दावे पर विचार करे तथा उसको सरसरी दृष्टि से देखकर विमुख न हो, अन्यथा उसे ख़ुदा के एक अनादि नियम का इन्कार करना पड़ेगा तथा ख़ुदा के समक्ष अपनी लापरवाही का उत्तरदायी होना पड़ेगा ।

हे अमीर ! अल्लाह तआला अपनी प्रभुत्वशाली सहायता के साथ आप का समर्थन करे । कुछ लोग इस स्थान पर सन्देह उत्पन्न किया करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चूँकि पूर्ण अस्तित्व थे अतएव आप के पश्चात अब किसी सुधारक और पथ-प्रदर्शक की आवश्यकता नहीं । अब क़ुर्आन करीम ही सुधारक है तथा उसकी पवित्र शक्ति ही पथ-प्रदर्शक है । उन का यह विचार प्रत्यक्ष में तो अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है परन्तु इस पर विचार किया जाए तो क़ुर्आन करीम, हदीस, बुद्धि, तथा अवलोकनों के बिल्कुल विपरीत विदित होता है । क़ुर्आन और हदीस के विरुद्ध इसलिए कि इन में स्पष्ट तौर पर भविष्य के युगों में मुजद्दिदों और मामूरों के आने की सूचना दी गई

* फ़ारसी कविता के पदों का अर्थ अनुवादक की ओर से प्रस्तुत किया गया है । (अनुवादक)

है । यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात किसी मुजद्दिद का आना या मामूर (आदिष्ट) का खड़ा किया जाना रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कामिल होने के विरुद्ध होता तो आप (स.अ.व.) को समस्त नबियों का सरदार बनाने वाला ख़ुदा और पूर्णता तक पहुँचाने वाला स्वामी स्वयं ही क्यों भविष्य में मुजद्दिदों और मामूरों (आदिष्टों) को भेजने का वादा देता ? क्या वह अपने कार्य को स्वयं तोड़ता तथा अपने कथन का स्वयं खण्डन करता ? फिर क्यों रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भविष्य में मुजद्दिदों और मामूरों के आने की सूचना देते ? क्या आप (स.अ.व.) के कौशल से आप (स.अ.व.) की अपेक्षा हम अधिक परिचित हैं कि आप (स.अ.व.) अपने पश्चात बहुत से मुजद्दिदों की सूचना दें तथा कुछ मामूरों (आदिष्टों) की खबर दें परन्तु हम उसे आप की शान के विरुद्ध समझें ।

यह विचार बुद्धि के विरुद्ध इसलिए है कि बुद्धि हमें बताती है कि यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात् किसी मुजद्दिद या मामूर को नहीं आना था तो चाहिए था कि मुसलमानों की दशा कभी भी खराब न होती और वे हमेशा नेकी तथा संयम पर स्थापित रहते, परन्तु घटनाएँ इसके बिल्कुल विपरीत हैं । बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती कि मुसलमानों में खराबी तो प्रकट हो तथा उनकी हालत विकृत से विकृततर हो जाए परन्तु अल्लाह तआला की ओर से कोई सुधारक न आए । यदि इस्लाम से इस प्रकार का व्यवहार होना है तो यह इस बात का लक्षण नहीं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सर्वाधिक कामिल अस्तित्व हैं अपितु इस बात का लक्षण है कि अल्लाह तआला इस्लाम को मिटाना चाहता है । यदि भविष्य में मुजद्दिदों और मामूरों का क्रम समाप्त कर दिया गया है तो उसका प्रत्यक्ष लक्षण यह होना चाहिए था कि मुसलमान पथभ्रष्टता और कुमार्ग से बिल्कुल सुरक्षित हो जाते । आज भी हम उन्हें वैसा ही देखते हैं जैसा सहाबा(रज़ि.) के समय में ? परन्तु जब आध्यात्मिक पतन विद्यमान है, तो आवश्यक है कि आध्यात्मिक उत्थान के साधन भी विद्यमान हों ।

द्वितीय यह कि यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कामिल (पूर्ण) होने के कारण अब आप स.अ.व. के प्रकट करने वाले

नहीं आ सकते तो अल्लाह तआला जो समस्त कौशलों का उदगम है तथा जीवित रहने वाला और स्थापित रहने वाला और रखने वाला है उसके प्रकट करने वाले संसार में क्यों आते हैं । मूल बात यह है कि जो वस्तु आंखों से ओझल होती है उसे स्मरण कराने के लिए तथा लोगों पर उस का प्रभाव सिद्ध करने के लिए प्रकट करने वाले की हमेशा आवश्यकता होती है । अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कामिल (पूर्ण) होने के बावजूद आप (स.अ.व.) के पश्चात आप (स.अ.व.) के प्रकट करने वालों और समरूपों की आवश्यकता है जो लोगों को आप (स.अ.व.) की याद दिलाएँ तथा आप के नमूने को स्थापित करें ।

यह बात अवलोकन के विरुद्ध इसलिए है कि हमें इस तेरह सौ वर्ष की अवधि में जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात गुज़री है, बीसियों ऐसे व्यक्ति दिखाई देते हैं जो अल्लाह तआला की ओर से अल्लाह से वार्तालाप से सम्मानित थे तथा जिन्होंने दावा किया था कि वे धर्म के नवीनीकरण के लिए खड़े किए गए हैं । ये लोग हमें इस्लाम का श्रेष्ठ नमूना दिखाई देते हैं तथा इस्लाम के प्रचार और उसके स्थायित्व में उनका बड़ा योगदान मालूम होता है । जैसे कि हज़रत जुनैद बग़दादी, हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जैलानी, हज़रत शहाबुद्दीन सहवरदी, हज़रत बहाउद्दीन नक़्शबन्दी, हज़रत मुहियुद्दीन इब्ने अरबी, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, हज़रत शैख़ अहमद सरहिन्दी, मुजद्दिद अलिफ सानी, हज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी इत्यादि इन सब पर अल्लाह दया करे । अतएव ऐसे लोगों के व्यक्तित्व और उनके और उनके कार्य को देखते हुए हम किस प्रकार स्वीकार कर सकते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात किसी सुधारक की आवश्यकता नहीं । सत्य यही है कि आप (स.अ.व.) के पश्चात भी सुधारक आ सकते हैं तथा आते रहे हैं और आते रहेंगे और इस समय सामयिक परिस्थितियाँ एक महान सुधारक की सूचना दे रही हैं और चूँकि इस प्रकार के सुधारक होने के दावेदार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद ही हैं । अतः यह बात उन के दावे की सच्चाई का एक बहुत बड़ा सबूत है ।

दूसरा सबूत

नबियों के सरदार सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की साक्ष्य

प्रथम सबूत से तो यह सिद्ध होता था कि यह युग एक सुधारक को चाहता है और चूँकि अन्य कोई दावेदार इस्लाम की प्रतिष्ठा को प्रकट करने वाला नहीं है इसलिए हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब(अ) के दावे पर विचार करने के लिए हम विवश हैं, परन्तु चूँकि हज़रत अक़दस(अ) का दावा केवल एक सुधारक होने का नहीं है अपितु आप का दावा मौऊद सुधारक (ऐसा सुधारक जिसके आने का पूर्व से वादा किया गया था । अनुवादक) होने का है । अर्थात आप का दावा है कि आप 'मसीह मौऊद' और 'महदी मसऊद' हैं । अत: इस दावे के अधिक समर्थन हेतु मैं एक और साक्ष्य प्रस्तुत करता हूँ, तथा यह साक्ष्य समस्त विश्व के अधिपति हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम की है और प्रजा में से आप(अ) की साक्ष्य से अधिक और किस की साक्ष्य स्वीकारणीय हो सकती है ।

निसन्देह मसीह के दोबारा आगमन की आस्था इस्लामी युग से आरंभ नहीं हुई अपितु यह आस्था मूसा की उम्मत में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के अवतरण से सैंकड़ों वर्ष पूर्व से जारी है, परन्तु इस में भी कोई सन्देह नहीं कि इस्लाम ने इस आस्था की कुछ ऐसी बातों को ऐसा संयुक्त कर दिया है जिनके कारण यह आस्था इस्लाम की महत्वपूर्ण आस्थाओं में सम्मिलित हो गई है, और वे बातें ये हैं :-

(1) मसीह मौऊद के युग में एक महदी के आने की सूचना दी गई है जिसे यद्यपि अन्य हदीसों में لَا الْمَهْدِيُّ اِلَّا عِيْسٰى[75] **(ललमहदी इल्ला ईसा)** कह कर मसीह मौऊद का ही अस्तित्व ठहरा दिया गया है, परन्तु इस भविष्यवाणी के कारण मुसलमानों को मसीह के अस्तित्व से ऐसा क़ौमी संबंध हो गया है जैसे अपने एक सहधर्मी बुज़ुर्ग से होना चाहिए ।

(2) मसीह के आगमन को इस्लाम की उन्नति का एक नया दौर

ठहराया गया है तथा उसी के आगमन के समय तक अन्य धर्मों पर इस्लाम की विजय को स्थगित किया गया है ।

(3) मसीह और महदी को एक ठहराकर मसीह के आगमन को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का आगमन ठहराया गया है तथा उसके देखने वालों को आप (स.अ.व.) के सहाबा(रज़ि.) और इस प्रकार आप (स.अ.व.) के प्रेमियों के हृदय में मसीह अलैहिस्सलाम की उत्साहवर्धक रुचि उत्पन्न कर दी गई ।

(4) एक भयानक और उपद्रवग्रस्त युग जिसकी सूचना नितान्त भयंकर शब्दों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दी थी और जो अपने भयंकर प्रभावों से इस्लाम की जड़ों को हिला देने वाला सिद्ध होने वाला था, उसकी आपदाओं का निवारण और भविष्य में इस्लाम को सदा के लिए सुरक्षित कर देने का कार्य मसीह मौऊद(अ) के सुपुर्द होना बताया गया था । अतः मसीह मौऊद की प्रतीक्षा मुसलमानों को उसी प्रकार थी जैसा कि एक दयावान फ़रिश्ते की होना चाहिए ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ये शब्द कि كَيْفَ تَهْلِكُ أُمَّةٌ أَنَا فِيْ أَوَّلِهَا وَالْمَسِيْحُ فِيْ اٰخِرِهَا[76] **(कैफ़ा तहलिको उम्मतुन अना फ़ी अव्वलिहा वल्मसीहो फ़ी आख़िरिहा)** वह उम्मत किस प्रकार मिट सकती है जिसके प्रारंभ में मैं हूँ और अन्त में मसीह होगा इस्लाम के शुभ चिन्तकों को मसीह अलैहिस्सलाम के आगमन के लिए व्याकुल कर रहे थे, क्योंकि वे देखते थे कि उस के आगमन के पश्चात इस्लाम चारों ओर से सुदृढ़ दीवारों में घिर कर शैतान के आक्रमणों से सदा के लिए सुरक्षित हो जाएगा ।

इन चारों बातों ने मिलकर मसीह के आगमन के मामले को मुसलमानों के लिए एक सैद्धान्तिक प्रश्न बना दिया था तथा संभव न था कि ऐसा युग जो एक ओर तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेमियों को अपने प्रियतम के समक्ष करने वाला था चाहे प्रतिबिम्ब और समरूपता के पर्दे में ही सही और दूसरी ओर इस्लाम को प्रलयकारी आघातों से निकाल कर सुरक्षा और शान्ति के स्थल पर खड़ा करने वाला था, बिना पर्याप्त पते और निशानी के छोड़ दिया जाता ।

यह तो न कभी हुआ है और न हो सकता है कि मामूरों (आदिष्टों)

और रसूलों के युग और उन के अस्तित्व की ओर ऐसे शब्दों में पथ-प्रदर्शन किया जाए कि जैसे तलाश करने वाले के हाथ में उनका हाथ दे दिया जाए, क्योंकि यदि इस प्रकार किया जाता तो ईमान अलाभकारी हो जाता तथा काफ़िर और मोमिन का अन्तर ही मिट जाता ईमान और रुचि रखने वाले पथ-प्रदर्शन प्राप्त कर लेते हैं और उपद्रवी अपनी हठधर्मी के लिए कोई आड़ या बहाना तलाश कर लेते हैं । उदय हुए सूर्य का कौन इन्कार कर सकता है ? परन्तु उस पर ईमान लाने का पुण्य और प्रतिफल भी कौन देता है ? अतएव एक सीमा तक पथ-प्रदर्शन तथा एक सीमा तक दुराव अवश्य किया जाता है और ऐसा होना भी चाहिए ।

मसीह मौऊद के युग की सूचनाओं में भी इसी मूल को दृष्टिगत रखा गया है । उसके युग की सूचनाएँ ऐसे शब्दों में दी गई हैं जिस प्रकार के शब्दों में समस्त पूर्वकालीन नबियों के संबंध में सूचनाएँ दी जाती रही हैं, परन्तु फिर भी एक सच्चे अभिलाषी और बुद्धिमान के लिए वह एक प्रकाशमान निशान से कम नहीं । वह जिसने किसी एक नबी को तर्कों के माध्यम से स्वीकार किया हो और केवल परंपरागत ईमान पर संतोष किए बैठा हो उसके लिए इन निशानों से लाभ प्राप्त करना कुछ भी कठिन नहीं, परन्तु वे लोग जो प्रत्यक्षत: सैकड़ों रसूलों पर ईमान लाते हैं परन्तु वास्तव में उन्होंने एक रसूल को भी अपनी खोज से नहीं माना । उनके लिए किसी सत्यवादी का स्वीकार करना चाहे वह कितने ही निशान अपने साथ क्यों न रखता हो नितान्त कठिन है । उन लोगों का अपना ईमान वास्तव में कोई महत्व नहीं रखता, उनका ईमान वही होता है जो उनके विद्वान या मौलवी कह दें या जो बाप-दादा की बातें जो उनके कानों तक पहुँची हों । अतएव चूँकि उन्होंने किसी एक रसूल को भी उसकी अपनी शक्ल में नहीं देखा होता, रसूल का पहचानना उनके लिए असंभव है तथा ये उसी समय किसी रसूल को देख सकते हैं जबकि पहले अपनी दृष्टि का सुधार आकाशीय पथ-प्रदर्शन के सुरमे से कर लें और मानव कथनों और परम्परागत अनुसरण के नशे को अपने सर से दूर कर दें ।

इस संक्षिप्त भूमिका के पश्चात मैं उन निशानों का उल्लेख करता हूँ जो मसीह मौऊद के युग के सन्दर्भ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताए हैं । मेरे निकट यदि कोई उन निशानों पर पक्षपात के

बिना विचार करेगा तो उसके लिए मसीह मौऊद के युग का निर्धारण तनिक भी कठिन न रहेगा, परन्तु पूर्व इसके कि उन निशानों पर विचार किया जाए इस बात का समझ लेना आवश्यक है कि इस्लामी उम्मत के अन्दर फूट और भेदभाव प्रकट होने के युग में बहुत से लोगों ने अपने मनोरथों की प्राप्ति के उद्देश्य से बहुत सी झूठी हदीसें भी बनाकर प्रकाशित कर दी हैं जिन से उन का उद्देश्य यह है कि किसी प्रकार हमारा सम्प्रदाय सच्चा सिद्ध हो जाए । उदाहरणतया बहुत सी हदीसें ऐसी मिलेंगी जिन में महदी के युग की सूचना दी गई है परन्तु उन के शब्द इस प्रकार के हैं जिन से स्पष्ट विदित होता है कि भूतकाल के किसी मतभेद का निर्णय अपने पक्ष में कराना लक्षित है । ऐसे वर्णनों में से यद्यपि कुछ सच्चे भी हों परन्तु फिर भी उनके सन्दर्भ में एक अन्वेषक को बहुत सावधानी की आवश्यकता है तथा कम से कम उन हदीसों के समर्थन या खण्डन पर उसके दावे का आधार नहीं होना चाहिए । उदाहरणतया बनी अब्बास के समय की अधिकांश हदीसें इस प्रकार की मिलती हैं जिनमें प्रत्यक्षत: तो महदी के युग के लक्षण बताए गए हैं परन्तु वास्तव में बताया यह गया है कि अब्बासियों के समर्थन में ख़ुरासान में जो विद्रोह हुए थे वे ख़ुदा तआला की ओर से थे उसकी इच्छानुसार थे। उन हदीसों का मिथ्या होना घटनाओं ने स्वयं ही सिद्ध कर दिया है। उस युग पर एक हज़ार वर्ष से अधिक व्यतीत हो गए, परन्तु उन लक्षणों और निशानों के अनुसार कोई महदी प्रकट न हुआ । इसी प्रकार और बहुत से वर्णन हैं जिन में महदी के निशानों को अतीत की घटनाओं के साथ इस प्रकार गलत करके वर्णन किया गया है कि जब तक इन घटनाओं को जो महदी के निशानों के तौर पर वर्णन की गई हैं परन्तु हैं अतीत काल की, पृथक न कर दिया जाए वास्तविक परिस्थिति से अवगत नहीं हुआ जा सकता । जो लोग इस्लामी इतिहास से अनभिज्ञ थे उन्होंने इन हदीसों से बहुत धोखा खाया है तथा भविष्य में कुछ ऐसे मामलों के घटित होने के प्रतीक्षक रहे हैं जो इन हदीसों के बनाए जाने से भी पहले घटित हो चुके हैं तथा उनको महदी के निशानों में शामिल करने का कारण केवल अपने-अपने सम्प्रदाय की सच्चाई सिद्ध करना था । अत: महदी की निशानियों पर विचार करते हुए हमारे लिए आवश्यक है कि

उन निशानियों को पृथक कर लें जो किसी घटना की ओर संकेत नहीं करतीं ताकि उस गढ़े में गिरने से सुरक्षित हो जाएँ जो कुछ स्वार्थी लोगों ने अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए खोदा था ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ख़ुदा तआला की असीम कृपाएँ और प्रशंसाएँ हों आप (स.अ.व.) ने मसीह मौऊद और महदी मा'हूद (जिसका वादा किया गया था) के लक्षण वर्णन करते समय एक ऐसी शैली को दृष्टिगत रखा है जिसे स्मरण रखते हुए मनुष्य बड़ी आसानी से धोखा देने वाले के धोखे से सुरक्षित हो जाता है, और वह यह कि आप (स.अ.व.) ने मसीह तथा महदी के संबंध में जो लक्षण बताए हैं उनको एक श्रृंखला के तौर पर वर्णन किया है, जिसके कारण मिलावट करने वाले की मिलावट का पूरा पता लग जाता है। यदि आप (स.अ.व.) इस प्रकार का लक्षण बताते कि उदाहरणतया उसका अमुक नाम होगा तथा अमुक नाम उसके पिता का होगा तो इस नाम के बहुत से लोग दावा करने के लिए तैयार हो जाते । अत: आप ने इस प्रकार के लक्षण वर्णन करने की बजाए जिन का पूर्ण करना मनुष्य के अधिकार में है, इस प्रकार के लक्षण और निशान वर्णन किए हैं जिनका पूर्ण करना न केवल यह कि मनुष्य के अधिकार में नहीं अपितु वे सैकड़ों वर्षों के परिवर्तनों के बिना हो ही नहीं सकते । अत: कोई मनुष्य अपितु मनुष्यों का एक समूह वंश के बाद वंश प्रयास करके भी उन परिस्थितियों के उत्पन्न करने की शक्ति नहीं रखते । दूसरी बात महदी के लक्षण वर्णन करने में ध्यान में यह बात रखी गई है कि उनमें कुछ लक्षण ऐसे वर्णन कर दिए गए हैं जिनके सन्दर्भ में यह वर्णन कर दिया गया है कि ये लक्षण महदी के युग के अतिरिक्त अन्य किसी समय उसके आगमन से पूर्व प्रकट न होंगे । अत: इन सिद्धान्तों को दृष्टिगत रखते हुए जब वह युग हमें ज्ञात हो जाए, जिस के साथ मसीह मौऊद और महदी मा'हूद का कार्य सम्बद्ध है तथा जब वे लक्षण पूर्ण हो जाएँ जिन के सन्दर्भ में बताया गया है कि महदी के युग के अतिरिक्त किसी समय उन का प्रकटन नहीं हो सकता । जब पृथ्वी और आकाश के बहुत से परिवर्तन जिन का उत्पन्न करना मनुष्य के अधिकार में नहीं और वे महदी के लक्षणों के तौर पर वर्णन किए गए हैं प्रकट हो जाएँ तो उस समय को महदी और मसीह

का युग समझ लेने में हमारे लिए कोई भी कठिनाई नहीं । इस समय यदि कुछ लक्षण ऐसे ज्ञात हों जो इस समय तक पूर्ण नहीं हुए तो हमें दो बातों में से एक को स्वीकार करना होगा अथवा यह कि वे लक्षण जो पूर्ण नहीं हुए, महदी के लक्षण थे ही नहीं अपितु कुछ निर्दयी लोगों के हस्तक्षेप के कारण उन को महदी के लक्षणों में शामिल कर दिया गया था अथवा यह कि उन के अर्थ समझने में हम से भूल हो गई है, वास्तव में उनका मर्म समझने की आवश्यकता थी ।

तत्पश्चात् मैं यह वर्णन कर देना आवश्यक समझता हूँ कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद और महदी मा'हूद के युग के जो लक्षण वर्णन किए हैं उन पर एक थोड़ा सा विचार करने पर ज्ञात हो सकता है कि वे पृथक-पृथक मसीह तथा महदी के युग के लक्षण नहीं हैं अपितु सामूहिक तौर पर पूर्ण और बहुमुखी लक्षण बनते हैं। उदाहरणतया हदीस में आता है कि महदी का एक लक्षण (निशानी) यह है कि उसके युग में अमानत उठ जाएगी [77] अथवा यह कि उस समय मूर्खता और अज्ञानता उन्नति कर जाएगी। [78] अब यदि इन लक्षणों को स्थायी लक्षण माना जाए तो स्वीकार करना पड़ेगा कि जब ईमानदारी संसार से उठ जाए उस समय महदी को अवश्य प्रकट हो जाना चाहिए या ज्ञान के उठ जाने पर महदी को अवश्य प्रकट हो जाना चाहिए । हालांकि इस तेरह सौ वर्ष की अवधि में मुसलमानों पर अनेक उत्थान-पतन के युग आए हैं । कभी उन में से ज्ञान जाता रहा तो कभी ईमानदारी, परन्तु महदी प्रकट नहीं हुआ। अतएव ज्ञात हुआ कि ये लक्षण स्थायी लक्षण नहीं हैं अपितु वे समस्त लक्षण एकत्र होकर जिन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा तआला से सूचना पाकर वर्णन किया है न कि कुछ लोगों ने अपने हृदय से बना कर उन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सम्बद्ध कर दिया है । महदी मौऊद के युग के लक्षण हैं । एक-एक लक्षण अन्य युगों में भी पाया जा सकता है परन्तु संयुक्त रूप से वे लक्षण महदी के युग के अतिरिक्त किसी युग में नहीं पाए जा सकते ।

किसी युग के पहचानने का भी वही ढंग है जो किसी एक व्यक्ति के पहचानने का है । जब हमें किसी को किसी ऐसे व्यक्ति का पता देना हो जिसको उसने पहले नहीं देखा तथा जिसका वह परिचित नहीं तो उसका

यही ढंग है कि हम उसकी शक्ल और उसके क़द और उसके रंग तथा उसकी आदतें, उसके कौशल, उसके परिजनों की निशानियाँ तथा उसके घर का नक्शा इत्यादि बता देते हैं । उदाहरणतया यह बता दें कि उसका क़द लम्बा है, रंग सफेद है, शरीर न कमज़ोर है न मोटा, मस्तक चौड़ा, नाक ऊँची, आँखें मोटी-मोटी, होंठ मोटे, ठोढी बड़ी है तथा वह अरबी भाषा का उदाहरणतया विद्वान है और मुसलमानों में से है । उसकी क़ौम के लोग उदाहरणस्वरूप उसके शत्रु हैं तथा उत्तम श्रेणी का सदाचारी है उस का घर इस आकृति का है, उसके आस-पास के घर इस-इस आकृति के हैं । यदि इतनी निशानियाँ बताकर हम किसी व्यक्ति को किसी गाँव में भेजें तो उस व्यक्ति का पहचान लेना तथा लोगों के धोखा देने के बावजूद उसका धोखा न खाना बिल्कुल सरल बात है । यदि कोई विशेष युग बताना हो तो उसकी पहचान कराने का यही ढंग है कि उस युग में उदाहरणतया आकाशीय पिण्डों का विवरण और उन का स्थान बता दिया जाए, पृथ्वी के अन्दर के परिवर्तन जो उस समय होने वाले हों बता दिए जाएँ, उस समय की जो राजनैतिक परिस्थितियाँ, सांस्कृतिक परिस्थिति, धार्मिक परिस्थिति, शैक्षणिक परिस्थिति, कर्मों की परिस्थिति, सच्चरित्रता की परिस्थिति, उस समय के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बता दिए जाएँ, उस समय की समृद्धि अथवा निर्धनता की परिस्थिति बता दी जाए तथा उस युग के मेल-जोल के ढंग और यात्रा के माध्यम पर प्रकाश डाल दिया जाए । यदि इन परिस्थितियों का वर्णन कर दिया जाए फिर एक व्यक्ति जिसको पहले से उस युग की परिस्थितियाँ बता दी गई हैं उस युग को पा ले तो निश्चय ही वह उस युग को देखते ही पहचान लेगा तथा उसका पहचान लेना उस के लिए भी कुछ कठिन न होगा अपितु पहचानने का यह ढंग ऐसा होगा कि इस में संदेह की गुंजायश ही न रहेगी ।

यही कारण है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद और महदी-ए-मसऊद की पहचान के लिए उस के युग का नक्शा बना दिया है ताकि इस्लामी सम्प्रदायों के परस्पर विरोध के समय लोग ऐसे वर्णन न बना लें जिनके कारण मसीह मौऊद(अ) और महदी-ए-मसऊद(अ) का पहचानना कठिन हो जाए । अत: यद्यपि लोगों ने झूठे लक्षण तो बनाए हैं परन्तु वे उस नक्शे पर कुछ भी अधिकार नहीं रखते

जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वर्णन फ़रमाया था । इसलिए उनके प्रयास बिल्कुल व्यर्थ गए हैं और अब भी जो व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बताए हुए नक्शे पर पूर्ण रूप से दृष्टि डाले तो उसके मुख से सहसा निकल जाएगा कि यही मसीह मौऊद और महदी-ए-मसऊद का युग है ।

मसीह मौऊद के युग की धार्मिक परिस्थितियाँ

अब मैं निशानियों (लक्षणों) की श्रृंखला में से क्रमानसार कुछेक निशानियाँ वर्णन करता हूँ जिन से ज्ञात होगा कि इस युग के अतिरिक्त मसीह का आगमन अन्य किसी युग में नहीं हो सकता तथा इन श्रृंखलाओं में सर्व प्रथम मसीह मौऊद के युग की धार्मिक परिस्थितियों को लेता हूँ ।

किसी युग की धार्मिक परिस्थिति दो प्रकार से वर्णन की जा सकती है एक तो उस समय के धर्मों की संख्या और गणना से और एक उस समय के लोगों पर धर्मों के प्रभाव का वर्णन करके तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग की इन दोनों परिस्थितियों का वर्णन कर दिया है ।

मैं इन दोनों परिस्थितियों में से प्रथम धर्मों की प्रत्यक्ष अवस्था को लेता हूँ क्योंकि यह अधिक प्रत्यक्ष है । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस परिस्थिति का नक्शा यों रेखांकित करते हैं कि - उस समय ईसाइयत का अधिक ज़ोर होगा । अतः 'मुस्लिम' की हदीस में वर्णन किया गया है कि प्रलय उस समय आएगी जब कि अधिकांश पृथ्वी के वासी रोमी होंगे[79] तथा जैसा कि इस्लाम के विद्वानों की सहमति है, रोम से अभिप्राय ईसाई हैं, क्योंकि ***आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में रोमी ही ईसाइयत के निशान को उठाने वाले तथा उसकी प्रत्यक्ष उन्नति के लक्षण थे ।*** यह भविष्यवाणी इस बात को ध्यान में रखकर कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है -

اِذَاهَلَكَ كِسْرٰى فَلَا كِسْرٰى بَعْدَهٗ وَاِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلَا قَيْصَرَ بَعْدَهٗ۔
وَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَتُنْفِقُنَّ كُنُوْزَهُمَا فِىْ سَبِيْلِ اللهِ[80]

(इज़ा हलका किसरा फ़ला किसरा बा'दहू व इज़ा हलका क़ैसरा फ़ला क़ैसरो बादहू वल्लज़ी नफ़्सी बियदिही लतुनफ़िकुन्ना कुनूज़हुमा फ़ी सबीलिल्लाहे) अत्यन्त महान दिखाई देती है क्योंकि रोमी शासन के इस क़दर समूल विनाश के पश्चात कि क़ैसर का नामो-निशान तक मिट जाए । फिर ईसाइयत का आधिपत्य एक आश्चर्यजनक सूचना थी, परन्तु ख़ुदा तआला की बातें पूरी होकर रहती हैं । क़ैसर का शासन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सूचनानुसार मिट गया तथा एक दीर्घ समय के पश्चात् क़ुस्तुन्तुनिया के राजा को जो 'क़ैसर' की उपाधि प्राप्त थी क़ुस्तुन्तुनिया पर विजय के साथ वह भी जाती रही तथा इस्लाम संसार के चारों ओर फैल गया, परन्तु दसवीं शताब्दी हिज्री से फ़ैजे आवज (अराजकता) का युग पुन: प्रारम्भ हो गया और मसीहियत ने धीरे-धीरे उन देशों से उन्नति करना प्रारंभ किया जहाँ कि उस समय जबकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीहियत की पुन: उन्नति की सूचना दी थी उसका नाम तक भी न पाया जाता था तथा एक सौ वर्ष की अवधि से तो समस्त विश्व में मसीही शासन इस प्रकार प्रभुत्व जमाए हुए हैं कि रोम वासियों की सूचना के पूर्ण होने में कोई सन्देह नहीं रहा ।

यह भविष्यवाणी इसलिए महत्वपूर्ण है कि इस्लाम के कुछ विद्वानों ने इस के संबंध में लिखा है कि यह निशानी समस्त निशानियों के पूर्ण हो जाने के पश्चात पूर्ण होगी । अत: नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ साहिब अपनी किताब 'हुजजुलकिरामह' में पत्रिका हशरिया से उद्‌धृत करते हुए लिखते हैं :-

چوں جملہ علامات حاصل شود قوم نصاری غلبہ کنندہ بر ملک ہائے بسیار متصرف شوند[81]

अनुवाद :- जब समस्त लक्षण प्रकट हो जाएँगे तो ईसाई क़ौम बहुत सारे देशों पर आधिपत्य जमा लेगी । (अनुवादक)

अत: दूसरी निशानियों से मिलकर मसीह मौऊद के युग की ओर संकेत करने के अतिरिक्त यह सूचना स्वयं में भी बहुत कुछ पथ-प्रदर्शन का कारण है ।

मसीहियत की इस उन्नति के समक्ष इस्लाम की स्थिति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यों वर्णन करते हैं कि -

بَدَءَ الْاِسْلَامُ غَرِيْبًا وَسَيَعُوْدُ غَرِيْبًا فَطُوْبٰى لِلْغُرَبَاءِ[82]

(बदअलइस्लामो ग़रीबन व सयऊदो ग़रीबन फ़तूबा लिल गुरबाए)

इस्लाम उस समय बहुत ही निर्बल होगा, अपितु दज्जाल वाली हदीस में तो फ़रमाते हैं कि - बहुत से मुसलमान दज्जाल (झूठा, मक्कार, सत्य को छुपाने वाला) के अनुयायी हो जाएँगे [83] अत: अब ऐसी ही स्थिति है। मुसलमान उस वैभव और प्रतिष्ठा के पश्चात जिसने उन्हें संसार का अकेला स्वामी बना रखा था आज एक असहाय और अनाथ बच्चे की भाँति हैं कि कुछ मसीही शक्तियों की सहायता के बिना उनको अपना अस्तित्व स्थापित रखना तक कठिन है । इस समय लाखों मुसलमान मसीही हो गए हैं तथा निरन्तर मसीही हो रहे हैं ।

धर्म की आन्तरिक स्थिति

संसार के धर्मों की शक्ति के अतिरिक्त मसीह मौऊद के युग में उनकी जो आन्तरिक स्थिति होने वाली थी उसे भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विस्तार से वर्णन किया है । अत: उस समय के मुसलमानों की स्थिति का नक्शा आप (स.अ.व.) ने इस प्रकार रेखांकित किया है :-

उस समय लोग प्रारब्ध (क़द्र) के इन्कारी हो जाएँगे । अत: हज़रत अली(रज़ि.) वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि प्रलय के लक्षणों में से एक यह है कि लोग 'क़द्र' (प्रारब्ध) का इन्कार करेंगे। [84] इस क़द्र के इन्कार से अभिप्राय निश्चय ही मुसलमानों का इन्कार है क्योंकि अन्य जातियां तो पहले ही इस बात पर ईमान नहीं रखती थीं । यह रोग जिस दिन से मुसलमानों में प्रकट हो रहा है उसे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं । आधुनिक विद्याओं पर मुग्ध मुसलमान यूरोप के अज्ञान लेखकों के आरोप से भयभीत होकर क़द्र (प्रारब्ध) का स्पष्ट तौर पर इन्कार कर रहे हैं तथा इस महत्वपूर्ण मामले की श्रेष्ठता, उसके लाभ तथा उसकी सच्चाई से बिल्कुल अज्ञान हो रहे हैं ।

मुसलमानों में दूसरा परिवर्तन आप (स.अ.व.) ने यह वर्णन किया है कि लोग ज़कात (धनवान मुसलमानों से उनके धन का 1/40% धन लेकर असहाय और निर्धनों की सहायता की जाती है - अनुवादक) को दण्ड समझेंगे। [85] यह भी हज़रत अली(रज़ि.) से 'अल बज़ार' ने नकल किया

है [86] अत: इस समय जबकि मुसलमानों पर चारों ओर से आपदाएँ आ रही हैं तथा ज़कात के अतिरिक्त भी जितने दान-पुण्य वे करें कम हैं । अधिकांश मुसलमान ज़कात की अदायगी से जो अल्लाह तआला की ओर से, अनिवार्य है जी चुराते हैं और जहाँ इस्लामी आदेशों के अन्तर्गत ज़कात ली जाती है वहाँ तो न चाहते हुए कुछ अदा भी कर देते हैं परन्तु जहाँ यह व्यवस्था नहीं वहाँ कुछेक के अतिरिक्त अधिकांश लोग ज़कात नहीं देते और जो क़ौमें ज़कात देती भी हैं वे उसे प्रदर्शन (दिखावा) का माध्यम बना लेती हैं तथा इस प्रकार देती हैं कि दूसरा उसे ज़कात नहीं समझता अपितु जातिगत कार्यों के लिए अनुदान समझता है ।

मुसलमानों की स्थिति में एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह बयान फ़रमाते हैं कि वह क़ौम जो प्रत्येक प्रिय से प्रिय वस्तु को ख़ुदा और रसूल के संकेत मात्र से बलिदान कर देती थी तथा संसार उसकी दृष्टि में एक मुर्दे (शव) से अधिक महत्व न रखता था वह संसार के लिए धर्म का विक्रय करेगी [87] तथा यह परिवर्तन इस समय इतनी बहुलता के साथ हो रहा है कि एक इस्लाम से प्रेम रखने वाले का हृदय उसे देखकर द्रवित हो जाता है । विद्वान, सूफी, शासक तथा जन साधारण समस्त दुनियाँ को धर्म पर प्रमुखता दे रहे हैं तथा तुच्छ से तुच्छ सांसारिक लाभों हेतु धर्म और इस्लामी हितों का बलिदान कर रहे हैं।

एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इब्ने अब्बास(रज़ि.) इब्ने मरदविया [88] ने यह बयान किया है कि उस युग में नमाज़ त्याग दी जाएगी। [89] अत: यह परिवर्तन भी उत्पन्न हो चुका है । संख्या की दृष्टि से मुसलमान कहलाने वाले समस्त लोगों में से एक प्रतिशत बड़ी मुश्किल से पाँचों नमाज़ों के पाबन्द दिखाई देंगे । हालाँकि नमाज़ अनिवार्य और क्रियात्मिक स्तम्भों में से प्रथम स्तम्भ है तथा कुछ विद्वानों के निकट उसको त्यागने वाला काफ़िर है । इस समय मस्जिदें बहुत हैं परन्तु उनमें नमाज़ पढ़ने वाले दिखाई नहीं देते अपितु बहुत सी मस्जिदों में जानवर रहते हैं तथा उनका अपमान करते हैं परन्तु मुसलमान को उनको आबाद करने की चिन्ता नहीं ।

एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय लोग नमाज़ को बहुत शीघ्र-शीघ्र पढ़ा करेंगे ।

अत: इब्ने मसऊद(रज़ि.) की रिवायत से अबुश्शैख़ ने इशाअत [90] में वर्णन किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पचास लोग नमाज़ पढ़ेंगे तथा उनमें किसी की एक नमाज़ भी स्वीकार न होगी। [91] इसका अभिप्राय यही है कि जल्दी-जल्दी नमाज़ें पढ़ेंगे । आन्तरिक स्वीकारिता तो किसी बात का लक्षण नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि उसका ज्ञान ख़ुदा के अतिरिक्त किसी को नहीं हो सकता तथा प्रत्यक्ष लक्षणों में से जिन से नमाज़ की अस्वीकारिता का हाल ज्ञात होता है सब से स्पष्ट लक्षण नमाज़ का जल्द-जल्द पढ़ना है कि जल्द-जल्द नमाज़ अदा करने वाले से स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ नहीं हुई फिर दोहरा। [92] यह परिवर्तन भी इस समय पाया जाता है। जो लोग नमाज़ पढ़ते हैं वे नमाज़ को इतनी जल्दी-जल्दी अदा करते हैं कि यों ज्ञात होता है कि जैसे मुर्गा चोंचें मार रहा है तथा नमाज़ के पश्चात लम्बे-लम्बे वज़ीफ़े (जाप) पढ़ते रहते हैं ।

एक लक्षण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह वर्णन फ़रमाते हैं कि उस समय क़ुर्आन उठ जाएगा, केवल उसका चिन्ह शेष रह जाएगा। [93] यह लक्षण भी इस समय पूर्ण हो चुका है । क़ुर्आन करीम उपलब्ध है, परन्तु उस पर विचार और चिन्तन कोई नहीं करता । बड़ी विचित्र बात है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के अतिरिक्त समस्त संसार में क़ुर्आन करीम कहीं नहीं पढ़ा जाता । कुछ अच्छे-अच्छे मौलवी शरीअत के आदेशों और हदीस के विशेषज्ञ क़ुर्आन करीम के अनुवाद से सरोकार नहीं रखते तथा उस पर विचार और चिन्तन करना अवैध जानते हैं तथा समझते हैं कि कुछ अतीत के विद्वानों ने ख़ुदा के कलाम के जो अर्थ कर दिए हैं उन के अतिरिक्त अब ख़ुदा के कलाम में कुछ शेष नहीं है । हालाँकि यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात् क़ुर्आन करीम की व्याख्या का द्वार खुला रहा है तो कोई कारण नहीं कि अब वह बन्द हो गया हो तथा उसके आध्यात्मिक ज्ञानों की खिड़की बन्द कर की गई हो ।

एक लक्षण अन्तिम युग के सन्दर्भ में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इब्ने अब्बास बिन मरदवियह ने यह वर्णन किया है कि उस युग में लोग एक ओर तो क़ुर्आन करीम की ओर ध्यान न देंगे, दूसरी ओर

उसकी प्रत्यक्ष सजावट में ऐसे व्यस्त होंगे कि उस पर सोने से निर्मित कपड़े के आवरण चढ़ाएँगे।[94] यह लक्षण भी पूर्ण हो रहा है । मुसलमान क़ुर्आन करीम के पढ़ने से तो बिल्कुल लापरवाह हैं तथा उसे खोलकर देखना अवैध समझते हैं, परन्तु सुनहरी आवरण चढ़ा कर उन्होंने क़ुर्आन करीम घरों में अवश्य रख छोड़े हैं तथा उसकी प्रत्यक्ष सजावट इतनी करते हैं कि पूर्वकालीन शताब्दियों के मुसलमानों में इस प्रकार की सजावट का प्रमाण नहीं मिलता । हालाँकि वे लोग क्या संयम की दृष्टि से और क्या सांसारिक प्रतिष्ठा में इन लोगों से कहीं बढ़कर थे ।

एक परिवर्तन मुसलमानों की आन्तरिक स्थिति में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय मस्जिदों को सजाएँगे।[95] यह परिवर्तन भी इस समय पाया जाता है । मुसलमान अन्य जातियों की देखा-देखी अपनी मस्जिदों को इतना सजाते हैं तथा बेल-बूटे बनाते हैं और फानूस से उन्हें सुसज्जित करते और उनकी दीवारों पर सुन्दर पर्दे लटकाते हैं कि एक सामान्य इस्लामी उपासना-गृह की तुलना में हदीस के शब्दों में कि वे मूर्तिगृहों के अधिक समरूप हैं।[96]

एक परिवर्तन इस युग के संबंध में आप (स.अ.व.) ने यह वर्णन किया है कि उस समय अरब के लोग धर्म से बिल्कुल दूर जा पड़ेंगे और वह धर्म जो उनके एक व्यक्ति पर उतरा तथा उनके देश में उसने प्रशिक्षण पाया तथा उनके देश से उसका प्रसार हुआ और उनकी भाषा में जिसकी इल्हामी किताब उतरी और अब तक उसी भाषा में पढ़ी जाती है अपितु उसी के कारण उन की भाषा जीवंत है वे उसे त्याग देंगे तथा अरबी बोलने के बावजूद इस्लाम धर्म से अनभिज्ञ होंगे और क़ुर्आन करीम उनको लाभ प्रदान न करेगा अपितु उनके हृदय वैसे ही ख़ुदा को पहचानने के ज्ञान से रिक्त होंगे जैसे कि उन लोगों के जो क़ुर्आन करीम को समझने की योग्यता नहीं रखते । अत: दैलमी ने हज़रत अली(रज़ि.) से रिवायत वर्णन की है कि उस समय लोगों के हृदय अजनबियों की भाँति होंगे और भाषा अरबों की तरह[97] अर्थात् अरबी बोलेंगे परन्तु अरबी धर्म का उनके हृदय पर प्रभाव न होगा । इस समय यह परिवर्तन भी विद्यमान है । अरबों की धर्म से इतनी दूरी है कि इन लोगों से अधिक उन लोगों को धर्म का ज्ञान है जो क़ुर्आन करीम को न स्वयं समझ सकते हैं न उन

को समझाने वाला कोई उपलब्ध है ।

एक महान परिवर्तन मुसलमानों की परिस्थितियों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय अरब से धार्मिक स्वतंत्रता इतनी उठ जाएगी कि वहाँ सदात्मा लोग प्रकट नहीं हो सकेंगे । अत: हज़रत अली(रज़ि.) से दैलमी ने रिवायत की है कि उनमें सदात्मा लोग छुप कर फिरेंगे।[98] यह परिवर्तन भी अरब में उत्पन्न है । वहाँ के लोगों में धार्मिक सहिष्णुता बिल्कुल शेष नहीं रही, अपने विचारों और रीति-रिवाजों के इतने आसक्त हैं कि ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आवाज़ पर लब्बैक (उपस्थित हूँ) कहने वालों के प्राण उनसे सुरक्षित नहीं हैं । यद्यपि यह आपदा अन्य इस्लामी देशों में भी प्रकट है, परन्तु अरब पर विशेषतया खेद है कि वहाँ हज का कर्तव्य पूर्ण करने के लिए प्रत्येक सामर्थ्यवान व्यक्ति को ख़ुदा के आदेशानुसार जाना होता है । अत: इन के स्थिति-परिवर्तन से सत्य को हानि पहुँचती है तथा हज के कर्त्तव्य को अदा करने का केवल यही मार्ग रह जाता है कि यथासंभव मनुष्य खामोशी से इस कर्तव्य को पूर्ण करके वापस आ जाए इल्ला माशाअल्लाह । काश ! अल्लाह तआला अरब के लोगों को हिदायत (पथ-प्रदर्शन) प्रदान करे और वे फिर उसी प्रकार इस्लामी ज्ञान रखने वाले हों जिस प्रकार तेरह सौ वर्ष पूर्व थे ।

नैतिक अवस्था

धार्मिक परिवर्तन के पश्चात् मैं वे लक्षण बताता हूँ जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के समय की नैतिक अवस्था के सन्दर्भ में वर्णन किए हैं । एक लक्षण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय अश्लीलता अत्यधिक फैल जाएगी अपितु हरामकारी (व्यभिचार) बहुत फैल जाएगी । लोग अश्लीलता पर गर्व करेंगे।[99] अत: इब्ने शैबा की रिवायत है कि प्रलय के निकट आने के लक्षणों में से एक अश्लील और अश्लीलता का प्रकटन भी है।[100] और इसी प्रकार अनस बिन मालिक से 'मुस्लिम' (हदीस की पुस्तक का नाम) में रिवायत है कि प्रलय की निशानियों में से एक

व्यभिचार का प्रकटन है [101] तथा अबू हुरैरा(रज़ि.) से इब्ने मरदविया ने रिवायत की है कि उस समय अवैध बच्चे प्रचुरता के साथ हो जाएँगे [102] ये अश्लीलता के समस्त प्रकार इस समय संसार में विद्यमान हैं । इस बड़े व्यभिचार के अतिरिक्त हम देखते हैं कि यूरोपीय सभ्यता ने ऐसा रंग धारण कर लिया है कि इस्लाम ने जिन बातों को अश्लील ठहराया है वे उनके समाज में सभ्यता का भाग बन गई हैं । उदाहरणतया परस्त्रियों की कमर में हाथ डालकर नृत्य करना, स्त्रियों की सुन्दरता और सौन्दर्य की प्रशंसा करना, परस्त्रियों को साथ लेकर भ्रमण करना इत्यादि इत्यादि । इस युग से पूर्व इन बातों का विचार भी नहीं किया जा सकता था, न अरब में न किसी अन्य देश में । हिन्दुस्तान समस्त द्वैतवादी लक्षणों के बावजूद इस अश्लीलता से पवित्र था, ईरान भोग विलास में प्रसिद्धि के बावजूद इस अश्लीलता से पवित्र था, मसीहियत का सहारा रोम की क़ौम नैतिक तौर पर मुर्दा होने के बावजूद इस प्रकार की भोग-विलास की दासता से सुरक्षित थी । यदि आज जो कुछ हो रहा है उसका विस्तृत नक्शा पूर्वजों के समक्ष वर्णन कर दिया जाता तो वे कभी स्वीकार न करते कि किसी जाति में सभ्यता के दावे के बावजूद ये कृत्य किए जा सकते तथा सभ्यता और शिष्टता का भाग समझे जा सकते हैं । पूर्वकालीन युगों में भी नृत्य और नाटक होते थे परन्तु यह कोई स्वीकार करने को तैयार न था कि कुलीन और सभ्य होने का मूल कहलाने वाले वंशों की बहू-बेटियाँ इस कृत्य को अपना व्यवसाय बनाएंगी तथा यह बात पर गर्व का कारण होंगी तथा इसी के महत्व और प्रतिष्ठा को बढ़ा देंगी तथा उसकी कुलीनता में कुछ कमी उत्पन्न न होने देंगी ।

इस सामान्य अश्लीलता के अतिरिक्त बड़ी अश्लीलता अर्थात दुराचार (ज़िना) का भी इस समय बाहुल्य है । अधिकांश देशों में जिनमें ईसाइयत का प्रभाव है एक कामुक दोष के तौर पर नहीं समझा जाता अपितु एक स्वाभाविक क्रिया तथा नित्यप्रति का उद्यम समझा जाता है । निसन्देह वैश्याएँ पूर्वकालीन समय में भी होती थीं, परन्तु यह किस के मस्तिष्क में आ सकता था कि किसी समय सरकार स्त्रियों को बड़े-बड़े वेतन देकर सेनाओं के साथ रखेगी ताकि सैनिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो तथा उन्हें छावनियों से बाहर जाने का कष्ट न हो, कौन यह विचार कर

सकता था कि स्त्री और पुरुष के सम्बंध इतने विशाल हो जाएँगे कि स्त्री का किसी पुरुष के घर पर जाना एक नैतिक पाप नहीं समझा जाएगा अपितु मानव स्वतंत्रता का एक भाग समझा जाएगा और निकाह को उसकी मानसिक दासता का लक्षण समझा जाएगा, जैसा कि आज फ्रांस और अमरीका के लाखों लोगों का विचार है । यह बात किसके मस्तिष्क में आ सकती थी कि किसी समय इस पर नितान्त गंभीरता से बहसें होंगी कि निकाह एक पुरातन विचार है । प्रत्येक पुरुष उस स्त्री से जिसे वह पसन्द करे सम्बन्ध स्थापित करके सन्तान उत्पन्न कर सकता है तथा स्त्री एक मूल्यवान मशीन से अधिक महत्व नहीं रखती, जिससे पूरा कार्य लेकर देश को लाभ पहुँचाना चाहिए जैसा कि आजकल कुछ कम्यूनिस्ट और विशेषकर बाल्शविक मतावलम्बियों का विचार है ।

जब अश्लीलता और व्यभिचार की अवस्था यह हो तो विचार किया जा सकता है कि अवैध बच्चे किस प्रचुरता से होंगे, क्योंकि जब तक देश में व्यभिचार (हरामकारी) एक दोष समझा जाए लोग ऐसी सन्तान पीछे छोड़ना पसन्द नहीं करते जिसे अवैध बच्चा होने का कटाक्ष किया जाए, परन्तु जिस समाज में व्यभिचार के अस्तित्व से ही इन्कार किया जाए और निकाह को व्यर्थ धार्मिक हस्तक्षेप समझा जाए उसमें ऐसी सन्तान से क्या लज्जा हो सकती है अपितु यों कहना चाहिए कि ऐसे समाज में ऐसी सन्तान के अतिरिक्त अन्य सन्तान मिल भी कहाँ सकती है । अत: उपर्युक्त विचारधारा वाले लोगों में ऐसी ही सन्तानें उत्पन्न की जाती हैं और उसे कुछ दोष नहीं समझा जाता ।

परन्तु इनके अतिरिक्त अन्य लोग जो निकाह को कम से कम एक पुरातन परम्परा समझ कर परित्याग करना नहीं चाहते, उनमें भी अवैध सन्तान के समर्थन में इस समय इस प्रकार का जोश पाया जाता है कि बड़े-बड़े दार्शनिक उनके देश के लिए एक नैमत तथा सुरक्षा का माध्यम ठहरा रहे हैं तथा ऐसी सन्तान को माता-पिता का उत्तराधिकारी बनाने के समर्थन में बड़े ज़ोर से आंदोलन कर रहे हैं और दूसरे रंग में सरकार को उन्हें अपना बच्चा समझ कर उनका विशेष तौर पर ध्यान रखने का परामर्श दे रहे हैं । जब परिस्थितियाँ ये हों तो उन क्षेत्रों में अवैध सन्तानों का जो बाहुल्य हो सकता है उसका उदाहरण पूर्वकालीन युगों में

मिलने का तो क्या अर्थ यह भी अनुमान नहीं किया जा सकता कि पूर्वकालीन युगों के लोग इस प्रकार की स्थिति की कल्पना भी कर सकते थे ।

एक परिवर्तन उस युग की नैतिक अवस्था के संबंध में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह बताया है कि - उस समय मदिरापान अत्यधिक बढ़ जाएगा । अतः मुस्लिम में अनस(रज़ि.) बिन मालिक से रिवायत है कि प्रलय के लक्षणों (निशानों) में से एक यह भी है कि يُشْرَبُ الْخَمْرُ[103] **(युशरबुलख़मरो)** मदिरापान बहुत होगा तथा अबू नईम ने 'हुलिया' में हुज़ैफ़ा बिन अलयमान(रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रलय के लक्षणों में से यह भी वर्णन किया है कि उस समय मार्गों में मदिरापान किया जाएगा ।[104] मदिरा (शराब) की अधिकता जो इस युग में है उसे किसी वर्णन की आवश्यकता नहीं । यूरोप में जितना मदिरापान होता है उतना पानी नहीं पिया जाता। प्राचीन युगों में भी लोग मदिरापान करते थे, परन्तु बतौर विलासता या औषधि के, परन्तु आजकल संसार के एक बड़े भू-भाग में मदिरा बतौर भोजन और पानी के पी जाती है । विशेषकर वह लक्षण जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वर्णन किया है कि मार्गों में मदिरापान किया जाएगा । यह इस युग को प्राचीन युगों से पृथक कर देता है । पूर्वकालीन युगों में चूँकि मदिरा भोग-विलास के साधनों में से समझी जाती थी तथा उसे प्राप्त करने के लिए वह प्रयास नहीं किया जाता था जो अब किया जाता है । विशेष-विशेष स्थानों पर दूकानें होती थीं जहाँ से लोग मदिरा खरीद लेते थे, परन्तु अब तो यह हाल है कि मदिरा पानी के स्थान पर प्रयोग होती है । इसलिए इसका थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मार्गों पर उपलब्ध कराना आवश्यक हो गया है । अतः यूरोप में मार्गों के किनारे-किनारे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मदिरा की दुकानें खुली हुई हैं ताकि यात्रियों का कंठ शुष्क न रह जाए तथा रेलों के साथ मदिरा का प्रबन्ध किया जाता है । चाहे भोजन का प्रबन्ध हो न हो, परन्तु प्रतीक्षालयों में मदिरा अवश्य तैयार रखी जाती है । लन्दन जैसे शहरों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर मदिरा और पानी के गिलास समान मूल्य पर बेचे जाते हैं, परन्तु पानी पीने के उद्देश्य से नहीं अपितु अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए

रखा जाता है । मदिरा की अधिकता का रेखा-चित्र इस वृत्तान्त से भली-भाँति समझ में आ सकता है जो हमारी जमाअत के इंग्लैण्ड के एक प्रचारक के सामने आया । उनका गृह-स्वामी उनकी सच्चरित्रता और सद्व्यवहार को देख कर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने एक दिन बड़े प्रेम से कहा - मैं आप को एक नसीहत करता हूँ जिसे भली-भाँति स्मरण रखें, इससे आपका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहेगा और वह यह है कि आप इस देश में पानी बिल्कुल न पिएँ । मेरे पिता ने जीवन पर्यन्त एक बार पानी पिया था, वह उसी दिन मर गया । मैंने अब तक कभी पानी नहीं पिया। जब हमारे प्रचारक ने कहा कि वह तो मदिरा की एक बूंद भी नहीं पीते, पानी ही पीते हैं तो वह अत्यन्त चकित हुआ तथा इस बात का मानना उसे बहुत कठिन मालूम हुआ ।

एक नौतिक परिवर्तन इस युग के सन्दर्भ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय जुआ खेलने की अधिकता होगी। [105] अत: हज़रत अली(रज़ि.) से दैलमी में रिवायत है कि प्रलय की निकटता के लक्षणों में से यह भी है कि उस समय जुए का खेल (ला'बे मयसिर) अधिक हो जाएगा। [106] यह परिवर्तन इस समय जिस सीमा तक प्रकट हो रहा है उस का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं । जुआ खेलना यूरोप और अमरीका के लोगों का न केवल व्यवसाय है अपितु उनकी सभ्यता का एक अटूट अंग हो गया है । जीवन के प्रत्येक भाग में जुए का किसी न किसी रंग में हस्तक्षेप है । जुए का सामान्य ढंग भोजन की सभाओं के पश्चात का एक सामान्य व्यवसाय है ही परन्तु इसके अतिरिक्त भी लाटरियों का वह बाहुल्य है कि यों कहना चाहिए कि व्यापार का भी पच्चीस प्रतिशत भाग जुए की भेंट चढ़ रहा है । निम्न से लेकर उच्च तक सब लोग जुआ खेलते हैं तथा कभी-कभी नहीं, लगभग प्रतिदिन। जुए के क्लब्स शायद समस्त क्लबों से अधिक धनाढ्य हैं । इटली का मान्टीकार्लो क्लब जो धनाढ्य लोगों के जुए का स्थल है कभी कभी एक एक दिन में जुए द्वारा करोड़ों रुपए कुछ हाथों से निकल कर कुछ अन्य हाथों में चले जाते हैं । सारांश यह कि जुए का इतना बाहुल्य है कि यह कहना उचित न होगा कि आधुनिक सभ्यता में से जुए को निकाल कर इतनी महान रिक्तता उत्पन्न हो जाती है कि उसकी पूर्ति

किसी अन्य वस्तु से नहीं की जा सकती । निर्भीक होकर इन्कार तथा खण्डन कहा जा सकता है कि पूर्वकालीन युगों में से कोई युग भी ले लिया जाए उसकी एक वर्ष की जुएबाज़ी इस युग की एक दिन की जुएबाज़ी से भी सहस्त्रों भाग कम रहेगी । जीवन बीमा, अग्नि बीमा, चोरी बीमा, बीसियों प्रकार के बीमे ही हैं जिनके अभाव में लोगों का कार्य नहीं चल सकता जबकि पूर्वकालीन लोग इनके नामों से भी अपरिचित थे ।

एक परिवर्तन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नैतिक दशा में यह वर्णन किया था कि उस समय पवित्र आत्मा समाप्त हो जाएगी [107] लोग इसकी भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ करते हैं, परन्तु बात स्पष्ट है । इस का अर्थ यह है कि उस समय पवित्र हृदय मनुष्य का प्राप्त होना असंभव हो जाएगा । अब इस बात को देख लीजिए, मसीह मौऊद के प्रभाव को पृथक करके सम्पूर्ण विश्व पर दृष्टि डाल लें हृदय की पवित्रता कहीं नहीं मिलेगी । कहाँ तो मुसलमानों में एक-एक समय में लाखों ख़ुदा वाले (ख़ुदा तक पहुँचे लोग) मनुष्य होते थे कहाँ आज इस आवश्यकता और आपदा के समय एक सदात्मा का उपलब्ध होना असंभव है । निसन्देह बड़े-बड़े गद्दी नशीन (किसी साधू या फ़क़ीर की गद्दी पर उत्तराधिकारी बन कर बैठने वाले) विद्वान, गुरु और सूफ़ी विद्यमान हैं जिनके सहस्त्रों, लाखों शिष्य और अनुयायी हैं परन्तु पवित्र हृदय कोई नहीं । उनमें से किसी एक का भी ख़ुदा तआला से संबंध नहीं । अपनी ओर से जाप और वज़ीफ़े करने तो पवित्रता का लक्षण नहीं हैं । पवित्रता का तो लक्षण यह है कि ख़ुदा तआला के प्रेम को ऐसे लोग आत्मसात करलें तथा ख़ुदा तआला उनके लिए अपने प्रेम को प्रकट करे तथा अपने स्वभिमान को उनके लिए जोश में लाए तथा उनकी नीयतों और इच्छाओं को पूर्ण करे, अपनी वाणी के रहस्यों को उन पर प्रकट करे, उनके हृदयों में अपने ज्ञान की सरिता बहा दे, वे इस्लाम पर आई हुई आपदाओं का निवारण करने वाले तथा वास्तविक तौर पर मुसलमानों के वास्तविक रोग़ों को दूर करने वाले हों परन्तु उनमें ऐसा एक व्यक्ति भी नहीं पाया जाता जो कि धर्म गुरू, सूफ़ी, क़ुतुब, अब्दाल, विद्वान तथा प्रतिष्ठावान कहलाए । अतः पवित्र हृदय को लोगों ने मार दिया है तथा तामसिक वृत्ति को जीवित कर दिया

है तथा वही उनका मूल उद्देश्य बन रहा है ।

इस युग का एक लक्षण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय अमानत समाप्त हो जाएगी। [108] अत: दैलमी ने हज़रत अली(रज़ि.) से रिवायत की है कि प्रलय की निकटता के लक्षणों में से एक लक्षण अमानत की समाप्ति भी है [109] अमानत समाप्त हो जाने तथा उसके स्थान पर बेईमानी के आ जाने से जो दृश्य दिखाई दे रहा है उसकी अधिक व्याख्या की आवश्यकता नहीं । प्रत्येक गाँव और प्रत्येक मुहल्ले और प्रत्येक घर के लोग इस परिवर्तन के कटु प्रभाव को महसूस कर रहे हैं ।

इस युग की नैतिक दशा के संबंध में एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया था कि उस समय लोग माता-पिता से तो सद्व्यवहार न करेंगे, परन्तु मित्रों से सद्व्यवहार करेंगे। [110] अत: अबू नईम ने 'हुलिए' में हुज़ैफ़ा बिन अलयमान से रिवायत की है कि उस समय पुत्र अपने पिता की आज्ञा का तो उल्लंघन करेगा तथा अपने मित्र से उपकार करेगा। [111] यह परिवर्तन भी इस समय इतनी अधिकता के साथ उत्पन्न हो रहा है कि प्रत्येक सभ्य व्यक्ति का हृदय इसे देखकर मोम की भाँति पिघल जाता है । पश्चिमी सभ्यता पर मुग्ध तथा आधुनिक विद्या से प्रकाश प्राप्त करने वाले लोग अपने बुज़ुर्गों को मूर्ख समझते हैं तथा उनकी संगत से बचते हैं और अपने समान मत रखने वाले युवाओं की लज्जाजनक सभाओं में अपना समय व्यतीत करने को सुख समझते हैं, मित्रों को भोजन पर बुलाने तथा उनके आदर-सत्कार पर व्यय करने के लिए उनके पास रुपया निकल आता है, परन्तु निर्धन माता-पिता की आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर उनका कभी ध्यान नहीं जाता । हिन्दुस्तान में ऐसे सहस्त्रों उदाहरण पाए जाते हैं कि माता-पिता ने भूखे-प्यासे रहकर तथा दिन-रात परिश्रम करके बच्चों को शिक्षा दिलाई, परन्तु जब सन्तान शिक्षित होकर नौकरी पर लगी तो उन्होंने अपने माता-पिता को अपने बराबर बैठाना भी शर्म का कारण समझा तथा उनके साथ ऐसा व्यवहार किया कि एक अपरिचित व्यक्ति उनको सेवक ही समझ सकता है। अब तो इस प्रकार के सहस्त्रों उदाहरण हैं, परन्तु पूर्वकालीन युगों में इस प्रकार का एक उदाहरण भी उपलब्ध होना कठिन है ।

शैक्षणिक अवस्था

जिस प्रकार मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग की नैतिक अवस्था रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वर्णन की है उसी प्रकार आप (स.अ.व.) ने इस युग की शिक्षा की स्थिति का भी वर्णन किया है । अतः तिरमिज़ी (हदीस की पुस्तक का नाम) में अनस(रज़ि.) बिन मालिक वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि प्रलय के लक्षणों में से एक लक्षण यह है कि 112 يُرْفَعُ الْعِلْمُ وَيَظْهَرُ الْجَهْلُ **युरफ़उलइल्मो व यज़हरुलजहलो** ज्ञान जाता रहेगा और निरक्षरता प्रकट हो जाएगी । इसी सन्दर्भ का वर्णन थोड़े से अन्तर के साथ अनस(रज़ि.) से बुख़ारी ने भी प्रस्तुत किया है। **113** यह परिवर्तन भी उत्पन्न हो चुका है। एक वह समय था कि मुसलमानों की स्त्रियाँ भी धर्मशास्त्र में निपुण थीं। हज़रत उमर(रज़ि.) फ़रमाते हैं कि अन्सार (मदीना-वासी) की स्त्रियाँ भी उमर(रज़ि.) से अधिक क़ुर्आन का ज्ञान रखती हैं । इस से उनका अभिप्राय यह था कि बच्चा-बच्चा क़ुर्आन करीम से ऐसा परिचित है कि वह बड़े से बड़े विद्वान के फ़त्वे पर प्रतिप्रश्न कर सकता है। अपने अशिक्षित होने या मूर्खता के कारण नहीं अपितु तर्कों के आधार पर । हज़रत आइशा(रज़ि.) के ज्ञान और दक्षता का कौन इन्कार कर सकता है, परन्तु आज धार्मिक शिक्षा की यह स्थिति है कि ऐसे लोगों के अतिरिक्त जो दूसरी विद्याएं प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखते इसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देता । जो शिक्षा केवल इसलिए प्राप्त की जाए कि उसकी प्राप्ति पर कुछ व्यय नहीं होता अपितु मुफ्त में जीविका प्राप्त हो जाती है उसमें क्या बरकत हो सकती है तथा इस नीयत से शिक्षा प्राप्त करने वाले संसार को क्या लाभ पहुँचा सकते हैं ।

इस हदीस का समर्थन और बहुत सी हदीसों से भी होता है । इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि उस समय सब प्रकार के ज्ञान समाप्त हो जाएँगे अपितु इससे अभिप्राय केवल धार्मिक विद्याएं हैं अन्यथा सांसारिक विद्याओं का बाहुल्य तो हदीसों से प्रमाणित है । अतः तिरिमज़ी में अबू हुरैरा(रज़ि.) से रिवायत है कि अन्तिम युग में धार्मिक उद्देश्यों के अतिरिक्त अन्य उद्देश्यों के लिए ज्ञान प्राप्त किए जाएँगे। **114** और यही स्थिति इस समय विद्यमान है ।

सांसारिक विद्याएं इतनी उन्नति कर गई हैं कि एक संसार उन की उन्नति पर आश्चर्य चकित है तथा धार्मिक विद्याएं इतनी लापरवाही का शिकार हो रही हैं कि नितान्त मूर्ख लोग विद्वान कहलाए जा रहे हैं ।

सामाजिक अवस्था

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद (अलै.) के युग की सामाजिक स्थिति की भी रूपरेखा चित्रित की है । अधिकांश ऐसे लक्षण वर्णन किए हैं जिन से उस समय की सामाजिक स्थिति का पूर्ण रेखा-चित्र सामने आ जाता है । अत: उन लक्षणों में से एक यह है कि उस समय 'सलाम' का ढंग बदला हुआ होगा । इमाम अहमद बिन हंबल रहमहुल्लाह मआज़ बिन अनस(रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि इस उम्मत की दुर्दशा और बरबादी के युग का एक लक्षण यह होगा (यही समय मसीह मौऊद का है) कि लोग परस्पर मिलते हुए एक दूसरे पर लानत (फटकार) करेंगे। [115] यद्यपि कि व्याख्याकारों ने इस हदीस के ये अर्थ किए हैं कि इस से अभिप्राय अधम लोगों का परस्पर मिलते समय एक दूसरे को गालियाँ देना है परन्तु वास्तव में इसमें इस से भी अधिक एक अन्य परिवर्तन की ओर संकेत है जो अधम व्यक्तियों में ही नहीं अपितु कुछ क्षेत्रों के मुसलमान सभ्य लोगों में भी पाया जाता है और वह 'बन्दगी' और 'तसलीम' का रिवाज है । हिन्दुस्तान में बड़े लोग परस्पर सलाम कहना अपमान समझते हैं तथा उसके स्थान पर 'आदाब' और 'तस्लीम' कहते हैं अपितु हिन्दुओं के अनुसरण में 'बन्दगी' तक कह देते हैं जिसका अभिप्राय यह है कि मैं आपके समक्ष अपनी दासता को प्रकट करता हूँ । ये शब्द उन शब्दों के स्थान पर प्रयोग करते हैं जिसका अभिप्राय सुरक्षा और सलामती है वास्तव में लानत ही है, क्योंकि जब कोई व्यक्ति द्वैतवाद के शब्द कहता है अथवा ख़ुदा के लिए जिस आज्ञाकारिता का प्रकटन विशिष्ट है उसका प्रकटन लोगों के लिए करता है वह एक दूसरे पर ख़ुदा की लानत डालता है । 'आदाब' का शब्द जिसका रिवाज मुसलमानों में अधिक है उसका भी वास्तव में यही अर्थ है कि हम 'बन्दगी' और 'तस्लीम' कहते हैं । यह शब्द इसलिए अपना लिया गया है

ताकि ऐसे द्वैतवादी शब्द निरन्तर प्रयोग करने से हृदय में जो भर्त्सना उत्पन्न होती है उसके प्रभाव से सुरक्षित हो जाएँ ।

एक सामाजिक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय मुसलमानों में सम्मान धर्म के कारण न होगा अपितु धन-दौलत और राजनैतिक कार्यों के कारण होगा। [116] इब्ने मरदविया रहमहुल्लाह ने इब्ने अब्बास(रज़ि.) से रिवायत की है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि - प्रलय के लक्षणों में से एक यह भी है कि उस समय धनाढ्य व्यक्ति का सम्मान होगा। [117] यह स्थिति भी अब उत्पन्न हो चुकी है । वह प्राचीन नियम जो खानदानी प्रतिष्ठा को समस्त सम्मान के कारणों पर प्रमुखता दिए हुए था अब बिल्कुल मिट गया है तथा सम्मान का एक ही मापदण्ड है कि व्यक्ति धनवान हो । पहले धनवान और दौलतमन्द लोग विद्वानों की सभाओं में उपस्थित होते थे और अब विद्वान इस बात में गर्व महसूस करते हैं कि उन्हें किसी धनाढ्य की मित्रता का गौरव प्राप्त है या यों कहिए कि उसकी चौखट पर नत मस्तक होने का गौरव प्राप्त है ।

इसी प्रकार हुज़ैफ़ा इब्नुलयमान से रिवायत है कि मुसलमानों पर एक समय आने वाला है कि एक व्यक्ति की प्रशंसा की जाएगी कि -

مَا اَجْلَدَهٗ وَاَظْرَفَهٗ وَاَعْقَلَهٗ وَمَا فِیْ قَلْبِهٖ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ مِّنْ اِیْمَانٍ [118]

(मा अज्लदहू व अज़रफ़हू व आ'क़लहू व मा फ़ी क़ल्बिही मिस्क़ालो हब्बतिन मिन ख़रदलिन मिन ईमान) अर्थात् कहा जाएगा कि अमुक व्यक्ति क्या ही योद्धा है, क्या ही प्रसन्नचित्त, क्या ही सुशील, क्या ही बुद्धिमान है हालाँकि उस व्यक्ति के हृदय में एक राई के दाने के बराबर भी ईमान न होगा । यह स्थिति भी इस समय विद्यमान है । कोई व्यक्ति चाहे कितना ही अधर्मी हो मुसलमानों के अधिकारों का नाम लेकर खड़ा हो जाए तुरन्त मुसलमानों का नेता बन जाएगा कोई नहीं पूछेगा कि यह व्यक्ति इस्लाम पर तो क़ायम नहीं इसे ख़ुदा तआला ने इस्लाम का नेता क्योंकर बना दिया । इतना ही पर्याप्त समझा जाएगा कि यह अच्छा भाषण देता है या अपने प्रतिद्वन्द्वी का बड़ी बुद्धिमत्ता से मुकाबला कर सकता है अथवा राजनैतिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपने प्राण देने को तैयार है ।

एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय मोमिन अपमानित होंगे तथा लोगों के भय से छुपते फिरेंगे। [119] हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) से इब्ने मरदविया(रज़ि.) ने रिवायत की है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रलय के लक्षणों में से एक लक्षण यह वर्णन किया है कि मोमिन एक युद्ध में बन्दी बनाई गई स्त्री से भी अधिक अपमानित समझा जाएगा। [120] जिसका अर्थ यह है कि उस बन्धक स्त्री से भी लोग प्रेम-सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं तथा उस से विवाह कर लेते हैं, परन्तु मोमिन से सम्बन्ध उत्पन्न करना उन दिनों कोई पसन्द नहीं करेगा । इसी प्रकार हज़रत अली(रज़ि.) से दैलमी ने रिवायत की है कि उन दिनों नेक लोग (सदात्मा) छुप-छुप कर फिरेंगे। [121] यह स्थिति भी एक समय से उत्पन्न हो चुकी है । मोमिनों से सम्बन्ध रखने को अवैध समझा जाता है । क़ुर्आन करीम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मार्ग का जो सच्चा अनुयायी हो मुसलमानों में उस से अधिक निकृष्ट व्यक्ति कोई नहीं समझा जाता । यहाँ तक कि मसीह मौऊद के आगमन के पश्चात् तो यह लक्षण ऐसा प्रकट हो गया है कि व्यभिचारिणी स्त्रियों, नमाज़ न पढ़ने वालों, बेईमानों, झूठों तथा अल्लाह और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुरा कहने वालों से सम्बन्ध रखना तथा उनके साथ सद्व्यवहार करना तो वैध समझा जाता है परन्तु जिन लोगों ने आकाशीय स्वर पर स्वयं को प्रस्तुत किया है उनको धिक्कारा जाता है तथा उन से शत्रुता रखी जाती है ।

इस युग का एक लक्षण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय मुसलमानों में अरबी का चर्चा कम हो जाएगा। [122] अत: इब्ने अब्बास(रज़ि.) से मरदविया(रज़ि.) ने रिवायत की है कि आप (स.अ.व.) ने प्रलय के लक्षणों में से एक लक्षण यह वर्णन किया है कि उस समय नमाज़ियों की पंक्तियां तो लम्बी-लम्बी होंगी परन्तु भाषाएँ भिन्न-भिन्न होंगी। [123] यह नक़्शा हज के दिनों में भली भाँति दिखाई देती है । हज के महान उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह भी था कि उसके द्वारा इस्लामी एकता स्थापित रहे, परन्तु अरबी भाषा को त्याग देने के कारण वहाँ लोग एकत्र होकर भी हज के कर्त्तव्य को अदा करने के अतिरिक्त कोई सामूहिक या क़ौमी लाभ प्राप्त नहीं कर सकते । यदि

मुसलमान अरबी भाषा को जीवित रखते तो यह भाषा समस्त संसार के लोगों को एक ऐसी सुदृढ़ श्रृंखला में बांध देती जो किसी शत्रु के आक्रमण से न टूटती ।

उस समय की एक सामाजिक स्थिति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन की है कि उस समय स्त्रियाँ लिबास के बावजूद नग्न होंगी [124] यह स्थिति भी इस समय दो प्रकार से उत्पन्न हो रही है। एक तो उत्तम कपड़ा इतना सस्ता हो गया है कि सामान्यतया लोग वह कपड़ा पहन सकते हैं जो पहले धनवान लोगों तक सीमित था और कपड़े भी इतने बारीक तैयार होने लग गए हैं कि उन का लिबास पहनने से एक वैचारिक सुन्दरता तो शायद उत्पन्न हो जाती होगी, परन्तु पर्दा निश्चय ही नहीं होता और संसार का अधिकांश भाग इस वेशभूषा का दीवाना हो रहा है तथा इसे स्त्रियों के लिए सुन्दरता समझ रहा है । दूसरी स्थिति यह है कि यूरोप और अमरीका की स्त्रियों की वेश-भूषा का ढंग ऐसा है कि उनके कुछ छुपाने योग्य भाग नग्न रहते हैं । उदाहरणतया सामान्य तौर पर अपनी छातियाँ नग्न रखती हैं, कुहनियों तक बाहें नग्न रखती हैं । अत: लिबास के बावजूद वे नग्न होती हैं । अत: दो प्रकार से इस लक्षण का प्रकटन हो रहा है । मुसलमानों में बारीक कपड़े के प्रयोग से और ईसाइयों में सीना, सर और बाज़ुओं को नग्न रखने से ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अन्तिम युग का एक लक्षण जो मसीह मौऊद के प्रकटन का युग है यह वर्णन किया है कि स्त्रियाँ उस समय अपने सर के बालों को ऊँट के कोहान (ऊँट की पीठ का ऊँचा भाग) की भाँति रखेंगी [125] अत: यूरोप की स्त्रियों का यही ढंग है । वे सर को गूंधना पसन्द नहीं करती हैं तथा बालों को फुलाकर इस प्रकार रखती हैं कि यों ज्ञात होता है कि जैसे सर पर कोई अन्य वस्तु रखी है । अन्य जातियां भी उन के शासन से प्रभावित होकर उन का अनुसरण कर रही हैं और जिस प्रकार लोग उन के शेष कथनों और कार्यों को आकाशीय वह्यी से अधिक महत्व की दृष्टि से देखते हैं, इस बात में भी उनके अनुकरण में सभ्यता की उन्नति देखते हैं ।

उस युग का एक लक्षण हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह रिवायत किया है कि उस समय पत्नी

अपने पति के साथ मिलकर व्यापार करेगी [126] यह लक्षण भी प्रकट हो चुका है अपितु इस का इतना ज़ोर है कि स्त्रियों के बिना व्यापार सफल ही नहीं समझा जाता तथा इससे भी अधिक अब यह स्थिति उत्पन्न हो रही है कि यूरोप के कुछ शहरों में दूकानों पर कुछ सुन्दर स्त्रियाँ केवल इस उद्देश्य से रखी जाती हैं कि वे ग्राहकों से मिलकर उनके हृदयों को लुभाने का प्रयास किया करें ताकि वे सौदा वहीं से अवश्य ख़रीदें तथा सौदा खरीदे बिना न लौट जाएँ ।

उस युग की सामाजिक स्थिति का एक लक्षण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय स्त्रियाँ इतनी स्वतंत्र होंगी कि वे पुरुषों की वेश-भूषा धारण करेंगी, घोड़ों पर सवार होंगी [127] अपितु पुरुषों पर शासन करेंगी [128] वर्तमान समय की सामाजिक स्थिति में यह परिवर्तन भी उत्पन्न हो चुका है तथा अमरीका और अन्य ईसाई देशों में तथा उनकी देखा देखी अन्य धर्मावलम्बियों में भी स्त्रियों की स्वतंत्रता का एक गलत अर्थ लिया जाने लगा है कि सुनकर आश्चर्य होता है । उन विचारों के प्रभाव से समाज की वर्तमान स्थिति पूर्वकालीन समाज की स्थिति से बिल्कुल परिवर्तित हो गई है । स्त्रियाँ अधिकांशतया पुरुषों के साथ मिलकर घोड़ों पर सवार होकर शिकार और घुड़दौड़ों में सम्मिलित होती हैं अपितु सरकस में तमाशे दिखाती हैं । पुरुषों की वेश-भूषा धारण करने का रिवाज भी मसीही देशों में अत्यधिक है विशेषतया युद्धोपरांत तो लाखों स्त्रियों ने बिल्कुल पुरुषों की वेश-भूषा धारण करना प्रारंभ कर दिया है । बिरजिस और छोटा कोट भी उन में एक फ़ैशन का रूप धारण कर गया है ।

स्त्रियों को पुरुषों पर जो शासन प्राप्त हो चुका है वह भी अपने ढंग में विचित्र है । वास्तव में इस बात में यूरोप की सामाजिक स्थिति तथा उसके प्रभाव से अन्य देशों की सामाजिक स्थिति में ऐसा अन्तर आ गया है कि उसके दुष्प्रभाव यदि ख़ुदा तआला की कृपा से दूर न हुए तो उनके दूर होने का अन्य कोई मार्ग नहीं, या तो उन का परिणाम यह निकलेगा कि कोई भयंकर उपद्रव फूटेगा या विवाह की प्रथा बिल्कुल बन्द हो जाएगी और मानव-वंश के उत्थान को एक असहनीय आघात पहुँचेगा ।

उस युग की सामाजिक स्थिति का एक लक्षण रसूले करीम

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय पुरुष स्त्रियों की भाँति श्रृंगार करेंगे तथा उनका ही रूप धारण करेंगे [129] ये परिवर्तन भी उत्पन्न हो चुके हैं । संसार का अधिकांश भाग दाढ़ियाँ मुंडवा कर स्त्रियों से समरूपता धारण कर रहा है । किसी समय दाढ़ी पुरुष की सुन्दरता समझी जाती थी और मुसलमानों के लिए तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करते हुए एक इस्लामी आचरण था, वह अब अधिकांश मुखमंडलों से लुप्त हो चुकी है अपितु ऐसे लोग भी जिन्हें इस्लामी संसार में अत्यधिक धार्मिक महत्व दिया जाता है उसको मूँढ देने में ही अपने मुखमंडलों का सौन्दर्य देखते हैं ।

इस भविष्यवाणी के अन्तर्गत दूसरा परिवर्तन थिएटरों का बाहुल्य है कि उनमें अधिकांश पुरुष स्त्रियों का और स्त्रियाँ पुरुषों का रूप धारण करके नाटक करते, गाते और नृत्य करते हैं । इसी प्रकार यूरोप और अमरीका में पुरुष जितना अपने सर की सफाई का ध्यान रखते हैं और जिस प्रकार उनके श्रृंगार का ध्यान रखते हैं वह इस युग की स्त्रियों से तो नहीं परन्तु प्राचीन-काल की स्त्रियों से अवश्य बढ़कर है ।

शारीरिक अवस्था

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग के लोगों की शारीरिक और स्वास्थ्य की स्थिति भी वर्णन कर दी है । अत: 'तिरमिज़ी' (हदीस की पुस्तक) में हज़रत अनस(रज़ि.) से रिवायत है कि जब दज्जाल प्रकट होगा और मदीना की ओर चलेगा तो उस समय प्लेग भी फैलेगी और अल्लाह तआला प्लेग और दज्जाल दोनों से मदीना की सुरक्षा करेगा। [130] यह स्थिति भी उत्पन्न हो चुकी है । पच्चीस वर्ष से संसार में प्लेग इतने भयंकर वेग से आक्रमणकारी है कि ख़ुदा की शरण । लाखों घर वीरान हो गए, सैकड़ों कस्बे और देहात उजड़ गए, परन्तु अल्लाह तआला ने पवित्र स्थानों को किसी बड़े आक्रमण से बिल्कुल सुरक्षित रखा है और प्रत्यक्ष कारण इस का यह बता दिया है कि भिन्न-भिन्न दिशाओं में स्पर्शवर्जन (Quarantine)स्थापित किए जा चुके हैं जिन के माध्यम से उसके विष को दूर रखा जाता है । प्लेग के सन्दर्भ में

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने विभिन्न शब्दों में सूचना दी है। कुछ स्थानों पर उसे **दाब्बतुलअर्ज़** (पृथ्वी का कीड़ा) के शब्दों से नामित किया है,[131] क्योंकि यह रोग एक कीड़े से उत्पन्न होता है जो पृथ्वी से मनुष्य के शरीर में प्रवेश करता है । क़ुर्आन करीम में भी इस का यही नाम है । यह प्लेग कोई साधारण संक्रामक रोग नहीं है अपितु इस संक्रामक रोग ने संसार के अधिकांश भागों में अपनी तबाही का जाल बिछा दिया है तथा हिन्दुस्तान में तो छब्बीस वर्ष से अब तक डेरा लगाए हुए है ।

इस दाब्बह (कीड़ा) के निकलने की भविष्यवाणी में केवल प्लेग की ही सूचना नहीं है अपितु इसमें यह भी संकेत मालूम होता है कि उस समय ऐसे अनेक रोग उत्पन्न हो जाएँगे जो सूक्ष्मदर्शी कीड़ों द्वारा फैलेंगे । हम देखते हैं कि इस युग में अनेक ऐसे रोग उत्पन्न हो गए हैं जो सूक्ष्मदर्शी कीटाणुओं के द्वारा फैलते हैं जो इससे पूर्व या तो थे ही नहीं या इस रूप में कभी प्रकट नहीं हुए थे । इस क़ुर्आनी और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बताई हुई भविष्यवाणी में वास्तव में सूक्ष्मदर्शी यंत्र के आविष्कार और उसके प्रभाव को भी प्रकट किया गया है क्योंकि इसके बिना संसार को क्योंकर ज्ञात हो सकता था कि इन रोगों का कारण एक दाब्बह अर्थात् कीड़ा है । पहले तो लोग श्लेष्मा (कफ़), पित्त, धातु और रक्त पर ही सब रोगों के कारणों की श्रृंखला को समाप्त कर देते थे ।

मसीह मौऊद के युग में सामान्य स्वास्थ्य की स्थिति के सन्दर्भ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने और भी लक्षण वर्णन किए हैं जिन में से एक यह है कि उस समय अकस्मात मृत्यु (मरगे मफ़ाजात) प्रकट होगी[132] अर्थात् बड़े बाहुल्य के साथ इसके उदाहरण पाए जाएँगे अन्यथा एक दो तो हमेशा होती ही रहती हैं । अत: इस भविष्यवाणी के अनुसार इस समय में अकस्मात मृत्यु के उदाहरण भी अधिकतर पाए जाते हैं । उसका एक कारण तो मदिरा की अधिकता है तथा दूसरा शिक्षा की उन्नति। मदिरा से हृदय और मस्तिष्क कमज़ोर हो जाते हैं, अध्ययन की अधिकता और कार्य की अधिकता से मांस-पेशियों की शक्ति कमज़ोर हो जाती है। ये दोनों बातें इस समय अपने ज़ोर पर हैं, जिसका परिणाम यह कि मदिरापान करने वाली जातियों में अकस्मात मृत्यु इतनी अत्यधिक है कि

ख़ुदा की पनाह ! प्रति वर्ष सहस्त्रों लोग हृदय के रोगों से खड़े-खड़े या बैठे-बैठे या लेटे-लेटे तुरन्त मर जाते हैं जिनका उदाहरण प्राचीन युगों में उपलब्ध नहीं है ।

सामान्य स्वास्थ्य के सन्दर्भ में एक यह बात भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वर्णन की है कि उस समय नाक से संबंधित एक रोग होगा जिस से बड़े बाहुल्य के साथ लोग मर जाएँगे। [133] यह रोग भी उत्पन्न हो चुका है जिसे चिकित्सा की परिभाषा में इन्फ़्लूऐन्ज़ा कहते हैं। इस रोग से सन् 1918 ई. में समस्त संसार में दो करोड़ लोग मर गए। हालाँकि पंचवर्षीय विश्ययुद्ध में केवल साठ लाख के लगभग लोग मरे थे । अर्थात् समस्त विश्व की जनसंख्या का डेढ़ प्रतिशत भाग इस रोग से नष्ट हो गया तथा संसार को यह रोग प्रलय का विश्वास प्रदान कर गया, क्योंकि लोगों ने देख लिया कि यदि अल्लाह तआला चाहे तो उसके लिए संसार का अन्त कर देना कुछ भी कठिन नहीं है ।

संतान का अनुपात

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस युग के संतान के अनुपात की भी रूप-रेखा का चित्रण किया है । अत: आप फ़रमाते हैं कि उस युग में स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक हो जाएँगी, यहाँ तक कि पचास स्त्रियों का संरक्षक एक पुरुष होगा। [134] यह भविष्यवाणी भी पूरी हो चुकी है । इस समय संसार में स्त्रियाँ अधिक हैं । यूरोप के कुछ देशों में युद्ध में पुरुषों के मारे जाने के कारण स्त्रियों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि वे जातियां जो इस्लाम पर कई स्त्रियों से विवाह करने के मामले पर उपहास किया करती थीं, अब स्वयं बड़ी गंभीरता से इस मामले पर विचार कर रही हैं कि वर्तमान गड़बड़ी का समाधान कई विवाहों के अतिरिक्त और क्या हो सकता है । बड़े-बड़े दार्शनिक इस विषय पर लेख लिख रहे हैं कि इस समय सरकारों को तबाही से बचाने तथा सामाजिक अनुशासन को स्थापित रखने के लिए या तो एक से अधिक पत्नियों की अनुमति होना चाहिए या व्यभिचार को प्रत्यक्ष तौर पर जितना बुरा समझा जाता था उस पर्दे को भी उठा देना चाहिए । इस बात की ओर

अधिकांश लोग प्रवृत्त (झुके हुए) हैं कि ऐसे लोगों को जो एक से अधिक पत्नियाँ करते हैं अदालतों में नहीं घसीटना चाहिए तथा उनके इस कृत्य पर पर्दा डालना चाहिए । यह विचारों में परिवर्तन स्त्रियों की बहुलता का परिणाम है अन्यथा कुछ ही समय पूर्व यूरोप के लोगों की दृष्टि में कई स्त्रियों से विवाह करना अत्यंत घोर अपराधों में गिना जाता था तथा कोई ईसाई इसका सांकेतिक समर्थन भी नहीं कर सकता था अपितु उनकी घृणा को देख कर मुसलमान भी इस्लाम की ओर से कई विवाह की अनुमति देने पर बहाने करने लग गए थे ।

परस्पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग के संदर्भ में जो भी वर्णन किया है कि उस समय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध किस प्रकार के होंगे । आप ने सूचना दी है कि उस समय ऐसे साधन निकल आएँगे कि लोग पुरानी सवारियों को त्याग देंगे तथा नई सवारियों पर सवार होंगे । थल और जल पर नवीन प्रकार की सवारियाँ चलेंगी । अत: आप फ़रमाते हैं لَيُتْرَكَنَّ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعٰى عَلَيْهَا[135] **(लयुतरकन्नलक़िलासो फ़ला युसआ अलयहा)** उस युग में सवारी की ऊँटनियाँ त्याग दी जाएँगी तथा लोग उनकी ओर ध्यान नहीं देंगे । अत: इस समय यही हो रहा है । अधिकांश देशों में रेल की सवारी के कारण पुरानी सवारियाँ बेकार होती जाती हैं । पहले अकेली रेल थी तो दूसरी सड़कों पर यात्रा करने के लिए लोग फिर भी ऊँट इत्यादि के मुहताज होते थे, परन्तु जब से मोटर गाड़ी निकली है उस समय से तो घोड़ों इत्यादि की इतनी भी आवश्यकता नहीं रही तथा ज्यों-ज्यों इन सवारियों का उत्थान होगा पुरानी सवारी के जानवर त्यक्त होते चले जाएँगे ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस युग के सन्दर्भ में यह सूचना भी दी थी कि उस समय रेलों के अतिरिक्त भाप से चलने वाले जहाज़ भी निकल आएँगे । जैसा कि आप वर्णन करते हैं - दज्जाल का गधा पानी पर भी चलेगा और जब वह चलेगा तो उसके आगे और पीछे बादल होगा।[136] इससे आप का अभिप्राय रेल तथा वाष्पचलित

जहाज़ ही हैं, क्योंकि यही गधा है जो थल और जल पर चलता है । इससे कलीसिया (ईसाइयों) ने जितना काम लिया है अन्य किसी जाति ने नहीं लिया । इसके माध्यम से पादरी इंजीलें बग़ल में दबा कर संसार के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँच गए तथा समस्त विश्व को अपनी मक्कारी के जाल में फांस लिया है । रेल और जहाज़ के कभी आगे, कभी पीछे धुएँ का बादल होता है जो कभी उसका साथ नहीं छोड़ता तथा इन दोनों सवारियों की खुराक भी पत्थर है (अर्थात् पत्थर का कोयला) दज्जाल के गधे की जो ख़ुराक (ईंधन) हदीसों में वर्णन हुई है उन सवारियों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की पद्धति ही बिल्कुल परिवर्तित कर दी है ।

आर्थिक अवस्था

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग की आर्थिक स्थिति की भी रूप-रेखा का चित्रण किया है । हुज़ैफ़ा इब्नुल यमान(रज़ि.) से अबू नईम ने 'हुलिया' में रिवायत की है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि प्रलय के लक्षणों में से एक लक्षण यह है कि उस समय सोना (स्वर्ण) अधिक हो जाएगा और चाँदी लोगों का उद्देश्य हो जाएगी [137] यह अवस्था भी अब उत्पन्न है । सोने की इतनी बहुतात है कि इससे पूर्व इसका दसवाँ भाग भी न था । सोने और चाँदी की सैकड़ों नई दूकानें निकल आई हैं फिर सोने और चाँदी के निकालने के आधुनिक साधन आविष्कृत किए गए हैं, जिनके कारण सोने-चांदी की मात्रा बहुत अधिक हो गई है, यदि केवल इंग्लैंड का ही सोना लिया जाए तो कदाचित पूर्वकालीन युग के समस्त विश्व के सोने से अधिक निकले । अत: इसका एक स्पष्ट प्रभाव यह ज्ञात होता है कि इस समय व्यापार नितान्त उन्नति कर गया है तथा समस्त व्यापार सोने और चाँदी के साथ होता है । पूर्वकालीन युगों में क्रय-विक्रय कौड़ियों और पैसों पर आधारित था, परन्तु अब इन कौड़ियों को कोई पूछता ही नहीं तथा कुछ देशों में पैसों को कोई नहीं जानता । जैसे इंग्लैण्ड में कि वहाँ सब से छोटा प्रचलित सिक्का एक आने का सिक्का है तथा अमरीका में सब

से प्रचलित सिक्का दो पैसे का है । उन देशों में अधिकांश कार्य तो सोने के सिक्कों से ही होते हैं ।

उस समय की आर्थिक स्थिति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह बताई है कि ब्याज बहुत बढ़ जाएगा । अत: हज़रत अली(रज़ि.) से दैलमी ने रिवायत की है कि प्रलय के निकट होने के लक्षणों में से एक लक्षण यह है कि उस समय ब्याज का प्रचलन अत्यधिक हो जाएगा। **138** यह बात भी उत्पन्न हो चुकी है । इस समय ब्याज को जितनी उन्नति प्राप्त है उसका लाखवां अपितु करोड़वां भाग भी पहले कभी प्राप्त नहीं हुआ। थोड़े-बहुत को अपवाद समझ कर समस्त व्यापार ब्याज पर चलते हैं और कहा जाता है कि यदि ब्याज न लें तो कार्य चल ही नहीं सकता । बैंकों की वह बहुतात है कि हज़ारों की संख्या से भी अधिक हो गए हैं । सरकारें ब्याज लेती और देती हैं, व्यापारी ब्याज लेते और देते हैं, कारीगर ब्याज लेते और देते हैं, धनवान लोग ब्याज लेते और देते हैं । अत: प्रत्येक जाति के लोग ब्याज पर काम चला रहे हैं अपितु यों कहना चाहिए कि यह वह युग है जिस में प्रत्येक व्यक्ति ने प्रण कर लिया है कि वह दूसरे के रुपयों से काम चलाएगा तथा अपना रुपया दूसरों को काम चलाने के लिए देगा । यदि एक करोड़ का व्यापार हो रहा है तो उसमें शायद कुछ हज़ार रुपया ब्याज के लक्ष्य से बाहर रहेगा, शेष सब का सब ब्याज के चक्र में आया हुआ होगा । मुसलमान जिन्हें कहा जाता था कि यदि तुम ब्याज लेने से नहीं रुकते तो فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ 139 **(फ़ाज़नू बिहरबिम्मिनल्लाहे)** अल्लाह तआला से युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ । उनका भी यह हाल है कि अधिकांश तो ब्याज का नाम लाभ रखकर उसका उपभोग कर रहे हैं और कुछ अपनी कमज़ोरी का इक़रार करके उसका लैन-देन कर रहे हैं । विद्वानों ने बड़ी विचित्र व्याख्याएँ करके बैंकों के ब्याज की वैधता का फ़त्वा दे दिया है तथा यह कह कर कि काफ़िरों के अधीन देशों में ब्याज लेना वैध है । किसी भी प्रकार के ब्याज में बाधा नहीं रहने दी तथा अन्तिम शरीअत के पश्चात एक नवीन शरीअत बनाने वाले हो गए हैं । इन समस्त परिस्थितियों से विदित होता है कि ब्याज का आक्रमण इस युग में इतना भयंकर है कि उसका मुकाबला उन लोगों के अतिरिक्त कि जिन की रक्षा

ख़ुदा करे कोई नहीं कर सकता ।

अन्तिम युग की आर्थिक स्थिति की एक विशेषता रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन की है कि उस समय ईसाई लोग समृद्ध होंगे और अन्य लोग निर्धन होंगे । अत: 'तिरमिज़ी' (हदीस की पुस्तक) ने नवास बिन समआन(रज़ि.) की रिवायत से उद्घृत किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि - दज्जाल लोगों से कहेगा कि मुझे स्वीकार कर लो । जो लोग उसका इनकार करेंगे उनके घर का समस्त माल दज्जाल के साथ ही चला जाएगा और जो उस पर ईमान लाएँगे वे खूब धनी हो जाएँगे । वह उनके लिए आकाश से वर्षा करवाएगा और पृथ्वी से उगलवाएगा। [140] अत: यही हाल अब है । ईसाई जातियां दिन-रात धन-दौलत में उन्नति कर रही हैं तथा उनकी विरोधी जातियां दिन-प्रतिदिन निर्धन होती जाती हैं । सौ वर्ष से निरन्तर यही स्थिति पैदा हो रही है ।

राजनैतिक अवस्था

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग की राजनैतिक स्थिति का ऐसा चित्रण किया है कि उसे पढ़कर यह वर्तमान युग स्वयं सामने आ जाता है । विभिन्न राजनैतिक परिवर्तन जो मसीह मौऊद के युग में उत्पन्न होने आवश्यक हैं, उनमें से कुछ ये हैं :-

(1) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हुज़ैफ़ा इब्नुलयमान ने रिवायत की है और अबू नईम ने 'हुलिया' में इसे वर्णन किया है कि आप ने फ़रमाया प्रलय के लक्षणों में से एक यह भी है कि उस समय मुसलमानों पर इतने कष्ट आएँगे कि वे यहूदियों के समान हो जाएँगे [141] जिस से आप (स.अ.व.) का अभिप्राय यह है कि मुसलमानों के शासन और उनका प्रभुत्व जाता रहेगा और यहूदियों की भाँति उनके जीवन का अवलम्बन दूसरों पर होगा । यह लक्षण भी पूर्ण हो चुका है । इस्लामी शासन समाप्त हो गए हैं और उनके बहुत थोड़े अवशेष शेष हैं । या तो संसार पर इस्लामी झंडा ही लहराता दिखाई देता था या अब उस झंडे को लहराने के लिए कोई स्थान नहीं मिलता । मुसलमान अपनी सरकारों को

स्थापित रखने के लिए किसी न किसी ईसाई सरकार की सहायता के मुहताज हैं । اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیۡہِ رَاجِعُوۡنَ **(इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलयहे राजिऊन)** ।

एक राजनैतिक परिवर्तन मसीह मौऊद के युग का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि श्याम, इराक़ और मिस्र उस समय के राजा के हाथ से निकल जाएगा तथा अरब के लोगों की स्थिति फिर अराजकता की हो जाएगी । अत: 'मुस्लिम' (हदीस की पुस्तक) में अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि - इराक़ अपने दिरहम और अनाज रोक देगा तथा श्याम अपने दीनार और अनाज को रोक देगा और मिस्र अपने अनाज को रोक देगा [142] और तुम पुन: वैसे के वैसे ही हो जाओगे जैसे कि पहले थे अर्थात् अरब में अराजकता फैल जाएगी । यह लक्षण भी पूरा हो गया है। इराक़, श्याम और मिस्र बादशाह के अधिकार से निकल गए हैं और तुर्की की सरकार को किसी प्रकार का कर और सहायता नहीं देते, अरब फिर अराजकता की स्थिति में हो गया है । यद्यपि हिजाज़ में एक शासन स्थापित है, परन्तु अभी तक उसकी स्थिति शत्रुओं की अधिकता तथा धन की कमी के कारण सुरक्षित नहीं है । इसके अतिरिक्त अरब के अन्य क्षेत्र तो बिल्कुल अव्यवस्था की स्थिति में हैं तथा वहाँ की सरकारें सुसभ्य सरकारें नहीं हैं ।

एक राजनैतिक परिवर्तन उस युग का आपने यह वर्णन किया है कि उस समय 'याजूज' और 'माजूज' को ऐसी शक्ति प्राप्त होगी कि अन्य जातियों को उनसे मुकाबला करने की बिल्कुल सामर्थ्य न होगी । अत: 'मुस्लिम और 'तिरमिज़ी' में नवास बिन समआन(रज़ि.) की रिवायत है कि मसीह मौऊद के युग में अल्लाह तआला उनको वह्यी करेगा कि -

اِنِّیۡ قَدۡ اَخۡرَجۡتُ عِبَادًا لِّیۡ لَا یَدَانِ لِاَحَدٍ بِقِتَالِھِمۡ فَحَرِّزۡ عِبَادِیۡ اِلَی الطُّوۡرِ
وَیَبۡعَثُ اللّٰہُ یَاجُوۡجَ وَمَاجُوۡجَ 143

(इन्नी क़द अख़रज्तो इबादन ली ला यदाने लिअहदिन बिक़ितालेहिम फ़हर्रिज़ इबादी इलत्तूरे व यबअसुल्लाहो याजूजा व माजूजा) यह लक्षण भी पूरा हो चुका है । याजूज और माजूज प्रकट हो

चुके हैं तथा उन से मुकाबला करने की किसी में शक्ति नहीं है । याजूज और माजूज से अभिप्राय रूस और अंग्रेज़ों की सरकार और उनकी संयुक्त सरकारें हैं । जैसा कि बाईबल में लिखा है कि 'हे जूज रूस और टोबाल्सिक के बादशाह और माजूज जो द्वीपों में शान्ति से शासन करते हो' [144] ये दोनों कौमें अपने सहयोगियों के साथ अपने उत्थान पर पहुँच चुकी हैं और उन का उत्थान जैसा कि हदीसों से सिद्ध है मसीह मौऊद के आने के पश्चात निश्चित था । अत: उन का उत्थान स्वयं में भी सिद्ध कर रहा है कि मसीह मौऊद आ चुका है ।

इस युग की राजनैतिक स्थिति में एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय मज़दूरों की शक्ति बहुत बढ़ जाएगी जैसा कि हुज़ैफ़ा इब्नुलयमान की रिवायत में जिसे अबू नईम ने 'हुलिया' में नक़ल किया है उल्लेख है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रलय के लक्षणों में से एक लक्षण यह भी वर्णन किया है कि उस समय निर्धन नंगे लोग बादशाह हो जाएँगे। [145] नंगे से अभिप्राय यहाँ तुलना के रूप में है । धनवानों के मुकाबले में निर्धन लोग अपने लिबास की कमी के कारण नंगे ही कहलाते हैं । यह लक्षण भी पूरा हो चुका है । प्रतिनिधित्व वाली सरकार की उन्नति के साथ-साथ निर्धनों की सरकार बढ़ती जाती है और वे बादशाह बन रहे हैं। मज़दूर वर्ग की शक्ति के आगे बादशाहों के हृदय कांप रहे हैं तथा कोई वर्ग चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो उन से संधि रखे बिना अपने स्थायित्व को ख़तरे में पाता है तथा कुछ क्षेत्रों में तो उन्हें पूर्ण शासन प्राप्त है जैसे रूस और स्विट्ज़रलैण्ड में तथा आस्ट्रेलिया के कुछ भागों में । यह वर्ग दिन-प्रतिदन शक्तिशाली होता जा रहा है ।

मसीह मौऊद के युग की राजनैतिक स्थिति की एक विशेषता रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन की है कि उस समय शासकों की भरमार होगी । हुज़ैफ़ा इब्नुल यमान वर्णन करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि प्रलय के लक्षणों में से एक यह भी है कि उस समय 'शुर्त' अधिक हो जाएँगे [146] 'शुर्त' उत्तराधिकारी और शासक के सहायकों और नाइबों को कहते हैं । यह लक्षण भी इस समय पूर्ण हो चुका है । पहले जो शासन की व्यवस्था

होती थी उसमें शासन को इतने सहायकों की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। प्रत्येक क्षेत्र में एक या दो शासक पर्याप्त समझे जाते थे परन्तु इस युग में व्यवस्था की पद्धति इस प्रकार परिवर्तित हो गई है तथा सरकार के दायित्व की इतनी शाखाएँ निकल आई हैं कि अफसरों के लिए पहले से सैकड़ों गुना अधिक सहायक रखने पड़ते हैं । पुलिस और सामान्य स्वास्थ्य, पंजीकरण, निर्माण विभाग, डाक विभाग, रेल विभाग, संचार विभाग, जल विभाग, मादक पदार्थों का नियंत्रण और पड़ताल इत्यादि इतने विशाल हो गए हैं कि पहले इतने विशाल न थे । इसलिए सरकार को प्रत्येक शासक के साथ एक विशाल कर्मचारी वर्ग रखना पड़ता है ।

मसीह मौऊद के युग की राजनीति में एक परिवर्तन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन किया है कि उस समय धार्मिक दण्ड त्याग दिए जाएँगे। **147** हज़रत अली(रज़ि.) से दैलमी ने रिवायत की है कि अन्तिम युग के लक्षणों में से एक धार्मिक दण्डों का परित्याग भी है । (हुजजुलकिरामाह) यह लक्षण भी पूरा हो चुका है । इस्लामी सरकारों में इस समय धार्मिक दण्डों को त्याग दिया गया है । इल्ला माशाअल्लाह ! तुर्कों के शासन में, अरब में, मिस्र में, ईरान में अपितु स्वयं आप ही के देश में व्यभिचारी को संगसार का, (पत्थरों द्वारा मारना) और चोर को हाथ काटने का दण्ड नहीं दिया जाता अपितु कुछ इस्लामी सरकारें तो संविदाओं (ऐग्रीमेण्ट) के द्वारा इन दण्डों को कार्यान्वित करने से रोक दी गई हैं । यह लक्षण ऐसा स्पष्ट है कि इस्लामी प्रभुत्व के युग में इस बात को कोई सोच भी नहीं सकता था कि इस्लामी आदेशों को कभी इस प्रकार पीछे डाल दिया जाएगा तथा इस्लामी सरकारें यदि चाहेंगी भी तो इस्लामी दण्डों को जारी नहीं कर सकेंगी ।

इन लक्षणों को बताने के अतिरिक्त कि जो मनुष्य के धार्मिक नैतिक, शैक्षणिक, शारीरिक, राजनैतिक, ख़ानदानी और सामाजिक इत्यादि जीवन के साथ संबंध रखते हैं, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग के सन्दर्भ में कुछ ऐसे लक्षण भी वर्णन किए हैं जो स्थानीय परिवर्तनों से संबंध रखते हैं । उदाहरणतया आप स.अ.व. ने उस समय की पार्थिव और आकाशीय परिस्थितियों का भी वर्णन किया है। जिन में से कुछ मैं यहाँ वर्णन करता हूँ ।

पृथ्वी के परिवर्तन :– पृथ्वी की आन्तरिक स्थिति के सन्दर्भ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हुज़ैफ़ा इब्नुलयमान(रज़ि.) ने जो रिवायत वर्णन की है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रलय के लक्षणों में से अधिकांश वर्णन करके फ़रमाया कि जब ये लक्षण पूरे हो जाएँ तो तुम कुछ विपत्तियों की प्रतीक्षा करो । जिन में से एक आप ने 'ख़सफ़' बयान की। [148] 'ख़सफ़' जैसा कि भौतिक विज्ञान से सिद्ध है कि भूकम्प के कारण होता है । अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का 'ख़स्फ़' से अभिप्राय भूकम्पों से है । यह पृथ्वी के अन्दर का परिवर्तन भी जिसके कारण अत्यधिक भूकम्प आएँ उत्पन्न हो चुका है तथा पिछले बीस वर्ष से संसार में इतने भूकम्प आए हैं कि उनसे पूर्व तीन सौ वर्ष में भी इतने भूकम्प नहीं आए थे तथा इन वर्षों में भूकम्पों द्वारा इतनी मौतें हुई हैं कि पिछली कई शताब्दियों में भी भूकम्पों से इतनी मौतें नहीं हुईं ।

आकाशीय लक्षण :– रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पृथ्वी के परिवर्तनों के अतिरिक्त मसीह मौऊद के युग की कुछ आकाशीय परिस्थितियाँ भी वर्णन की हैं । उदाहरणतया यह कि उस समय सूर्य और चन्द्रमा को रमज़ान के महीने में विशेष तिथियों में ग्रहण लगेगा तथा इस लक्षण पर इतना बल दिया गया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब से पृथ्वी और आकाश उत्पन्न हुए ये दोनों लक्षण किसी अन्य नबी के सत्यापन हेतु प्रकट नहीं हुए । हदीस के शब्द यह हैं :-

إِنَّ لِمَهْدِيِّنَا اٰيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَنْكَسِفُ
الْقَمَرُ لِاَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَمَضَانَ وَ تَنْكَسِفُ الشَّمْسُ فِي النِّصْفِ مِنْهُ وَلَمْ
تَكُوْنَا مُنْذُ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ [149]

(इन्ना लिमहदिय्येना आयतयने लम तकूना मुन्ज़ो ख़ल्क़िस्समावाते वलअर्ज़े यनकसिफुलक़मरो लिअव्वले लयलतिन मिन रमज़ान व तनकसिफुश्शमसो फिन्निस्फ़े मिन्हो व लम तकूना मुन्ज़ो ख़लक़ल्लाहुस्समावाते वलअर्ज़ा) अर्थात् मुहम्मद बिन अली(रज़ि.) ने रिवायत की है कि हमारे महदी के दो निशान हैं । ये निशान धरती और

आकाश की सृष्टि से लेकर आज तक कभी प्रकट नहीं हुए । एक तो यह कि चन्द्रमा को रमज़ान की पहली रात में ग्रहण लगेगा और दूसरा यह कि सूर्य को उसी रमज़ान की मध्य की तिथि में ग्रहण लगेगा । ये दोनों बातें धरती और आकाश की सृष्टि के समय से नहीं हुईं । ये निशान अपने अन्दर कई विशेषताएं रखता है । एक तो यह कि इसमें वर्णन किया गया है कि महदी के अतिरिक्त किसी दावेदार के लिए यह निशान कभी प्रकट नहीं हुआ । दूसरे यह कि इस निशान पर सुन्नियों और शियों की किताबों की सहमति है, क्योंकि दोनों की हदीस की किताबों में इसकी चर्चा है। अत: इसमें किसी चकमा देने का सन्देह नहीं किया जा सकता । तीसरी विशेषता इस निशान में यह है कि जो लक्षण इस में बताए गए हैं पहली किताबों में भी इन्हीं लक्षणों के साथ मसीह के पुनरागमन की सूचना दी गई है । अत: इंजील में आता है कि मसीह अलैहिस्सलाम ने अपने आगमन के निशानों में से एक यह निशान भी बताया है कि उस समय सूर्य अंधकारमय हो जाएगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा ।[150] जिसका अर्थ दूसरे शब्दों में यह है कि सूर्य और चन्द्रमा को उसके समय में ग्रहण लगेगा । यद्यपि कि मैं उन भविष्यवाणियों का वर्णन कर रहा हूँ जिन की चर्चा हदीसों में आती है, परन्तु मैं इस स्थान पर इस बात का उल्लेख करना अनुचित नहीं समझता कि क़ुर्आन करीम में प्रलय के निकट आने के लक्षणों में से एक लक्षण सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण का वर्णन किया गया है । सूरह 'क़ियामत' में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ○ فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ○ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ○ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ[151]

(यस्अलो अय्याना यौमुलक़ियाम: फ़इज़ा बरिक़लबसरो व ख़सफ़लक़मरो व जुमिअश्शम्सो वल क़मरो) (इन्कार करने वाला) पूछता है कि प्रलय का दिन कब है ? हम उसके लक्षण बताते हैं । वे तब होंगे जब आँखें विस्मित रह जाएँगी अर्थात् ऐसी घटनाएँ होंगी कि मनुष्य को विस्मित कर देंगी । चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा और फिर सूर्य और चन्द्रमा को इकट्ठा कर दिया जाएगा । अर्थात उसी माह में चन्द्र ग्रहण के उपरांत सूर्य-ग्रहण होगा । चूँकि मसीह का आगमन भी प्रलय के

निकट के समय में बताया गया है, इसलिए क़ुर्आन करीम से भी हदीस के उपर्युक्त वर्णन का सत्यापन होता है ।

अत: जैसा कि ऊपर बताया गया है यह भविष्यवाणी विशेष महत्व रखती है और हम देखते हैं कि सन् 1311 हिज्री अनुसार सन् 1894 ई. में यह भविष्यवाणी बिल्कुल उन्हीं शब्दों में पूरी हो गई है जिन शब्दों में हदीसों में उसे वर्णन किया गया था, अर्थात् उसी वर्ष के रमज़ान के महीने में चन्द्र ग्रहण की तिथियों में से पहली अर्थात् तेरहवीं तिथि को चन्द्र ग्रहण लगा तथा सूर्य ग्रहण की तिथियों में से मध्य की अर्थात् अठाईसवीं तिथि को सूर्य-ग्रहण लगा और एक ऐसे व्यक्ति के समय में लगा जो महदी होने का दावा कर रहा था ।

अत: प्रत्येक मुसलमान कहलाने वाले के लिए दो मार्गों में से एक का धारण करना अनिवार्य हो गया । या तो वह इस नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन पर ईमान लाए, जिस में वर्णन किया गया है कि यह निशान कि उसके समय में चन्द्र और सूर्य को ग्रहण लगने की पहली और मध्य की तिथियों में ग्रहण लगेगा, महदी के अतिरिक्त अन्य किसी के लिए प्रकट नहीं किया गया, जिसका समर्थन क़ुर्आन करीम तथा पूर्वकालीन नबियों की किताबों से भी होता है और उस व्यक्ति को स्वीकार करें जिसके महदी होने के दावे के पश्चात अल्लाह तआला ने यह निशान प्रकट किया या फिर ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को छोड़ दे कि उन्होंने महदी का एक ऐसा लक्षण बताया जो वास्तव में कोई लक्षण ही नहीं था और जिस से किसी दावेदार के दावे की सच्चाई सिद्ध करना बुद्धिमत्ता के विरुद्ध है ।

कुछ लोग यह ऐतिराज़ किया करते हैं कि भविष्यवाणी में चन्द्रमा को पहली तिथि और सूर्य को मध्य तिथि में ग्रहण लगने की सूचना दी गई है, परन्तु जिस ग्रहण की तुम चर्चा करते हो वह तेरहवीं और अठाईसवीं तिथि को हुआ है, परन्तु यह आरोप एक थोड़े से विचार से अत्यन्त ग़लत तथा हदीस से शब्दों के विरुद्ध ज्ञात होता है । ये लोग इस बात को नहीं देखते कि चन्द्रमा और सूर्य को विशेष तिथियों में ग्रहण लगा करता है और इस नियम में अन्तर नहीं आ सकता, जब तक कि सम्पूर्ण सृष्टि को अस्त-व्यस्त न कर दिया जाए । अतएव यदि वे अर्थ उचित हैं जो ये

लोग करते हैं तो यह निशान प्रलय का लक्षण तो हो सकता है परन्तु प्रलय की निकटता और महदी का लक्षण नहीं हो सकता।

इसके अतिरिक्त ये लोग पहली और मध्य की के शब्दों को तो देखते हैं परन्तु 'क़मर' (चन्द्र) को नहीं देखते । पहली तिथि का चन्द्रमा अरबी भाषा में 'हिलाल' कहलाता है । 'क़मर' तो चौथी तिथि से आरंभ होता है। शब्दकोष में लिखा है -

وَهُوَ قَمَرٌ بَعدَ ثَلَاثِ لَيَالٍ اِلٰى اٰخِرِ الشَّهرِ وَاَمَّا قَبلَ ذَالِكَ فَهُوَ هِلَالٌ 152

(व हुवा क़मरुन बादा सलासे लयालिन इला आख़िरिश्शहरे व अम्मा क़ब्ला ज़ालिका फ़हुवा हिलालुन) अर्थात् चन्द्र तीन रातों के पश्चात 'क़मर' बनता है और महीने के अन्त तक 'क़मर' रहता है परन्तु पहली तीन रातों में वह 'हिलाल' होता है । अत: हदीस में 'क़मर' का शब्द प्रयोग होने के बावजूद तथा इस प्रकृति के नियम के बावजूद चन्द्रमा को तेरह, चौदह, पन्द्रह को ग्रहण लगता है न कि पहली तिथि को । पहली तिथि से महीने की पहली तिथि समझना बुद्धि-संगत और न्याय संगत नहीं है तथा उसका उद्देश्य इसके अतिरिक्त कुछ ज्ञात नहीं होता कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी असत्य हो और आकाश से आने वाले पर लोग ईमान न लाएँ ।

ये वे लक्षण हैं जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के सन्दर्भ में वर्णन किए हैं । यद्यपि इनमें से कुछ को पृथक-पृथक करके भी लें तो मसीह मौऊद के युग का है तथा उसके लिए निशान है परन्तु वास्तव में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इन लक्षणों के वर्णन करने से मसीह मौऊद के युग की परिस्थितियों को सामूहिक तौर पर लोगों के समक्ष इस रूप में लाना था कि किसी के लिए सन्देह का स्थान न रहे । निसन्देह प्लेग पूर्वकालीन युगों में भी होती रही है तथा इस में भी कोई सन्देह नहीं कि भूकम्प पहले भी आते रहे हैं, इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि जुए का प्रचलन पहले भी बहुत रहा है, इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि नैतिकता लोगों की पहले भी बिगड़ती रही है, ईसाइयों का भी एक युग में विश्व के अधिकांश भू भागों पर आधिपत्य रह चुका है परन्तु प्रश्न यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मसीह मौऊद के युग की जो ये समस्त परिस्थितियाँ

बताई हैं कभी किसी समय संसार में इकट्ठी भी हुई हैं या उनका किसी अन्य युग में एकत्र होना संभव भी है ? इस प्रश्न का एक ही उत्तर वह यह है कि नहीं कदापि नहीं । यदि एक व्यक्ति को जिसे इस युग की स्थिति का ज्ञान न हो, प्रथम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सूचनाओं से अवगत कराया जाए फिर उसे विश्व-इतिहास की पुस्तकें दे दी जाएँ कि इनका अध्ययन करके बताओ कि मसीह मौऊद के प्रकट होने का कौन सा समय है । तो आदम अलैहिस्सलाम के युग से प्रारंभ करके इस युग के प्रारंभ तक किसी एक युग को भी मसीह मौऊद का युग नहीं ठहराएगा, परन्तु ज्यों ही वह इस समय की पस्थितियों का अध्ययन करेगा, सहसा बोल पड़ेगा कि यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो कुछ कहा था तो मसीह मौऊद के प्रकट होने का यही समय है क्योंकि वह एक ओर धर्म से लापरवाही को देखेगा तो दूसरी ओर सांसारिक विज्ञानों की उन्नति को देखेगा, मुसलमानों की सरकारों को प्रभुत्व के पश्चात् कमज़ोर पाएगा, ईसाइयत को पतन के पश्चात उत्थान की ओर अग्रसर देखेगा, ईसाइयत के अनुयायियों को समस्त दौलत पर अधिकार परन्तु उनके विरोधियों को निर्धन पाएगा, चिकित्सा और विज्ञान की उन्नति के बावजूद प्लेग और इन्फलूऐन्ज़ा की वीरान कर देने वाली तबाही का चित्र उसकी आँखों के सामने आएगा, उस युग में रोगियों को कीटाणुओं से सम्बद्ध करने का हाल उसे ज्ञात होगा, लोगों को रीति-रिवाजों और नवीन कुरीतियों में ग्रसित पाएगा, रेल और वाष्पशक्ति से चलने वाले जहाज़ों के समाचारों को पढ़ेगा, बैंकों की अधिकता के चित्रण को देखेगा, भूकम्पों की बहुलता का अवलोकन करेगा, याजूज और माजूज की सरकार का प्रचलन पाएगा, आकाश पर चन्द्र और सूर्य ग्रहण उसकी आँखों को खोलेगा, पृथ्वी पर धन की अधिकता, मज़दूरों की यह उन्नति उसके ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करेंगी । अतः उस युग के इतिहास तथा उस शताब्दी की घटनाओं का एक-एक पन्ना उसको इस बात की ओर ध्यान दिलाएगा कि यही समय मसीह मौऊद का है । वह एक-एक वस्तु पर दृष्टि नहीं डालेगा अपितु सामूहिक तौर पर समस्त निशानों पर विचार करेगा तो उसके हाथ कांप जाएँगे और उसका हृदय धड़कने लगेगा तथा वह सहसा किताब को बन्द कर देगा और कह उठेगा कि मेरा कार्य

समाप्त हो गया, आगे पढ़ना व्यर्थ है । मसीह मौऊद या तो इसी युग में आया है या फिर वह कभी नहीं आएगा ।*

---

* मैं यहाँ एक आरोप का वर्णन कर देना भी आवश्यक समझता हूँ जिसे विरोधी अपने विचार में एक ठोस आरोप समझता है और वह यह है कि मसीह मौऊद के आगमन से पूर्व दज्जाल के आने की सूचना दी गई है । वह चूँकि अब तक नहीं आया इसलिए मसीह मौऊद नहीं आ सकता । यदि दज्जाल की सूचना एक भविष्यवाणी न होती तो यह आरोप कुछ महत्व भी रखता, परन्तु यह देखते हुए कि दज्जाल का आगमन बतौर भविष्यवाणी है तथा भविष्यवाणियों के अर्थ काल्पनिक होते हैं, इस आरोप का कुछ भी महत्व शेष नहीं रहता । एक मुसलमान क़ुर्आन करीम में -وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَیْتُهُمْ لِیْ سَاجِدِیْنَ 153 **(वशशम्सा वलक़मरा रअयतोहुम ली साजिदीन)** पढ़ते हुए और اِنِّیْ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْ اَذْبَحُكَ 154 **(इन्नी अरा फ़िल्मनामे अन्नी अज़्बहोका)** की तिलावत (ऊँचे स्वर में पढ़ना) करते हुए फिर एक असाधारण प्रकार के दज्जाल की खोज में लगा रहे तो इस बात पर अवश्य खेद है ।
खेद है कि दज्जाल की भविष्यवाणी को समझने के लिए अन्य हदीसों और अल्लाह की सुन्नत (नियम) पर बिल्कुल विचार नहीं किया गया, जबकि यह बात हदीसों से सिद्ध है कि मसीह मौऊद के आने से पूर्व दज्जाल निकलेगा और यह भी कि उस समय ईसाइयत का भी बहुत ज़ोर होगा । तो क्या इससे यह परिणाम नहीं निकलता कि दज्जाल से अभिप्राय ईसाइयत ही है । चूँकि एक ही समय में दज्जाल और ईसाइयत संसार पर किस प्रकार विजयी हो सकते हैं । दोनों की एक ही समय में संसार पर विजय बताती है कि वास्तव में एक ही वस्तु के दो नाम हैं । एक अन्य बात से भी विदित होता है कि दज्जाल और ईसाइयत का उपद्रव एक ही वस्तु है और वह यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दज्जाल के उपद्रव से सुरक्षित रहने का उपाय सूरह 'कहफ़' की प्रारंभिक आयतों को पढ़ना बताया है और सूरह 'कहफ़' की प्रारंभिक दस आयतों में ईसाइयत का खण्डन है । अत: फ़रमाता है - وَيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا 155 **(व युन्ज़िरल्लज़ीना क़ालुत्तख़ज़ल्लाहो वलदन)** अर्थात् अल्लाह तआला ने यह किताब इसलिए उतारी है ताकि उसके द्वारा उन लोगों को डराया जाए जो कहते हैं कि अल्लाह तआला ने एक बेटा बना लिया । अत: सिद्ध हुआ कि दज्जाल का उपद्रव तथा ईसाइयत का उपद्रव एक ही वस्तु है, क्योंकि उपचार रोग के अनुसार होता है । यदि दज्जाली उपद्रव ईसाइयों के उपद्रव से पृथक होता तो संभव न था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा उपचारक

तीसरा सबूत

नफ़्से नातिक़ा (मानव मनोवृत्ति)

सूर्य के अस्तित्व के लिए सूर्य का आगमन ही प्रमाण है

इस बात को सिद्ध करने के पश्चात कि समय पुकार-पुकार कर इस समय एक सुधारक की माँग कर रहा है और यह कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साक्ष्य से सिद्ध होता है कि इस समय का सुधारक मसीह मौऊद और महदी-ए-मसऊद के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं तथा यह कि चूँकि मसीह मौऊद होने के दावेदार केवल सिलसिला अहमदिया के संस्थापक हैं इसलिए उनके दावे का खण्डन करना मानो ख़ुदा

शेष हाशिया :- मनुष्य उस से बचने के लिए इन आयतों का आदेश देता, जिनमें दज्जाल की तो चर्चा तक नहीं, हाँ ईसाइयत का खण्डन वर्णन किया गया है । आप का इन आयतों को दज्जाल के उपद्रव से बचने के लिए तिलावत करने का आदेश देना सिद्ध करता है कि आप की दृष्टि में दज्जाल से अभिप्राय ईसाइयत का प्रचार करने वाले लोग थे ।

वास्तव में दज्जाल के पहचानने में लोगों को सबसे बड़ी ठोकर यह लगी है कि वे उसे एक व्यक्ति समझते रहे हैं जबकि वह एक व्यक्ति नहीं है । शब्दकोष में दज्जाल के अर्थ ये लिखे हैं -

اَوْمِنَ الدَّجَّالِ بِالتَّشْدِيْدِ لِلرِّفْقَةِ الْعَظِيْمَةِ تُغَطِّى الْاَرْضَ بِكَثْرَةِ اَهْلِهَا
وَقِيْلَ هِىَ الرِّفْقَةُ تَحْمِلُ الْمَتَاعَ لِلتِّجَارَةِ156

(औ मिनद्दज्जाले बित्तशदीदे लिर्रिफ़्क़तिल अजीमते तुग़त्तिल अर्ज़ा बिकसरते अहलिहा व क़ीला हियर्रिफ़्क़तो तहमिलुल मताआ लित्तिजारह) اَلدَّجَّالُ الرِّفْقَةُ الْعَظِيْمَةُ157 **(अद्दज्जालो अर्रिफ़्क़तुल अज़ीमह)** अर्थात् दज्जाल एक बहुत बड़े समुदाय को कहते हैं जो पृथ्वी को अपनी बहुलता से ढक दे । कुछ लोग इसका यह अर्थ करते हैं कि यह ऐसे सम्प्रदाय का नाम है जो संसार में व्यापार का सामान लिए फिरे, और यह परिभाषा ईसाइयत के प्रचारकों पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है । वे अपनी धार्मिक किताबों के व्यापार के अतिरिक्त अपने मिशन की सफलता के लिए प्रत्येक प्रकार के साधन तथा सामान जो लोगों के मनोरंजन का कारण हों साथ रखते हैं तथा मिशन के काम के साथ-साथ कई प्रकार के व्यापार किया करते हैं तथा दज्जाल के इसी प्रकार के अर्थ लिखे हैं - اَلْمُمَوِّهُ158 **(अलमुमव्विहो)**

तआला की सुन्नत का मिथ्या होना तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनों का अपमान है । अब मैं आपके सामने उन सबूतों को प्रस्तुत करता हूँ जिन से यह सिद्ध होता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम अपने दावे में सच्चे थे तथा ख़ुदा की ओर से आदिष्ट और भेजे हुए थे । उन सबूतों में से सर्वप्रथम मैं नफ़्से नातिका (मानवीय आत्मा) के सबूत को प्रस्तुत करता हूँ ।

यहाँ नफ़्से नातिका से मेरा अभिप्राय वह नहीं जो पूर्वकालीन पुस्तकों

शेष हाशिया :– अर्थात् पाखंडी । ईसाई पादरियों से अधिक कौन पाखंडी होगा जो एक मनुष्य को लोगों के समक्ष ऐसे रूप में प्रस्तुत करते हैं कि वह लोगों की दृष्टि में ख़ुदा दिखाई देने लगता है शेष रहीं ये बातें कि दज्जाल काना होगा तथा उसका एक गधा होगा जो विशालकाय होगा तथा उसके आगे पीछे धुएँ का बादल चलेगा । अतएव ये समस्त बातें व्याख्या योग्य हैं, दज्जाल के काने होने से अभिप्राय उसकी आध्यात्मिक कमज़ोरी है क्योंकि रोया (एक प्रकार का स्वप्न) में दायीं ओर हमेशा धर्म और मंगल को सिद्ध करता है । अत: दज्जाल के दायीं आँख से काने होने का अप्रिभाय यह है कि वह आध्यात्मिकता से बिल्कुल रिक्त होगा। उसके गधे से अभिप्राय यह रेल है जो ईसाई देशों में आविष्कृत हुई, उसकी चाल भी गधे के समान है तथा यह अग्नि और जल से चलती है और उसके आगे-पीछे धुएँ के बादल होते हैं तथा ईसाई पादरी इससे लाभ उठाकर समस्त संसार में फैल गए हैं ।

यह नहीं कहा जा सकता कि ये तो काल्पनिक अर्थ है क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साक्ष्य से सिद्ध है कि दज्जाल के संबंध में जो सूचनाएँ हैं वे व्याख्या-योग्य है । अत: हदीस में आता है कि एक दिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इब्ने सय्याद को देखने गए जिसके संबंध में विचित्र सूचनाएँ प्रसिद्ध थीं । आपने उस से जो बातें कीं उन से ज्ञात हुआ कि उसको कुछ-कुछ शैतानी 'इल्क़ा' होते हैं, इस पर हज़रत उमर रज़ि. ने तलवार खींच ली और सौगंध खाकर कहा कि यही दज्जाल है तथा उसकी वध करना चाहा, परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें रोका और फ़रमाया यदि यह दज्जाल नहीं तो इसका वध करना उचित नहीं और यदि यह दज्जाल है तो इसका मारना मसीह के लिए निश्चित है तू उसे नही मार सकता।[159] इस हदीस से ज्ञात होता है कि दज्जाल के संबंध में जितने समाचार हैं वे व्याख्या-योग्य हैं क्योंकि हज़रत उमर रज़ि. ने जब इब्ने सय्याद को दज्जाल ठहराया तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन को मना नहीं किया क्योंकि आपने स्वयं

में लिया जाता है अपितु नफ़्से नातिक़ा से अभिप्राय वह नफ़्स है जिसे क़ुर्आन करीम ने अपनी सच्चाई का स्वयं सबूत ठहराया है ।

सूरह यूनुस में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَاءِ نَفْسِي إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِنْ قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ 163

(व इज़ा तुतला अलयहिम आयातुना बय्यिनातिन – क़ालल्लज़ीना ला यरजूना लिक़ाअनअते बिक़ुरआनिन ग़ैरे हाज़ा औ बद्दिलहो – क़ुल मा यकूनो ली अन उबद्दिलहू मिन तिलक़ाए नफ़्सी – इन अत्तबिओ इल्ला मा यूहा इलय्या – इन्नी अख़ाफ़ो इन असयतो रब्बी अज़ाबा यौमिन अज़ीम – क़ुल लौ शाअल्लाहो मा तलौतोहू अलैकुम व ला अदराकुम बिही – फ़क़द लबिस्तो फ़ीकुम उमुरम्मिन क़ब्लिही –

शेष हाशिया :– दज्जाल के ये लक्षण बताए थे कि उसके ललाट पर काफ़िर लिखा हुआ होगा [160] और यह कि वह काना होगा [161] और यह कि वह मदीना में नहीं आ सकेगा। [162] ये तीनों बातें इब्ने सय्याद में नहीं पाई जाती थीं । वह काना न था, उसके ललाट पर काफिर लिखा हुआ दूसरे मोमिनों को तो अलग रहा स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी दिखाई नहीं दिया और वह मदीना में मौजूद था । यदि दज्जाल के सन्दर्भ में जितने भी समाचार थे वे अपने प्रत्यक्ष रूप में पूर्ण होने वाले थे, तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इब्ने सय्याद के मामले में क्यों असमंजस प्रकट किया और नहीं बताया कि तूने सुना नहीं मैं कह चुका हूँ कि दज्जाल काना होगा, उसके ललाट पर काफ़िर लिखा होगा, वह मदीना में प्रवेश नहीं कर सकेगा । क्या आप का हज़रत उमर रज़ि. के कथन का खण्डन न करना अपितु असमंजस का प्रकट करना बताता नहीं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस बात को उचित समझते थे कि दज्जाल के सम्बन्ध में जो बातें बताई गई हैं वे मूल शब्दों में पूर्ण न हों अपितु किसी अन्य रूप में पूर्ण हो जाएँ और यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दज्जाल से संबंधित ख़बरों को व्याख्या-योग्य समझते थे तो किसी अन्य का क्या अधिकार है कि वह घटनाओं से विमुख हो कर शब्दों को पकड़ कर बैठ जाए तथा उनके अर्थों और उद्देश्यों पर विचार न करे । (इसी से)

अफ़ला ता'क़िलून) और जब उन के सामने हमारे स्पष्ट और खुले-खुले आदेश पढ़े जाते हैं तो प्रलय के इन्कारी लोग कहते हैं कि या तो इसके अतिरिक्त कोई अन्य क़ुर्आन ले आ अथवा इस में से ऐतिराज़ योग्य भाग को परिवर्तित कर दे । तू कह दे कि मुझे क्या अधिकार है कि मैं अपनी ओर से इस कलाम (वाणी) को परिवर्तित कर दूँ । मैं तो केवल उस वह्यी का अनुसरण करता हूँ जो मुझ पर उतारी जाती है । मैं डरता हूँ कि यदि मैं अवज्ञा करूँ तो मैं उस महान दिन के भयंकर प्रकोप में ग्रस्त हो जाऊँगा । तू कह दे कि यदि अल्लाह तआला चाहता तो मैं यह कलाम तुम्हारे सामने प्रस्तुत न करता अपितु उसके सम्बन्ध में तुम्हारे समक्ष संकेत भी न करता । अत: इस से पूर्व मैंने तुम्हारे साथ में एक आयु व्यतीत की है । क्या तुम उस पर दृष्टि डालते हुए इस बात को नहीं समझ सकते कि मुझ जैसा मनुष्य झूठ नहीं बोल सकता अपितु जो कुछ कह रहा है सत्य कह रहा है ।

यह एक सबूत है जो क़ुर्आन करीम ने रसूले-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई का प्रस्तुत किया है तथा यह सबूत प्रत्येक सच्चे के दावे की सत्यता परखने के लिए एक शक्तिशाली मापदण्ड है सूर्य के लिए इससे अधिक शक्तिशाली सबूत और कुछ नहीं कि सूर्य स्वयं विद्यमान है । इसी भाँति सदात्मा और सच्चे की सत्यता के सबूतों में से एक अत्यन्त शक्तिशाली सबूत उसकी मनोवृत्ति है जो पुकार-पुकार कर कहती है, विरोधियों और सहयोगियों को सम्बोधित करके कहती है, परिचितों और अपरिचितों से कहती है कि मुझे देखो और मुझे झूठा कहने से पूर्व विचार कर लो कि क्या तुम मुझे झूठा कह सकते हो ? क्या मुझे झूठा कह कर तुम्हारे हाथ से वे समस्त माध्यम नहीं निकल जाएँगे, जिनके साथ तुम किसी वस्तु की वास्तविकता ज्ञात किया करते हो ? और क्या झूठा ठहरा कर तुम पर वे समस्त द्वार बन्द नहीं हो जाएँगे, जिन में से गुज़र कर तुम अभीष्ट उद्देश्य को प्राप्त किया करते हो । संसार की प्रत्येक वस्तु निरन्तरता चाहती है तथा प्रत्येक वस्तु श्रेणियाँ रखती है, न नेकी (शुभ कर्म) मध्यक्रम को त्याग कर अपनी पूर्णता तक पहुँच सकती है और न बदी (दुष्कर्म) मध्यक्रम को त्याग कर अपनी चरम सीमा को प्राप्त कर सकती है । फिर यह किस प्रकार संभव है कि पश्चिम की ओर दौड़ने

वाला अचानक स्वयं को पूरब के दूरवर्ती किनारे पर देखे ? दक्षिण की ओर जाने वाला उत्तर के क्षितिज पर स्वयं को खड़ा पाए ? मैंने अपना समस्त जीवन तुम में व्यतीत किया है । मैं छोटा था, तुम्हारे हाथों में बड़ा हुआ, मैं युवा था, तुम्हारे हाथों में अधेड़ हुआ, मेरे एकान्तवास और मेरी सभाओं को जानने वाले भी तुम में विद्यमान हैं, मेरा कोई कार्य तुम से गुप्त नहीं तथा कोई कथन तुम से छुपा नहीं, फिर तुम में से कोई है जो यह कह सके कि मैंने कभी झूठ बोला हो या अन्याय किया हो या छल किया हो या धोखा दिया हो या किसी का अधिकार छीना हो, या अपनी श्रेष्ठता चाही हो या शासन प्राप्त करने का प्रयास किया हो ? प्रत्येप क्षेत्र में तुम ने मेरी परीक्षा ली तथा प्रत्येक परिस्थिति में तुम ने मुझे परखा परन्तु सदा तुम ने मेरे क़दमों को संतुलन के मार्ग पर देखा तथा प्रत्येक दोष से मुझे पवित्र पाया, यहाँ तक कि मित्र और शत्रु से मैंने विश्वस्त और सत्यवादी का सम्बोधन पाया । फिर यह क्या बात है कि कल साँय तक तो मैं विश्वस्त था, सत्यवादी था, सच्चा था, झूठ से कोसों दूर था, सत्य पर प्राण देने को तैयार था, अपितु सच्चाई मुझ पर गर्व करती थी, प्रत्येक बात और प्रत्येक मामले में तुम मुझ पर विश्वास करते थे तथा मेरी हर बात को स्वीकार करते थे परन्तु आज एक दिन में ऐसा परिवर्तन हो गया कि मैं दुष्ट से दुष्टतम और अपवित्र से अपवित्रतम हो गया । या तो कभी लोगों पर झूठ नहीं बांधा था या अब अल्लाह पर झूठ बांधने लगा । इतना परिवर्तन और इतना बदलाव किया । क्या प्रकृति के नियम में कहीं भी उदाहरण मिलता है ? एक दो दिन की बात होती तो तुम कह देते कि दिखावे से ऐसा बन गया, वर्ष दो वर्ष का मामला होता तो तुम कहते कि हमें धोखा देने के लिए उसने यह ढंग अपना रखा था परन्तु समस्त आयु तुम्हारे अन्दर व्यतीत कर चुका हूँ । बचपन को तुमने देख लिया, जवानी का तुमने अवलोकन कर लिया, वृद्धावस्था की अवधि तुम्हारी दृष्टि के सामने गुज़री इतना आडम्बर और इतनी बनावट किस प्रकार संभव थी बचपन के समय में जब अपने अच्छे-बुरे की भी खबर नहीं होती मैंने आडम्बर किस प्रकार किया, जवानी जो दीवानी कहलाती है उसमें मैंने छल-कपट से अपनी स्थिति को किस प्रकार पृथक रखा, अन्ततः कुछ तो सोचो कि यह कपट कब हुआ और किसने किया ?

यदि विचार और चिन्तन करके मेरे जीवन को निर्दोष और निर्मोहित न पाओ अपितु तुम उसे नेकी की मूर्ति तथा सच्चाई की प्रतिमा देखो तो फिर सूर्य को देखते हुए रात्रि की घोषणा न करो तथा प्रकाश की उपस्थिति में अंधकार की शिकायत न करो, तुम्हें मेरी मनोवृत्ति के अतिरिक्त और किस सबूत की आवश्यकता है ? मेरे पिछले चरित्र को छोड़कर और किस सबूत की आवश्यकता है ? मेरी मनोवृत्ति स्वयं मुझ पर साक्षी है तथा मेरा जीवन मुझ पर गवाह है । यदि तुम में से प्रत्येक व्यक्ति अपने गरेबान (गले) में मुख डालकर देखे तो उसका हृदय और मस्तिष्क भी इस बात की गवाही देगा कि सच्चाई उसमें स्थापित है और वह सच्चाई से स्थापित है, सत्य को उस पर गर्व है और उसको सत्य पर गर्व है, वह अपनी सच्चाई सिद्ध करने के लिए अन्य वस्तुओं का मुहताज नहीं । उस का उदाहरण सूर्य के अस्तित्व के लिए सूर्य का आगमन जैसा तर्क है ।

यही वह ठोस सबूत है जिसने अबूबकर(रज़ि.) के हृदय में घर कर लिया और यही वह शक्तिशाली सबूत है जो सदा सत्यप्रिय लोगों के हृदयों में घर करता चला जाएगा । जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दावा किया था, उस समय हज़रत अबू बकर अपने किसी मित्र के घर बैठे हुए थे वहीं आपकी एक स्वतंत्र दासी ने सूचना दी कि आपके मित्र की पत्नी कहती है कि उसका पति इस प्रकार का नबी हो गया है जिस प्रकार का नबी मूसा को वर्णन करते हैं । आप उसी समय उठ कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर पर चले गए तथा आप (स.अ.व.) से पूछा । आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया - मैं ख़ुदा का रसूल हूँ । हज़रत अबू बकर ने इस बात को सुनते ही आप (स.अ.व.) के दावे को स्वीकार कर लिया। अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी आपके ईमान के संबंध में फ़रमाते हैं -

مَا دَعَوْتُ اَحَدًا اِلَى الْاِسْلَامِ اِلَّا كَانَتْ عِنْدَهٗ كَبْوَةٌ وَّنَظَرٌ وَّ تَرَدُّدٌ اِلَّا مَا كَانَ
مِنْ اَبِیْ بَكْرٍ مَا عَكَمَ عَنْهُ حِیْنَ ذَكَرْتُ لَهٗ 164

(मा दऔतो अहदन इललइस्लाम इल्ला कानत इन्दहू कब्वतुन व नज़रुन व तरद्दुदुन इल्ला मा काना मिन अबी बकरिन मा अकमा

अन्हो हीना ज़कर्तो लहू) अर्थात मैंने किसी को इस्लाम की ओर नहीं बुलाया, परन्तु उसकी ओर से कुछ रोक, विचार और असमंजस प्रकट हुआ, परन्तु अबू बकर(रज़ि.) के सामने जब इस्लाम प्रस्तुत किया तो वह बिल्कुल संकोच में नहीं पड़ा अपितु उसने स्वयं इस्लाम स्वीकार कर लिया। यह क्या बात थी जिसने हज़रत अबू बकर(रज़ि.) को बिना किसी निशान के देखे रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) पर ईमान लाने के लिए विवश कर दिया । यह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मानव मनोवृति थी जो अपनी सच्चाई की स्वयं साक्षी है ।

हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) हज़रत अली(रज़ि.) और हज़रत ज़ैद(रज़ि.) बिन हारिस भी इसी सबूत को देखकर ईमान लाए अपितु हज़रत खदीजा(रज़ि.) ने तो नितान्त विस्तार से इस सबूत को अपने ईमान के कारण के तौर पर वर्णन भी किया है । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हिरा की गुफ़ा में फ़रिश्ता दिखाई दिया और आपने आकर हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) से पूर्ण घटना वर्णन करके फ़रमाया कि - لَقَدْ خَشِيْتُ عَلٰى نَفْسِيْ **(लक़द ख़शीतो अला नफ़्सी)** कि मैं अपने प्राण के संबंध में भयभीत हूँ। तो उस समय हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहो अन्हा ने उत्तर देते हुए कहा -

كَلَّا وَاللّٰهِ لَا يُخْزِيْكَ اللّٰهُ اَبَدًا اِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَكْسِبُ
الْمَعْدُوْمَ وَتَقْرِى الضَّيْفَ وَتُعِيْنُ عَلٰى نَوَائِبِ الْحَقِّ [165]

(कल्ला वल्लाहे ला युख़्ज़ीकल्लाहो अबदन – इन्नका लतसिलुर्रहिमा व तहमिलुल कल्ला व तकसिबुल मा'दूमा व तक़रिज़्ज़ैफ़ा व तुईनो अला नवाइबिलहक़) कदापि नहीं, कदापि नहीं । ख़ुदा की सौगंध अल्लाह तुझ को कभी लज्जित नहीं करेगा तू तो परिजनों से सद्व्यवहार करता है, असहायों का भार उठाता है (सहायता करता है) तथा वे उत्तम शिष्टाचार जो इस युग में दुर्लभ थे तुझ में पाए जाते हैं, तू अतिथियों का आदर-सत्कार करता है तथा लोगों के वैध कष्टों में उनकी सहायता करता है ।

अत: नबी की सच्चाई का प्रथम आन्तरिक सबूत उस की मनोवृत्ति होती है जो वर्तमान स्थिति से उसकी सच्चाई पर साक्षी होती है । उसकी साक्ष्य ऐसी शक्तिशाली होती है कि उस की उपस्थिति में किसी

अन्य चमत्कार या निशान की आवश्यकता ही नहीं होती । यह सबूत हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब की सच्चाई सिद्ध करने के लिए भी अल्लाह तआला ने उतारा है । आप क़ादियान के निवासी थे, जिसमें हिन्दुस्तान के तीनों धर्मों के अनुयायी अर्थात् हिन्दू, सिख और मुसलमान रहते हैं । जैसे आप के जीवन के निरीक्षक इन तीनों जातियों के व्यक्ति थे । आप के ख़ानदानी संबंध इन लोगों से ऐसे न थे कि उनको आप से सहानुभूति हो, क्योंकि आप की आयु के प्रारंभिक दिनों में इस देश पर अंग्रेज़ों ने अधिकार जमा लिया था तथा उनके आगमन के साथ ही क़ादियान के निवासियों ने जो आप के पूर्वजों की प्रजा में से थे, इस राज्य-क्रान्ति से लाभ उठा कर अपनी स्वतंत्रता के लिए प्रयास आरंभ कर दिए तथा आपके पिता के साथ सम्पूर्ण क़स्बे के विवाद और मुक़द्दमें आरंभ हो गए थे ।

यह भी नहीं कि आप उन मुक़द्दमों से पृथक थे । आपके एकान्त प्रिय होने के बावजूद आप के पिताश्री ने कुछ समय तक के लिए आपको आदेश देते हुए उन मुक़द्दमों की कार्यवाही के लिए नियुक्त कर दिया था, जिसके कारण प्रत्यक्ष तौर पर आप ही उनके प्रतिद्वन्दी बनते थे ।

सिखों को आपके ख़ानदान से विशेषतौर पर शत्रुता थी क्योंकि कुछ समय के लिए आपके ख़ानदान को उस क्षेत्र से निकाल कर वे ही यहाँ शासक बन गए थे । अतएव इस ख़ानदान की उन्नति उनके लिए कष्टदायक थी तथा उनके हृदयों में एक प्रकार की शत्रुता थी ।

आपको आरंभिक आयु से इस्लाम की सेवा की रुचि थी तथा आप ईसाई, हिन्दू और सिख धर्मों के विरुद्ध मौखिक और लिखित शास्त्रार्थ जारी रखते थे, जिस के कारण उन धर्मों के अनुयायियों को आप से स्वभाविक तौर पर द्वेष था ।

परन्तु इस के बावजूद समस्त धर्मावलम्बियों से आप के सम्बन्ध थे तथा सब से धार्मिक रुचि के कारण विरोध था । प्रत्येक व्यक्ति चाहे हिन्दू हो, चाहे सिख, चाहे ईसाई, चाहे मुसलमान, इस बात को स्वीकार करता है कि दावे से पूर्व आप का जीवन नितान्त दोषरहित और पवित्र था तथा आपको श्रेष्ठ श्रेणी के शिष्टाचार प्राप्त थे, सत्य को आप कभी

नहीं छोड़ते थे, आप पर लोगों की विश्वसनीयता इतनी बढ़ी हुई थी कि आपके खानदान के शत्रु प्राय: उन अधिकारों के न्याय के लिए जिनके सन्दर्भ में उनका आपके ख़ानदान से विरोध होता इस बात पर बल देते थे कि आपको न्यायकर्ता नियुक्त कर दिया जाए, आप जो न्याय करें वह उन्हें स्वीकार होगा । अत: आप की परिस्थितियों से परिचित लोग प्रत्येक बात में आप पर विश्वास करते थे तथा आप को ईमानदारी और सत्य की एक प्रतिमा समझते थे । मसीही, हिन्दू, सिख यद्यपि कि आप से धार्मिक विरोध रखते थे परन्तु इस बात को स्वीकार करते थे कि आप का जीवन पवित्र जीवन है ।

आप के संबंध में लोगों की जो राय थी मैं उसका एक उदाहरण एक व्यक्ति की लेखनी से निकला हुआ प्रस्तुत करता हूँ जो बाद में आप का कट्टर विरोधी हो गया तथा आप के दावे पर उसने सर्वप्रथम आप पर कुफ़्र का फ़त्वा दिया । यह सज्जन कोई साधारण व्यक्ति नहीं अपितु अहले हदीस के नेता और सरदार मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी हैं, जिन्होंने आप की एक किताब 'बराहीन अहमदिया' पर समीक्षा करते हुए अपनी पत्रिका 'इशाअतुस्सुन्नह' में आपके संबंध में यह साक्ष्य दी है :-

''बराहीन अहमदिया के लेखक की परिस्थितियाँ तथा विचारों से जितने हम परिचित हैं हमारे समकालीन में से ऐसे परिचित कम निकलेंगे । लेखक हमारे देशवासी हैं अपितु प्रारंभिक आयु के (जब हम कुतुबी और शरह- मुल्ला पढ़ा करते थे) हमारे सहपाठी, उस समय से आज तक हम में उनमें पत्राचार, भेंट और वार्ता निरन्तर जारी है । इसलिए हमारा यह कहना कि हम उनकी परिस्थितियों और हालात से भली-भाँति परिचित हैं अतिश्योक्ति ठहराए जाने योग्य नहीं । [166]

यह वर्णन तो उनका इस बात के संबंध में है कि उनकी साक्ष्य यों ही नहीं अपितु दीर्घ अनुभव और संगत का परिणाम है तथा उनकी साक्ष्य यह है :-

''हमारी राय में यह किताब (हज़रत साहिब की किताब 'बराहीन अहमदिया' – लेखक) इस युग में और वर्तमान परिस्थितियों की दृष्टि से ऐसी किताब है जिस का उदाहरण

आज तक इस्लाम में नहीं लिखा गया तथा भविष्य का ज्ञान नहीं कदाचित अल्लाह तआला इसके पश्चात कोई अन्य बात उत्पन्न कर दे । इसका लेखक भी इस्लाम की तन-मन-धन और मन-वचन-कर्म तथा व्याख्यानों और लेखों द्वारा सहायता में ऐसा दृढ़ निश्चयी निकला है जिस का उदाहरण पूर्वकालीन मुसलमानों में बहुत ही कम देखा जाता है । हमारे इन शब्दों को कोई एशियाई अतिश्योक्ति समझे तो हमें कम से कम ऐसी एक किताब बता दे जिस में इस्लाम के समस्त धर्मों के विरोधियों से विशेषकर आर्य सम्प्रदाय और ब्रह्म समाजियों से इतनी दृढ़ता के साथ मुक़ाबला किया गया हो तथा दो चार ऐसे व्यक्ति जो इस्लाम के सहायक हों का परिचय दे जिन्होंने इस्लाम की तन, मन, धन तथा लिखित और मौखिक सहायता के अतिरिक्त वर्तमान (ख़ुदाई) सहायता की भी चुनौती स्वीकार कर ली हो और इस्लाम के विरोधियों तथा इल्हाम के इन्कार करने वालों के मुक़ाबले में शूरवीर गजना के साथ यह दावा किया हो कि जिस को इल्हाम के अस्तित्व में सन्देह हो वह हमारे पास आकर इसका अनुभव और अवलोकन करे तथा इस अनुभव और अवलोकन का अन्य जातियों को स्वाद भी चखा दिया हो ।'' 167

यह राय आपके चरित्र और इस्लामी सेवा के सन्दर्भ में उस व्यक्ति की है जिसने आपके मसीहियत के दावे पर उन मक्का वालों की भाँति जिन के मुख रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को विश्वस्त (अमीन) और सदात्मा कहते हुए शुष्क होते थे, न केवल आप के दावे का इन्कार किया अपितु अपनी शेष आयु आप को काफ़िर और झूठा कहने तथा विरोध में व्यतीत की, परन्तु दावे के पश्चात का विरोध कोई महत्व नहीं रखता । क़ुर्आन करीम कहता है कि यह संभव नहीं कि एक व्यक्ति बावजूद बत्तीस दांतों के मध्य आई हुई जीभ की भाँति विरोधियों तथा शत्रुओं की भीड़ में रहने के प्रत्येक मित्र और शत्रु से अपनी सच्चाई का इक़रार करवा ले तथा फिर वह एक ही दिन में अल्लाह तआला पर झूठ बांधने लगे । अल्लाह तआला अन्याय करने

वाला नहीं कि ऐसे व्यक्ति को जो अपने दोषरहित जीवन का शत्रु से भी इक़रार करवा लेता है यह प्रतिफल देकर एक ही दिन में लोगों में सब से अधिक दुष्ट बना दे । या तो बड़े से बड़ा मोह, तथा भयंकर से भयंकर ख़तरा उसे सत्य से विमुख नहीं कर सकता था और या फिर अल्लाह तआला उसके हृदय को ऐसा विकृत कर दे कि वह सहसा उस पर झूठ बांधना आरंभ कर दे ।

जिस प्रकार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने विरोधियों को चुनौती पर चुनौती दी कि वे आपके पहले जीवन पर दोषरोपण करें या बताएँ कि क्या वे आपको उच्च श्रेणी का सदाचारी नहीं समझते थे। परन्तु कोई व्यक्ति आपके मुक़ाबले पर नहीं आया । इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने दावा किया कि अल्लाह तआला मुझे बताता है कि कभी कोई विरोधी तेरे चरित्र पर कोई धब्बा नहीं लगा सकेगा [168] और फिर इस दावे के अनुसार विरोधियों को निरन्तर चुनौती दी कि वे आपके पवित्र चरित्र के विरुद्ध कोई बात प्रस्तुत करें या सिद्ध करें कि वे आप के चरित्र को बचपन से वृद्धावस्था तक एक श्रेष्ठ और अनुकरणीय उदाहरण और दोषरहित नहीं समझते थे, परन्तु विरोधियों को निरन्तर उत्साहित करने के बावजूद कोई व्यक्ति आपके विरुद्ध नहीं बोल सका तथा अब तक भी वे लोग जीवित हैं जो आपकी युवावस्था की परिस्थितियों के साक्षी हैं परन्तु बावजूद कठोर विरोध के वे इस बात की साक्ष्य को नहीं छुपा सकते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चरित्र आश्चर्यजनक तौर पर श्रेष्ठतम था तथा अधिकांश हिन्दुओं, सिखों और मुसलमानों के कथनानुसार आप के बचपन और युवास्था का जीवन ''अल्लाह वालों का जीवन'' था ।

अत: जिस प्रकार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वाचाल मनोवृत्ति आपके सत्य का एक शक्तिशाली प्रमाण था जिसे अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में विरोधियों के समक्ष बतौर सबूत के प्रस्तुत किया है इसी प्रकार मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पहला जीवन आप की सच्चाई का प्रमाण है जिसका कोई इन्कार नहीं कर सकता । आपका अपनी मनोवृत्ति ही आप की सच्चाई की साक्षी है ।

चौथा सबूत

मान्यताओं को भुला चुके समस्त धर्मों पर इस्लाम की विजय

चौथा सबूत या यों कहना चाहिए कि आप की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए चौथे प्रकार के सबूत ये हैं कि आप के हाथ पर अल्लाह तआला ने उस महान भविष्यवाणी को पूर्ण किया है जिसे क़ुर्आन करीम में मसीह मौऊद का विशेष कार्य बताया गया है अर्थात् आपके हाथ पर अल्लाह तआला ने इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजयी करके दिखाया । क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَهٗ بِالۡهُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ[169]

(हुवल्लज़ी अरसला रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्हक़्क़े लियुज़्हिरहू अलद्दीने कुल्लिही) ख़ुदा ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत (पथ-प्रदर्शन) और सच्चा धर्म देकर भेजा है ताकि अल्लाह तआला उस धर्म को शेष समस्त धर्मों पर विजयी करके दिखा दे । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम से ज्ञात होता है कि यह बात मसीह मौऊद के समय में होगी, क्योंकि दज्जाल के उपद्रव को तोड़ने तथा याजूज, माजूज की तबाही तथा ईसाइयत को नष्ट करने का कार्य आप (स.अ.व.) ने मसीह के ही सुपुर्द वर्णन किया है । ये उपद्रव समस्त उपद्रवों से बड़े बताए गए हैं तथा यह भी खबर दी गई है कि दज्जाल अर्थात् ईसाइयत के समर्थक उस समय समस्त धर्मों पर विजयी हो जाएँगे । अतएव उन पर विजयी होने से बिल्कुल स्पष्ट है कि अन्य धर्मों पर भी इस्लाम को विजय प्राप्त हो जाएगी ।

अत: ज्ञात हुआ कि لِیُظۡهِرَهٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّهٖ **(युज़्हिरहू अलद्दीने कुल्लिही)** से अभिप्राय मसीह मौऊद का ही युग है तथा इसका यह अर्थ ऐसा है कि लगभग समस्त मुसलमानों की इस पर सहमति है । अत: तफ़सीर (व्याख्या) जामिउलबयान जिल्द 29 में इस आयत की व्याख्या में लिखा है कि -[170] وَذٰلِكَ عِنۡدَ نُزُوۡلِ عِیۡسَی ابۡنِ مَرۡیَمَ **(ज़ालिका इन्दा नुज़ूले**

ईसब्ने मरयमा) यह धर्म पर विजय ईसा बिन मरयम के युग में होती तथा बुद्धि द्वारा अनुमान भी इसी का समर्थन करते हैं, क्योंकि समस्त धर्मों का प्रकटन जैसा कि इस समय हुआ है, इससे पूर्व नहीं मिलता । परस्पर मेल-मिलाप के अधिक हो जाने के कारण समस्त धर्मावलम्बियों में एक जोश उत्पन्न हो गया है तथा धर्मों का इतना बाहुल्य दृष्टिगोचर होता है कि इससे पूर्व इतना बाहुल्य दिखाई नहीं देता । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग में तो मात्र चार धर्म ही इस्लाम के मुकाबले पर आए थे, अर्थात् मक्का के द्वैतवादियों का धर्म, ईसाइयों का धर्म, यहूदियों तथा अग्नि पूजकों (पारसी) का धर्म । अतएव उस युग में इस भविष्यवाणी के प्रकटन का अभी समय नही आया था, उसका समय अब आया है, क्योंकि इस समय समस्त धर्म प्रकट हो गए हैं तथा यातायात के नवीन आविष्कृत साधनों, तार और प्रेस इत्यादि के आविष्कार से धर्मों का मुकाबला बड़े जोश से प्रारंभ हो गया है।

अतः क़ुर्आन करीम, हदीसों और सद्बुद्धि से ज्ञात होता है कि मान्यताओं को भुला चुके धर्मों पर इस्लाम की विजय प्रत्यक्ष तौर पर मसीह मौऊद के युग में ही निश्चित है तथा मसीह मौऊद का मूल कार्य यही है । इस कार्य को उस के अतिरिक्त कोई अन्य नहीं कर सकता । जो व्यक्ति इस कार्य को सम्पन्न करे उसके मसीह मौऊद होने में कोई सन्देह नहीं । घटनाओं से सिद्ध है कि यह कार्य अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के हाथों से पूर्ण कर दिया है । अतः आप ही मसीह मौऊद हैं ।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के दावे से पूर्व इस्लाम की स्थिति इतनी कमज़ोर हो चुकी थी कि स्वयं मुसलमानों में से समझदार तथा समय से परिचित लोग ये भविष्यवाणियाँ करने लगे थे कि कुछ दिनों में इस्लाम बिल्कुल समाप्त हो जाएगा तथा परिस्तिथियाँ इस बात की ओर संकेत भी कर रही थीं क्योंकि ईसाइयत इस्लाम को इस तेज़ी के साथ खाती चली जा रही थी कि एक शताब्दी तक इस्लाम के बिल्कुल मिट जाने का खतरा था। मुसलमान ईसाइयों के मुक़ाबले में इतना अपमान पर अपमान सहन कर रहे थे कि नवीन मुसलमान कौमें तो पृथक रहीं, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सन्तान अर्थात् सादात में से

सहस्त्रों इस्लाम को त्याग कर ईसाई हो गए थे और न केवल ईसाई हो गए थे अपितु इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक के विरुद्ध अत्यन्त दूषित साहित्य प्रकाशित कर रहे थे, तथा मंचों पर खड़े होकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पवित्र अस्तित्व पर ऐसे कष्टदायक आरोप लगाए जाते थे कि उनको सुनकर एक मुसलमान का कलेजा छलनी हो जाता था । मुसलमानों की कमज़ोरी इतनी बढ़ गई थी कि हिन्दुओं की वह निष्प्राण जाति जिसे प्रचार के मैदान में कभी भी सफलता प्राप्त नहीं हुई और जो सदा अपने घर की सुरक्षा ही का प्रयास करती तथा वह भी असफल प्रयास करती रही है उसे भी साहस हो गया तथा उसमें से भी एक सम्प्रदाय आर्यों का खड़ा हो गया जिसने अपना उद्देश्य मुसलमानों को हिन्दू बनाना निश्चित किया, तथा उसके लिए व्यवहारिक तौर पर प्रयत्न भी प्रारंभ कर दिए । यह दृश्य बिल्कुल ऐसा ही था जैसे एक अचूक निशानेबाज़ के शव पर गिद्ध एकत्र हो जाते हैं । या तो वे उसकी शक्ति से भयभीत हो कर उसके निकट भी नहीं फटकते थे या उसके माँस के टुकड़े नोंच-नोंच कर खाने लगते हैं तथा उसी की हड्डियों पर बैठ कर उसका माँस खाते हैं । कुछ मुसलमान लेखक तक जो इस्लाम के समर्थन हेतु खड़े होते थे इस्लाम की विशेषता सिद्ध करने के स्थान पर इस बात का इक़रार करने लग गए थे कि इस्लाम के आदेश असभ्य और असंस्कृत युग के अनुकूल थे इसलिए वर्तमान युग के प्रकाश के अनुसार उन पर ऐतिराज़ नहीं करने चाहिएँ ।

इस आन्तरिक निराशा तथा बाहरी आक्रमण के समय हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस्लाम की सुरक्षा का कार्य आरंभ किया तथा सर्वप्रथम आक्रमण ही इतना शक्तिशाली किया कि शत्रुओं के होश उड़ गए । आप ने एक किताब ''बराहीन अहमदिया'' लिखी जिसमें इस्लाम की सच्चाई के तर्कों को व्याख्यात्मक रूप में वर्णन किया तथा इस्लाम के शत्रुओं को चुनौती दी कि यदि वे अपने धर्मों से तर्कों का पाँचवाँ भाग दिखा देंगे तो आप उनको दस हज़ार रुपया देंगे ।[171] एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने के बावजूद कोई शत्रु इस किताब का उत्तर न दे सका तथा हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक शोर मच गया कि यह किताब अपना उदाहरण स्वयं है । शत्रु स्तब्ध रह गए

कि या तो इस्लाम अपनी रक्षा और बचाव की भी शक्ति नहीं रखता था या इस योद्धा के बीच में आ कूदने से उसकी तलवार मान्यताओं को भुला चुके धर्मों के सरों पर इस शक्ति से पड़ने लगी है कि उनको अपने प्राणों के लाले पड़ गए हैं ।

उस समय तक आपने मसीह होने का दावा नहीं किया था और न ही लोगों में आपके विरोध का जोश उत्पन्न हुआ था, वे द्वेष से रिक्त थे। परिणाम यह हुआ कि सहस्त्रों मुसलमानों ने घोषणात्मक रूप में कहना प्रारंभ कर दिया कि यही व्यक्ति इस युग का मुजद्दिद है अपितु लुधियाना के एक बुज़ुर्ग ने जो अपने समय के वलियों (ऋषियों) में गिने जाते थे यहाँ तक लिख दिया कि -

हम मरीज़ों की है तुम्हीं पर नज़र
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए[172]

इस किताब के बाद आपने इस्लाम की सुरक्षा और उसके समर्थन में इतना प्रयास किया कि अन्ततः इस्लाम के शत्रुओं को स्वीकार करना पड़ा कि इस्लाम मुरदा नहीं अपितु जीवित धर्म है तथा उन्हें चिन्ता पड़ गई कि इस्लाम के सामने हमारे धर्म क्योंकर ठहरेंगे । उस समय उस धर्म की जो अपनी सफलता पर सर्वाधिक गर्व कर रहा था तथा इस्लाम को अपना शिकार समझ रहा था, यह स्थिति है कि उसके प्रचारक हज़रत अक़दस के सेवकों से इस प्रकार भागते हैं जिस प्रकार गधे शेरों से भागते हैं । किसी में यह शक्ति नहीं कि वह अहमदी के मुक़ाबले पर खड़ा हो जाए। आज आप(अ) के द्वारा इस्लाम समस्त धर्मों पर विजय प्राप्त कर चुका है, क्योंकि तर्कों की तलवार ऐसी धारदार है कि यद्यपि उस की चोट देर के बाद अपना प्रभाव दिखाती है, परन्तु उस का प्रभाव न मिटने वाला होता है ।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ईसाइयत यद्यपि अभी इसी प्रकार संसार को अपनी परिधि में लिए हुए है जिस प्रकार पूर्व में थी और अन्य धर्म भी उसी प्रकार स्थापित हैं जिस प्रकार पूर्व में थे, परन्तु निसन्देह उन की मृत्यु की घंटी बज चुकी है तथा उनकी रीढ़ की हड्डी टूट चुकी है । रीति-रिवाजों के प्रभाव के कारण अभी लोग इस्लाम में इस बाहुल्य के साथ प्रवेश नहीं करते जिस बाहुल्य से प्रवेश करने पर उनकी मृत्यु प्रत्यक्ष

दर्शियों को दिखाई दे सकती है परन्तु लक्षण प्रकट हो चुके हैं ।

बुद्धिमान व्यक्ति बीज से अनुमान लगा लेता है । हज़रत अक़दस ने उन पर ऐसी चोट की कि उस के लक्ष्य से बच नहीं सकते तथा शीघ्र या देर से एक मुरदा ढेर की भाँति इस्लाम के पैरों पर गिरेंगे । वे आक्रमण जो आपने अन्य धर्मों पर किए, जिन का परिणाम उनकी निश्चय ही मृत्यु है ये हैं ।

ईसाई धर्म पर प्रहार

ईसाई धर्म पर तो आप का यह प्रहार है कि उसकी समस्त सफलता इस विश्वास पर थी कि हज़रत मसीह सलीब पर मर कर लोगों के लिए कफ़्फ़ारा (पाप-निवारण) हो गए और पुनः जीवित होकर आकाश पर ख़ुदा के दाएँ हाथ पर जा बैठे । एक ओर उनकी मृत्यु जिसे लोगों के लिए प्रकट किया जाता था तो लोगों के हृदयों में उनके प्रेम की लहर दौड़ जाती थी और दूसरी ओर उन का जीवित होना और आकाश पर ख़ुदा के दायें हाथ पर जा बैठना उनकी श्रेष्ठता और ख़ुदा होने का इक़रार करवा लेता था । आप ने इन दोनों बातों को इन्जील ही से गलत सिद्ध करके दिखाया तथा इतिहास से सिद्ध कर दिया कि मसीह का सलीब पर मरना असंभव था, क्योंकि सलीब पर लोग तीन-तीन दिन तक जीवित रहते थे । मसीह को इन्जीलों के कथानानुसार केवल तीन-चार घंटे सलीब पर रखा गया अपितु इन्जील में है कि जब उन्हें सलीब से उतारा गया तो उनके शरीर में भाला चुभोने से शरीर से जीवित रक्त निकला [173] तथा मुरदे के शरीर से जीवित रक्त नहीं निकला करता अपितु इस से भी बढ़कर यह सिद्ध किया कि हज़रत मसीह ने यह भविष्यवाणी की थी जो अब तक इन्जीलों में विद्यमान है कि आप जीवित ही सलीब से उतर आएँगे । आपने कहा था - इस युग के लोगों को युनुस नबी जैसा चमत्कार दिखाया जाएगा । जिस प्रकार वह तीन दिन-रात मछली के पेट में रहा उसी भाँति ''आदम का बेटा तीन दिन-रात क़ब्र में रहेगा'' [174] और यह बात सर्वसम्मति से स्वीकार की जाती है कि यूनुस नबी जीवित ही मछली के पेट में दाख़िल हुआ और जीवित ही उस से बाहर आया । अतः इस प्रकार मसीह अलैहिस्सलाम भी जीवित ही

क़ब्र में उतारे गए और जीवित ही उसमें से निकाले गए । चूँकि समस्त तर्कों का आधार इन्जीलों पर ही था इस आक्रमण का उत्तर ईसाई कुछ न दे सकते थे और न अब दे सकते हैं । अतएव कफ़्फ़ारा और मसीह की दूसरों के लिए सलीब पर मारे जाने की आस्था जो लोगों को ईसाइयत की ओर आकर्षित करके ला रही थी बिल्कुल मिथ्या हो गई और उस की एक टांग टूट गई ।

ईसाइयत की प्रतिमा की दूसरी टांग हज़रत मसीह के जीवित आकाश पर जाने और ख़ुदा के दायें हाथ पर बैठ जाने की थी। यह टांग भी आप ने इन्जील के सबूतों से ही तोड़ दी, क्योंकि आप ने इन्जील से ही सिद्ध कर दिखाया कि मसीह अलैहिस्सलाम सलीबी घटना के पश्चात आकाश पर नहीं गए अपितु ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और हिन्दुस्तान की ओर चले गए । जैसा कि उल्लेख है कि - मसीह अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं बनी इस्राईल की खोई हुई भेड़ों को एकत्र करने हेतु आया हूँ **'मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस भेड़खाने की नहीं, मुझे उनको लाना भी आवश्यक है'** [175] तथा इतिहास से सिद्ध है कि बाबुल के राजा 'बुख़्त नसर' ने बनी इस्राईल के बारह समूहों में से दस को बंदी बना कर अफ़गानिस्तान की ओर देश से निष्कासन कर दिया था । [176] अत: हज़रत मसीह के इस कथन के अनुसार उनका अफ़गानिस्तान और कश्मीर की ओर आना अनिवार्य था ताकि वह उन खोई हुई भेड़ों को ख़ुदा का कलाम पहुँचा दें । यदि वह इधर न आते तो अपने इक़रार के अनुसार उनका अवतरण व्यर्थ और निरर्थक हो जाता ।

आपने इन्जीली साक्ष्य के अतिरिक्त ऐतिहासिक और भोगोलिक साक्ष्य से भी इस दावे को पूर्ण प्रमाण तक पहुँचा दिया । अत: प्राचीन मसीही इतिहासों से सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह के हवारी (शिष्य) हिन्दुस्तान की ओर आया करते थे और यह कि तिब्बत में एक किताब बिल्कुल इंजील की शिक्षा के समरूप उपलब्ध है जिसमें यह दावा किया गया है कि उसमें ईसा के जीवन के वृत्तान्त हैं जिससे विदित हुआ कि मसीह अलैहिस्सलाम इन क्षेत्रों की ओर आए थे । इसी प्रकार आप ने सिद्ध किया कि इतिहास से यह बात सिद्ध है तथा अफ़गानिस्तान और कश्मीर के अवशेष और नगरों के नाम इस बात का सत्यापन करते हैं कि इन देशों में यहूदी लाकर बसाए गए

थे । अत: कश्मीर का अर्थ जो वास्तव में कशीर है (जैसा कि मूल निवासियों की भाषा से ज्ञात होता) 'श्याम के देश के समान' का है । 'क' का अर्थ 'समान' और शीर 'श्याम' (सीरिया) का नाम है । इसी प्रकार काबुल और अनेक अफ़गानी नगरों के नाम श्याम के नगरों के नामों से मिलते हैं । अफ़गानिस्तान और कश्मीर के निवासियों के मुखमंडलों की हड्डियों की बनावट भी बनी इस्राईल के मुखमंडलों की बनावट से मेल खाती है परन्तु सब से बढ़कर यह कि आपने इतिहास के माध्यम से मसीह की क़ब्र का भी पता ज्ञात कर लिया, जो कश्मीर के शहर श्रीनगर के मुहल्ला ख़ानयार में विद्यमान है । कश्मीर के प्राचीन इतिहासों से विदित होता है कि यह एक नबी की क़ब्र है जिसे शहज़ादा नबी कहते थे, जो पश्चिम की ओर से उन्नीस सौ वर्ष पूर्व आया था तथा कश्मीर के पुराने लोग उसे ईसा साहिब की क़ब्र कहते हैं ।

अत: भिन्न-भिन्न माध्यमों से पहुँचने वाले वर्णनों से आप ने सिद्ध कर दिया कि हज़रत मसीह(अ) मृत्यु पाकर कश्मीर में दफ़्न हैं (मुर्दे को पृथ्वी के अन्दर एक विशेष प्रकार से गाड़ देना) तथा उनके पक्ष में ख़ुदा तआला का यह वादा पूर्ण हो चुका है कि وَاٰوَيۡنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبۡوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيۡنٍ[177] **(व आवयनाहुमा इला रब्वतिन ज़ाते क़रारिन व मईनिन)** और हमने मसीह और उसकी माँ को एक ऐसे निवास स्थल पर शरण दी जो ऊँचा है फिर है भी मैदान में तथा उसमें बहुत से झरने भी बहते हैं । यह परिभाषा कश्मीर पर बिल्कुल चरितार्थ होती है ।

अतएव मसीह के जीवन की परिस्थितियाँ उन की मृत्यु तक सिद्ध करके तथा उनकी क़ब्र तक का निशान निकाल कर हज़रत मसीह मौऊद ने मसीह की ख़ुदाई पर ऐसा शक्तिशाली आक्रमण किया है कि मसीह की ख़ुदाई (ख़ुदा होना) की आस्था सदा के लिए एक मृत आस्था बन गई है और अब ईसाइयत कभी भी सर नहीं उठा सकती ।

समस्त धर्मों के लिए एक ही अस्त्र

चूँकि ईसाई धर्म क्या राजनैतिक श्रेष्ठता की दृष्टि से और क्या अपनी विशालता और क्या अपने प्रचार के प्रयासों की दृष्टि से और क्या ज्ञान

और शैक्षणिक उन्नति की दृष्टि से उस युग में अन्य समस्त धर्मों पर एक श्रेष्ठता रखता था । इसी कारण अल्लाह तआला ने विशेष हथियार प्रदान किए, परन्तु शेष समस्त धर्मों के लिए एक ही ऐसा हथियार प्रदान किया जिसकी चोट से कोई धर्म बच नहीं सकता, अन्य प्रत्येक धर्म के अनुयायी इस्लाम का शिकार हो गए हैं । वह अस्त्र यह है कि प्रत्येक धर्म के पूर्वजों के द्वारा अल्लाह तआला ने संसार के अन्तिम युग में एक सुधारक की सूचना दे रखी थी । उस सूचना के कारण एक मुनि या अवतार या उन्होंने उसका जो भी नाम रखा था उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे और अपनी समस्त उन्नति और उत्थान को उस से संलग्न समझते थे । हिन्दुओं में भी ऐसी भविष्यवाणियाँ थीं, पारसियों में भी थीं तथा अन्य छोटे-बड़े धर्मावलम्बियों में भी थीं तथा इन समस्त भविष्यवाणियों में आने वाले मौऊद (कथित) का समय भी बताया गया था अर्थात् उसके युग के कुछ लक्षण बतौर पहचान बता दिए गए थे । अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद पर यह स्पष्ट कर दिया कि ये जितनी भविष्यवाणियाँ हैं उन में जो लक्षण बताए गए हैं सब मिलते-जुलते हैं और यदि कुछ भविष्यवाणियों में कुछ अन्य भविष्यवाणियों की अपेक्षा कुछ अधिक लक्षण (निशान) बताए गए हैं तो वे भी उसी युग की ओर संकेत कर रहे हैं जिस ओर कि शेष लक्षण । अतएव ये समस्त नबी या अवतार एक ही युग में आने वाले हैं ।

अब इधर सहस्त्रों वर्षों के पश्चात इन भविष्यवाणियों का इस युग में पूर्ण होना बताता है कि वे ख़ुदा तआला की ओर से थीं, मनुष्य या शैतान की ओर से न थीं, क्योंकि आयत - فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۝ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ[178] **(फ़ला युज़्हिरो अला ग़ैबिही अहदन इल्ला मनिर्तज़ा मिन रसूलिन)** इसका फैसला कर रही है तथा दूसरी ओर यह बात बिल्कुल बुद्धि के विरुद्ध है कि एक ही समय में प्रत्येक क़ौम और जाति में अल्लाह तआला की ओर से रसूल, नबी या अवतार खड़े किए जाएँ जिन का यह कार्य हो कि वे उस जाति को अन्य जातियों पर विजयी करें अर्थात् ख़ुदा के नबी ही परस्पर मुक़ाबला करें । फिर यह भी असंभव है कि एक ही समय में प्रत्येक जाति अन्य जातियों पर विजयी हो जाए । अतः एक ओर इन भविष्यवाणियों का सच्चा सिद्ध होना कि ये ख़ुदा तआला की ओर से हैं और दूसरी ओर उनका विभिन्न लोगों पर पूर्ण होकर उपद्रव का कारण बनना अपितु बुद्धि-संगत न होना इस बात पर साक्षी

है कि वास्तव में इन समस्त भविष्यवाणियों में एक ही अस्तित्व की सूचना दी गई तथा अल्लाह तआला की इच्छा यह थी कि पहले संसार की समस्त जातियों को प्रतीक्षा कराए और जब वह आ जाए तो उसके मुख से इस्लाम की सच्चाई की साक्ष्य प्रस्तुत कराके उन धर्मावलम्बियों का इस्लाम में प्रवेश कराए तथा इस्लाम को उन धर्मों पर विजयी करे । अत: महदी कोई न था परन्तु मसीह और कृष्ण कोई न था परन्तु मसीह, ज़रतश्तियों का मैसूदरबहमी कोई न था परन्तु वही जो कृष्ण महदी और मसीह था और इसी प्रकार अन्य कौमों के मौऊद (जिनका वादा किया गया था) वास्तव में एक ही व्यक्ति था। अत: भिन्न-भिन्न नामों द्वारा भविष्यवाणी करने का उद्देश्य यह था कि अपने नबियों से उसकी सूचना सुनकर तथा अपनी भाषा में उसका नाम देखकर वे उसे अपना समझें, पराया या अजनबी न समझें, यहाँ तक कि वह समय आ जाए कि जब वह मौऊद प्रकट हो तथा उस के समय में समस्त भविष्यवाणियों को पूर्ण होते देखकर उन की सच्चाई को स्वीकार करना पड़े तथा उसकी साक्ष्य पर वे इस्लाम को स्वीकार करें ।

इस नीतिपूर्ण क्रिया का उदाहरण बिल्कुल यह है कि कोई व्यक्ति बहुत सी कौमों को लड़ता हुआ देखकर उन से कामना करे कि मध्यस्थों द्वारा निर्णय कर लें और जब वे अपने-अपने मध्यस्थ नियुक्त कर लें तो ज्ञात हो कि वे एक ही व्यक्ति के विभिन्न नाम हैं तथा उसके फैसला करने पर सब की संधि (सहमति) हो जाए ।

अत: यह सिद्ध करके कि विभिन्न धर्मों में अन्तिम युग के मौऊद के संबंध में जो भविष्यवाणियाँ हैं वे इस युग में पूर्ण हो चुकी हैं फिर यह सिद्ध करने के पश्चात कि एक ही समय में कई मौऊद जिन का उद्देश्य यह हो कि सच्चाई को समस्त संसार में प्रसारित करें तथा अपनी क़ौम को विजयी करें असंभव है । आप ने सिद्ध कर दिया कि वास्तव में समस्त धर्म भिन्न-भिन्न नामों के साथ एक ही मौऊद को याद कर रहे थे और वह मौऊद आप हैं । चूँकि नबी किसी क़ौम का नहीं होता, जो ख़ुदा के लिए उसके साथ हो वह उसका होता है । इसलिए वह जैसे प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के अपने ही व्यक्ति हैं तथा आपके मानने से उनकी समस्त उन्नति और उत्थान निर्भर हैं । आपको स्वीकार करने और मानने का अर्थ यह है कि इस्लाम में प्रवेश करें अथवा दूसरे शब्दों में यह

कि वह भविष्यवाणी पूर्ण हो जाए कि मसीह मौऊद इसलिए आएगा ताकि لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ **(लि युज़्हिरहू अलद्दीने कुल्लिही)** उसके द्वारा अल्लाह तआला इस्लाम धर्म को समस्त धर्मों पर विजयी करे ।

यह आक्रमण इतना घातक है कि कोई धर्म इसका मुकाबला नहीं कर सकता । प्रत्येक धर्म में अन्तिम सुधारक की भविष्यवाणी विद्यमान है और जो लक्षण बताए गए हैं वे इस युग में पूर्ण हो चुके हैं परन्तु आप के अतिरिक्त दावा करने वाला कोई खड़ा नहीं हुआ । अतएव या तो लोग अपने धर्मों को मिथ्या समझें या विवश होकर स्वीकार करें कि यह इस्लाम का मौऊद ही उन किताबों का मौऊद था और उस पर ईमान लाएँ । इन दो बातों के अतिरिक्त और कोई तीसरी बात संसार के धर्मों के अनुयायियों के लिए प्रकट नहीं हुई । इन दोनों बातों में इस्लाम को विजय प्राप्त हो जाती है क्योंकि यदि अन्य धर्मों के अनुयायी अपने धर्मों को झूठा समझकर त्याग दें तब भी इस्लाम विजयी रहा और यदि वे उन धर्मों को सच्चा करने हेतु उनकी भविष्यवाणी के अनुसार इस युग के सुधारक को स्वीकार कर लें तब भी इस्लाम विजयी रहा ।

यह वह आक्रमण है कि ज्यों-ज्यों अन्य धर्मों के अनुयायियों पर इस आक्रमण का प्रभाव होगा वे इस्लाम को स्वीकार करने पर विवश होंगे और अन्ततः संसार में इस्लाम ही इस्लाम दिखाई देने लगेगा । मसीह मौऊद ने नबियों की पद्धति के अन्तर्गत बीज बो दिया है, पेड़ अपने समय पर परिपक्व होकर फल देगा तथा संसार उस के फलों की मधुरता पर मुग्ध तथा उस की शीतल छाया की स्वीकारिता पर विवश होगा कि उसी के नीचे आकर बैठे ।

इस आक्रमण से एक धर्म एक सीमा तक शेष रहता था अर्थात सिखों का धर्म, क्योंकि बाबा नानक साहिब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात हुए हैं यद्यपि उनके यहाँ भी एक अन्तिम सुधारक की भविष्यवाणी विद्यमान है अपितु स्पष्ट लिखा है कि वह बटाला के क्षेत्र में होगा [179] (बटाला वह तहसील है जिसमें क़ादियान का कस्बा है । अतः यह भविष्यवाणी अक्षरशः पूर्ण हो चुकी है) परन्तु उनकी ओर से यह ऐतिराज़ हो सकता था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन थे तो आपके पश्चात इस धर्म की बुनियाद क्योंकर पड़ी ।

अतः इस धर्म के सुधार तथा उसे इस्लाम में लाने के लिए अल्लाह तआला ने आपको यह युक्ति प्रदान की कि आपको रोया (स्वप्न) में बताया गया कि बाबा नानक रहमतुल्लाह अलयहे ने कोई नवीन धर्म नहीं निकाला अपितु वह पक्के मुसलमान थे ।

हे बादशाह ! आप यह सुनकर आश्चर्य करेंगे कि प्रत्यक्षतया विचित्र दिखाई देने वाली बात ऐसे शक्तिशाली सबूतों के साथ पूर्ण प्रमाण को पहुँच गई कि सहस्त्रों सिखों के हृदयों ने इस बात की सत्यता को स्वीकार कर लिया और वे सिख जो इससे पूर्व स्वयं को हिन्दुओं का ही भाग ठहराया करते थे बड़ी प्रबलता से प्रयास करने लगे कि वे हिन्दुओं से पृथक हो जाएँ। हज़रत मसीह मौऊद के इस दावे से पूर्व सिख गुरुद्वारों में हिन्दुओं की मूर्तियां रखी हुई थीं । इस दावे के उपरान्त यद्यपि सिख जाति ने जाति के रूप में तो अभी इस्लाम स्वीकार नहीं किया परन्तु उसमें ऐसा महान परिवर्तन हुआ कि उसने गुरुद्वारों से मूर्तियों को चुन-चुन कर फेंकना आरंभ कर दिया और हिन्दू होने से स्पष्ट इन्कार कर दिया ।

हज़रत अक़दस(अ) ने इस रोया के पश्चात जब छान-बीन और खोज की तो विदित हुआ कि ग्रन्थ साहिब में जो बावा साहिब(रह) के उपदेशों की किताब है पांच समय की नमाज़, रोज़ा, (उपवास), ज़कात और हज का सख़्त आग्रह है तथा उनका पालन न करने पर कठोर भर्त्सना की गई है अपितु सिखों की किताबों से यह भी ज्ञात हुआ कि बावा साहिब 'उन पर रहमत हो', मुसलमान वलियों (ऋषियों) की संगत में रहा करते थे उनके क़ब्रिस्तानों में बैठा करते थे, उनके (वलियों के) साथ नमाज़ पढ़ते थे, आप हज को भी गए थे तथा आप ने बग़दाद इत्यादि इस्लामी अवशेषों और स्मृतियों के भी दर्शन किए थे तथा सब से बढ़कर यह बात ज्ञात हुई कि बावा साहिब का एक कोट है जो सिख सज्जनों में बतौर प्रसाद (तबर्रुक) रखा हुआ है और उन्हीं के कब्ज़े में है । उसमें क़ुर्आन करीम की सूरह तथा आयतें जैसे सूरह इख़्लास, आयतुलकुर्सी, आयत إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ[180] **(इन्नद्दीना इन्दल्लाहिल इस्लाम)** लिखी हुई हैं तथा शहादत का कलिमा भी मोटी क़लम से लिखा हुआ है । सिख सज्जन अरबी भाषा से अपरिचित तथा अनभिज्ञ होने के कारण इस कलाम को आकाशीय रहस्य समझते रहे तथा यह मालूम न कर सके कि यह

बावा साहिब के इस्लाम की घोषणा है अपने इन शक्तिशाली सबूतों को जो स्वयं सिख सज्जनों की किताबों से निकले हैं या उनके पास जो प्रसाद सुरक्षित हैं उन पर उनकी बुनियाद है बड़ी प्रबलता के साथ सिखों में प्रचारित और प्रसारित करना आरंभ किया तथा उनका ध्यानाकर्षण किया कि बावा साहिब 'उन पर रहमत हो' मुसलमान थे । यह प्रहार सिखों में परिवर्तन उत्पन्न करने में बड़ी सीमा तक सफल हो चुका है और आशा है कि ज्यों-ज्यों सिख सज्जन मूल वास्तविकता से परिचित होंगे उन पर सिद्ध होता जाएगा कि वे हमारे बिछड़े हुए भाई हैं । इस्लाम ही उन का धर्म है । वे कई सौ वर्ष पूर्व के राजनैतिक झगड़ों को जिन का मूल कारण जैसा कि इतिहासों से सिद्ध होता है मुसलमान न थे अपितु हिन्दू सज्जन थे, सत्यधर्म की स्वीकारिता के मार्ग में बाधा न बनने देंगे अपितु अपनी प्रसिद्ध बहादुरी से काम लेकर समस्त बाधाओं को दूर करके सतसिरी अकाल के उद्घोष करते हुए इस्लाम की पंक्ति में आ खड़े होंगे, तथा परगना बटाला में प्रकट होने वाले सुधारक पर ईमान लाकर मोमिनों की जमाअत में सम्मिलित होकर कुफ्र और बिदअत (धर्म तथा शरीअत में किसी नवीन बात का समावेश) के मुकाबले में पूर्ण रूप से व्यस्त हो जाएँगे ।

तीसरा प्रहार जिस से आपने इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजयी कर दिया तथा जिसकी उपस्थिति में इस्लाम के समक्ष कोई धर्म सर नहीं उठा सकता यह है कि आपने संसार का दृष्टि-कोण बिल्कुल परिवर्तित कर दिया है । आपके दावे से पूर्व समस्त धर्मों की बहस इस शैली पर होती थी कि प्रत्येक अन्य धर्म के अनुयायी को झूठा ठहराता था इल्ला माशाअल्लाह । यहूदी हज़रत मसीह को, मसीही हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को, ज़रतश्ती इन तीनों धर्मों के नबियों को तथा इन तीनों धर्मों के अनुयायी ज़रतश्तियों के नबियों को । फिर ये चारों दूसरी दुनिया के समस्त बुज़ुर्गों को तथा उन की कौमों के लोग इन चारों धर्मों के बुज़ुर्गों को झूठा ठहराते थे । यह बड़े विचित्र प्रकार का युद्ध था जिस में प्रत्येक जाति अन्य जाति से लड़ रही थी, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति को समस्त धर्मों में ऐसे प्रमाण मिलते थे जिन से उनका सच्चा होना सिद्ध होता था । अत: वह आश्चर्य में था कि समस्त धर्मों के

अन्दर सच्चाइयाँ पाई जाती हैं और समस्त धर्म एक दूसरे के बुज़ुर्गों को झूठा भी कह रहे हैं, यह बात क्या है ?

इस युद्ध का परिणाम यह था कि द्वेष बढ़ रहा था और मतभेद उन्नति कर रहा था । एक ओर हिन्दू अपने बुज़ुर्गों की परिस्थितियों का अध्ययन करते थे तथा उनकी जीवनियों में श्रेष्ठ श्रेणी के सदाचारों का कौशल देखते थे, दूसरी ओर दूसरे धर्म के अनुयायी से सुनते थे कि वे झूठे और कपटी थे तो उन को उनकी बुद्धि पर अचम्भा होता था और वे समझते थे कि उन लोगों को द्वेष ने अन्धा कर दिया है । दूसरी ओर अन्य धर्मों के लोग अपने बुज़ुर्गों के सम्बन्ध में विरुद्ध बातें सुनकर शोक और क्रोध से भर जाते थे । अतः एक ऐसी समस्या उत्पन्न हो गई थी जिसका कोई समाधान न था, जो किसी के सुलझाने से न सुलझती थी । जो लोग द्वेष-भावना से रिक्त होकर विचार करते थे कि समस्त संसारों के प्रति पालक ख़ुदा ने किस प्रकार अपने बन्दों में से एक क़ौम को चुन लिया और शेष कौमों को छोड़ दिया, परन्तु इस प्रश्न को प्रस्तुत करने का कोई साहस नहीं कर सकता, क्योंकि यह प्रश्न उसके धर्म को आमूल-चूल उखाड़ कर फेंक देता था ।

हिन्दूओं ने इस समस्या का अपने विचार में इस प्रकार समाधान कर लिया था कि समस्त धर्म ख़ुदा की ओर से हैं और उन भिन्न-भिन्न मार्गों के स्थान पर हैं जो एक महल की ओर जाते हैं तथा हिन्दू धर्म सर्वश्रेष्ठ है, परन्तु समस्या का यह समाधान भी संसार के काम का न था क्योंकि इस पर दो बड़े भारी आरोप होते थे जिन का कोई उत्तर न था । एक तो यह कि यदि समस्त धर्म अपनी वर्तमान परिस्थिति में ख़ुदा की ओर से हैं तथा ख़ुदा तक पहुँचाने का माध्यम हैं तो फिर उनमें सैद्धान्तिक मतभेद क्यों है ? निसन्देह विवरण में मतभेद हो सकता है परन्तु सिद्धान्त में नहीं । एक शहर को कई मार्ग जा सकते हैं, परन्तु यह नहीं हो सकता कि पूरब की ओर जाने वाले मार्गों में से कुछ पश्चिम की ओर से जाएँ और कुछ उत्तर की ओर से और कुछ दक्षिण की ओर से । वे थोड़ा-थोड़ा चक्कर तो खा सकते हैं परन्तु जाएँगे केवल एक ही ओर को । शाश्वत सच्चाइयों में कभी मतभेद नहीं हो सकते । यह माना कि ख़ुदा ने एक जमाअत को एक प्रकार की उपासना का आदेश दिया और दूसरी जमाअत

को दूसरे प्रकार की उपासना का, परन्तु सद्बुद्धि इस बात को स्वीकार नहीं कर सकती कि उसने एक जमाअत[i] से तो यह कहा कि मैं एक ख़ुदा हूँ और दूसरी से[ii] कहा कि मैं दो हूँ तथा तीसरी को[iii] बाप, बेटा और रूहुलक़ुदुस की शिक्षा दी और चौथी को लाखों मूर्तियों में ख़ुदा की शक्तियों की आस्था की शिक्षा दी और पांचवीं[iv] को प्रत्येक वस्तु का पृथक देवता बताया या यह कि एक[v] से कहा कि उसका अस्तित्व बिल्कुल पवित्र है, संभव नहीं कि वह शरीर धारण करे । दूसरी[vi] को बताया कि वह मानव शरीर में प्रवेश कर सकता है तथा तीसरी[vii] को यह बताया कि वह तुच्छ जानवरों यहाँ तक कि सुअर तक की आकृति धारण कर लेता है या उदाहरणतया एक[viii] को तो उसने बताया कि मृत्यु के पश्चात् उठाया जाना सत्य है[ix] दूसरी को बताया कि मृत्यु के पश्चात उठाया जाना नहीं है । एक[x] से कहा कि मृत व्यक्ति जीवित होकर संसार में नहीं आते, दूसरी से कहा[xi] कि मनुष्य मरने के पश्चात नई-नई योनियों में वापस आता है । अतएव यह तो संभव है कि अल्लाह तआला विभिन्न जातियों की परिस्थितियों को देखकर आदेश जारी कर दे, परन्तु यह संभव नहीं कि घटनाएँ और शाश्वत सच्चाइयाँ भी भिन्न-भिन्न जातियों को भिन्न-भिन्न तौर पर बताए, परन्तु चूँकि वर्तमान धर्म के केवल आदेशों में मतभेद नहीं अपितु शाश्वत सच्चाइयों में भी मतभेद है, इसलिए इन सब मार्गों को ख़ुदा तआला की ओर जाने वाले मार्ग नहीं कह सकते ।

दूसरा आरोप इस आस्था पर यह पड़ता था कि हिन्दू लोग एक ओर तो अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ कहते हैं और दूसरी ओर उसे सब से पुरातन और प्राचीन कहते हैं । सद्बुद्धि इसे स्वीकार नहीं कर सकती कि अल्लाह तआला सर्वश्रेष्ठ धर्म उतार कर फिर तुच्छ धर्म उतारे जबकि मनुष्य अपनी आरंभिक अवस्था में पूर्ण धर्म स्वीकार करने की शक्ति रखता था तो फिर बाद को ज्ञान और कौशल में उन्नति प्राप्त करने पर उसकी ओर तुच्छ धर्म उतारने का क्या कारण था ? बाद को तो वही धर्म आ सकता है जो पहले से अधिक पूर्ण हो या कम से कम वैसा ही धर्म हो ।

---

i मुसलमान और यहूदी । ii पारसी । iii ईसाई । iv चीनी । v मुसलमानों को । vi ईसाई । vii हिन्दू । viii मुसलमान । ix यहूदियों के कुछ कबीले । x मुसलमान । xi हिन्दू ।

ये दोनों आरोप ऐसे थे कि इन का उत्तर इस आस्था के प्रस्तुतकर्ता से कुछ न बनता था तथा यह आरोप स्थापित रहता था कि ख़ुदा तआला संसार के पथ-प्रदर्शन हेतु संसार के प्रारंभ से क्या व्यवस्था करता चला आया है ।

ईसाइयों ने इस आस्था का यह समाधान निकाला कि ख़ुदा ने मसीह के माध्यम से समस्त संसार को मार्ग-दर्शन की ओर बुलाया है । इसलिए उस पर किसी जाति के पक्ष लेने का आरोप नहीं हो सकता, परन्तु यह समाधान भी उचित न था क्योंकि इससे भी यह प्रश्न हल न होता था कि मसीह के आगमन से पूर्व ख़ुदा ने संसार के मार्ग-दर्शन हेतु क्या व्यवस्था की थी । बाइबल से तो हमें इतना ज्ञात होता है कि अन्य जातियों के लिए उसकी शिक्षा न थी, परन्तु मसीह के पश्चात लोगों के लिए यदि द्वार खोला भी गया तो उस से पूर्व जो अन्य कौमों के करोड़ों लोग गुज़र गए उनके मार्ग-दर्शन के लिए अल्लाह तआला ने क्या व्यवस्था की ।

अतः यह प्रश्न असंतुष्ट स्थिति में पड़ा हुआ था तथा लोगों के हृदयों को अन्दर ही अन्दर खा रहा था कि हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने क़ुर्आन करीम से सिद्ध करके इस दृष्टिकोण को परिवर्तित कर दिया जो उस समय तक संसार में स्थापित था और बताया कि क़ुर्आन करीम की यह शिक्षा है कि - وَاِنۡ مِّنۡ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِیۡهَا نَذِیۡرٌ[181] **(व इम्मिन उम्मतिन इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर)** कोई क़ौम ऐसी नहीं गुज़री जिस में हम ने रसूल नहीं भेजा । अतः प्रत्येक देश और प्रत्येक क़ौम में अल्लाह तआला के रसूल गुज़र चुके हैं । हम यह नहीं कहते कि हिन्दुस्तान नबियों से रहित था या चीन नबियों के बिना था या रूस नबियों से रहित था या अफ़गानिस्तान बिना नबियों के था या अफ्रीक़ा नबियों से रहित था या यूरोप नबियों के बिना था अथवा अमरीका नबियों से रिक्त था, न हम अन्य कौमों के बुज़ुर्गों का हाल सुनकर उनका इन्कार करते हैं और न उन को झूठा ठहराते हैं, क्योंकि हमें तो यह बताया गया है कि हर क़ौम में नबी गुज़र चुके हैं । अन्य कौमों में नबियों, शरीअतों (धार्मिक-विधानों) और किताबों का पाया जाना हमारे धर्म के विरुद्ध और उसके मार्ग में बाधक नहीं है अपितु उसमें उसका सत्यापन है । हाँ हम यह आस्था रखते हैं कि समय की

परिस्थितियों के अनुसार अल्लाह तआला ने पहले विभिन्न कौमों की ओर नबी भेजे और तत्पश्चात जब मनुष्य इस पूर्ण शरीअत को स्वीकार करने के योग्य हो गया जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से आई तो उस ने आप (स.अ.व.) को समस्त संसार की ओर अवतरित करके भेज दिया । अतः कोई क़ौम भी मार्ग-दर्शन से वंचित नहीं रही तथा बावजूद इसके कि इस्लाम ही इस समय मार्ग-दर्शन का माध्यम है क्योंकि यह अन्तिम और पूर्ण धर्म है । जब पूर्ण धर्म आ गया तो पूर्वकालीन धर्म निरस्त किए गए तथा उनको निरस्त किए जाने का एक लक्षण यह भी है कि अब अल्लाह तआला ने उनकी सुरक्षा त्याग दी, उनमें अब मानवीय हस्तक्षेप होता रहता है तथा वे सत्य से कोसों दूर जा पड़े हैं तथा उनके रूप विकृत हो चुके हैं । वे सच्चे हैं अपने प्रारंभ की दृष्टि से और झूठे हैं अपने वर्तमान रूप की दृष्टि से । एक दृष्टिकोण जो आप(अ) ने स्थापित किया ऐसा है कि उस से कोई व्यक्ति पीछे नहीं हट सकता क्योंकि यदि इस मूल को स्वीकार न किया जाए तो स्वीकार करना पड़ता है कि अल्लाह तआला कुछ लोगों का पथ-प्रदर्शन करता है और कुछ को पथ-प्रदर्शन के सामान उत्पन्न करने के बिना यों ही छोड़ देता है। इसे सद्बुद्धि स्वीकार नहीं करती और यदि वह इस मूल को स्वीकार कर लें तो उन्हें इस्लाम की सच्चाई को मानना पड़ता है, क्योंकि इस्लाम सब से अन्तिम धर्म है और इसलिए भी कि इस्लाम ही ने इस सही और उचित मूल को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया है ।

यह प्रहार ऐसा शक्तिशाली है कि शिक्षित वर्ग और विशाल विचारधारा वाला वर्ग जो चाहे किसी धर्म से संबंध रखता हो इस से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता । क्योंकि यदि इस मूल को जो हज़रत अक़दस(अ) ने प्रस्तुत किया है त्याग दें तो साथ ही ख़ुदा तआला को भी त्यागना पड़ता है और यह वे कर नहीं सकते और यदि वे इस मूल को स्वीकार कर लें तो फिर इस्लाम को भी स्वीकार करना पड़ता है । इसके अतिरिक्त उनके लिए और कोई उपाय नहीं । अतः संसार के दृष्टिक-कोण को जो पूर्व में अतयन्त संकीर्ण था परिवर्तित कर देने से हज़रत मसीह मौऊद(अ) ने इस्लाम की विजय का एक विश्वसनीय सामान उपलब्ध कर दिया है ।

चौथा प्रहार इस्लाम की विजय के लिए आपने प्रयोग किया, जिसने इस्लाम के विरुद्ध समस्त बहसों के क्रम को परिवर्तित कर दिया है तथा अन्य धर्मावलम्बियों के होश उड़ा दिए हैं यह है कि आप(अ) ने अल्लाह तआला के मार्ग-दर्शन से प्रचलित कलाम के ज्ञान को परिवर्तित कर दिया तथा उसके ऐसे नियम निर्धारित किए कि न तो शत्रु इन्कार कर सकता है और न उनके अनुसार इस्लाम के समक्ष ठहर सकता है । यदि वह इन नियमों का खण्डन करता है तब भी मरता है और यदि स्वीकार करता है तब भी मरता है । न पलायन में उसे मुक्ति दिखाई देती है न मुकाबले में सुरक्षा ।

आप(अ) से पूर्व आलोचना और बहस की पद्धति यह थी कि एक सदस्य दूसरे सदस्य पर जो चाहता था ऐतिराज़ करता चला जाता था तथा अपने सन्दर्भ में जो चाहता था कहता चला जाता था । यह बात स्पष्ट है कि जब शास्त्रार्थ का क्षेत्र असीमित हो जाए तो शास्त्रार्थ का परिणाम कुछ नहीं निकल सकता । जब कुछ सवार दौड़ने लगते हैं तो कुछ नियमों के अनुसार दौड़ते हैं तब कहीं जीतने वाले का ज्ञान होता है । यदि कोई किसी ओर को और अन्य कोई किसी ओर को दौड़ जाए तो क्या ज्ञात हो सकता है कि कौन विजयी रहा । इस प्रकार दौड़ने वालों के संबंध में हम कभी भी उचित राय स्थापित नहीं कर सकते । इसी प्रकार धार्मिक खोज के मामले में जब तक नियम और सीमा निर्धारित न हो राय स्थापित नहीं की जा सकती । पूर्व में यह पद्धति थी कि प्रत्येक व्यक्ति को जो बात अच्छी ज्ञात हुई चाहे किसी किताब में पढ़ी हो अपने धर्म की ओर सम्बद्ध कर दिया और कह दिया कि देखो हमारे धर्म की शिक्षा कितनी अच्छी है । मूल धर्म के संबंध में कोई वार्तालाप ही नहीं होता था अपितु विद्वानों और बहस करने वालों के व्यक्तिगत विचारों पर वार्ता होती रहती थी । परिणाम यह निकलता था कि सत्य के अभिलाषियों को निर्णय करने का अवसर ही प्राप्त न होता था । आप(अ) ने आकर बहस की इस पद्धति की भली भाँति व्याख्या करके गलत सिद्ध किया और बताया कि यदि ख़ुदा तआला की ओर से आने वाली पुस्तक हमारे मार्ग-दर्शन हेतु आई है तो चाहिए कि वह हम से जो कुछ स्वीकार कराना चाहती है उसमें वह भी विद्यमान हो और जिन सबूतों द्वारा स्वीकार कराना चाहती

है वे भी उसमें विद्यमान हों, क्योंकि यदि ख़ुदा का कलाम दावे और सबूतों से बिल्कुल रिक्त है तो फिर इसका हमें क्या लाभ है ? और यदि दावा भी हम प्रस्तुत करते हैं और सबूत भी हम ही देते हैं तो फिर ख़ुदा के कलाम का क्या लाभ ? और हमारा धर्म अल्लाह का धर्म कहलाने का कब पात्र है वह तो हमारा धर्म हुआ तथा अल्लाह का हम पर कोई उपकार नहीं हुआ कि हमने ही उसके धर्म हेतु दावे निर्धारित किए तथा हमने ही उन दावों के सबूत उपलब्ध किए। अत: आवश्यक है कि धार्मिक खोज और अन्वेषण के समय यह बात दृष्टि में रखी जाए कि आकाशीय धर्मों के दावेदार जो दावा अपने धर्मों की ओर से प्रस्तुत करे वह भी उनकी आकाशीय किताबों से हो और जो भी सबूत प्रस्तुत करें वे भी उन्हीं किताबों से हों ।

यह मूल इतना शक्तिशाली था कि अन्य धर्म इसका कदापि इन्कार नहीं कर सकते थे, क्योंकि यदि वे कहते कि नहीं हम ऐसा नहीं कर सकते तो उस का अर्थ यह होता कि जो धर्म वे वर्णन करते हैं वह धर्म वह नहीं है जो उनकी आकाशीय किताबों में वर्णन हुआ है क्योंकि यदि वही धर्म है तो फिर क्यों वे अपनी आकाशीय किताब से उन का दावा वर्णन नहीं कर सकते अथवा यदि दावा वर्णन कर सकते हैं तो क्यों उनकी आकाशीय किताब सबूत से खाली है । जब ख़ुदा तआला ने मनुष्य के मस्तिष्क को ऐसा उत्पन्न किया है कि वह बिना सबूत के किसी बात को स्वीकार नहीं कर सकता तो क्यों वह उसे ईमान की बातें बताते समय ऐसे सबूत नहीं देता जिन की सहायता से वह उन बातों को स्वीकार कर सके । अतएव अन्य धर्मों के लोग उस मूल का न खण्डन कर सकते थे, क्योंकि उनके खण्डन करने का अर्थ यह था कि उनके धर्म बिल्कुल अपूर्ण और बेकार हैं, और न स्वीकार कर सकते थे क्योंकि हे बादशाह ! आप को यह ज्ञात करके आश्चर्य होगा कि जब इस मूल के अंतर्गत अन्य धर्मों का परीक्षण किया गया तो ज्ञात हुआ कि उन के लगभग नव्वे प्रतिशत दावे ऐसे थे जो उनकी इल्हामी किताबों में नहीं पाए जाते थे, जितने दावे धार्मिक किताबों से निकलते थे उन में लगभग शत प्रतिशत ही सबूतों के बिना वर्णन किए गए थे जैसे ख़ुदा ने एक बात बताकर मनुष्य पर छोड़ दिया था कि वह अपनी वकालत से उसकी बात को सिद्ध करे ।

हज़रत अक़दस(अ) ने सिद्ध कर दिया कि विभिन्न धर्मों के अनुयायी अपने हृदय से बातें बना बना कर या इधर-उधर से विचारों को चुरा कर अपने धर्म से सम्बद्ध कर देते हैं तथा उन धर्मों की श्रेष्ठता पर बहसें करके लोगों का समय नष्ट करते हैं, क्योंकि यदि वे अपनी बात को सिद्ध भी कर दें तो इस से यह परिणाम तो निकल आएगा कि इन समस्याओं के सन्दर्भ में उनके विचार उचित हैं परन्तु यह परिणाम नहीं निकलेगा कि उन का धर्म भी सच्चा है, क्योंकि वह बात उन की धार्मिक पुस्तक में पाई ही नहीं जाती फिर आप ने यह सिद्ध किया कि क़ुर्आन करीम इस्लाम के समस्त नियमों को स्वयं प्रस्तुत करता है तथा उन की सच्चाई के सबूत भी देता है तथा उन के प्रमाण में आपने सैकड़ों मामलों के संबंध में क़ुर्आन करीम का दावा तथा उसके सबूत प्रस्तुत करके अपनी बात को प्रकाशमान दिन की भाँति सिद्ध कर दिया तथा इस्लाम के शत्रु आप के मुक़ाबले से बिल्कुल असमर्थ हो गए और वे इस प्रहार से इतने घबरा गए हैं कि उनको आज तक कोई बहाना नहीं मिल सका जिस से उन के आघात से बच सकें और न भविष्य में प्राप्त हो सकता है । यह कलाम का ज्ञान ऐसा पूर्ण और श्रेष्ठ है कि न उसका इन्कार किया जा सकता है और न उसकी उपस्थिति में झूठ का समर्थन किया जा सकता है । अत: ज्यों-ज्यों इस प्रहार का प्रयोग किया जाएगा मान्यताओं को भुला चुके धर्मों के प्रतिनिधि धार्मिक शास्त्राथों और बहसों से जी चुराएँगे तथा उनके अनुयायियों पर अपने धर्म की कमज़ोरी स्पष्ट होती जाएगी और لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ **(लियुज़्हिरहू अलद्दीने कुल्लिही)** का दृश्य संसार अपनी आँखों से देखेगा ।

पाँचवां प्रहार जो हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलातो व स्सलाम ने किया जिस से अन्य धर्मों के झंडों को पूर्णतया नतमस्तक कर दिया तथा इस्लाम को ऐसी विजय प्रदान की कि जिसका कोई व्यक्ति इन्कार ही नहीं कर सकता, यह है कि आप ने बड़ी प्रबलता से इस्लाम के शत्रुओं के समक्ष यह बात प्रस्तुत की कि धर्म का मूल उद्देश्य अल्लाह तआला से संबंध उत्पन्न करना है । अत: वही धर्म सच्चा हो सकता है और वर्तमान युग में ख़ुदा तआला का रुचिकर धर्म कहला सकता है जो बन्दे का ख़ुदा तआला से संबंध उत्पन्न करा सके तथा इस संबंध के लक्षण

दिखा सके । हम देखते हैं कि संसार में छोटी से छोटी वस्तु का भी कुछ न कुछ प्रभाव होता है। अग्नि यदि शरीर को लगती है या उस के निकट ही हम बैठते हैं तो शरीर या तो जल जाता है या ताप की अनुभूति करता है, पानी हम पीते हैं तो हमारी आन्तरिक गर्मी के तुरन्त दूर हो जाने के अतिरिक्त हमारे मुखमंडल से आनन्द और शीतलता के लक्षण प्रकट होने लगते हैं, उत्तम भोजन खाएँ तो शरीर मोटा होने लगता है, व्यायाम करने लगें तो शरीर बलिष्ठ होने लगता है तथा ऊर्जा और शक्ति प्राप्त होती है । इसी प्रकार दवाओं का प्रभाव होता है कि कभी हानिकारक तो कभी लाभदायक होता है, परन्तु यह विचित्र बात होगी कि यदि अल्लाह तआला का संबंध बिल्कुल निष्प्रभावी सिद्ध हो, उसासना करते-करते हमारी नाकें घिस जाएँ तथा उपवास (रोज़े) रखते-रखते पेट पीठ से लग जाएँ, ज़कात और दान देते-देते हमारे माल समाप्त हो जाएँ, परन्तु हमारे अन्दर कोई परिवर्तन उत्पन्न नहीं तथा इन कार्यों का कोई परिणाम न निकले । यदि यह बात है तो फिर अल्लाह तआला के संबंध का लाभ क्या और उसकी हमें आवश्यकता क्या ? एक निम्नस्तर के अधिकारी से हमारे संबंध का लक्षण तो प्रकट हो जाता है कि उस की सभा में हमें सम्मान मिलता है उसके अधीनस्थ हमारा आदर करने लगते हैं, वह हमारी याचनाओं को सुनता है तथा हमारे कष्टों का निवारण करता है और प्रत्येक व्यक्ति इस बात को महसूस कर लेता है कि हम उसके मान्य और प्रिय हैं, परन्तु यदि कुछ पता नहीं लग सकता तो अल्लाह तआला के संबंध का कि न उसका कुछ प्रभाव हमारे हृदय पर पड़ता है न हमारे सम्बन्धों पर । हम वैसे के वैसे ही रहते हैं जैसे कि पूर्व में थे ।

अत: आप[अ] ने सिद्ध किया कि जीवित धर्म में ये लक्षण पाए जाने चाहिएं कि उस का पालन करने वाला ख़ुदा तआला को प्राप्त कर सके तथा उस का निकटवर्ती हो सके । ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त लोगों में उसका सानिध्य पा लेने के कुछ लक्षण होने चाहिएँ । अत: चाहिए कि प्रत्येक धर्म के लोग परस्पर एक दूसरे पर प्रहार करने के स्थान पर अपने आध्यात्मिक जीवन का प्रमाण दें तथा अपने ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त होने को घटनाओं से सिद्ध करें तथा ऐसे लोगों को प्रस्तुत करें जिन्होंने उन

धर्मों का पालन करके ख़ुदा से संबंध स्थापित किया हो तथा उसके मिलन का प्याला पिया हो । फिर जो धर्म इस मापदण्ड के अनुसार सच्चा हो उसको स्वीकार कर लिया जाए अन्यथा निष्प्राण शरीर समझ कर उसको स्वयं से दूर फेंका जाए कि वह दूसरे को नहीं उठा सकता अपितु उसको उठाना पड़ता है । ऐसा धर्म लाभ पहुँचाने के स्थान पर हानि पहुँचाएगा तथा इस संसार में लज्जित करेगा और परलोक में प्रकोप ग्रस्त ।

आप(अ) का यह दावा ऐसा था कि कोई बुद्धिमान व्यक्ति उसका खण्डन नहीं कर सकता था । इस दावे के साथ ही अन्य धर्मावलम्बियों पर बिजली गिरी तथा वे अपने सम्मान की सुरक्षा की चिन्ता में लग गए । आपने बड़ी दृढ़ता से घोषणा की कि इस प्रकार के जीवन के लक्षण केवल इस्लाम में पाए जाते हैं, अन्य धर्म इस मापदण्ड पर कदापि पूरे नहीं उतर सकते । यदि किसी को इसके विरुद्ध दावा है तो मेरे मुकाबले पर आकर देख ले, परन्तु बावजूद स्वाभिमान पर चोट करने के कोई मुक़ाबले पर न आया और आता भी किस प्रकार ? कुछ अन्दर होता तो आता । गला फाड़ने और चिल्ला-चिल्ला कर यह शोर करने के लिए तो सहस्त्रों लोग तैयार हो जाएँगे कि हमारा धर्म सच्चा है परन्तु ख़ुदा के प्रेम और उस के सम्बन्ध का प्रमाण देना तो किसी के अधिकार में नहीं, ख़ुदा का प्रेम तो क्या ख़ुदा से एक अस्थायी सम्बन्ध भी जिन लोगों का न हो वे ख़ुदा के संबंध का क्या प्रमाण दें ।

आप(अ) ने हिन्दुओं को भी ऐसा निमंत्रण दिया और ईसाइयों को भी और यहूदियों को भी और अन्य समस्त धर्मों को भी, परन्तु कोई इस प्रहार को सहन करने के लिए तैयार न हुआ । भिन्न-भिन्न उपायों से और भिन्न-भिन्न अवसरों पर आप(अ) ने लोगों को प्रेरित किया परन्तु **सदाए बर नख़ास्त** । एक बार पंजाब के लार्ड बिशप को आप ने चुनौती दी कि मेरे मुक़ाबले पर आकर दुआ की स्वीकारिता का निशान देखो । तुम्हारी किताबों में भी लिखा है कि तुम में यदि एक राई के दाने के बराबर ईमान हो तो तुम पर्वतों से कहो कि चलो तो वे चलने लगेंगे और हमारी किताबें भी मोमिनों की सहायता, समर्थन और उन की दुआओं की स्वीकारिता का आश्वासन देती हैं । अतएव तुम मेरे मुकाबले पर आकर किसी मामले के सन्दर्भ में दुआ करके देखो ताकि

ज्ञात हो जाए कि अल्लाह तआला इस्लाम के अनुसार जीवन व्यतीत करने वालों की दुआएँ मुकाबले के समय सुनता है अथवा उनकी दुआएँ सुनता है तो ईसाइयत की शिक्षा का अनुसरण करते हों, परन्तु बार-बार चुनौती देने के बावजूद लार्ड बिशप साहिब खामोश रहे तथा उन की खामोशी ऐसी विचित्र ज्ञात होती थी कि कुछ अंग्रेज़ी समाचार पत्रों ने भी उन पर चोट की कि इतने भारी-भारी वेतन प्राप्त करने वाले पादरी जब कोई मुकाबले का समय आता है तो सामने आकर मुकाबला क्यों नहीं करते, परन्तु न अन्य लोगों की चुनौती ने पादरी साहिब को मुकाबले के लिए उत्साहित किया और न अपनों की भर्त्सना ने । वे हीलों-बहानों से इस प्याले को टालते ही रहे ।

इस प्रकार के चैलेंज आप ने इस्लाम के शत्रुओं को निरन्तर दिए परन्तु कोई व्यक्ति मुकाबले पर न आया । आप का यह प्रहार ऐसा है कि प्रत्येक बुद्धिमान तथा विवेकशील व्यक्ति पर इस का प्रभाव होगा और ज्यों-ज्यों लोग अपने धर्म के निष्प्रभावी होने और इस्लाम के जीवित और प्रभावी होने को देखेंगे, उन पर इस्लाम की सच्चाई प्रकट होती जाएगी, क्योंकि बहसों में मनुष्य बातें बना कर सत्य को छुपा सकता है, परन्तु अवलोकन और प्रभाव के मुकाबले में उस से कोई बहाना नहीं बन सकता और अन्ततः हृदय सत्य का शिकार हो ही जाता है । यह प्रहार भी इन्शाअल्लाह धर्म के प्रकटीकरण के लिए अत्यन्त शक्तिशाली और सब से प्रभावकारी प्रहार सिद्ध होगा अपितु प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति के निकट इस प्रहार के माध्यम से इस्लाम बौद्धिक तौर पर विजयी हो चुका है, यद्यपि भौतिक परिणाम कुछ समय पश्चात निकलें ।

ये पाँच प्रहार हज़रत अक़दस(अ) ने इस्लाम के शत्रुओं पर चलाए हैं । मैंने बतौर उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जिन से ज्ञात हो सकता है कि जो काम मसीह मौऊद के लिए था वह आप कर चुके हैं और यदि आप(अ) मसीह मौऊद नहीं हैं तो फिर प्रश्न उत्पन्न होता है कि अब कौन सा कार्य रहता है जो मसीह मौऊद आकर करेगा ? क्या यह कि तलवार से लोगों को धर्म में सम्मिलित कराएगा । तलवार से सम्मिलित किए हुए लोग इस्लाम को क्या लाभ पहुँचाएँगे ? तथा स्वयं उनको इस बलात ईमान से क्या लाभ होगा ? यदि ईसाई आज अपनी शक्ति के नशे में

मुसलमानों को बलपूर्वक ईसाई बनाने लगें तो उनके संबंध में प्रत्येक सभ्य व्यक्ति अपने हृदय में क्या कहेगा ? यदि उनके इस काम को हम गन्दे से गन्दा काम समझेंगे तो क्यों इसी प्रकार का काम यदि **मसीह मौऊद** करेंगे तो वह भी ऐतिराज़ योग्य न होंगे ? निश्चय ही इस्लाम में तलवार द्वारा लोगों को सम्मिलित करना इस्लाम के लिए हानिकारक सिद्ध होगा न कि लाभकारी । वह प्रत्येक सभ्य, सुशील और स्वतंत्र स्वभाव व्यक्ति को इस्लाम से घृणा उत्पन्न कर देगा । अत: तलवार चलाने के लिए मसीह के आगमन की आवश्यकता नहीं । उनका यही कार्य हो सकता है कि वह तर्कों द्वारा इस्लाम को विजयी करें। और मिर्ज़ा साहिब सबूतों और अवलोकनों के समर्थन से इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजयी कर चुके हैं। अब इस कार्य का कोई भाग शेष नहीं रहा कि मसीह आकर करें। अत: मिर्ज़ा साहिब ही मसीह मौऊद हैं । क्योंकि उन्होंने वह कार्य करके दिखा दिया जो मसीह मौऊद के लिए निर्धारित था ।

यहाँ शायद यह कहा जाए कि सबूत तो पहले भी विद्यमान थे फिर यह क्योंकर समझा जाए कि मिर्ज़ा साहिब ने इस्लाम को अन्य धर्मों पर विजयी कर दिया तो इसका उत्तर यह है कि यदि तलवार उपलब्ध हो और उस का चलाने वाला उपलब्ध न हो तो नहीं कह सकते कि शत्रु पराजित हो जाएगा । शत्रु तो तभी पराजित होगा जब उस तलवार का चलाने वाला विद्यमान हो । यहाँ तो इस्लाम का यह हाल था कि सबूतों की तलवार उपलब्ध थी, परन्तु लोग केवल यही नहीं कि तलवार चलाना नहीं जानते थे अपितु इस बात से भी अपरिचित थे कि तलवार उपलब्ध है । यह हज़रत अक़दस(अ) का ही कार्य था कि आपने क़ुर्आन करीम की समझ अल्लाह तआला से प्राप्त करके इस्लाम की विजय के उन सबूतों को जो इस युग के संबंध में थे निकाला और फिर उन सबूतों को अन्य धर्मों के मुक़ाबले में प्रयोग किया तथा दूसरे लोगों को उनके प्रयोग की शिक्षा दी । अत: आपके आगमन से ही इस्लाम विजयी हुआ अन्यथा जिस प्रकार तोपची के अभाव में तोप स्वयं अपनी सेना के लिए हानिकारक होती है, इसी भाँति क़ुर्आन करीम अपने ज्ञानी के अभाव में मुसलमानों के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा था तथा उसी के गलत प्रयोग से वे मर रहे थे और नष्ट हो रहे थे, परन्तु हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने दावा

किया तो फिर इस कलाम के वे प्रभाव प्रकट हुए और आपने ऐसे सबूतों के साथ इस्लाम की ओर से शत्रुओं का मुकाबला किया कि मुकाबला करना तो पृथक रहा, अपनी सुरक्षा करना भी उनके लिए कठिन हो गया। कुछ तो उनमें से सरकार के आगे चिल्लाने लगे कि वह बलपूर्वक हज़रत अक़दस(अ) को इस मुकाबले से रोक दे । इस प्रकार चढ़े हुए दिन की तरह सिद्ध हो गया कि अब इस्लाम मान्यताओं को भुला चुके धर्मों पर विजयी होकर रहेगा और अजगर की भाँति उन को निगल जाएगा ।

पाँचवां सबूत

धर्म का नवीनीकरण

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के दावे की सच्चाई पर पाँचवां सबूत यह है कि आप ने इस्लाम का आन्तरिक सुधार भी इस रूप में कर दिया है कि जिस रूप में उसका सुधार मसीह तथा महदी के सुपुर्द था अत: ज्ञात हुआ कि आप ही मसीह मौऊद हैं ।

मेरे निकट उन मौलवियों के अतिरिक्त जो बहस और शास्त्रार्थ के कारण हठ और द्वेष का शिकार हो गए हैं, शेष सभी शिक्षित लोग इस बात को स्वीकार करेंगे कि आज इस्लाम वह इस्लाम नहीं रहा जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में था । प्रत्येक व्यक्ति का हृदय महसूस करता है कि इस्लाम में कोई कमी आ गई है और यह देखते हुए कि या तो वह समय था कि अल्लाह तआला कुर्आन करीम में फ़रमाता है - رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ[182] **(रुबमा यवद्दुल्लज़ीना कफ़रू लौ कानू मुस्लिमीन)** अधिकांश बार काफ़िर भी चाहते हैं कि काश ! वे मुसलमान होते तथा ऐसी श्रेष्ठ श्रेणी की शिक्षा का अनुसरण करते और या आज यह समय है कि इस्लाम सब के आरोपों का पात्र बन रहा है । दूसरों को तो उस ने क्या सांत्वना देना थी स्वयं मुसलमानों में से शिक्षित वर्ग उस के बहुत से मामलों पर शंका और सन्देह रखते हैं। कोई उसकी सौद्धान्तिक शिक्षा पर ऐतिराज़ करता है, कोई उसकी नैतिक शिक्षा पर दोषारोपण करता है, कोई उसकी

व्यवहारिकता पर चिन्तित । वह विश्वास और दृढ़ता अब वह उत्पन्न नहीं करता जो आज से पूर्व अपने अनुयायियों के हृदयों में उत्पन्न किया करता था और इसी कारण से इस्लाम के लिए लोग उस बलिदान के लिए भी तैयार नहीं जिसके लिए वे पूर्व में तैयार हुआ करते थे । अब तीन बातों में से एक अवश्य मानना होगी । या तो यह कि इस्लाम के प्रभाव के संबंध में जो कुछ वर्णन किया जाता है वह एक कहानी से अधिक महत्व नहीं रखता। बुज़ुर्गों के सन्दर्भ में तत्कालीन लोगों की सद्भावना है और कुछ भी नहीं। या यह मानना होगा कि इस्लाम का आजकल कोई अनुसरण ही नहीं करता या यह कि इस्लाम में ही परिवर्तन आ गया है इसलिए अब उस का पालन करना कुछ लाभप्रद नहीं होता और अन्तिम बात ही उचित है क्योंकि पूर्व युग में जो इसका प्रभाव था वह रिवायतों से ही सिद्ध नहीं । संसार के चारों कोनों में इस्लाम के लक्षण इस उन्नति के साक्षी हैं जो इस्लाम का अनुसरण करने के कारण मुसलमानों को प्राप्त हुई थी और यह भी नहीं कि आजकल कोई इस्लाम का पालन नहीं करता, इस्लाम का जो अर्थ लोग समझते हैं उसका पालन भी करते हैं । कुछ लोग चिल्लाकशी (चालीस दिन तक किसी एकान्तवास में बैठकर मंत्र पढ़ना या जप करना) करते-करते अपने प्राण त्याग देते हैं, परन्तु उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता । अतएव एक ही बात रह गई और वही मूल कारण है कि इस्लाम का अर्थ लोगों के मस्तिष्क में परिवर्तित हो गया है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार - لَمْ يَبْقَ مِنَ الْإِسْلَامِ إِلَّا اسْمُهُ[183] **(लम यब्क़ा मिनल इस्लामे इल्ला इस्मोहू)** आज इस्लाम का केवल नाम शेष रह गया है तथा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के युग से दूरी के कारण लोगों ने इस्लाम के मर्म को बिल्कुल परिवर्तित कर दिया है और अब वर्तमान रूप में अपने अनुयायियों के अन्दर वह परिवर्तन उत्पन्न करने से असमर्थ है जो पूर्व में उत्पन्न किया करता था और वर्तमान रूप में अन्य धर्मावलम्बियों के हृदयों पर भी कुछ प्रभाव नहीं डाल सकता और यद्यपि कभी-कभी उसके मिटे हुए खण्डहर किसी नेक स्वभाव वाले व्यक्ति के हृदय को सत्य की ओर फेर दें, परन्तु बतौर नियम अब इसका वह प्रभाव नहीं जो पहले हुआ करता था ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कलाम से भी इस बात का सत्यापन होता है । आप फ़रमाते हैं कि -

تَفْتَرِقُ اُمَّتِیْ عَلٰی ثَلَاثٍ وَّ سَبْعِیْنَ مِلَّةً کُلُّهُمْ فِی النَّارِ اِلَّا مِلَّةً وَاحِدَةً قَالُوْا مَنْ هِیَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ قَالَ مَا اَنَا عَلَیْهِ وَاَصْحَابِیْ[184]

(तफ़्तरिक़ो उम्मती अला सलासिन व सब्ईना मिल्लतन कुल्लोहुम फ़िन्नारे इल्ला वाहिदतन – क़ालू मन हिया या रसूलल्लाहे क़ाला मा अना अलैहे व अस्हाबी) अर्थात् एक युग ऐसा आएगा कि मेरी उम्मत तिहत्तर सम्प्रदायों (फ़िरकों) में बंट जाएगी, उनमें से एक के अतिरिक्त शेष सब अग्नि में डाले जाएँगे । लोगों ने पूछा कि हे अल्लाह के रसूल ! वे कौन लोग होंगे जो सत्य पर होंगे । आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया कि वे लोग जो इस मार्ग पर होंगे जिस पर मैं और मेरे सहाबा हैं ।

इसी प्रकार आप फ़रमाते हैं कि -

یَآاَیُّهَا النَّاسُ خُذُوْا مِنَ الْعِلْمِ قَبْلَ اَنْ یُّقْبَضَ الْعِلْمُ اَوْقَبْلَ اَنْ یُّرْفَعَ الْعِلْمُ۔ قِیْلَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ کَیْفَ یُرْفَعُ الْعِلْمُ وَهٰذَاالْقُرْاٰنُ بَیْنَ اَظْهُرِنَا فَقَالَ اَیْ ثَکَلَتْكَ اُمُّكَ وَهٰذِهِ الْیَهُوْدُ وَالنَّصَارٰی بَیْنَ اَظْهُرِهِمُ الْمَصَاحِفُ لَمْ یُصْبِحُوْا یَتَعَلَّقُوْا بِالْحَرْفِ مِمَّا جَآءَ تْهُمْ بِهٖ اَنْبِیَاؤُهُمْ اَلَا وَاِنَّ ذَهَابَ الْعِلْمِ اَنْ یَّذْهَبَ حَمَلَتُهٗ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ۔[185]

(या अय्योहन्नासो ख़ुज़ू मिनलइल्मे क़ब्ला अंय्युक्बज़ल इल्मो व क़ब्ला अंय्युरफ़उल इल्मो – क़ीला या रसूलल्लाहे कैफ़ा युरफ़उल इल्मो व हाज़लक़ुर्आनो बैना अज़हुरिना फ़क़ाला अय सकलतका उम्मुका व हाज़लयहूदो वन्नसारा बैना अज़हुरिहिमुलमसाहिफ़ो लम युस्बिहू यतअल्लक़ूना बिल्हर्फ़े मिम्मा जाअतहुम बिही अंबियाओहुम अला व इन्ना ज़हाबल इल्मे अंय्यज़्हबा हमलतोहू सलासा मर्रातिन) । अर्थात् हे लोगो ! ज्ञान प्राप्त करो पूर्व इसके कि ज्ञान उठा लिया जाए । पूछा गया कि हे अल्लाह के रसूल ! ज्ञान किस प्रकार उठा लिया जाएगा ? हालाँकि क़ुर्आन हमारे पास मौजूद है । आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया

इसी प्रकार होगा 'तेरी माँ तुझ पर शोक करे' क्या देखते नहीं कि यहूदी और ईसाइयों के पास किताबें मौजूद हैं परन्तु वे उस शिक्षा के साथ कुछ भी संबंध नहीं रखते जो उन के पैग़म्बर (नबी) लाए थे । सुनो ! ज्ञान इस प्रकार जाता है कि विद्वान (ज्ञानी) संसार से गुज़र जाते हैं । आपने यह वाक्य तीन बार वर्णन किया ।

इस हदीस से ज्ञात होता है कि एक समय उम्मते मुहम्मदिया (मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत) अत्यन्त भयानक स्थिति को धारण करने वाली है, जब कि ज्ञान संसार से उठ जाएगा, परन्तु साथ ही यह भी विदित होता है कि उस समय एक सम्प्रदाय ऐसा होगा जो सत्य पर होगा और वह सम्प्रदाय होगा जो सहाबा के रंग में रंगीन होगा। हदीसों से ज्ञात होता है कि सहाबा(रज़ि.) के रंग में रंगीन केवल मसीह मौऊद की जमाअत है क्योंकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मैं नहीं जानता कि इस उम्मत का पहला भाग अच्छा है या अन्तिम । अतः 'मा अना अलैहे व अस्हाबी' से अभिप्राय मसीह मौऊद की जमाअत है और सत्य भी यही है कि मसीह मौऊद की जमाअत हो क्योंकि कोई जमाअत सहाबा(रज़ि.) की भाँति नहीं हो सकती जब तक कि वह किसी ख़ुदा के भेजे हुए रसूल की संगत प्राप्त न हो ।

सारांश यह कि उपर्युक्त हदीसों से ज्ञात होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से ज्ञान और धर्म के मिट जाने पर मसीह मौऊद के द्वारा अल्लाह तआला फिर इस्लाम को स्थापित करने का वादा कर चुका है । अतः मसीह मौऊद होने के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यक्ति जो दावेदार हो इस्लाम की मूल शिक्षा को स्थापित करने वाला तथा क़ुर्आन करीम के उचित ज्ञान वर्णन करने वाला हो और यदि वह ऐसा न करे तो मसीह मौऊद नहीं हो सकता, तथा जो अन्तिम युग के उपद्रव से भरे दिनों में इस्लामी शिक्षा को लोगों के विचारों से पवित्र करे और उसकी ख़ूबी को संसार पर प्रकट करे तथा **मा अना अलयहे व अस्हाबी** का दृश्य दिखा दे, इस के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति मसीह मौऊद नहीं हो सकता और जब कि यह बात सिद्ध हो गई तो मसीह के दावेदार के दावे को परखने के लिए एक मार्ग हमारे लिए यह भी खुल गया, हम देखें कि क्या वास्तव में इस्लाम इस समय

पूर्णरूपेण अपने मूल रूप को त्याग चुका है, दूसरे यह कि क्या उस व्यक्ति ने वास्तव में उसको उसके मूल रूप में संसार के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है ।

इस्लाम का बिल्कुल परिवर्तित हो जाना तथा अपनी वास्तविकता से दूर हो जाना तो ऐसी समस्या है जैसा कि मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ कोई बुद्धिमान भी इस का इन्कारी न होगा तथा कोई इन्कारी भी कब हो सकता है जब कि ख़ुदा तआला का कर्म सिद्ध कर रहा है कि इस समय मुसलमान मुसलमान नहीं रहे और फिर इस्लाम का वर्तमान रूप जो स्वयं मुसलमानों को सांत्वना नहीं दे सकता वह स्वयं इस बात का साक्षी है कि इस्लाम इस समय बिगड़ चुका है । अतः केवल यह प्रश्न शेष रह जाता है कि क्या हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब ने इस्लाम के यथार्थ रूप को जो अपनी सुन्दरता और मनमोहकता के कारण अपनों और दूसरों सब के हृदयों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है वास्तव में संसार के समक्ष प्रस्तुत किया है या नहीं और क्या आप ने उन बुराइयों को इस्लाम से दूर किया है या नहीं जो उसकी पवित्र शिक्षा में अल्लाह से दूर और स्वार्थी मुल्लाओं ने मिला दी थीं । इस प्रश्न को हल करने के लिए मैं उदाहरणस्वरूप आप के सामने कुछ मोटी-मोटी बातें प्रस्तुत करता हूँ, जिन से आप को ज्ञात हो जाएगा कि इस्लाम के रूप को इस समय लोगों ने कैसा परिवर्तित कर दिया था तथा हज़रत अक़दस ने किस प्रकार इसके रूप को संसार के समक्ष प्रस्तुत किया है ।

धर्म का केन्द्र-बिन्दु जिसके चारों ओर शेष समस्त समस्याएँ चक्कर लगाती हैं या यह कि इस्लाम का वह मूल जिसके लिए शेष सभी आस्थाएँ और कर्म शाखाओं और पत्तों के समान हैं, अल्लाह पर ईमान लाना है । समस्त आस्थाएँ इसके समर्थन के लिए हैं और समस्त कर्म उसको दृढ़ करने के लिए । अल्लाह तआला पर ईमान लाने के भागों में से सब से बड़ा भाग ख़ुदा के एकेश्वरवाद पर ईमान लाना है । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिस समय से दावा किया और उस समय तक कि जब आपका स्वर्गवास हुआ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ **(ला इलाहा इल्लल्लाह)** (अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई पूज्यनीय नहीं) की शिक्षा की घोषणा को जारी रखा, प्रत्येक प्रकार का कष्ट सहन किया, परन्तु इस शिक्षा का

प्रकट करना नहीं छोड़ा यहाँ तक कि स्वर्गवास के समय भी आप (स.अ.व.) को यदि ध्यान था तो यही कि वह शिक्षा जिसे इतने बलिदानों के पश्चात् आप ने स्थापित किया था संसार से मिट न जाए । हे बादशाह ! एक मुसलमान का हृदय द्रवित हो जाता है तथा उसका कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो जाता है जब वह हदीसों और इतिहासों में यह पढ़ता है कि मृत्यु के रोग में जबकि रोग की प्रबलता से आपके शरीर पर पसीना आ-आ जाता था और रोग आपके सूक्ष्म से सूक्ष्म अंगों पर अपना प्रभाव कर रहा था, आपकी व्याकुलता, और आप का कष्ट और भी बढ़ जाता था जब आप यह विचार करते थे कि कहीं लोग मेरे पश्चात् इस शिक्षा को भूल न जाएँ तथा द्वैतवाद से ग्रसित न हो जाएँ । आप स.अ.व. उस समय के कष्ट में भी स्वयं को भूले हुए थे तथा उम्मत की चिन्ता से दायें से बायें और बायें से दायें करवटें बदल-बदल कर फ़रमा रहे थे कि -

لَعَنَ اللّٰهُ الْيَهُوْدَ وَالنَّصَارٰى اِتَّخَذُوْا قُبُوْرَ اَنْۢبِيَاءِهِمْ مَسَاجِدَ[186]

(लअनल्लाहुलयहूदा वन्नसारा इत्तख़ज़ू क़ुबूरा अंबियाएहिम मसाजिद) अल्लाह तआला यहूदियों और ईसाइयों पर लानत करे कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को मस्जिदें बना लिया । जिस से आप का अभिप्राय यह था कि देखना मेरे जीवन भर की शिक्षा के विपरीत मेरे मृत्योपरांत मुझ को ही पूजने न लग जाना, तथा एकेश्वरवाद की शिक्षा को भूल न जाना । मृत्यु के रोग में आपकी यह व्याकुलता तथा ख़ुदा के एकेश्वरवाद से प्रेम एक ऐसी हृदय-बिदारक घटना थी कि आप से प्रेम रखने वाला व्यक्ति इस घटना के हृदय-विदारक प्रभाव के अन्तर्गत द्वैतवाद के निकट भी कभी फटक नहीं सकता था, परन्तु हे बादशाह ! आप देखते हैं कि मुसलमान कहलाने वालों में से अधिकांश वे लोग हैं जो खुल्लम-खुल्ला इस शिक्षा के विपरीत अमल कर रहे हैं । वह कौन सा मुसलमान है जो आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व यह भ्रम भी कर सकता था कि ला इलाहा इल्लल्लाह के झंडा उठाने वाले किसी समय क़ब्रों पर सज्दे करेंगे । अपने बुज़ुर्गों के स्थलों की ओर मुख करके नमाज़ें पढ़ेंगे, मनुष्यों को परोक्ष का ज्ञाता ठहराएँगे, ख़ुदा के वलियों को ख़ुदा तआला की क़ुदरत का स्वामी समझेंगे, मृतकों से कामनाएँ माँगेंगे, क़ब्रों पर चढ़ावे

चढ़ाएँगे, अपने पीरों के संबंध में यह विश्वास रखेंगे कि ये जो चाहें ख़ुदा से स्वीकार करा लेंगे, तथा उनको अन्तर्यामी समझेंगे, अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों के नाम पर क़ुरबानियाँ देंगे फिर इन सब पर अधिक अन्याय यह करेंगे कि दावा करेंगे कि यह सब शिक्षा क़ुर्आन करीम की और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की है, परन्तु पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक जिस-जिस स्थान पर मुसलमान रहते हैं ये सब कुछ हो रहा है तथा अधिकांश मुसलमान उपर्युक्त बातों में से किसी न किसी बात का करने वाला है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस तपन और द्रवित होने को देखकर अल्लाह तआला ने आप के मज़ार मुबारक (क़ब्र मुबारक) को तो इन बिदअतों (धर्म में किसी नई बात को शामिल कर देना जो उसमें नहीं थी) से सुरक्षित कर दिया, परन्तु अन्य इस्लाम के बुज़ुर्गों की क़ब्रों पर आजकल हिन्दुओं के मन्दिरों से कम द्वैतवादी रस्में नहीं होतीं । निश्चय ही यदि आज रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आकर देखते तो इन लोगों को मुसलमान नहीं समझते अपितु किसी अन्य द्वैतवादी धर्म के अनुयायी समझते ।

कदाचित कहा जाए कि ये विचार तो मूर्ख लोगों के हैं, विद्वान इन विचारों से असंतुष्ट हैं, परन्तु सत्य यह है कि किसी क़ौम की हालत उसके अधिकांश सदस्यों से देखी जाती है । जब मुसलमानों में से अधिकांश इन विचारों के अनुयायी हैं तो यही निर्णय करना होगा कि मुसलमानों की दशा एकेश्वरवाद की दृष्टि से गिर गई है और वे **ला इलाहा इल्लल्लाह** के मर्म को जो इस्लाम का प्राण था भुला बैठे हैं, परन्तु यह भी उचित नहीं कि जन साधारण ही इन आस्थाओं को मानते हैं और उन जन साधारण के पीर और मौलवी भी उनके विचारों से सहमत हैं यदि कुछ उन में से हृदय से सहमत नहीं तो कम से कम उन की हालत भी इतनी खराब हो गई है कि वे प्रत्यक्ष तौर पर जन साधारण के विचारों का खण्डन नहीं कर सकते और यह बात भी इस बात का लक्षण है कि ईमान मिट गया है ।

कुछ सम्प्रदाय (फ़िरक़े) मुसलमानें में से ऐसे हैं जो दावा करते हैं कि वे द्वैतवाद से पूर्णरूपेण पृथक हैं अपितु वे दूसरे लोगों पर नाराज़ होते हैं

कि उन्होंने द्वैतवाद धारण कर इस्लाम को आघात पहुँचाया है, परन्तु आश्चर्य है कि ये लोग स्वयं भी द्वैतवाद में ग्रसित हैं तथा अन्य से उनको केवल इतनी विशेषता प्राप्त है कि ये प्रत्येक व्यक्ति को अल्लाह का भागीदार नहीं बनाते, केवल मसीह अलैहिस्सलाम को अल्लाह का भागीदार समझते हैं । ये लोग भी दूसरे मुसलमानों की भाँति मसीह अलैहिस्सलाम को जीवित आकाश पर बैठा हुआ विश्वास करते हैं । इनके निकट रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो सब नबियों में श्रेष्ठ थे पृथ्वी में दफ़्न हैं, परन्तु हज़रत मसीह ''नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका'' दो हज़ार वर्ष से आकाश पर जीवित बैठे हैं, अल्लाह तआला उनको मृत्यु ही नहीं देता । क़ुर्आन करीम में स्पष्ट पढ़ते हैं कि जिन बुज़ुर्गों को लोग ख़ुदा के अतिरिक्त पुकारते हैं वे मृत हैं जीवित नहीं हैं तथा यह भी नहीं जानते कि कब उठाए जाएँगे । اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُوْنَ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ[187] **(अम्वातुन ग़ैरो अहयाइन व मा यश्उरूना अय्याना युबअसून)** फिर देखते हैं कि ईसा मसीह अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला के सिवा पूज्यनीय बनाए हुए हैं परन्तु ये हज़रत मसीह के जीवित होने के विचार परित्याग नहीं करते और स्वयं को एकेश्वरवादी कहते हुए झिझकते नहीं ।

इसी प्रकार ये लोग द्वैतवाद के विरुद्ध आवाज़ तो बुलन्द करते हैं परन्तु विश्वास रखते हैं कि हज़रत मसीह मुरदे जीवित किया करते थे, हालाँकि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह स्वयं भी इस संसार में मृतकों को जीवित करके नहीं भेजता, जैसा कि फ़रमाता है وَحَرَامٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ[188] **(व हरामुन अला क़रियतिन अहलकनाहा अन्नहुम ला यरजिऊन)** जो लोग मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं उनके लिए हमने यह निर्णय कर दिया है कि वे वापस नहीं लौट सकेंगे । इसी प्रकार फ़रमाता है وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ[189] **(व मिन वराएहिम बरज़ख़ुन इला यौमे युबअसून)** अर्थात् जो लोग मर चुके हैं उनके पीछे एक रोक डाल दी गई है जो प्रलय के दिन तक जारी रहेगी । इस से पूर्व ये जीवित नहीं किए जाएँगे ।

ये लोग अहले हदीस कहलाते हैं, परन्तु इस हदीस को भूल जाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जब हज़रत जाबिर(रज़ि.) के पिता अब्दुल्लाह(रज़ि.) शहीद हुए तो अल्लाह तआला ने उन

से कहा कि माँगो जो कुछ माँगना है । इस पर उन्होंने कहा कि मेरी तो यही इच्छा है कि मुझे जीवित किया जाए और मैं फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ मिल कर जिहाद करूँ फिर तेरे मार्ग में शहीद हूँ और फ़िर जीवित किया जाऊँ और फिर शहीद हूँ । इस पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि मैंने अपने अस्तित्व की सौगन्ध न खाई होती तो मैं तुझे जीवित कर देता, परन्तु चूँकि मैंने प्रण कर लिया है कि मैं ऐसा नहीं करूँगा, इसलिए ऐसा नहीं करूँगा । [190]

ये लोग विचार नहीं करते कि जिस कार्य को इस संसार में अल्लाह तआला भी नहीं करता और जो उसके विशिष्ट गुणों में से है उसे मसीह अलैहिस्सलाम किस प्रकार कर सकते थे أُحْيِ الْمَوْتَىٰ[191] **(उहयिल मौता)** के क़ुर्आनी शब्दों से धोखा खाते हैं, परन्तु जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए ये शब्द प्रयोग होते हैं कि -

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ[192]

(या अय्योहल्लज़ीना आमनुस्तजीबू लिल्ललाहे व लिर्रसूले इज़ा दआकुम लिमा यूहयीकुम) हे मौमिनो ! अल्लाह और उसके रसूल की बात को स्वीकार कर लिया करो जब उन में से कोई तुम को बुलाए ताकि तुम्हें जीवित करे । तो उस समय उसका यह अर्थ करते हैं कि जीवन से अभिप्राय आध्यात्मिक जीवन है । जब इहया का अर्थ आध्यात्मिक जीवन प्रदान करने के भी होते हैं और जब कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई मुरदे जीवित नहीं कर सकता और जबकि इस संसार में मुरदे जीवित करके अल्लाह भी नहीं भेजता तो फिर इहया का वह अर्थ क्यों नहीं लेते जो ख़ुदा के कलाम के अनुसार हो और जिन से द्वैतवाद न उत्पन्न होता हो ।

इसी प्रकार ये एकेश्वरवादी कहलाने वाले लोग विश्वास रखते हैं कि हज़रत मसीह पक्षी उत्पन्न किया करते थे, हालाँकि क़ुर्आन करीम में पढ़ते हैं कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई व्यक्ति कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकता - وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ[193] **(वल्लज़ीना यदऊना मिन दूनिल्लाहे ला यख़लुक़ूना शैअन व हुम युख़लक़ून)**

जिन व्यक्तियों को लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं वे कुछ भी

उत्पन्न नहीं करते अपितु वे स्वयं उत्पन्न किए गए हैं । फिर फ़रमाता है -

اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰہِ شُرَکَآءَ خَلَقُوْا کَخَلْقِہٖ فَتَشَابَہَ الْخَلْقُ عَلَیْہِمْ قُلِ اللّٰہُ خَالِقُ کُلِّ شَیْءٍ وَّھُوَ الْوَاحِدُ الْقَھَّارُ [194]

(अम जअलू लिल्लाहे शुरकाआ ख़लक़ू कख़ल्क़िही फ़तशाबहल्ख़ल्क़ो अलैहिम – क़ुलिल्लाहो ख़ालिक़ो कुल्ले शैइन व हुवल वाहिदुल कह्हारो) क्या वे ख़ुदा के सिवा भागीदार नियुक्त करते हैं जिनकी विशेषता यह है कि उन्होंने भी अल्लाह की भाँति सृष्टि उत्पन्न की है और अब उन लोगों की दृष्टि में अल्लाह तआला की और उनकी सृष्टि संदिग्ध हो गई है । कह दे कि अल्लाह ही समस्त वस्तुओं का स्रष्टा है, वह एक है प्रत्येक वस्तु उसके अधिकार में है । इसी प्रकार फ़रमाता है -

اِنَّ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ لَنْ یَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَہٗ [195]

(इन्नल्लज़ीना तदऊना मिन दूनिल्लाहे लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबन व ल विजयतमऊ लहू) वे लोग कि जिन्हें तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो एक मक्खी को भी कदापि उत्पन्न नहीं कर सकते । यद्यपि सब के सब एकत्र हो जाएँ । मसीह अलैहिस्सलाम भी उन्हीं लोगों में से हैं जिन्हें लोग ख़ुदा के अलावा पुकारते हैं ।

अत: बावजूद इस के कि क़ुर्आन करीम में यह बात स्पष्ट तौर पर विद्यमान है कि अल्लाह के अतिरिक्त अन्य कोई कुछ उत्पन्न नहीं कर सकता और यदि कोई ऐसा करे तो वह सच्चा उपास्य है । اَخْلُقُ لَکُمْ مِنَ الطِّیْنِ کَھَیْئَۃِ الطَّیْرِ [196] **(अख़्लुको लकुम मिनत्तीने कहयअतित्तैरे)** के वह अर्थ करते हैं जो क़ुर्आन करीम की अटल शिक्षा के विपरीत है और नहीं सोचते कि एक शब्द कई-कई अर्थों में प्रयोग होता है । अत: वह अर्थ करें जो क़ुर्आन करीम की दूसरी आयतों के तथा एक बन्दे की शान के अनुकूल हों न कि वह अर्थ करें जो अटल आयतों और आदेशों के विरुद्ध और अल्लाह तआला की शान और प्रतिष्ठा के विपरीत हों तथा एकेश्वरवादी कहलाते हुए द्वैतवाद में ग्रस्त हों ।

ये वे भयंकर आस्थाएँ हैं जो इस समय मुसलमानों में चाहे विद्वान हो

या मूर्ख चाहे वह मतानुगामी हो या न हो और चाहे सुन्नी हो या शिया, फैले हुए हैं, और उनकी उपस्थिति में कोई व्यक्ति नहीं कह सकता कि मुसलमान لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه **(ला इलाहा इल्लल्लाह)** के विषय पर स्थापित हैं। निसन्देह इस समय भी **ला इलाहा इल्लल्लाह** मुसलमानों के मुख पर जारी है परन्तु उपर्युक्त आस्थाओं के कारण वे इसके अर्थ से इतनी ही दूर जा पड़े हैं जितनी कि अन्य द्वैतवादी जातियां । इस समस्त पथ-भ्रष्टता और गुमराही के संबंध में हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने आकर जो शिक्षा दी वह ऐसी एकेश्वरवादी तथा अल्लाह तआला का प्रताप और तेज स्थापित करने वाली है कि उसे स्वीकार करके मनुष्य का हृदय ख़ुदा के प्रेम से ओत-प्रोत हो जाता है तथा द्वैतवाद की अग्नि से मनुष्य बिल्कुल सुरक्षित हो जाता है और एकेश्वरवाद के उस स्थान को प्राप्त कर लेता है जिस पर आदरणीय सहाबा(रज़ि.) खड़े थे । आपने उन समस्त उपर्युक्त विचारों को सबूतों द्वारा ग़लत सिद्ध किया और बताया कि अल्लाह एक है उसके अतिरिक्त किसी मृतक से मनोकामनाएँ मांगना या क़ब्रों पर चढ़ावे चढ़ाना, या किसी को सज्दह करना चाहे जीवित हो या मृत या किसी को अल्लाह की क़ुदरत का स्वामी जानना या अन्तर्यामी समझना चाहे नबी हो या नबी न हो अथवा ख़ुदा के अतिरिक्त किसी के नाम पर जानवर की बलि देना या कोई अन्य वस्तु उसकी प्रशंसा की प्राप्ति हेतु दान करना या किसी के संबंध में यह विश्वास करना कि वह जो कुछ चाहे अल्लाह तआला से स्वीकार करा ले, द्वैतवाद है । इस से मोमिन को बचना चाहिए ।

इसी प्रकार आप ने यह सिद्ध किया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अन्य नबियों की भाँति मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं और पृथ्वी के नीचे दफ़्न हैं, वह आध्यात्मिक मुरदों को जीवित करते थे, और जिस प्रकार मनुष्य पैदा कर सकता है करते थे निर्जीव को जीवन देने की अथवा मुर्दे को जीवित करने की उन में शक्ति नहीं थी न ख़ुदा के आदेश के बिना, न ख़ुदा के आदेश से, क्योंकि अल्लाह तआला अपनी विशिष्ट विशेषताएँ किसी बन्दे को नहीं दिया करता और उस का कलाम उन विशेषताओं के मसीह या अन्य किसी व्यक्ति में पाए जाने के बिल्कुल विरुद्ध है और जितने लोग द्वैतवाद फैलाते हैं वे इसी प्रकार की बातें बनाया करते हैं कि

अल्लाह तआला ने अपनी शक्तियाँ अमुक व्यक्ति को दे दी हैं, यह कोई भी नहीं कहता कि उसका प्रस्तुत किया हुआ उपास्य ख़ुदा तआला से स्वतंत्र होकर संसार पर शासन करता है । इस क़ुर्आन और बुद्धि के अनुकूल शिक्षा से आपने द्वैतवाद के अन्धकार को दूर किया और मुसलमानों को वह सद्मार्ग दिखाया जिसे एक समय से त्याग चुके थे तथा इस प्रकार वह कार्य सम्पन्न किया जो मसीह के द्वितीय आगमन के लिए नियुक्त था ।

अल्लाह पर ईमान लाने के पश्चात इस्लाम का दूसरा स्तम्भ फ़रिश्तों पर ईमान लाना है । इस स्तम्भ को भी मुसलमानों ने बिल्कुल विकृत कर दिया था । कुछ लोग यह आस्था रखते थे कि फ़रिश्ते 'हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं' पाप भी कर लेते हैं, और अल्लाह तआला पर भी ऐतिराज़ करने लग जाते हैं । आदम की घटना में फ़रिश्तों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि जैसे वे अल्लाह के समक्ष खड़े होकर उसकी नीतियों पर ऐतिराज़ करते हैं । हालाँकि वे [197] نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ **(नहनो नुसब्बिहो बिहम्मिदका व नुक़द्दिसो लका)** कह कर इस बात पर बल देते हैं कि हम अल्लाह तआला के कार्यों पर आलोचना कर ही नहीं सकते । हारूत और मारूत का वृत्तान्त ऐसा हृदय-विदारक है कि सुनकर आश्चर्य होता है । कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने दो फ़रिश्ते संसार में मनुष्यों के भेष में भेजे और वे एक वैश्या पर मुग्ध हो गए और दण्डस्वरूप एक कुएँ में औंधे मुँह लटकाए गए ''हम ऐसी बात पर ख़ुदा की शरण चाहते हैं ।'' इसी प्रकार कहा जाता है कि ''नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका'' शैतान फ़रिश्तों का शिक्षक था ।

कुछ लोग फ़रिश्तों के सन्दर्भ में यह आस्था रखने लगे हैं कि जैसे वे भी भौतिक अस्तित्व हैं, लोगों की भाँति इधर-उधर दौड़े-दौड़े फिरते हैं । इज़राईल कभी उस के प्राण निकालने जाते हैं, कभी उसके । इस के विपरीत कुछ लोग फ़रिश्तों के अस्तित्व के ही इन्कारी हो गए हैं तथा फ़रिश्तों को एक काल्पनिक अस्तित्व ठहराते हैं तथा क़ुर्आन करीम की आयतों की यह व्याख्या करते हैं कि शक्तियों और ताक़तों का नाम फ़रिश्ते रखा गया और यहाँ तक साहस कर बैठे कि घोषणात्मक रूप में क़ुर्आन करीम और हदीसों की शिक्षा के विरुद्ध कहते हैं कि ज़ जिबरील

अमीन क़ुर्आं ब पैग़ामे नमी ख़्वाहम' ।

अनुवाद :- मैं जिबरील अमीन से क़ुर्आन चाहता हूँ और कोई संदेश नहीं चाहता । (अनुवादक)

अपितु फ़रिश्तों के अस्तित्व पर ऐतिराज़ करते हैं तथा उन्हें अल्लाह तआला की क़ुदरत के विरुद्ध समझते हैं ।

हज़रत अक़दस(अ) ने आकर इन इस्लाम के विरुद्ध आस्थाओं का भी खण्डन किया है तथा उचित आस्थाओं का प्रसार किया है, फ़रिश्तों के अस्तित्व से आरोपों को दूर किया है । आप(अ) ने सबूतों द्वारा सिद्ध किया है कि ख़ुदा के फ़रिश्ते अल्लाह तआला पर आरोप नहीं किया करते और न वे पापों में ग्रस्त होते हैं । उनके सन्दर्भ में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि - لَا يَعۡصُوۡنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمۡ وَيَفۡعَلُوۡنَ مَا يُؤۡمَرُوۡنَ[198] **(ला या'सूनल्लाहा मा अमरहुम व यफ़्अलूना मा योमरून)** फरिश्ते अल्लाहा तआला के आदेशों की अवज्ञा नहीं करते तथा उनको जिन बातों का आदेश दिया जाता है उन का वे पालन करते हैं । अत: ऐसी मख़लूक जिसे अल्लाह तआला ने उत्पन्न ही उन शक्तियों के साथ किया है तो अनुसरण और आज्ञाकारिता की शक्तियाँ हैं बुराइयों में किस प्रकार ग्रस्त हो सकती है तथा वैश्याओं के प्रेम में आसक्त हो सकती हैं तथा अल्लाह तआला को भुलाकर ख़ुदा के प्रकोप में कैसे फंस सकती है । यदि फ़रिश्ते पापों में ग्रस्त हो सकते हैं तो उन पर ईमान लाने का आदेश क्यों दिया जाता है, क्योंकि ईमान लाने का तो अर्थ ही यह होते हैं कि जिस पर ईमान लाया जाए उसकी बातों को माना जाए । जो लोग अवज्ञाकारी हो सकते हैं उन पर ईमान लाने का आदेश देना जैसे स्वयं को मिटाने का आदेश देना है ।

इसी प्रकार आपने बताया कि फ़रिश्ते आध्यात्मिक अस्तित्व हैं, वे इधर-उधर दौड़े-दौड़े नहीं फिरते अपितु जिस प्रकार सूर्य अपने स्थान से प्रकाश देता है वे भी अपने स्थान से अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करते हैं तथा उन शक्तियों की सहायता से जो उनकी आज्ञाकारिता में संलग्न हैं सब कार्य करते हैं ।

आप(अ) ने इस विचारधारा का भी खण्डन किया है कि इब्लीस (शैतान) फ़रिश्तों का शिक्षक या यह कि फ़रिश्तों के साथ रहने वाला अस्तित्व था, वह तो एक दुष्टात्मा थी । अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ[199] **(व काना मिनलकाफ़िरीन)** उसका हृदय पहले ही अल्लाह तआला का इन्कारी था ।

आप(अ) ने इस वैचारिक दोष को भी दूर किया कि फ़रिश्ते काल्पनिक अस्तित्व हैं या शक्तियों को कहते हैं । आप(अ) ने अपने अनुभव और अवलोकन के आधार पर फ़रिश्तों का अस्तित्व सिद्ध किया तथा उन लोगों की मूर्खता को प्रकट किया जो इस बात को तो स्वीकार करते हैं कि प्रत्यक्ष आँखों की सहायता के लिए अल्लाह तआला ने सूर्य को उत्पन्न किया और आवाज़ पहुँचाने के लिए वायु को बनाया तथा इस से उसके शक्तिशाली होने पर कोई दोष नहीं आया परन्तु कहते हैं कि आध्यात्मिक मामलों को पूर्ण करने के लिए उसने यदि कोई माध्यम उत्पन्न किए हैं तो उस से उसकी क़ुदरत पर दोष आता है और स्वयं उनकी आस्था से उनको अपराधी ठहराया तथा उनके इक़रार से उनको पकड़ा और बताया कि अल्लाह तआला का माध्यमों को उत्पन्न करना इसलिए नहीं कि वह अपने आदेशों को बन्दे तक पहुँचा नहीं सकता अपितु इसलिए है कि बन्दा अल्लाह का कलाम सुनने के लिए माध्यमों का मुहताज है और इसलिए कि ये माध्यम बन्दे की उन्नति में सहायक और सहयोगी होते हैं । अत: आप ने ईमान के दूसरे स्तम्भ के संबंध में मुसलमानों में जो ख़राबियाँ उत्पन्न हो गई थीं उनका भली-भाँति निवारण किया तथा फ़रिश्तों के अस्तित्व को इस रूप में प्रकट किया जिस रूप में कि अल्लाह तआला और उसके रसूल ने उनको प्रस्तुत किया था ।

ईमान का तीसरा स्तम्भ आकाशीय किताबें हैं उनके सम्बन्ध में भी मुसलमानों के ईमान बिल्कुल डगमगा चुके थे तथा मुसलमानों में आकाशीय किताबों के संबंध में अत्यंत विचित्र विचार विशेषकर क़ुर्आन करीम के संबंध में उत्पन्न हो गए थे और वास्तव में इस्लाम में ईमान की दृष्टि से क़ुर्आन करीम ही मूल है क्योंकि दूसरी किताबों पर ईमान लाना तो सैद्धान्तिक तौर पर है, अन्यथा वे न विद्यमान हैं और न उन पर उनके वर्तमान रूप में पालन करने का आदेश है ।

क़ुर्आन करीम के संबंध में मुसलमानों की जो आस्थाएँ हैं उनको देख कर मुझे अत्यन्त आश्चर्य होता है, परन्तु मैं जानता हूँ कि यह आश्चर्य मुझे केवल इस कारण है कि मैंने मसीह मौऊद पर ईमान लाकर उससे

मूल वास्तविकता को ज्ञात कर लिया है अन्यथा मैं भी अन्य लोगों की भाँति क़ुर्आन करीम के संबंध में किसी न किसी गलती को करता । कुछ लोग सोचते हैं कि क़ुर्आन करीम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात् साथ ही व्यवहारिक तौर पर संसार से उठाया गया तथा उसका एक अधिकांश भाग ''इस बात से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं'' । संसार से लुप्त हो गया है, कुछ के निकट जो वर्तमान क़ुर्आन है उसमें भी मानवीय हस्तक्षेपों का प्रभाव विद्यमान है, कुछ लोग इस प्रकार के विचारों का तो बड़ी दृढ़ता से खण्डन करते हैं तथा उनको कुफ्र ठहराते हैं, परन्तु स्वयं इस प्रकार की अन्य भयंकर आस्थाएँ प्रस्तुत करते हैं । उदाहरणतया यह कहते हैं कि क़ुर्आन करीम का कुछ भाग निरस्त किया हुआ है तथा निरस्त ठहराने का माध्यम उन्होंने यह बताया है कि जो आयत अन्य आयत के विरुद्ध मालूम हो वह निरस्त है । परिणाम यह हुआ कि किसी को कुछ अन्य आयतों में भिन्नता दिखाई दी और किसी को कुछ और में। उसने उनको निरस्त है । परिणाम यह हुआ कि किसी को कुछ अन्य आयतों में भिन्नता दिखाई दी और किसी को कुछ और मैं । उसके उनको निरस्त ठहरा दिया और उस ने उनको । इस प्रकार क़ुर्आन करीम का एक बहुत बड़ा भाग निरस्त होकर व्यवहार-योग्य नहीं रहा । नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका ।

इस ढंग से यही हानि नहीं हुई कि क़ुर्आन करीम के कुछ भाग निरस्त ठहरा दिए गए अपितु उसका एक भयंकर प्रभाव यह हुआ कि तबियतों में यह आशंका उत्पन्न हो गयी है कि जबकि उस के अन्दर कुछ भाग निरस्त हैं और कुछ निरस्त नहीं है । अल्लाह तआला और उसके रसूल ने यह नहीं बताया कि कौन सा भाग निरस्त है और कौन सा भाग निरस्त नहीं तो उस किताब की विश्वसनीयता ही क्या रही । प्रत्येक व्यक्ति को जो भाग पसन्द आया उसने उसे मूल ठहरा दिया और दूसरे को निरस्त ठहरा दिया ।

दूसरी भयंकर आस्था ख़ुदाई किताबों के संबंध में और विशेषकर क़ुर्आन करीम के संबंध में यह उत्पन्न हो गई है कि यह कलाम भी शैतान के हस्तक्षेप से पवित्र नहीं और कहा जाता है कि प्राय: शैतान ख़ुदा के इल्हाम में हस्तक्षेप करता है और आयत -

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رَّسُوۡلٍ وَّلَا نَبِىٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلۡقَى الشَّيۡطٰنُ فِىۡۤ اُمۡنِيَّتِهٖ[200]

(वमा अरसल्ना मिन क़ब्लिका मिन रसूलिन व ला नबिय्यिन इल्ला इज़ा तमन्ना अल्क़श्शैतानो फ़ी उमनिय्यतिही) से यह परिणाम निकाला जाता है कि प्रत्येक नबी के कलाम को सुनते समय शैतान ने हस्तक्षेप किया है और उस में ऐसे भाग मिला दिए हैं जो शैतान की ओर से थे, ख़ुदा तआला की ओर से न थे और सामान्य नियम के वर्णन करने पर ही संतोष नहीं किया गया अपितु यह भी कहा जाता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक बार सूरह नज्म पढ़ रहे थे, जब इन आयतों पर पहुँचे कि - اَفَرَءَيۡتُمُ اللّٰتَ وَالۡعُزّٰى ۙ وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الۡاُخۡرٰى[201] **(अफ़रअयतुमुल्लाता वल्उज़्ज़ा व मनातस्सालिसतल उख़्रा)** तो आप की जीभ पर शैतान ने (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) ये वाक्य जारी कर दिए تِلۡكَ الۡغَرَانِيۡقُ الۡعُلٰى وَاِنَّ شَفَاعَتَهُنَّ لَتُرۡتَجٰى[202] **(तिल्कलग़रानीक़ुल उला व इन्ना शफ़ाअताहुन्ना लतुरतजा)** अर्थात् ये मूर्तियाँ जो लम्बी गरदनों वाली सुन्दर स्त्रियों के समान हैं इन से सिफ़ारिश की आशा की जाती है । जब ये शब्द आपके मुख से काफ़िरों ने सुने तो उन्होंने भी सज्दह कर दिया । बाद में आपको ज्ञात हुआ कि ये शब्द शैतान ने आप की जीभ पर जारी कर दिए थे तो आप (स.अ.व.) को अत्यन्त खेद हुआ (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका)

कुछ लोगों ने इस कहानी को यदि घटना के नितान्त विरुद्ध और असहनीय समझा है तो यह कह दिया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीभ पर शैतान ने ये वाक्य जारी नहीं किए थे अपितु आप की सी आवाज़ बना कर इस प्रकार यह वाक्य कह दिए थे कि यही समझ में आता था कि जैसे आप ने ये वाक्य पढ़े हैं । इस बात को उचित समझने से क़ुर्आन करीम के संबंध में जो अविश्वसनीयता उत्पन्न होती है उसे यों दूर किया जाता है कि अल्लाह तआला ने बता दिया है कि -

فَيَنۡسَخُ اللّٰهُ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ ثُمَّ يُحۡكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ[203]

(फ़यन्सख़ुल्लाहो मा युल्क़िश्शैतानो सुम्मा युहकिमुल्लाहो आयातिही – वल्लाहो अलीमुन हकीम) अर्थात् ''फिर अल्लाह तआला शैतान की मिलावट को तो मिटा देता है और अपनी आयतों को स्थापित कर देता है तथा ख़ुदा जानने वाला और नीतिवान है, परन्तु इस उत्तर से किसी की संतुष्टि कब हो सकती है क्योंकि यदि शैतान भी 'नाऊज़ुबिल्लाह' ख़ुदा के कलाम में हस्तक्षेप कर सकता है तो इस का क्या प्रमाण है कि यह आयत भी शैतानी नहीं है और शैतान ने अपनी मिलावट की ओर से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को संतुष्ट करने के लिए यह नहीं कह दिया है कि शैतान की ओर से जो कलाम हो वह मिटा दिया जाता है ताकि जो न मिटा दिया जाए उसे ख़ुदा का कलाम समझ लिया जाए ।

कुछ लोगों ने क़ुर्आन करीम को ऐसा महत्वहीन कर दिया है उसके अत्यन्त स्पष्ट आदेशों को कमज़ोर अपितु बनावटी हदीसों के अधीन कर दिया है तथा सुन्नत के अनुसरण से प्रतापवान ख़ुदा के कलाम को कुछ स्वार्थी और दुष्ट प्रकृति रखने वाले लोगों के विचारों के अधीन कर दिया जाए । क़ुर्आन करीम चाहे चिल्ला-चिल्ला कर किसी को खण्डित करे परन्तु यदि कमज़ोर से कमज़ोर हदीस में भी इस की चर्चा है तो वे इसको ख़ुदा की वह्यी पर प्रमुखता देंगे और यदि क़ुर्आन करीम किसी बात को वर्णन करता हो परन्तु हदीस में उसका खण्डन हो तो क़ुर्आन करीम को पीछे डाल देंगे और हदीस के वर्णन को उचित समझ लेंगे ।

कुछ लोगों ने ख़ुदा के कलाम से यह व्यवहार किया है कि वह उसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का विचार ठहराते हैं तथा उसके ख़ुदा का कलाम होने के इन्कारी हैं । वे मुख से तो यही कहते हैं कि यह अल्लाह का कलाम है, परन्तु साथ ही उसकी व्याख्या यह करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के स्वच्छ हृदय में जो विचार उत्पन्न होते थे वे अल्लाह तआला के समर्थन से ही होते थे इसलिए उसे अल्लाह तआला का ही कलाम कहना चाहिए अन्यथा शब्द (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तैयार किए हुए हैं क्योंकि (उनके निकट) ख़ुदा का कलाम शब्दों में जो अपने अदा होने के लिए होंठ और जीभ चाहते हैं उतर नहीं सकता ।

कुछ ने ख़ुदा के कलाम से यह व्यवहार किया है कि निर्णय कर दिया है कि इसका अनुवाद ही नहीं किया जा सकता । जैसे जन साधारण तक इसे पहुँचाने का जो माध्यम था उसे बन्द करके मुसलमानों को ख़ुदा के कलाम का अर्थ समझने से रोक दिया है । इस प्रकार अधर्म के प्रसार के उत्तरदायी हो गए हैं ।

कुछ ने ख़ुदा के कलाम से यह व्यवहार किया है कि वे कहते हैं कि क़ुर्आन करीम एक संक्षिप्त किताब है । इसमें सांकेतिक तौर पर कुछ आवश्यक बातें तो बता दी गई हैं, परन्तु कोई विषय (मामला) इससे सिद्ध नहीं हो सकता ।

कुछ ने ख़ुदा के कलाम के साथ यह व्यवहार किया है कि वे कहते हैं कि सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम अपनी वर्णन शैली में आगे-पीछे के क्रम दोष से भरा पड़ा है जब तक उसे दृष्टिगत न रखें तब तक इसकी बात समझ में नहीं आ सकती ।

कुछ ने अल्लाह तआला के कलाम के साथ यह व्यवहार किया कि समस्त संसार के किस्से और कहानियाँ जिन्हें सद्बुद्धि खंडित करती है और स्वभाव उन से घृणा करता है एकत्र करके क़ुर्आन से सम्बन्द्ध कर दी हैं । विषय मिले या न मिले अपितु चाहे क़ुर्आन करीम के शब्द उनके विरुद्ध हों वे इस्राईली किस्सों के अन्तर्गत उसके विषय को ले आते हैं और उन किस्सों को ख़ुदा के कलाम की व्याख्या बताते हैं तथा उन को पूर्वकालीन बुज़ुर्गों और ख़ुदा के वलियों की ओर भी सम्बद्ध करने से नहीं झिझकते ।

कुछ ने ख़ुदा के कलाम से यह व्यवहार किया है कि उसके सम्पर्क और क्रम के भी इन्कारी हो गए हैं । जैसे कि उनके निकट जिस प्रकार कोई व्यक्ति बेहोशी की अवस्था में इधर-उधर की बातें करता है, इसी प्रकार क़ुर्आन करीम में बिना किसी क्रम के विभिन्न घटनाओं का वर्णन कर दिया गया है । कोई विशेष क्रम और विषय दृष्टिगत नहीं ।

कुछ ने अपितु उस समय के समस्त मुसलमानों ने ख़ुदा के कलाम के संबंध में एक और अन्याय किया है कि कह दिया है कि पहले संसार पर ख़ुदा का कलाम उतरता था, परन्तु अब नहीं उतरता, जैसे अब अल्लाह तआला की एक विशेषता स्थगित हो गई है । वह देखता है, सुनता है परन्तु बोलता नहीं (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) ।

अत: प्रत्येक व्यक्ति से जितना हो सका उसने पवित्र कलाम (क़ुर्आन) के टुकड़े-टुकड़े करने का प्रयास किया है तथा उसकी सुन्दरता को लोगों की दृष्टि से गुप्त रखना चाहा है । इन समस्त प्रयासों का नाम क़ुर्आन की सेवा रखा है । हालाँकि इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ है कि संसार क़ुर्आन करीम से घृणा करने लगा है तथा उसका प्रभाव हृदयों से उठ गया है ।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने हे बादशाह ! इन समस्त दोषों को आकर दूर किया और सबूतों द्वारा सिद्ध किया है कि क़ुर्आन करीम ख़ुदा तआला की अन्तिम हिदायत (पथ-प्रदर्शन) का दस्तावेज़ है । वह निरस्तता से सुरक्षित है । उसके अन्दर जो कुछ विद्यमान है मुसलमानों के लिए अनुसरणीय है । उसका कोई भाग नहीं जो दूसरे भाग के विरुद्ध हो तथा निरस्त करने योग्य समझा जाए । जो उस में भिन्नता देखता है वह स्वयं मूर्ख और अपनी अयोग्यता को क़ुर्आन से सम्बद्ध करता है, उसके अन्दर कोई परिवर्तन नहीं हुआ । उसका एक-एक शब्द और एक-एक अक्षर उसी प्रकार है जिस प्रकार कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर उतरा था । केवल यही नहीं अपितु उस के अन्दर कोई परिवर्तन किया ही नहीं जा सकता । न उसके कुछ विषयों को परिवर्तित करके और न उसके अन्दर कोई नवीन इबारत बढ़ा कर और न उस का कोई भाग कम करके । अल्लाह तआला स्वयं उसका रक्षक है । उसने उसकी सुरक्षा के लिए ऐसा प्रबंध कर दिया है । कुछ आध्यात्मिक और कुछ भौतिक कि मानव हस्तक्षेप उस पर कुछ प्रभाव कर ही नहीं सकता। अत: इसमें कोई निरस्तता स्वीकार करना भी ग़लत है, तथा इसमें कोई परिवर्तन स्वीकार करना भी चाहे वह कैसा ही तुच्छ है आरोप है । वह सुरक्षित है और सुरक्षित रहेगा ।

यह कहना कि उसका कोई भाग संसार से उठाया गया है अल्लाह तआला पर आरोप लगाना है तथा उसका अर्थ यह है कि वह पूर्ण किताब जो उसने संसार के पथ-प्रदर्शन हेतु भेजी थी वह एक दिन भी उस कार्य को न कर सकी जिसके लिए वह उतारी गई थी और उस के अन्दर परिवर्तन स्वीकार करने का अर्थ यह है कि वह सदा के लिए अविश्वसनीय हो गई है, परन्तु यदि ऐसा होता तो यह भी आवश्यक था कि कोई नबी

और कोई नई शरीअत संसार के पथ-प्रदर्शन हेतु भेजी जाती ताकि संसार शरीअत के बिना न रह जाता ।

इसी प्रकार आप ने सिद्ध किया कि क़ुर्आन करीम अपितु ख़ुदा का प्रत्येक कलाम शैतानी हस्तक्षेप से पवित्र है । यह कदापि संभव नहीं कि शैतान ख़ुदा के कलाम में कुछ हस्तक्षेप कर सके चाहे नबी की जीभ पर हस्तक्षेप करके चाहे नबी की आवाज़ बना कर अपनी जीभ के द्वारा । आप(अ) ने अपने अनुभव से बताया जब मुझ पर जो एक दास हूँ उतरने वाला कलाम प्रत्येक शंका और सन्देह से पवित्र है तो किस प्रकार संभव है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो मेरे स्वामी हैं उतरने वाला कलाम और वह भी क़ुर्आन करीम जो सदा के लिए हिदायत बनने वाला था शैतानी प्रभाव को स्वीकार कर ले, चाहे एक पल के लिए ही सही ।

आप(अ) ने मुसलमानों को बताया कि क़ुर्आन करीम विश्वसनीय कलाम है उसकी सुरक्षा का आश्वासन ख़ुदा तआला ने दिया है तथा उस आश्वासन का निभाना उसने इस रूप में किया है कि शत्रु भी उसकी सुरक्षा को मानते हैं । अतः उसके मुकाबले में हदीस को रखना उसका अपमान करना और जान-बूझ कर उस का खण्डन करना है । जो हदीस क़ुर्आन करीम का विरोध करती है वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस कदापि नहीं हो सकती, क्योंकि अल्लाह का रसूल अल्लाह के कलाम के विरुद्ध नहीं कह सकता और हदीसों का लेखन ऐसा सुरक्षित नहीं है जैसा कि क़ुर्आन करीम सुरक्षित है । अतः क़ुर्आन करीम को बलपूर्वक हदीस के अधीन नहीं करना चाहिए अपितु हदीस को क़ुर्आन करीम के अधीन करना चाहिए । यदि दोनों अनुकूल न हो सकें तो हदीस को जो संभव है कि किसी मनुष्य के जान-बूझकर अथवा बिना सोचे-समझे हस्तक्षेप से बिगड़ चुकी हो त्याग देना चाहिए ।

आप(अ) ने उन लोगों के उत्तर में जो यह कहते हैं कि समस्त धर्म तो हमें हदीस से ज्ञात हुआ है, बताया कि हदीस और क़ुर्आन के अतिरिक्त तीसरा माध्यम सुन्नत है अर्थात वे कार्य जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने करके दिखाए तथा जो सहाबा(रज़ि.) ने बिना किसी माध्यम के सीधे तौर पर देखकर आप से सीखे तथा उनके

अनुसार उनका पालन किया उनके लिए हमें किसी मौखिक हदीस की आवश्यकता नहीं । सहस्त्रों, लाखों मुसलमानों ने सहस्त्रों, लाखों मुसलमानों को वे कार्य करते हुए देखा तथा उन से उनके पश्चात आने वालों ने सीखा । यह सुन्नत कभी क़ुर्आन करीम के विपरीत नहीं होती । हाँ हदीस जो मौखिक वर्णन है वह कभी क़ुर्आन के विपरीत भी हो जाती है तथा उसमें सन्देह की गुंजायश होती है । जब वह क़ुर्आन करीम के विपरीत हो तो वह खंडन-योग्य है और जब उसके अनुकूल हो तो स्वीकार योग्य, क्योंकि ऐतिहासिक साक्ष्य है और ऐतिहासिक साक्ष्य का अकारण खण्डन नहीं किया जा सकता है अन्यथा अधिकांश साक्ष्य संसार से मिट जाएँ ।

आपने इस विचार की निरर्थकता को भी प्रकट किया कि क़ुर्आन करीम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शब्द हैं और बताया कि क़ुर्आन करीम का एक-एक शब्द ख़ुदा का कलाम है । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो केवल वह्यी को सुनाने वाले थे न कि उसके बनाने वाले । यह भ्रम उचित नहीं कि कलाम होंठ और जीभ चाहता है और अल्लाह के होंठ और जीभ नहीं क्योंकि यह ऐसी असंभव कल्पना है कि एक ऐसी वस्तु का दूसरी वस्तु के समान ठहराना जो अपने गुण और सदृशता में बिल्कुल प्रतिकूल है । अल्लाह तआला तो لَيۡسَ كَمِثۡلِهٖ شَيۡءٌ[204] **(लैसा कमिस्लही शैउन)** है । उस पर मानव शक्तियों की कल्पना करके निर्णय नहीं दिया जा सकता । यदि कलाम बिना होंठ के नहीं हो सकता तो इसी प्रकार कोई वस्तु बिना हाथों के नहीं बनाई जा सकती अपितु भौतिक हाथों के बिना नहीं बनाई जा सकती तो क्या अल्लाह स्रष्टा भी नहीं है । अतः जिस प्रकार अल्लाह तआला बिना भौतिक हाथों के इस समस्त सृष्टि को उत्पन्न कर सकता है उसी प्रकार बिना भौतिक होंठों और जीभ के वह अपनी इच्छा को अपने बन्दे पर शब्दों में प्रकट कर सकता है। आपने अपने अनुभव को प्रस्तुत किया और बताया कि यह भ्रम केवल इस कूचे से अनभिज्ञता के कारण है अन्यथा अल्लाह तआला स्वयं मुझ से शब्दों में कलाम करता है । अतः जबकि वह मुझ से शब्दों में कलाम करता है तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जो आदम की समस्त सन्तान के सरदार और अल्लाह तआला

के सबसे अधिक सानिध्यता रखने वाले थे क्या वह शब्दों में कलाम न करता होगा । उस से अधिक मूर्ख और कौन होगा जो मूर्ख होकर इस बहस में हस्तक्षेप करे जो उस के ज्ञान से श्रेष्ठ हो और अज्ञानी होकर अल्लाह तआला के रहस्यों को अपनी बुद्धि से ज्ञात करने का प्रयास करे ।

आप(अ) ने इस विचार का भी खण्डन किया कि अल्लाह के कलाम का अनुवाद नहीं हो सकता और बताया कि जब तक लोगों को क़ुर्आन करीम का अर्थ न पहुँचाया जाए वे उसकी विशेषताओं से कैसे परिचित होंगे ? निसन्देह केवल अनुवाद का प्रचार एक अपराध है क्योंकि इससे लोगों की मूल इबारत से दूरी होती जाएगी और संभव है कि अनुवाद से अनुवाद करके एक समय वे मूल वास्तविकता को त्याग दें, परन्तु उन लोगों के लिए जो अरबी भाषा नहीं जानते, क़ुर्आन करीम का अनुवाद यदि मूल इबारत के साथ हो तो नितान्त अनिवार्य बात है । हाँ यह आवश्यक है कि लोगों में अरबी भाषा को इतना प्रचलित किया जाए कि लोग क़ुर्आन करीम को उसकी मूल भाषा में पढ़ कर वे बरकतें प्राप्त कर सकें जो कि अनुवाद से प्राप्त नहीं हो सकतीं तथा कम से कम प्रत्येक व्यक्ति को क़ुर्आन करीम का इतना भाग अवश्य सिखा दिया जाए जो उसे नमाज़ में पढ़ना पड़ता है ।

आप(अ) ने इस विचार को भी कि क़ुर्आन करीम एक संक्षिप्त किताब है इसमें कुछ बातें सांकेतिक तौर पर वर्णन की गई हैं अत्यन्त स्पष्ट तर्कों द्वारा खण्डन करके बताया कि क़ुर्आन करीम जैसी सर्व पक्षीय सारगर्भित किताब तो संसार में नहीं मिल सकती । यह तुम लोगों का अपना दोष था कि इस पर विचार करना तुम ने त्याग दिया और उस पवित्रता को प्राप्त न किया जिस के बिना इस के अर्थों का इल्क़ा (ख़ुदा की ओर किसी बात का हृदय में डाला जाना) मनुष्य के हृदय पर नहीं होता क्योंकि لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ[205] **(ला यमस्सुहू इल्लल मुतहहरूना)** का प्रवचन है । अतः अपनी अपूर्ण बुद्धि को क़ुर्आन करीम की ओर सम्बद्ध न करो । फिर आपने समस्त धार्मिक विषयों को क़ुर्आन करीम से ही निकालकर प्रस्तुत किया तथा इस्लाम के शत्रुओं के प्रत्येक आरोप का क़ुर्आन करीम से ही खण्डन करके दिखा दिया और सिद्ध कर दिया कि आध्यात्मिक, धार्मिक और नैतिक ज्ञानों के संबंध में क़ुर्आन करीम से

अधिक स्पष्ट और विस्तृत अन्य कोई किताब नहीं । इसके शब्द संक्षिप्त हैं, परन्तु अर्थ एक अथाह समुद्र की भाँति हैं कि एक-एक वाक्य बीसियों अपितु सैकड़ों अर्थ रखता है और उसके विषय प्रत्येक युग के प्रश्नों और सन्देहों का समाधान करते हैं और प्रत्येक युग की आवश्यकताओं को वह पूर्ण करता है ।

आप[अ] ने इस विचार का भी खण्डन किया कि क़ुर्आन करीम पहले को पीछे और पीछे को पहले करना से भरा हुआ है और बताया कि क़ुर्आन करीम के शब्द अपने-अपने स्थान पर इस प्रकार सुसंगठित हैं कि उन्हें उनके स्थान से कदापि हिलाया नहीं जा सकता । लोग अपनी मूर्खता से इसमें पहले को पीछे और पीछे को पहले करना समझ लेते हैं अन्यथा उसमें जो कुछ जिस स्थान पर रखा गया है वही वहाँ उचित बैठता है तथा उसे उसी स्थान पर रखने से वह विशेषता उत्पन्न होती है जो ख़ुदा तआला उत्पन्न करना चाहता है । आपने क़ुर्आन करीम के विभिन्न स्थानों की व्याख्या करके इस विषय के औचित्य को सिद्ध किया तथा उन लोगों के भ्रमों का खण्डन किया जो अपनी अयोग्यता के कारण पहले को पीछे और पीछे को पहले करना के चक्र में पड़े हुए थे ।

आपने इस बात पर भी समीक्षा की कि ख़ुदा तआला के कलाम में इस्राईली क़िस्सों को भर दिया गया है और बताया कि मात्र कुछ घटनाओं में समानता का उत्पन्न होना यह सिद्ध नहीं करता कि वास्तव में ये दोनों बातें एक हैं । क़ुर्आन करीम यदि कुछ घटनाओं का भिन्न-भिन्न शब्दों में वर्णन करता है तो उसका अर्थ यही है कि वह उन घटनाओं को इस रूप में स्वीकार नहीं करता जिस रूप में कहानीकार उन्हें वर्णन करते हैं। यह भी बताया कि वास्तव में क़ुर्आन करीम अफ़सानों (कहानियों) की किताब है ही नहीं । वह जो पूर्वकालीन घटनाएँ भी वर्णन करता है वे भविष्यव की भविष्यवाणियाँ होती हैं । उनके वर्णन करने का उद्देश्य यह होता है कि इसी प्रकार का मामला भविष्य में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम या आप (स.अ.व.) की उम्मत के कुछ सदस्यों से होने वाला है । अत: उसकी व्याख्या में यहूदियों के क़िस्सों और कहानियों का वर्णन करना उसके उद्देश्य को समाप्त कर देना है । क़ुर्आन करीम पूर्वकालीन किताबों पर बतौर साक्षी के आया है न कि पूर्वकालीन किताबें उस पर बतौर

साक्षी के हैं कि उसके बताए हुए विषय के विरुद्ध हम उन किताबों से साक्ष्य माँगें । हमें चाहिए कि स्वयं क़ुर्आन करीम से उसकी व्याख्या करें और उसके अर्थ को बाहर से तलाश करने के स्थान पर उसके अन्दर ढूँढें ।

आप ने यह भी सिद्ध किया कि क़ुर्आन करीम एक संपादित और श्रृंखलाबद्ध किताब है । इसके विषय यों ही भरे हुए नहीं हैं, अपितु بِسۡمِ اللّٰہِ **(बिस्मिल्लाह)** के आरंभ से लेकर وَالنَّاس **(वन्नास)** तक उसकी आयतों और उसकी सूरतों में एक क्रम है जो ऐसा श्रेष्ठ और स्वाभाविक है कि जिस व्यक्ति को उसका ज्ञान दिया जाता है वह उसके प्रभाव से मस्ती और आनद में आ जाता है तथा इसकी तुलना में किसी मानवीय किताब के क्रम में आनंद प्राप्त नहीं कर सकता । जिन लोगों ने क़ुर्आन करीम के विषयों को क्रमरहित ठहराया है या विभिन्न घटनाओं और विषयों का समूह समझा है, उन्होंने वास्तव में इस अनुपम किताब के आध्यात्म ज्ञान से कोई भाग नहीं पाया तथा अपनी मूर्खता पर गर्व करने लगे तथा अपने अल्पज्ञान पर भरोसा कर बैठे हैं । उनका विचार बिल्कुल ग़लत और मिथ्या है । आप[अ] ने क़ुर्आन के विषयों के क्रम को उदाहरणों द्वारा सिद्ध किया तथा संसार को आश्चर्य में डाल दिया ।

आप[अ] ने अपने अनुभव और अवलोकन और सबूतों द्वारा इस विचार का भी खण्डन किया कि अब अल्लाह तआला कलाम नहीं करता और बताया कि अल्लाह तआला की कोई विशेषता स्थगित नहीं जबकि वह पहले की भाँति अब भी देखता और सुनता है तो क्या कारण है कि वह अब बोलने से रुक गया है । शरीअत और वस्तु है तथा केवल वह्यी तो उसकी प्रसन्नता के प्रकटन का एक माध्यम है उसके बन्द होने का अर्थ यह है कि उसकी प्रसन्नता के मार्ग बन्द हो गए । ख़ुदा का कलाम कभी बन्द नहीं हो सकता संसार में जब तक मनुष्य विद्यमान है और जब तक मनुष्यों में से कुछ मनुष्य अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति हेतु सच्चे हृदय से प्रयासरत हैं और इस्लामी शिक्षा पर कार्यरत हैं उस समय तक ख़ुदा तआला का कलाम उतरता रहेगा ।

अत: आकाशीय किताबों और ख़ुदा तआला के कलाम के संबंध में जितनी भ्रांन्तियाँ लोगों में फैली हुई थीं और जिन के कारण ईमान का यह

स्तम्भ बिल्कुल ध्वस्त हो चुका था आप(अ) ने उन का निवारण किया तथा उस स्तम्भ को पुनः मूल आधारों पर स्थापित किया तथा ख़ुदा के कलाम की मूल श्रेष्ठता और वास्तविकता को सिद्ध करके स्वभावों को इसकी ओर आकर्षित किया तथा उसके प्रकाश को उन पर्दों के नीचे से निकाला जो उस पर मुसलमानों ने अपनी मूर्खता के कारण डाल रखे थे । अन्य क़ौमें भी क़ुर्आन करीम के प्रकाश को देखकर आश्चर्य चकित रह गईं अपितु लोग उसके प्रकाश की आभा से अपनी आँखें नहीं खोल सकते हैं ।

इस्लाम का चौथा स्तम्भ नबियों पर ईमान लाना है । इस स्तम्भ पर भी वास्तविकता से दूर और आध्यात्मिकता से रिक्त मुसलमानों ने बड़ी विचित्र प्रकार की रंगीनियाँ भर दी थीं तथा उस के रूप को न केवल परिवर्तित कर दिया था अपितु उसका रूप ऐसा कुरूप करके दिखाया था कि अपनों के हृदय नबियों के प्रेम से खाली हो गए थे तथा अन्य लोगों के हृदय उन से घृणा करने लगे थे । सत्य यह है कि जितनी गालियाँ इस समय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दी जा रही हैं उनके उत्तरादायी ये मुसलमान कहलाने वाले लोग हैं न कि कोई और । ईसाई और इस्लाम के अन्य विरोधी अपनी ओर से इतना झूठ बना-बना कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ऐतिराज़ नहीं करते जितना कि उन रिवायतों (वर्णनों) के कारण ऐतिराज़ करते हैं जो स्वयं मुसलमानों ने वर्णन की हैं और जिन को मुसलमानों ने स्वीकार कर लिया है तथा जिन को वे बतौर हास्यास्पद चुटकुलों के अपनी सभाओं में वर्णन करते हैं तथा अपने मंचों पर जिन की चर्चा करते हैं । आह ! एक स्वाभिमानी मुसलमान का हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता है जब वह देखता है कि एक मुसलमान ही की तैयार की हुई तलवार से नबियों के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संयम की चादर को इस्लाम का एक शत्रु अपने मिथ्या भ्रम के अन्तर्गत सर पर मिट्टी डालते हुए फाड़ रहा है । वास्तव में वह स्वयं उस द्वैमुखी की द्वैमुखता को प्रकट कर रहा होता है, परन्तु प्रत्यक्षतया यही समझा जाता है कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सदाचारों के दोषों को प्रकट कर रहा है ।

नबी संसार में इसलिए आते हैं कि नेकी और संयम को स्थापित करें तथा हिदायत को जारी करें, परन्तु मुसलमानों ने 'फ़ैजे आवज'

(नितान्त पथ भ्रष्टता और पतन) के युग में नबियों की ओर वे दोष सम्बद्ध कर दिए हैं जिन को सुनकर और पढ़ कर कलेजा मुख को आता है । आदम अलैहिस्सलाम से लेकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक प्रत्येक नबी के उन्होंने पाप गिनवाए हैं । आदम[अ] को पापी सिद्ध किया है कि उन्होंने साफ और स्पष्ट ख़ुदा के आदेशों की घोर अवज्ञा की थी, नूह अलैहिस्सलाम को पापी सिद्ध किया है कि उन्होंने बावजूद मना किए जाने के अपने पुत्र के लिए दुआ की, हज़रत इब्राहीम को पापी सिद्ध किया है कि उन्होंने (नाऊज़ुबिल्लाहा मिन ज़ालिका) तीन झूठ बोले थे, हज़रत या'क़ूब को पापी सिद्ध किया है कि उन्होंने जैसे अपने पिता को मृत्यु-शैया पर धोखा दिया था और अपने बड़े भाई के स्थान पर भेष बदल कर अपने पिता से दुआ प्राप्त कर ली थी, यूसुफ अलैहिस्सलाम को पापी सिद्ध किया है कि उन्होंने अज़ीज़ की पत्नी के साथ दुराचार करने का इरादा कर लिया था तथा इस कार्य के लिए बिल्कुल तैयार हो गए थे, यहाँ तक कि बावजूद कई ढंगों से समझाने के नहीं समझते थे अन्ततः या'क़ूब की आकृति सामने आई तो लज्जा के कारण इस कृत्य से हट गए । इसी प्रकार कहा जाता है कि वाल्यावस्था में उन्होंने चोरी की थी और एक बार उन्होंने अपने भाई को अपने पास रखने के लिए कपट भी किया था । हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने एक व्यक्ति का अकारण वध किया और एक बड़ा पाप करने वाले हुए, फिर छल से लोगों के माल लेकर भाग गए । दाऊद अलैहिस्सलाम पर यह आरोप लगाया गया है कि उन्होंने एक व्यक्ति की पत्नी को छीनने के लिए उसका अवैध तौर पर वध करवा दिया तथा उसकी पत्नी से निकाह कर लिया और अन्ततः अल्लाह तआला की ओर से उनकी डांट-डपट हुई । सुलैमान अलैहिस्सलाम पर यह आरोप लगाया गया है कि वह एक द्वैतवादी स्त्री पर मुग्ध हो गए और शैतान ने उन पर अधिकार जमा लिया, उनके स्थान पर वह स्वयं शासन करने लगा तथा यह कि माल के प्रेम ने उन पर प्रभुत्व जमा लिया तथा वह ख़ुदा की उपासना से वंचित रह गए । घोड़ों का निरीक्षण करते हुए नमाज़ पढ़ना ही भूल गए और सूर्य अस्त हो गया । रसूले करीम

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उपकारों के नीचे उन लोगों के सर झुके हुए थे तथा कण-कण जिनके इनामों के नीचे दबा हुआ था, उन पर उन लोगों ने सर्वाधिक आक्रमण किए हैं तथा आप के जीवन का कोई भाग नहीं छोड़ा जिस पर आरोप न लगाया हो । कुछ ने कह दिया कि आप (स.अ.व.) हज़रत अली(रज़ि.) को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे परन्तु लोगों के भय से कुछ न कर सके, कुछ ने कहा कि आप (स.अ.व.) (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) अपनी फूफी की पुत्री को देख कर उस पर आसक्त हो गए और अन्ततः अल्लाह तआला ने ज़ैद से तलाक दिलवाकर उनको आप (स.अ.व.) के निकाह में दिया । कुछ ने कहा कि आप अपनी पत्नी की एक दासी से छुप-छुप कर सहवास किया करते थे । एक दिन पत्नी ने देख लिया तो आप बहुत लज्जित हुए तथा उस पत्नी से प्रण किया कि पुनः आप ऐसा नहीं करेंगे और उस से प्रण लिया कि वह और किसी को न बताए । कुछ कहते हैं कि आप के हृदय में कभी-कभी यह इच्छा हुआ करती थी कि इस्लामी शिक्षा में कुछ नर्मी हो जाए और ऐसी शिक्षा उतरे जो अरब के द्वैतवादी भी स्वीकार कर लें, उन के अहसासों और भावनाओं का भी ध्यान रखा जाए ।

ये वे विचार हैं जो इस समय के मुसलमानों में नबियों के संबंध में प्रचलित हैं और कुछ तो इतने आगे निकल गए हैं कि उनके व्यक्तिगत चरित्र से गुज़र कर उन्होंने उनके धार्मिक चरित्र पर भी आक्रमण कर दिया है और कहते हैं कि नबी वास्तव में देश-प्रेमी थे जिन्होंने यह देख कर कि लोग इस आस्था को स्वीकार किए बिना कि कोई प्रतिफल और दण्ड देने का दिन है, स्वर्ग-नर्क सत्य हैं, नागरिकता की सीमाओं के अन्दर नहीं रह सकते थे, शुभ नीयत के साथ समयानुसार लोगों को आदेश दे दिए, इल्हाम का दावा उचित न था, परन्तु शुभ नीयत और उच्च स्तर की नैतिक शिक्षा प्रस्तुत करने के कारण वे सम्माननीय हैं और बावजूद इस प्रकार की आस्थाओं के वे मुसलमान कहलाते हैं ।

हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने जहाँ अन्य आस्थाओं का खण्डन किया तथा उनमें हमें सद्मार्ग बताया वहाँ उन विचारों के संबंध में भी मुसलमान तथा अन्य लोगों को इस्लाम की सही

शिक्षा से अवगत किया । आप ने बताया कि नबी संसार में नेकी स्थापित करने के लिए आते हैं तथा इस लिए लोगों के लिए उदाहरण होते हैं । यदि वे उदाहरण न हों तो फिर उन के अवतरित होने की क्या आवश्यकता है, क्यों न आकाश से केवल किताब ही उतारी जाए । नबियों के आने का उद्देश्य ही यह होता है कि अल्लाह तआला के कथन को लोग क्रियात्मक रूप में देख लें तथा उनकी क्रियात्मक आकृति से शाब्दिक वास्तविकता को ज्ञात करें तथा उनके उदाहरण से साहस बटोर कर नेकी के मार्ग में उन्नति करें । उन की पवित्र शक्ति से शक्ति प्राप्त करके अपनी कमज़ोरियों पर विजय प्राप्त करें ।

आप(अ) ने संसार को शिक्षा दी कि लोग नबियों के संबंध में जिन दोषों में ग्रस्त हैं उसका कारण उनकी अज्ञानता है, वे अल्लाह तआला के कलाम को समझने का प्रयास नहीं करते तथा बिना जांच-पड़ताल के अपनी बात को फैलाना आरंभ कर देते हैं । अल्लाह तआला के समस्त नबी दोषों से पवित्र होते हैं, मासूम होते हैं, वे सत्य का जीवित नमूना तथा वफ़ादारी की जीवंत मूर्ति होते हैं, वे अल्लाह तआला की विशेषताओं के द्योतक होते हैं, और स्पष्टता और सुन्दरता के साथ अल्लाह तआला के पावन, पवित्र और निर्दोष होने की ओर संकेत करते हैं । वास्तव में वे एक दर्पण होते हैं जिसमें दुराचारी प्राय: अपनी आकृति देख कर अपनी कुरूपता और बदसूरती को उनकी ओर सम्बद्ध कर देते है । न आदम(अ) शरीअत का तोड़ने वाला था, न नूह(अ) पापी था, न इब्राहीम(अ) ने कभी झूठ बोला, न याक़ूब(अ) ने धोखा दिया, न यूसुफ़(अ) ने बुराई का इरादा किया या चोरी की या कपट किया, न मूसा(अ) ने अकारण कोई वध किया, न दाऊद(अ) ने किसी की पत्नी को अवैध ढंग से छीना, न सुलैमान(अ) ने किसी द्वैतवादी स्त्री के प्रेम में अपने कर्त्तव्यों को भुलाया या घोड़ों के प्रेम में नमाज़ से लापरवाही की, न रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई छोटा या बड़ा पाप किया, आप (स.अ.व.) का अस्तित्व समस्त दोषों से पवित्र था और समस्त पापों से सुरक्षित और पावन । जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दोषी ठहराता है वह स्वयं अपनी गन्दगी को प्रकट करता है, ये समस्त कहानियाँ जो आपके संबंध में प्रसिद्ध हैं, कुछ, द्वैमुखी लोगों की रिवायतें हैं जो ऐतिहासिक तौर

पर सिद्ध नहीं हो सकतीं, आप (स.अ.व.) का शेष जीवन इन रिवायतों के बिल्कुल विपरीत है । इस प्रकार की जितनी बातें आप (स.अ.व.) के और अन्य नबियों के संबंध में प्रसिद्ध हैं वे या तो मुनाफ़िकों (द्वैमुखी) के आरोपों की शेष स्मृतियाँ हैं अथवा ख़ुदा के कलाम के गलत और यथार्थ के विरुद्ध अर्थ निकालने से उत्पन्न हुई हैं ।

आप(अ) ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से क़ुर्आन करीम से अकाट्य सबूतों द्वारा सिद्ध कर दिया कि वास्तव में इस प्रकार के विचार इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध हैं और मूल बात तो यह है कि ये विचार मुसलमानों में ईसाइयों से आए थे, क्योंकि ईसाइयों ने हज़रत मसीह(अ) की ख़ुदाई सिद्ध करने के लिए यह ढंग अपना रखा था कि वे समस्त नबियों को दोषारोपित करते थे ताकि लोगों को ज्ञात हो कि चूँकि पापों से पवित्र हज़रत मसीह हैं इसलिए वह अवश्य मानवता से उच्च शक्तियाँ रखते थे और यही कारण है कि मुसलमानों में भी समस्त नबियों के दोष तो गिनाए जाते हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक आरोप लगाए जाते हैं, परन्तु हज़रत मसीह(अ) को बिल्कुल निर्दोष ठहराया जाता है और आप ही को नहीं अपितु आप की माता को भी बिल्कुल पवित्र ठहराया जाता है । क्या यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण नहीं कि ये मिथ्या कहानियाँ तथा घृणित किस्से मुसलमानों में ईसाइयों से ही आए हैं जिन के दुष्प्रभाव को या तो एक ही स्थान पर निवास के कारण मुसलमानों ने स्वीकार कर लिया या कुछ उपद्रवी और दुष्चरित्र लोगों ने प्रत्यक्षत: इस्लाम स्वीकार करके इस प्रकार की लज्जाजनक और मिथ्या बातें मुसलमानों में फैलाना आरंभ कर दीं जिन्हें प्रारंभ में तो हमारे इतिहासकारों और हदीसवेत्ताओं ने अपनी ख्याति प्राप्त ईमानदारी से काम लेकर सही रिवायतों के साथ संकलित कर दिया था ताकि विरोधी और सहयोगी समस्त रिवायतें लोगों तक पहुँच जाएँ, परन्तु बाद में आने वाले अयोग्य लोगों ने जो नुबुव्वत के प्रकाश से रिक्त हो चुके थे उन शैतानी भ्रमों को तो स्वीकार कर लिया जो क़ुर्आनी शिक्षा के विरुद्ध थे तथा उन सही रिवायतों को अनदेखा कर दिया जो नबियों की मर्यादा और पवित्रता को सिद्ध करती थीं तथा उन भ्रमों के लिए तेज़ तलवार के समान थीं, जिनकी चोट को वे बिल्कुल सहन नहीं कर सकते थे ।

परन्तु ख़ुदा का आभार कि हज़रत अक़दस(अ) ने इस गन्दगी को प्रकट कर दिया तथा नबियों के उचित स्थान को पुन: स्थापित कर दिया, उन के सम्मानों की सुरक्षा की, विशेषकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रतिष्ठा और आप (स.अ.व.) की पवित्रता को तो न केवल शब्दों में वर्णन किया अपितु ऐसे शक्तिशाली सबूतों के माध्यम से सिद्ध किया कि शत्रु का मुख भी बन्द हो गया । हज़रत अक़दस(अ) के कथनानुसार :-

(1) ہر رسُولے آفتابِ صدق بود　　ہر رسُولے بود مہرِ انورے
(2) ہر رسولے بود ظلِّ دین پناہ　　ہر رسولے بود باغے مثمرے
(3) گر بدنیا ماندے ایں خیلِ پاک　　کارِ دیں ماندے سراسر ابترے
(4) ہر کہ شکرِ بعثِ شاں نارد بجا　　ہست او آلائے حق را کافرے
(5) آں ہمہ از یک صدف صد گوہر اند　　متحد در ذات واصل و گوہرے
(6) اوّل آدمؑ آخرِ شاں احمدؐ است　　اے خنک آنکس کہ بیند آخرے
(7) انبیاء روشن گہر ہستند لیک　　ہست احمدؐ زاں ہمہ روشن ترے
(8) آں ہمہ کانِ معارف بودہ اند　　ہریکے از راہِ مولیٰ مخبرے
(9) ہر کہ را علمے زتوحید حق است　　ہست اصلِ علمش از پیغمبرے
(10) آں رسیدس از رہِ تعلیم ہا　　گوشود اکنوں ز نخوت منکرے
(11) ہست قومے کج روؤ ناپاک رائے　　آنکہ زیں پاکاں ہمی پیچد سرے
(12) دیدۂ شاں روئے حق ہرگز ندید　　بس سیہ کردند روئے دفترے
(13) شور بختی ہائے بخت شاں بہ بیں　　ناز بر چشم و گریزاں از خورے
(14) چشم گر بودے غنی از آفتاب　　کس نہ بودے تیز بیں چوں شپّرے
(15) چوں بروزِ ابتدا تقسیم کرد　　در میانِ خلق از خیر و شرے
(16) راستی درحصہ اوشاں فتاد　　دیگراں را کذب شد آبش خورے
(17) قولِ شاں اینست کا ندر غیر شاں　　آمدہ صد کاذب و حیلت گرے
(18) لعلِ تاباں را اگر گوئی کثیف　　زیں چہ کاہد قدر روشن جوہرے
(19) طعنہ برپاکاں نہ برپاکاں بود 206 خود کُنی ثابت کہ ہستی فاجرے

(अनुवाद :- (1) प्रत्येक नबी सत्य का सूर्य था और हर रसूल नितान्त प्रकाशमान सूरज था ।

(2) हर रसूल धर्म को शरण देने वाली छाया थी । इसी प्रकार प्रत्येक नबी एक फलदार उद्यान था ।

(3) यदि यह पवित्र जमाअत संसार में न आती तो धर्म का कार्य बिल्कुल अस्त-व्यस्त रह जाता ।

(4) जो व्यक्ति इन के आगमन का यथास्थान धन्यवाद नहीं करता, वह वास्तव में ख़ुदा की नैमतों का इन्कारी है ।

(5) वे सबके सब एक ही सीप के सौ रत्न हैं जो अस्तित्व और मूल और आभा में समान हैं ।

(6) सर्व प्रथम आदम और सबसे अन्त में अहमद (स.अ.व.) है । मुबारक व्यक्ति वह है जो आख़िरी को देख ले ।

(7) समस्त नबी प्रकाशमान स्वभाव रखने वाले हैं परन्तु अहमद (स.अ.व.) उन समस्त से अधिक प्रकाशमान है ।

(8) ये समस्त मा'रिफ़त की खान थे, उनमें से प्रत्येक ख़ुदा के मार्ग का मार्ग-दर्शक था ।

(9) जिसे भी ख़ुदा के एकेश्वरवाद का कुछ ज्ञान है, उसके ज्ञान का मूल किसी पैग़म्बर से है ।

(10) वह ज्ञान उसे उनकी शिक्षा से ही पहुँचा है यद्यपि अब वह अभिमान के कारण इन्कारी हो जाए ।

(11) एक पथ-भ्रष्ट और अपवित्र क़ौम ऐसी भी है जो इन मासूमों का इन्कार करती है ।

(12) उनकी दृष्टि ने सत्य का मुख कभी नहीं देखा, इसलिए उन्होंने इस विवाद में रजिस्टर काले कर डाले ।

(13) उनके दुर्भाग्य को देख कि अपनी आँख पर गर्व करते हैं और सूर्य से भागते हैं ।

(14) यदि आँख को सूर्य की आवश्यकता न होती तो कोई भी व्यक्ति चमगादड़ से अधिक तीव्र दृष्टि वाला नहीं होता ।

(15) जब उसने सृष्टि के मध्य शुभ और अशुभ का प्रथम दिवस से ही वितरण किया है ।

(16) तो सत्य उन लोगों के भाग में आया और अन्य के भाग्य में असत्य ही आया ।

(17) उनका कथन यह है कि उनके अतिरिक्त अन्य लोगों में सैकड़ों झूठे और मक्कार आए हैं ।

(18) चमकदार रत्न को यदि तू मलिन कह दे तो इस से चमकीले रत्न का मूल्य घट सकता है ।

(19) मासूम पर भर्त्सना, कभी नहीं कहलाती । इस से तो यह सिद्ध होता है कि तू स्वयं दुराचारी है ।)*

ईमान का पाँचवां स्तम्भ मृत्योपरांत (प्रलय के दिन) उठाया जाना तथा स्वर्ग-नर्क पर ईमान लाना है । इस स्तम्भ को गिराने के लिए भी मुसलमानों ने पूरा बल और शक्ति लगाई थी, हृदय तो निश्चय ही मृत्योपरांत उठाए जाने के इन्कारी हो चुके थे, क्योंकि यदि यह न होता तो इस्लामी शिक्षा को इस प्रकार पीठ पीछे क्यों डाल दिया जाता ? प्रत्यक्ष तौर पर भी लोगों में इसके संबंध में बड़े विचित्र विचार फैल रहे थे । स्वर्ग की जो रूप-रेखा मुसलमानों के मस्तिष्कों में समा गई थी वह बता रही थी कि स्वर्ग का मूल अर्थ लोगों के मस्तिष्कों से निकल चुका है । स्वर्ग अब क्या वस्तु रह गई थी, एक भोग-विलास का स्थान, जैसे इस संसार में मनुष्य की उत्पत्ति केवल इस उद्देश्य हेतु थी कि वह एक ऐसे स्थान पर जा बसे जहाँ प्रत्येक प्रकार के खाने-पीने की वस्तुएँ हों और स्त्रियाँ हों और उनका साथ हो । जब यह प्राप्त हो गया तो सब कुछ प्राप्त हो गया, हालाँकि अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है कि मनुष्य की उत्पत्ति का मूल उद्देश्य यह है कि - لِيَعْبُدُوْنِ[207] **(लिया'बुदून)** इसलिए कि वह मेरी उपासना करे। अर्थात् ऐसी स्थिति धारण करे कि मेरी विशेषताओं को अपने अन्दर धारण कर ले क्योंकि दासता के अर्थ विनय और अन्य वस्तु के चिन्हों को स्वीकार कर लेने के होते हैं । अतः यह विचार करना कि मनुष्य पचास-साठ वर्ष तक तो इस कार्य को करेगा, जिसके लिए उत्पन्न किया गया था, तत्पश्चात एक न समाप्त होने वाले समय को खाने-पीने और भोग-विलास में व्यतीत करेगा जो अत्यन्त मूर्खता थी । इसी प्रकार नर्क के संबंध में विचार किया जाता था कि इसमें अल्लाह तआला काफ़िरों को एक

* प्रस्तुत अनुवाद, अनुवादक की ओर से है । (अनुवादक)

न समाप्त होने वाले प्रकोप के लिए डाल देगा और एक कठोर शासक की भाँति फिर कभी उन पर दया न करेगा ।

हज़रत अक़्दस(अ) ने इन विचारों का भी खण्डन किया, तथा तर्कों और चमत्कारों से मृत्योपरांत उठाए जाने पर ईमान को लोगों के हृदयों में स्थापित किया तथा संसार के अस्थायी होने और परलोक के जीवन की विशेषता और श्रेष्ठता को प्रकाशमान दिवस की भाँति प्रकट करके लोगों के हृदयों में उसके अनुसार कार्य करने की इच्छा को जागृत किया । इसी प्रकार स्वर्ग के संबंध में जो व्यर्थ विचार लोगों के थे उन को भी दूर किया, यह भ्रम भी दूर किया कि स्वर्ग केवल एक रूपक है और सिद्ध किया कि स्वर्ग का अस्तित्व एक वास्तविकता है । इस विचार के दोष-पूर्ण होने को भी सिद्ध किया कि जैसे वह इस संसार की भाँति है, परन्तु इस से अधिक विशाल पैमाने का आराम और विलास का स्थान है और बताया कि वास्तव में उस स्थान की नैमतें इस संसार से बिल्कुल भिन्न हैं और वास्तव में यहाँ की भौतिक नैमतें इस संसार की उपासनाओं के सदृश हैं । जैसे यहाँ की आत्मा वहाँ का शरीर है और वहाँ की आत्मा एक और उन्नति प्राप्त वस्तु है जिसकी शक्तियाँ इस आत्मा से बहुत उच्च होंगी, जिस प्रकार कि वीर्य की आध्यात्मिक शक्तियों से उत्पन्न होने वाले मनुष्य की आध्यात्मिक शक्तियाँ श्रेष्ठ होती हैं ।

इसी प्रकार आप(अ) ने यह सिद्ध किया कि नर्क का प्रकोप जिसे लोग न समाप्त होने वाला कहते हैं वास्तव में एक समय पर जा कर समाप्त हो जाएगा, वह हमेशा के लिए है अर्थात एक अत्यन्त दीर्घ अवधि तक जाने वाला है परन्तु वह असीमित नहीं है अन्ततः समाप्त किया जाएगा, क्योंकि अल्लाह तआला जो अपने अस्तित्व के संबंध में फ़रमाता है - رَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ[208] **(रहमती वसिअत कुल्ला शैइन)** उसकी शान से दूर है कि एक असहाय बन्दे को न समाप्त होने वाला प्रकोप दे और जबकि क़ुर्आन करीम स्वर्ग के इनामों को غَيْرَ مَجْذُوْذٍ[209] **(ग़ैरा मज्ज़ूज़िन)** और غَيْرُ مَمْنُوْنٍ[210] **(ग़ैरो ममनूनिन)** ठहराता है और नर्क के प्रकोप के संबंध में ये शब्द प्रयोग नहीं करता, तो आवश्यक है कि दोनों में कुछ अन्तर हो, फिर बन्दा क्यों ख़ुदा की लगाई हुई शर्तों को त्याग दे ? विशेषतया जबकि स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़ुर्आन करीम के अर्थों की व्याख्या इन शब्दों में कर दें कि

يَأْتِيْ عَلٰى جَهَنَّمَ يَوْمٌ مَا فِيْهَا مِنْ بَنِيْ اٰدَمَ اَحَدٌ تُخَفِّقُ اَبْوَابُهَا[211] **(याती अला जहन्नमा यौमुन मा फ़ीहा मिन बनी आदमा अहदुन तुख़्फ़क़ो अब्वाबुहा)** अर्थात नर्क पर एक समय ऐसा आएगा कि उसके अन्दर एक व्यक्ति भी न रहेगा और उसकी द्वार खटखटाए जाएँगे ।'' किसी का क्या अधिकार है कि ख़ुदा की दया और उसके वरदान को सीमाबद्ध करे ?

इन ईमान के स्तम्भों के अतिरिक्त व्यवहारिक भाग में भी बहुत बड़े-बड़े परिवर्तन उत्पन्न हो गए थे । कुछ लोगों ने वैधता पर बल दे रखा था, उनकी यह आस्था हो रही थी कि व्यक्ति لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ **(ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह)** कह दे और फिर जो चाहे करे । उन लोगों का यह विश्वास था कि यदि हम लोग पाप न करेंगे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सिफ़ारिश किस की करेंगे ।

कुछ लोगों का यह विचार हो रहा था कि शरीअत मूल उद्देश्य नहीं वह तो ख़ुदा तक पहुँचाने के लिए एक नौका के समान है । अतः जब मनुष्य ख़ुदा को प्राप्त कर ले तो फिर उसे उस नौका में बैठे रहने की क्या आवश्यकता है ।

कुछ लोग यह विचार करते थे शरीअत के आदेश वास्तव में आन्तरिक मामलों के लिए प्रत्यक्ष निशान हैं । जिस समय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अवतरित हुए उस समय लोगों की स्थिति सभ्यता की दृष्टि से बिल्कुल आरंभिक थी और लोग जानवरों की भांति थे । प्रत्यक्ष पर विशेष बल दिया जाता था । अब ज्ञान का युग है, अब लोग बहुत समझदार हो गए हैं, अब उन प्रत्यक्ष रिवाजों की पाबन्दी कुछ आवश्यक नहीं । यदि कोई व्यक्ति स्वच्छता रखता है, ख़ुदा का हृदय में स्मरण करता है, कौम का शोक-संताप हृदय में रखता है, निर्धनों की सहायता किया करता है, खान-पान में सावधानी करता है, क़ौमी कार्यों में भाग लेता है तो यही उसकी नमाज़ और यही उसका उपवास और यही उसकी ज़कात और यही उसका हज है ।

कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि यदि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से एक विशेष प्रकार का पाजामा पहनना सिद्ध है तो उसी प्रकार का पाजामा पहनना चाहिए और यदि आप स.अ.व. ने बाल लम्बे रखे हुए थे तो हमें भी बाल लम्बे रखने चाहिए । आगे इसी पर

अनुमान करते हुए कुछ लोग विचार करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कोई अधिकार न था कि लोगों को कुछ आदेश देते। वह हमारी ही प्रकार के मनुष्य हैं जो कुछ क़ुर्आन करीम में आ गया है वह सबूत है शेष सब मिथ्या है ।

कुछ लोग कहते हैं कि अमुक-अमुक बुज़ुर्गों ने जो कुछ कह दिया, कह दिया । उनके विचार के विरुद्ध अन्य कोई बात स्वकारणीय नहीं । हमारा कर्तव्य है कि अन्धाधुंध उनका अनुसरण करें ।

ये तो सैद्धान्तिक बातें हैं । अब रही शाखाएँ, उन में और भी अन्धेर है । कुछ लोग अन्य भाषाओं का पढ़ना भी कुफ़्र ठहराते हैं, कुछ लोग नवीन शिक्षाओं का सीखना ईमान के विरुद्ध समझते हैं, उनकी तुलना में मुसलमानों का एक भाग ब्याज जिसके सन्दर्भ में अल्लाह तआला फ़रमाता है - فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ[212] **(फ़ाज़नू बिहर्बिम्मिनल्लाहे)** वैध ठहराता है ।

नमाज़, रोज़ा (उपवास) ज़कात, विरसा (किसी की मृत्योपरांत मिलने वाली सम्पत्ति) प्रत्येक बात के संबंध में इतनी मतभेद है कि वास्तविकता बिल्कुल छुप कर रह गई है तथा छोटी से छोटी बात को मूल इस्लाम ठहरा दिया जाता है तथा इसके विरुद्ध करने वाले के साथ झगड़ा किया जाता है, मुसलमान कहलाने वालों ने अपने भाइयों की उंगलियाँ इसलिए तोड़ दीं हैं कि वे तशह्हुद (एक ख़ुदा की गवाही देना और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा का रसूल मानने की गवाही देना) की उंगली क्यों खड़ी करते हैं, क़ुर्आन करीम की तिलावत करने वाले मुखों में मल आदि की गन्दगियाँ डाली हैं कि इस मुख से ऊँचे स्वर में आमीन क्यों निकली थी । अत: व्यवहारिक भाग भी इसी परिवर्तन और इसी विकार का शिकार हो रहा है जो कि आस्था से संबंधित भाग था ।

हज़रत अक़दस(अ) ने इस भाग का भी सुधार किया तथा एक ओर वैधता के ढंग को मिथ्या सिद्ध किया और बताया कि सिफ़ारिश उन लोगों के लिए है जो पाप से बचने का पूरा प्रयास करते हैं परन्तु फिर कुछ कारणों से उन में गिर जाते हैं और कुछ लापरवाहियाँ उन की शेष रह जाती हैं, न कि उनके लिए जो सिफ़ारिश के लिए पाप करते हैं । सिफ़ारिश पाप की समाप्ति के लिए थी न कि पाप के प्रचार के लिए ।

इसी प्रकार यह बताया कि यद्यपि शरीअत मूल उद्देश्य नहीं परन्तु

बन्दगी मूल उद्देश्य है । अतः अल्लाह तआला ने जिस कार्य का आदेश दिया और जिस समय तक दिया है उसका पालन करना चाहिए । अल्लाह तआला का सानिध्य कोई सीमित वस्तु नहीं कि कहा जाए कि अब सानिध्य प्राप्त हो गया है अब उपासना की आवश्यकता नहीं । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसा मनुष्य जब मृत्यु तक إِيَّاكَ نَعْبُدُ[213] **(इय्याका ना'बुदो)** और اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ[214] **(इहदिनस्सिरातलमुस्तक़ीम)** कहता रहा और आप को رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا[215] **(रब्बे ज़िदनी इल्मन)** कहने का आदेश मिला तो और कौन व्यक्ति है जो कहे कि मैं अपने गन्तव्य तक पहुँच गया हूँ, अब मुझे उपासना (इबादत) की आवश्यकता नहीं । वास्तव में इस प्रकार की विचारधारा वाले लोग अल्लाह तआला को एक नदी के किनारे की भाँति सीमित वस्तु ठहराते और अपने अधर्म को धर्म के पर्दे के नीचे छुपाते हैं ।

इस प्रकार आप(अ) ने बताया कि इस्लाम के आदेश मनुष्य की पूर्णता के लिए उत्तम माध्यम हैं और प्रत्येक युग में तथा प्रत्येक शिक्षित वर्ग के लिए समान रूप से लाभप्रद हैं तथा इनके अभाव में कोई आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती । अतः यह अनुचित है कि अब उन आदेशों का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं रही या यह कि उन के स्थान पर अन्य कार्यों को रखा जा सकता है ।

इस प्रकार आप(अ) ने बताया कि एक उपासनाएँ (इबादतें) और सुन्नतें हैं और एक देश की परंपराएँ और जातिगत नियम । उपासना और सुन्नत के अतिरिक्त ऐसी बातों में जिन को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने देश की परम्परा और जातिगत नियम के अनुसार करते थे, लोगों को विवश करना कि वे भी आप की ही पद्धति को धारण करें अन्याय है । स्वयं सहाबा(रज़ि.) इन बातों में विभिन्न ढंगों को अपनाते थे तथा कोई एक दूसरे को बुरा न कहता था ।

आप(अ) ने उन लोगों के विचारों का भी खण्डन किया जो यह विचार करते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे जैसे मनुष्य हैं और आप(स) का कोई अधिकार नहीं कि हम आपका अनुसरण करें ।

आप(अ) ने बताया कि अल्लाह तआला के नबी अल्लाह तआला के कलाम की एक विशेष समझ पाते हैं जो दूसरों को प्राप्त नहीं होती ।

इसलिए उन की व्याख्या को स्वीकार करना मौमिन का कर्त्तव्य होता है अन्यथा ईमान नष्ट हो जाता है ।

आप(अ) ने इस विचारधारा के दोषपूर्ण होने को भी प्रकट किया कि किसी बुज़ुर्ग ने जो कुछ कह दिया उसे स्वीकार करना हमारे लिए अनिवार्य है । ऐसे लोगों के लिए जो परिश्रम और छान-बीन द्वारा किसी परिणाम तक पहुँचने का तत्व नहीं रखते व्यवहार-कुशलता के लिए निसन्देह आवश्यक है कि वे किसी न किसी बुज़ुर्ग को जिसका सत्य, संयम और ज्ञान उन पर प्रकट हो गया है अपना पथ-प्रदर्शक बना लें, परन्तु उसके ये अर्थ नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह ज्ञान और बुद्धि रखता हो ऐसा ही करना चाहिए और यदि वह दूसरे का अन्धा अनुसरण नहीं करता तो पापी है अपितु ज्ञान रखने वाले व्यक्ति को चाहिए कि जिस बात को वह क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों से ज्ञात करे उसमें अपने ज्ञान के अनुसार पालन करे ।

आप (स.अ.व.) ने इस विचार की निरर्थकता को भी प्रकट किया कि मात्र सांसारिक बातों को धार्मिक बना लिया जाए । आप(अ) ने बताया कि समस्त भाषाएँ ख़ुदा की है जो भाषा लाभप्रद हो उसे सीखना चाहिए। जितने ज्ञान मनुष्य की शारीरिक, नैतिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा आध्यात्मिक स्थिति के लिए लाभप्रद हैं, उनको पढ़ना न केवल यह कि पाप नहीं है अपितु आवश्यक है और कुछ परिस्थितियों में जबकि उन्हें धर्म की सेवा के लिए सीखा जाए पुण्य का कारण है ।

आप(अ) ने मुसलमानों को ब्याज की लानत से बचने का भी मार्ग-दर्शन किया और बताया कि यह आदेश महान नीतियों पर आधारित है । इसे साधारण सांसारिक लाभों-हेतु परिवर्तित नहीं करना चाहिए ।

इसी प्रकार आप(अ) ने बताया कि धार्मिक मामले दो प्रकार के होते हैं । एक मूल और दूसरे शाखाएं । मूल मामले क़ुर्आन करीम से सिद्ध हैं उनमें कोई विरोधाभास नहीं हो सकता । यदि कोई व्यक्ति समझना चाहे तो उन्हें भली-भांति समझ सकता है और जो उसके अंशों और शाखाओं से संबंधित हैं उन की दो स्थितियाँ हैं । एक यह कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक विशेष पद्यति पर एक कार्य करने का आदेश दे दिया है और इसके अतिरिक्त अन्य किसी पद्धति पर उसे करने

से रोक दिया है । इस स्थिति में तो उसी पद्धति को ग्रहण करना चाहिए जिसे ग्रहण करने का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आदेश दिया है । दूसरी स्थिति यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दो या दो से अधिक बातें रिवायत हैं और मुसलमानों के कुछ वर्ग कुछ रिवायतों पर और कुछ वर्ग कुछ अन्य रिवायतों पर कार्यरत रहे हैं उनके संबंध में यह विश्वास रखना चाहिए कि वह सब ढंग उचित और सुन्नत के अनुसार हैं क्योंकि यदि ऐसा न होता तो किस प्रकार संभव था कि आप (स.अ.व.) के सहाबा(रज़ि.) में से एक समूह एक पद्धति को ग्रहण कर लेता और दूसरा समूह दूसरी पद्धति को । मूल बात यह है कि कुछ बातों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वभावों की भिन्नता को दृष्टिगत रखकर अनेक प्रकार से उनके करने की आज्ञा प्रदान कर दी है या स्वयं कई प्रकार से उन कार्यों को करके दिखा दिया है ताकि लोगों के हृदयों में सन्देह न रहे । जैसे रफा'यदैन (हाथों को कान तक ऊपर उठाना) कि कभी आप ने रफ़ा'यदैन किया, कभी नहीं किया । या 'आमीन बिल्जहर' है (उच्च स्वर में आमीन कहना) किसी ने आप के पीछे आमीन उच्च स्वर में कहा,किसी ने नहीं कहा । आपने दोनों पद्धतियों को पसन्द किया । इसी प्रकार हाथों का बांधना है, कभी किसी प्रकार बांधना कभी किसी प्रकार बांधना । अब जिस व्यक्ति का स्वभाव जिस प्रकार उचित लगे उसका पालन करे और अन्य लोग जो दूसरी रिवायत पर कार्यरत हैं उन पर आरोप न लगाए क्योंकि वह दूसरी सुन्नत या छूट पर कार्य हैं । अतएव इन नियमों को निर्धारित करके आप (स.अ.व.) ने समस्त वे मतभेद और विवाद दूर कर दिए जो फ़िक़्ही समस्याओं (इस्लामी नियमों से संबंधित समस्याएं) के संबंध में (मुसलमानों में उत्पन्न हो रहे थे और फिर आदरणीय सहाबा(रज़ि.) के युग की याद को ताज़ा कर दिया ।

यह एक संक्षिप्त रेखा चित्र है उस आन्तरिक सुधार का जो आपने किया । यदि इसका विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाए तो इसी विषय पर स्थायी पुस्तक लिखने की आवश्यकता होगी । अत: मैं इसी पर संतोष करता हूँ । अब मान्यवर ! इस से ज्ञात कर सकते हैं कि हज़रत अक़दस(अ) ने इस्लाम के अन्दर जितने दोष उत्पन्न कर दिए गए थे चाहे

आस्थाओं में चाहे कार्यों में, सभी को दूर कर दिया है तथा इस्लाम को फिर उसके मूल रूप में संसार के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है, जिस से अब वह सब मित्र और शत्रु के हृदयों को आकर्षित करने लग गया है तथा उसकी पवित्र शक्ति पुन: अपना प्रभाव दिखाने लग गई है ।

हे बादशाह ! ऊपर जितने दोषों का उदाहरणस्वरूप वर्णन किया गया है जो उन बहुत से दोषों में से कुछ हैं जो इस समय मुसलमानों में उत्पन्न हो चुके हैं । आप उन्हें देखकर ही ज्ञात कर सकते हैं कि एक सुरक्षित किताब की उपस्थिति में जैसा कि क़ुर्आन करीम है उस से अधिक खराबियाँ इस्लाम में उत्पन्न नहीं हो सकतीं । यदि इससे अधिक खराबियाँ उत्पन्न होंगी तो इसी कारण कि क़ुर्आन करीम ही (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) परिवर्तित हो जाए, परन्तु यह असंभव है । अत: और ख़राबियाँ उत्पन्न होना भी असंभव है ।

अब विचार करना चाहिए कि जब इस्लाम के अन्दर ख़राबियां अपनी चरम सीमा को पहुँच गई हैं तो और कौन सा समय है जब कि मसीह मौऊद आएँगे और जबकि इन समस्त ख़राबियों का निवारण हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कर दिया है तथा इस्लाम को प्रत्येक बुराई से सुरक्षित कर दिया है तो फिर किसी के आने की क्या आवश्यकता है, जबकि वह कार्य मसीह मौऊद के लिए और केवल मसीह मौऊद के लिए निश्चित था । आप ने बड़े उत्तम ढंग से पूर्ण कर दिया है, तो आप के मसीह मौऊद होने में क्या सन्देह है । जब सूर्य उदय होकर अर्ध दिवस पर आ जाए तो फिर उसका इन्कार नहीं हो सकता । इसी प्रकार ऐसे स्पष्ट सबूतों की उपस्थिति में हज़रत मिर्ज़ा साहिब के मसीह मौऊद होने का इन्कार नहीं किया जा सकता ।

छटा सबूत

ख़ुदा तआला की ओर से सहायता (ख़ुदाई सहायता)

आप की सच्चाई का छटा सबूत भी वास्तव में अधिकांश सबूतों को लिए हुए है ''ख़ुदा तआला की ओर से सहायता'' है । ख़ुदा की ओर से आदिष्ट और अवतरित वास्तव में अल्लाह तआला के प्रियजनों में से एक

प्रिय होता है । उसका सत्य सिद्ध नहीं हो सकता, जब तक कि ख़ुदा तआला का उसके साथ वह व्यवहार न हो जो प्रियजनों और प्रियतमों से हुआ करता है । यदि कोई व्यक्ति मामूर (ख़ुदा की ओर से आदिष्ट) होने का दावा करता है और उसके साथ अल्लाह तआला का व्यवहार प्रियतमों और प्रेमियों वाला व्यवहार नहीं तो वह झूठा है, क्योंकि संभव नहीं कि एक व्यक्ति को अल्लाह तआला अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजे और फिर उसके साथ अपने प्रेम का कोई उदाहरण न दिखाए और न उसकी सहायता करे । संसार के राजा भी जब किसी को अपना प्रतिनिधि बना कर भेजते हैं तो उसकी सहायता करते हैं तथा उसकी ओर ध्यान देते हैं तथा जब भी उसे आवश्यकता हो तो उसकी सहायता के साधन उपलब्ध कराते हैं । फिर अल्लाह तआला जिसके ख़ज़ाने बड़े विशाल हैं तथा जो अन्तर्यामी है क्यों अपने मामूरों की सहायता नहीं करेगा और यदि कोई व्यक्ति मामूर होने का दावा करे और उसे ख़ुदा का समर्थन और सहायता प्राप्त हो तथा उसको ख़ुदा तआला की विशेष सहायता पहुँचे तो वह व्यक्ति सच्चा और सत्यावादी है, क्योंकि जिस प्रकार यह संभव नहीं कि एक सत्यवादी को अल्लाह तआला छोड़ दे, इसी प्रकार यह भी संभव नहीं कि एक झूठे और उपद्रवी को अल्लाह तआला पकड़ में न ले तथा वह उसके बन्दों को पथ-भ्रष्ट करता फिरे । यह बात तो और भी बुद्धि-संगत नहीं कि ऐसे झूठे की अल्लाह तआला सहायता करे और उसके लिए अपनी सहायता के द्वार खोल दे ।

अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है -

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِیٌّ عَزِیۡزٌ[216] **(कतबल्लाहो लअग़लिबन्ना अना व रुसुली – इन्नल्लाहा क़विय्युन अज़ीज़ुन)** अल्लाह तआला ने अपने ऊपर अनिवार्य कर दिया है कि वह और उसके रसूल हमेशा विजयी रहेंगे । वह शक्तिशाली और विजयी है । अत: उसने अपनी शक्ति और विजय के प्रकटन के लिए यह नियम बना दिया कि जब उसका कलाम लेकर उसके रसूल अवतरित हों तो वह उन्हें विजयी न करे तो उसकी शक्ति और सम्मान में लोगों को सन्देह उत्पन्न हो जाएगा ।

इसी प्रकार फ़रमाता है -

اِنَّا لَنَنۡصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا فِی الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا وَیَوۡمَ یَقُوۡمُ الۡاَشۡهَادُ[217]

(इन्ना लनन्सुरो रुसुलना वल्लज़ीना आमनू फ़िलहयातिद्दुनिया व यौमा यक़ूमुल अश्हाद) ''हम अवश्य अपने रसूलों की और उन लोगों की जो हमारे रसूलों पर ईमान लाते हैं तथा इस लोक में भी (संसार में) और परलोक भी में सहायता किया करते हैं ।'' और फ़रमाता है -

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ[218]

(वलाकिन्नल्लाहा युसल्लितो रुसुलहू अला मंय्यशाओ वल्लाहो अला कुल्ले शैइन क़दीर) अर्थात् ''अल्लाह तआला अपने रसूलों को जिन लोगों पर चाहता है आधिपत्य प्रदान कर देता है । अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखता है ।''

यह तो उस विषय की आयतें हैं कि अल्लाह तआला अपने रसूलों को विजय प्रदान करता है तथा उनको दूसरे लोगों पर आधिपत्य प्रदान करता है चाहे शारीरिक और आध्यात्मिक तौर पर, चाहे केवल आध्यात्मिक तौर पर । इनके अतिरिक्त क़ुर्आन करीम से यह भी ज्ञात होता है कि यदि कोई मामूर या रसूल होने का झूठा दावा करे तो उस को दण्ड भी मिलता है और वह किसी स्थिति में तबाह होने से बच नहीं सकता । अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَيۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِيۡلِ ۙ لَاَخَذۡنَا مِنۡهُ بِالۡيَمِيۡنِ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡهُ الۡوَتِيۡنَ[219]

(व लौ तक़व्वला अलैना बा'ज़लअक़ावीले लअख़ज़्ना मिन्हो बिलयमीने सुम्मा लक़तअना मिन्हुल वतीन) अर्थात् ''यदि यह रसूल जान-बूझकर हम पर झूठ बांध रहा होता तो हम उसका दायां हाथ पकड़ लेते तथा उसके प्राणों की धमनी काट डालते ।'' अर्थात् उसकी सहायता और समर्थन का द्वार बन्द कर देते तथा उसे तबाही का मुख दिखाते । इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर फ़रमाता है -

وَمَنۡ اَظۡلَمُ مِمَّنِ افۡتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوۡ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفۡلِحُ الظّٰلِمُوۡنَ[220]

(व मन अज़्लमो मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहे कज़िबन औ कज़्ज़बा बिआयातिही इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून) ''और उस से अधिक अन्याय करने वाला और कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला पर जान-बूझ कर झूठ बांधता है या अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाता है । बात

यह है कि अन्याय करने वाले सफल नहीं होते ।'' अर्थात जब कि अन्याय करने वाला सफल नहीं होता तो यह अल्लाह तआला का पापी जो सब प्रकार के आध्यात्मिक अन्याय करने वालों से अधिक अन्यायी है, कब सफल हो सकता है । उपरोक्त आयतों से ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला की ओर से दो नियम जारी हैं । एक यह कि वह अपने रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय प्रदान करता है । दूसरा यह कि जो लोग यह जानते हुए कि वे अल्लाह तआला पर झूठ बांध रहे हैं, एक बात झूठ बना कर प्रस्तुत कर दें तो उन को अल्लाह तआला की ओर से सहायता प्राप्त नहीं होती अपितु वे तबाह किए जाते हैं । जिस से ज्ञात हुआ कि जो बात पहले मैंने बौद्धिक तौर पर सिद्ध की थी । क़ुर्आन करीम भी इसका समर्थन करता है अपितु इसे ख़ुदा की सुन्नत ठहराता है ।

इस ख़ुदा की सुन्नत और अनादि नियमानुसार हम हज़रत अक़दस के दावे पर विचार करते हैं तो आप(अ) की सच्चाई हमें प्रकाशमान दिन की भाँति सिद्ध दिखाई देती है, तथा आप की सफलता को देखकर इस बात में किसी प्रकार का सन्देह और संशय ही नहीं रहता कि आप अल्लाह तआला के भेजे हुए हैं ।

पूर्व इसके कि यह देखा जाए कि आप को अल्लाह तआला की ओर से क्या-क्या सहायता और समर्थन प्राप्त हुए यह देखना आवश्यक होगा कि आप ने किन परिस्थितियों के अधीन दावा किया था अर्थात वे कौन से सामान थे जो आपकी सफलता में सहायक हो सकते थे (2) आप के मार्ग में क्या-क्या बाधाएँ थीं (3) आप का दावा किस प्रकार का था, अर्थात् क्या दावा स्वयं ऐसा आकर्षण रखता था जिसके कारण आप(अ) को प्रत्यक्ष साधनों पर दृष्टि करते हुए सफलता की आशा हो सके ।

प्रथम प्रश्न का उत्तर यह है कि यद्यपि आप(अ) एक सम्माननीय वंश से संबंध रखते थे और ऐसा होना आवश्यक था, क्योंकि अल्लाह तआला के मामूर (आदिष्ट) हमेशा उच्च वंशों में से होते हैं ताकि लोगों पर उन का मानना दूभर न हो, परन्तु आप(अ) का वंश सांसारिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से अपने पूर्व वैभव को बहुत सीमा तक खो चुका था । वह अपने क्षेत्र के वंशों में से निर्धन वंश तो नहीं कहला सकता, परन्तु उसकी पूर्व

प्रतिष्ठा और वैभव और शासन को ध्यान में रखते हुए वह एक निर्धन वंश था । क्योंकि उसकी रियासत और जागीर का अधिकांश भाग नष्ट हो चुका था । प्रथम जिसकी चर्चा की गई है (अर्थात रियासत) सिखों के युग में छीन ली गई थी और द्वितीय (अर्थात् जागीर) अंग्रेज़ी सरकार के आने पर संलग्न कर लीं गई थीं । अतः सांसारिक वैभव और आर्थिक दृष्टि से आपको कोई ऐसी श्रेष्ठता प्राप्त न थी जिसके कारण यह कहा जा सके कि लोगों ने अपने उद्देश्यों और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आप को स्वीकार कर लिया ।

आप(अ) पीरों या सूफियों के किसी वंश से संबंध नहीं रखते थे, न आप(अ) ने किसी पीर या सूफ़ी की बैअत करके उससे ख़िलाफ़त (उत्तराधिकार) की गुदड़ी प्राप्त की थी कि यह समझा जाए कि वंशगत शिष्यों या अपने पीर भाइयों की सहायता से आप को यह सफलता प्राप्त हो गई ।

आप(अ) किसी सरकारी पद विशेष पर शोभायमान न थे कि यह समझा जाए कि आप के अधिकारों से लाभान्वित होने के लिए लोग आपके साथ हो गए ।

आप(अ) एक विरक्त और लोगों से अलग रहने वाले व्यक्ति थे, जिनके एकान्तवास के कारण आस-पास के रहने वाले भी नहीं जानते थे, केवल कुछ लोगों से आप के सम्बन्ध थे, जिनमें से अधिकांश तो अनाथ और असहाय लोग थे, जिनको आप अपने भोजन में से खाने को दे दिया करते थे अथवा स्वयं भूखे रहकर अपना भोजन उनको खिला देते थे या फिर कुछ वे लोग थे जो धार्मिक खोज-बीन में रुचि रखते थे, शेष किसी व्यक्ति से आप(अ) का संबंध न होता । न आप लोगों से मिलते थे न लोगों की आवश्यकता होती थी कि आप से मिलें ।

दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि संभव से संभव जो बाधांए हो सकती हैं वे आप के मार्ग में थीं । आप(अ) का दावा मामूर होने का था और आप के दावे को सच्चा मान कर विद्वानों का प्रभुत्व जो उन्हें सैकड़ों वर्ष से लोगों पर प्राप्त था जाता रहता था । इसलिए विद्वानों को स्वाभाविक तौर पर आप(अ) से विरोध था । वे आप की उन्नति में अपनी अवनति और आपके बढ़ने में अपना पतन देखते थे, वे जानते थे कि यदि एक

व्यक्ति ख़ुदा से सूचना पाकर संसार के सुधार के लिए खड़ा हो गया तो फिर हमारे अनुमानों को कौन पूछता है ।

गद्दीनशीन (किसी से उत्तराधिकार प्राप्त) आप के शत्रु थे क्योंकि आप की सच्चाई के प्रसार से उनके अनुयायी उनके हाथों से जाते थे और बजाए शैख़ और पथ-प्रदर्शक कहलाने के एक अन्य व्यक्ति का अनुयायी बन कर उन्हें रहना पड़ता था और फिर अनुयायियों के जाने के साथ उनकी आयों में भी अन्तर आता था जिन पर उनका निर्वाह था और उन स्वतंत्रताओं में भी अन्तर आता था जिन्हें वे अपना अधिकार समझते थे ।

समृद्धशाली लोगों को भी आप(अ) से विरोध था क्योंकि आप इस्लामी आदेशों का पालन करने वाले थे और उन्हें इस प्रकार की पाबन्दी की आदत न थी तथा इसे वह अपने प्राण के लिए कष्ट समझते थे और फिर यह भी था कि आप(अ) प्रजा के साथ व्यवहार कुशलता और सहानुभूति का आदेश देते थे, जिसके कारण समृद्धशाली लोगों का विचार था कि आप की शिक्षा के प्रसार से वह दासता की स्थिति जो लोगों में उत्पन्न है दूर हो जाएगी तथा उनकी दृष्टि विशाल होकर हमारा प्रभुत्व जाता रहेगा ।

अन्य धर्मों के लोग भी आप(अ) के शत्रु थे क्योंकि उन्हें आप में वह व्यक्ति दिखाई दे रहा था जिस से उन के धर्मों की तबाही निश्चित थी । जिस प्रकार एक बकरी एक शेर से स्वाभाविक तौर पर घृणा रखती है इसी प्रकार अन्य धर्मों के लोग आप से खिंचाव महसूस करते और प्रयास करते थे कि जितनी शीघ्र हो सके आप को मिटा दें ।

समय के शासकगण भी आप(अ) के विरोधी थे क्योंकि वे भी मसीह तथा महदी के नामों से भयभीत थे और प्राचीन रिवायतों के प्रभाव से प्रभावित होकर उन नामों वाले व्यक्ति की उपस्थिति और उपद्रव के फैलने को अनिवार्य और निश्चित समझते थे । आप(अ) का वफ़ादारी का प्रकटन उनके लिए संतोष का कारण न था, क्योंकि वे उसे अवसरवादिता समझते थे और जानते थे कि जब उनको शक्ति प्राप्त हो जाएगी, उस समय यह उन शान्ति के विचारों को कदाचित त्याग दें ।

जन साधारण को भी आप से विरोध था, क्योंकि प्रथम तो वे विद्वानों या पीरों या समृद्धिशाली लोगों या पंडितों या पादरियों के अधीन होते हैं।

द्वितीय वे मूर्खता, रीति-रिवाजों के कारण प्रत्येक नई बात के कठोर विरोधी होते हैं, उनके निकट आप का दावा एक नया दावा और इस्लाम में विघ्न डालने का कारण था, इसलिए वे कुछ तो अपने सरदारों के संकेतों पर और कुछ अपनी मूर्खतावश आप के विरोधी थे ।

इन समस्त समूहों ने अपने-अपने स्थान पर आप को तबाह करने के लिए भरपूर ज़ोर लगाया, विद्वानों ने कुफ्र के फत्वे तैयार किए और मक्का तथा मदीना तक अपने कुफ्र के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर कराने के लिए गए । अपनी हमेशा की आदत के अन्तर्गत उन्होंने कुफ्र के अत्यंत विचित्र कारणों को तलाश किया तथा लोगों को आप के विरुद्ध भड़काया और प्रोत्साहित किया ।

सूफ़ियों ने आपके मार्ग को पूर्व के मार्गों के विरुद्ध बता-बता कर तथा अपनी अल्लाह तआला से सानिध्यता और आध्यात्म ज्ञान की डींगों से भयभीत करके जन साधारण को रोका और मिथ्या कहानियों के फैलाने और छलयुक्त चमत्कारों के प्रदर्शन तक से भी पलायन न किया तथा कुछ ने तो अपने शिष्यों से यहां तक कह दिया कि यदि यह सच्चे हुए तो इन के न मानने का पाप हम उठा लेंगे, तुम लोग कुछ चिन्ता न करो । इस प्रकार संसार को गुमराह किया ।

धनाढ्य लोगों ने अपने धन और अपनी प्रतिष्ठा से आप के विरुद्ध प्रयत्न प्रारंभ किया । अन्य धर्मावलम्बियों ने अपने तौर पर मुसलमानों का हाथ बंटाया, सरकारों ने अपने अधिकार से काम लेकर लोगों को आप(अ) से भयभीत करना आरंभ किया और जो लोग आप को स्वीकार करना चाहते उनको अपने क्रोध का भय दिला कर रोकना चाहा, जन साधारण बाईकाट और कष्ट पहुँचाने से काम लेकर अपने सरदारों का हाथ बटाते रहे ।

अतएव आप के विरोध के लिए समस्त लोग, क्या मुसलमान कहलाने वाले और क्या मुसलमान न कहलाने वाले सभी एकत्र हो गए और सब ने परस्पर सहयोग किया ।

तीसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि आप की शिक्षा भी ऐसी न थी जो सामयिक परिस्थितियों के अनुकूल हो तथा उसकी धारा में बहने वाली हो, यदि वह सामयिक विचार धारा के अनुकूल होती तो भी कहा जा सकता

था कि आप की उन्नति आकाशीय सहायता से नहीं अपितु इस कारण से है कि आप ने संसार के समक्ष जिस विचारधारा को प्रस्तुत किया था वह उस समय की विचारधारा के अनुकूल थी । अतः लोगों ने उसको अपनी आन्तरिक अनुभूतियों के अनुकूल पाकर स्वीकार कर लिया । युग के अनुकूल विचारधारा दो प्रकार की होती हैं - या तो वह अधिकांश लोगों की विचाधारा के अनुकूल हो अथवा वह अधिकांश प्रजा की विचारधारा के तो विरोधी हो, परन्तु उन विचारधाराओं के समर्थन में हो जो उस समय के सांसारिक ज्ञानों का परिणाम हों । प्रथम विचारधारा का प्रसारण तो अत्यन्त सरल होता है परन्तु द्वितीय विचारधारा भी यद्यपि प्रारंभ में विरोध का मुख देखती है, परन्तु चूँकि आधुनिक विद्याओं का अनिवार्य परिणाम होती हैं कुछ समय के पश्चात आधुनिक विद्याओं के उत्थान के साथ-साथ फैलती जाती हैं ।

हज़रत अक़दस(अ) की विचारधारा इन दोनों प्रकार की विचारधाराओं के विरुद्ध थी । आप उन विद्याओं की ओर लोगों को आमंत्रित कर रहे थे जो न प्रचलित विचारों के अनुकूल थीं और न आधुनिक विद्याओं की शिक्षा के माध्यम से जो विचार फैल रहे थे उनके अनुकूल थीं । इसलिए आप का दोनों सदस्यों से मुक़ाबला था । पुराने विचार के लोगों से भी और नवीन विचार के लोगों से भी । रूढ़िवादी आपको नास्तिक ठहराते थे, आधुनिक शिक्षा प्राप्त लोग आप की संकीर्ण विचार और उल्टे पांव लौटने में सहायक ठहराते थे क्योंकि आप(अ) यदि एक ओर मसीह के जीवन, किस्सों, मिथ्या रिवायतों, फ़रिश्तों के संबंध में जनसाधारण के विचारों, क़ुर्आन में निरस्तता, नर्क-स्वर्ग के सन्दर्भ में लोगों के विचारों और शरीअत में संकीर्णता के विरुद्ध नितान्त कठोरता के साथ प्रवचन देते थे तो दूसरी ओर शरीअत के आदेशों की अक्षरशः पाबन्दी, ब्याज की निषिद्धता, फ़रिश्तों के अस्तित्व, दुआ के लाभ, स्वर्ग-नर्क के यथार्थ होने, इल्हाम के निश्चित शब्दों में उतरने, तथा चमत्कारों के सत्य होने के समर्थन पर बल देते थे । परिणाम यह था कि नवीन और प्राचीन विचार के समूहों में किसी समूह से भी आप के विचार समानता नहीं रखते थे । अतः यह भी नहीं कहा जा सकता कि चूँकि आप के विचार प्रचलित या भविष्य में प्रचलन पाने वाले विचारों का प्रतिनिधित्व करते थे, इस कारण मान्य हुए ।

सारांश यह कि न तो आप(अ) की व्यक्तिगत स्थिति ऐसी थी कि आप(अ) का दावा स्वीकार किया जाता, न आपका मार्ग फूलों की शैया पर से गुज़रता था कि आप को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त होती और न वे विचार जो आप(अ) लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते थे ऐसे थे कि उन से लोगों के विचारों का सामंजस्य होता हो कि लोग आप को स्वीकार कर लें। अतः बावजूद इन समस्त विरोधी परिस्थितियों के यदि आप(अ) ने सफलता प्राप्त की तो यह एक ख़ुदाई कार्य था न कि सांसारिक और भौतिक साधनों का परिणाम ।

इन परिस्थितियों का उल्लेख करने के पश्चात मैं आपकी सफलताओं का वर्णन करता हूँ । मैं बता चुका हूँ कि क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला ने अपना नियम वर्णन किया है कि वह जान बूझ कर अल्लाह तआला पर झूठ बांधने वाले को लम्बी छूट नहीं दिया करता, परन्तु आप(अ) के सन्दर्भ में हम देखते हैं कि आप उन इल्हामों को प्रकाशित करने के पश्चात जिन में आप ने सुधारक होने की घोषणा की थी लगभग चालीस वर्ष जीवित रहे और प्रत्येक प्रकार से अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन प्राप्त करते रहे । यदि ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला भी इतनी छूट (अवकाश) पा सकता है और तबाही से बचाया जाता है और अल्लाह तआला से सहायता पाता है तो फिर (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) यह स्वीकार करना पड़ेगा कि - وَلَوۡ تَقَوَّلَ **(वलौ तक़व्वला)** वाली आयत में जो मापदण्ड बताया गया है वह ग़लत है और यह कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का दावा प्रमाणरहित रहा है । यदि यह बात नहीं और कदापि नहीं तो फिर इसी सबूत के अधीन हज़रत अक़दस अलैहिस्सलातो वस्सलाम का अपने इल्हामों को प्रकाशित करने के बाद इतने दीर्घकाल तक तबाही से बचाया जाना इस बात का प्रमाण है कि आप अल्लाह तआला की ओर से थे ।

जिस समय आप(अ) ने अपने इल्हामों को प्रकाशित किया था उस समय आप(अ) का नाम संसार में कोई व्यक्ति भी नहीं जानता था, परन्तु तत्पश्चात बावजूद लोगों के विरोध के आप को वह सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई कि अब शत्रु भी आप का आदर करते हैं और आप एक मुस्लिम नेता स्वीकार किए जाते हैं । बर्तानवी सरकार जो आरंभ में आप

की विरोधी थी और आप से दुर्भावना रखती थी, आप को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखती है । संसार के दूरवर्ती किनारों तक आप का नाम प्रसारित है, तथा इस प्रकार का अनुराग और प्रेम रखने वाले लोग अल्लाह तआला ने आप को दिए हैं कि वे अपने प्राण तक आप पर बलिदान करने के लिए तैयार हैं और यूरोपियन जो इस्लाम के शत्रु थे उन्होंने आप(अ) के माध्यम से इस्लाम को स्वीकार किया है और आप(अ) के प्रेम में इतने मुग्ध हैं कि उन में से एक व्यक्ति ने मुझे लिखा है कि मुझ पर मिर्ज़ा साहिब ने उपकार किया है कि उनके माध्यम से मुझे इस्लाम जैसी नैमत प्राप्त हुई है इसका प्रभाव मुझ पर इतना है कि मैं सोता नहीं जब तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ आप(अ) पर भी दरूद नहीं भेज देता। यह आदर, यह सम्मान और यह प्रेम बावजूद लोगों के इतने विरोध के कभी प्राप्त नहीं हो सकता यदि आप ख़ुदा तआला पर झूठ बांधने वाले थे ।

आप(अ) ने जब दावा किया तो आप अकेले थे, परन्तु बावजूद इसके कि मौलवियों, पीरों, गद्दीनशीनों, पंडितों, पादरियों, धनाढ्यों, जन साधारण और आरंभ में शासकों ने भी अपना ज़ोर लगाया कि लोग आपकी बात को स्वीकार न करें और आप के सिलसिले में प्रवेश न करें । एक एक करके लोग आप के सिलसिले में प्रवेश करने लगे । निर्धनों में से भी और धनवानों में से भी, विद्वानों में से भी और सूफियों में से भी, मुसलमानों में से भी और हिन्दुओं तथा ईसाइयों में से भी, हिन्दुस्तानियों में से भी और दूसरे देशों के लोगों में से भी, यहाँ तक कि आप(अ) के निधन के समय आप(अ) की जमाअत सहस्त्रों से निकल कर लाखों तक उन्नति कर चुकी थी और अब तक निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है । यहाँ तक स्वयं आप के राज्य (अफ़ग़ानिस्तान) में भी बावजूद इसके कि इस सिलसिले के दो निष्कपट व्यक्ति मात्र धार्मिक मतभेद के आधार पर मुल्लाओं के धोखा देने के कारण क़त्ल किए गए थे । यह जमाअत उन्नति कर रही है और लगभग प्रत्येक राज्य में इस जमाअत के कुछ न कुछ व्यक्ति पाए जाते हैं तथा इसके अतिरिक्त इस जमाअत के लोग अरब में भी हैं, ईरान में भी हैं, रूस में भी हैं, अमरीका में भी हैं, अफ्रीका के पश्चिमी, उत्तरी, और दक्षिणी क्षेत्रों में भी हैं, आस्ट्रेलिया में भी और

यूरोप में भी हैं । एक अधीन क़ौम के एक सदस्य के अनुसरण में शासन कर रही क़ौम के सदस्यों का आ जाना और फिर उस धर्म को स्वीकार करके जिस के विरुद्ध उन के हृदयों में वंशानुगत द्वेष बैठाया गया था, ख़ुदा की सहायता के बिना असंभव है ।

लोगों ने आप(अ) की हत्या करना भी चाही, विष देकर भी मारना चाहा, अदालतों में भी आप को घसीटा, झूठे मुक़द्दमे भी आप पर स्थापित किए, ईसाई. हिन्दू और मुसलमान सब परस्पर मिल गए ताकि पूर्वकालीन मसीह की भाँति दूसरे मसीह को भी सलीब पर लटका दें, परन्तु प्रत्येक बार आप सफल हुए और प्रत्येक आक्रमण से आप सुरक्षित रहे, दिन-प्रतिदिन ख़ुदा तआला का समर्थन और सहायता बढ़ती गई ।

आप(अ) इस्लाम के प्रचार और इस्लाम के नवीनीकरण के लिए अवतरित हुए थे । इन दोनों कार्यों के लिए अल्लाह तआला ने आप को निष्कपट लोगों की एक जमाअत प्रदान की, धन भी दिया यहाँ तक कि इस समय सिलसिले की ओर से चार-पांच लाख रुपया वार्षिक धार्मिक कार्यों पर व्यय होता है, कई अख़बार इस्लाम के प्रचार के लिए पंजाब, बंगाल, सीलोन (श्रीलंका), मारीशस और अमरीका से जारी हैं और सैकड़ों किताबें आप के समर्थन में लिखी गई हैं । लोगों के हृदयों को अल्लाह तआला आप की सहायता के लिए प्रेरित करता है और सहस्त्रों हैं जिन को रोया (स्वप्न) के माध्यम या इल्हाम के माध्यम अथवा कश्फ़ (परोक्ष की बातों का ख़ुदा की ओर से प्रकटन) के माध्यम से आप की सच्चाई बताई गई है और बावजूद विरोधी होने के उनके हृदयों में आप का प्रेम डाला गया है ।

अत: बावजूद प्रत्येक प्रकार के विरोधी सामानों के और प्रत्येक प्रकार के विरोध के तथा प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी के और असाधारण कार्य के आप अपने उद्देश्य में सफल हुए और एक ऐसी जमाअत जो समस्त संसार में फैली हुई है और अपने सीनों में इस्लाम के प्रचार की ज्वाला रखती है आप ने तैयार कर दी और क्या सम्मान की दृष्टि और क्या धन-दौलत की दृष्टि और क्या अधिकार की दृष्टि और क्या रोब-दाब की दृष्टि के अल्लाह तआला सहायता करता रहा है ।

अत: यदि अल्लाह तआला का बताया हुआ यह नियम सच्चा है तथा अल्लाह तआला से सच्चा और कौन हो सकता है ? कि सच्चा मामूर

अल्लाह तआला की ओर से सहायता पाता है और ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला अपमानित तथा तबाह किया जाता है । तो फिर हज़रत अक़दस(अ) की सच्चाई में कोई सन्देह नहीं रह जाता और यदि बावजूद इस सबूत के आप की सच्चाई में सन्देह किया जाए तो फिर प्रश्न किया जा सकता है कि अन्य नबियों की सच्चाई का क्या प्रमाण है ?

मैं अपने उद्देश्य की स्पष्टता के लिए पुन: यह कह देना आवश्यक समझता हूँ कि मेरा यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत अक़दस इसलिए सच्चे थे कि आप पहले कमज़ोर थे, परन्तु फिर आप को सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई । ऐसे सम्मान तो अधिकांश लोगों को प्राप्त हुए हैं । नादिर खान एक कमज़ोर व्यक्ति था फिर सम्मान पा गया, नेपोलियन एक साधारण व्यक्ति से विश्व-विजयी बन गया, परन्तु बावजूद इस के यह सिद्ध नहीं होता कि ये लोग अल्लाह के प्रिय और बुज़ुर्ग थे । मैं यह कहता हूँ कि :-

(1) हज़रत अक़दस(अ) ने दावा किया था कि आप अल्लाह तआला की ओर से हैं । यदि वह इस दावे में झूठे थे और जान-बूझ कर लोगों को धोखा दे रहे थे तो आप को तबाह हो जाना चाहिए था, क्योंकि अल्लाह तआला का नियम है कि ऐसे ख़ुदा पर झूठ बांधने वाले को वह तबाह करता है ।

(2) आप की उन्नति के लिए कोई भौतिक सामान उपलब्ध न थे ।

(3) आप(अ) के विरोध पर प्रत्येक जमाअत खड़ी हो गई थी और कोई जमाअत भी दावे के समय आप की अपनी न कहलाती थी, जिसकी सहायता से आप को उन्नति प्राप्त हुई हो ।

(4) आप(अ) ने संसार से वे बातें स्वीकार कराईं जिनके विरुद्ध रूढ़िवादी और आधुनिक विचारों के लोग थे ।

(5) इसके बावजूद आप सफल हुए और आपने एक जमाअत स्थापित कर दी और अपने विचारों को लोगों से स्वीकार करा लिया और शत्रु के प्रहारों से बच गए तथा अल्लाह तआला के समर्थन आप के लिए उतरे ।

ये पाँच बातें झूठे में कभी एकत्र नहीं हो सकतीं । ये बातें जब भी किसी में एकत्र होंगी वह अल्लाह तआला की ओर से होगा और सच्चा होगा अन्यथा सच्चों की सच्चाई का कोई प्रमाण शेष नहीं रहेगा ।

हाँ यदि कोई व्यक्ति मामूर होने का दावेदार न हो अर्थात चाहे बिल्कुल

दावेदार हो ही नहीं जैसे नादिर ख़ान या नेपोलियन अथवा मामूर होने का दावेदार न हो अपितु किसी अन्य बात का दावेदार हो, उदाहरणतया जैसे ख़ुदाई का दावेदार हो या यह कि वह पागल हो, वह इस मापदण्ड के अन्तर्गत नहीं आता, इसी प्रकार ऐसी आस्था रखने वाला भी कि वह जो कुछ कह रहा है अल्लाह की ओर से कह रहा है इस मापदण्ड पर परखा नहीं जा सकता । शैख़िया सम्प्रदाय इसी प्रकार की आस्था रखता था । उसका विचार था कि संसार में हर समय ऐसे लोग विद्यमान रहते हैं जो महदी की इच्छा का प्रतिनिधित्व करते हैं और महदी की इच्छा ख़ुदा की इच्छा है । अतः उन की जीभ पर जो कुछ जारी हो या जो कुछ उनके हृदय में आए वह ख़ुदा की ओर से होता है । अली मुहम्मद बाब और बहाउल्लाह संस्थापक बहाई सम्प्रदाय इसी सम्प्रदाय में से थे । ऐसे लोग चूँकि आस्थागत इस बात को स्वीकार करते हैं कि वे जो कुछ कह रहे हैं अल्लाह तआला की ही ओर से कह रहे हैं इसलिए वे भी مُتَقَوِّلْ **(मुतक़व्विल)** (झूठ घड़ने वाले) नहीं कहला सकते तथा उस दण्ड के पात्र नहीं जिस दण्ड के जान-बूझ कर झूठ बांधने वाले लोग पात्र हैं ।

इसी प्रकार उस व्यक्ति की अस्थायी उन्नति भी उसकी सच्चाई का सबूत नहीं जिसकी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा लोगों को उसके मानने पर विवश कर दे अथवा कोई जमाअत जिसके पीछे हो या जो जन सामान्य के विचारों का प्रतिनिधित्व कर रहा हो अथवा आधुनिक विद्याओं के झुकाव की ओर लोगों को ला रहा हो या एक या दूसरे कारण से लोग उस का विरोध करने से बचे रहें ।

सातवाँ सबूत

शत्रुओं की तबाही

आप(अ) के दावे की सच्चाई का सातवां सबूत कि वह भी असंख्य सबूतों का संग्रह है यह कि आप के शत्रुओं को अल्लाह तआला ने बिना अपवाद और बिना किसी मानवीय हाथ की सहायता के तबाह किया । हम देखते हैं कि हमारे प्रियजनों को जो कष्ट दे हम उस का मुकाबला

करते हैं और उसे दण्ड देते हैं तथा जो हमारे कार्यों में बाधा बने उसे अपने मार्ग से हटा देते हैं । अतः यदि ख़ुदा तआला की ओर से मामूर आते हैं तो बुद्धि चाहती है कि उनके लिए ख़ुदा तआला अपना स्वाभिमान भी प्रदर्शित करे तथा उन के मार्ग में जो बाधाएं हों उन्हें उनके मार्ग से दूर कर दे और जो उन्हें अपमानित करना चाहें उनको अपमानित कर दे और जो उन्हें असफल करने का प्रयास करें उनको असफलता का मुख भी दिखाए । यदि वह ऐसा न करे तो उसका संबंध और उसका प्रेम प्रमाणरहित रहे और मामूरों के दावे संदिग्ध हो जाएँ, क्योंकि संसार के राजा और शासक जिन की शक्तियाँ सीमित होती हैं वे भी अपने मित्रों और अपने कर्मचारियों के मार्ग में बाधा बनने वालों को दण्ड देते हैं तथा उनसे शत्रुता रखने वालों की पकड़ करते हैं ।

क़ुर्आन करीम से भी ज्ञात होता है कि यह हमारी बुद्धि की माँग बिल्कुल उचित है और अल्लाह तआला सत्यापन करता है कि इस ओर से आने वालों के शत्रुओं और दुश्मनों की अवश्य पकड़ होना चाहिए । अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ط اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ

(व मन अज़्लमो मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहे कज़िबन और कज़्ज़बा बिआयातिही - इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून) (अनआम, रुकूअ : 3) अर्थात ''उससे अधिक अन्यायी कौन हो सकता है जो अल्लाह तआला पर जान-बूझ कर झूठ बांधे या अल्लाह तआला की ओर से आने वाले की बातों को झुठला दे । बात यह है कि अन्याय करने वाले कभी सफल नहीं होते ।''

इस आयत में बताया है कि जिस प्रकार अल्लाह तआला पर झूठ बांधने वाला कभी सफल नहीं हो सकता उसी प्रकार अल्लाह तआला की ओर से आने वाले की बातों का झुठलाने वाला भी कभी सफल नहीं हो सकता ।

इसी प्रकार फ़रमाता है -

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ٥ قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ 221

(व लक़दिस्तुहज़िआ बिरुसिलिम्मिन क़ब्लिका फ़हाक़ा बिल्लज़ीना सख़िरू मिन्हुम मा कानू बिही यस्तहज़िऊन क़ुल सीरू फ़िलअर्ज़े सुम्मन्ज़ुरू कैफ़ा काना आक़िबतुलमुकज़्ज़िबीन) ''और तुझ से पूर्व जो रसूल गुज़रे हैं उन के साथ भी हंसी-ठट्ठा किया गया, परन्तु अन्ततः यह हुआ कि वे लोग जो उनमें विशेष तौर पर ठट्ठा करने वाले थे उनको उन वस्तुओं ने घेर लिया जिन से वे हंसी करते थे । तू कह दे कि जाओ पृथ्वी पर ख़ूब घूमो-फिरो और देखो कि ख़ुदा के नबियों को झुठलाने वालों का परिणाम क्या हुआ है ।'' इस विषय की आयतें इस बहुलता से क़ुर्आन करीम में पाई जाती हैं कि इस पर अधिक बल देने की आवश्यकता नहीं । सारांश यह है कि अल्लाह तआला का नियम है कि उसके मामूरों (आदिष्टों) और भेजे हुए रसूलों का मुक़ाबला करने वाले तबाह किए जाते हैं और दूसरों के लिए शिक्षा का कारण होते हैं ।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को भी इसी विषय का इल्हाम हुआ था कि إِنِّي مُهِينٌ مَّنْ أَرَادَ إِهَانَتَكَ[222] **(इन्नी मुहीनुन मन अरादा इहानतका)** मैं उसे अपमानित करूँगा जो तुझे अपमानित करने का इरादा भी करेगा और इस निरन्तर चले आ रहे नियम और विशेष आश्वासन के अनुसार हज़रत अक़दस अलैहिस्सलातो वस्सलाम के शत्रुओं के साथ वह व्यवहार हुआ है कि देखने वाले स्तब्ध और सुनने वाले आश्चर्य में हैं ।

मैं एक बड़े मौलवी साहिब की चर्चा कर चुका हूँ जो अहले हदीस सम्प्रदाय के नेता थे और जो हज़रत अक़दस अलैहिस्सलातो वस्सलाम के बाल्यावस्था के परिचित थे, जिन्होंने आप की किताब 'बराहीन अहमदिया' के प्रकाशित होने पर एक ज़बरदस्त समीक्षा लिखी थी, उसमें आप(अ) की सेवाओं को अनुपम और अद्वितीय ठहराया था । जब आपने मसीह मौऊद होने का दावा किया तो यह मौलवी साहिब बिगड़ गए और बहुत नाराज़ हुए तथा उन्होंने यह सोचा कि शायद किताब बराहीन अहमदिया पर मैंने जो समीक्षा लिखी थी उस पर इनके हृदय में अहंकार उत्पन्न हो गया है और यह भी स्वयं को कुछ समझने लग गए हैं । इस विचार से उन्होंने यहाँ तक लिख दिया कि यह मेरी समीक्षा पर गौरवान्वित हैं, मैंने ही इसे बढ़ाया है और मैं ही इसको अब गिरा दूँगा ।

यह प्रण करके यह मौलवी साहिब अपने घर से निकले और हिन्दुस्तान के एक कोने से दूसरे कोने तक का भ्रमण किया और बीसियों विद्वानों से कुफ्र का फ़त्वा लिया और उन फ़त्वों में यहाँ तक लिखवा लिया कि यह व्यक्ति ही काफ़िर नहीं अपितु उसके अनुयायी भी काफ़िर हैं अपितु जो व्यक्ति उन से बात करे वह भी काफ़िर है और जो व्यक्ति उनको काफ़िर न समझे वह भी काफ़िर है । इस फ़त्वे को समस्त हिन्दुस्तान में छपवा कर प्रचारित किया और विचार कर लिया कि इस शक्तिशाली आक्रमण से मैंने उनको अपमानित कर दिया परन्तु उस बेचारे को क्या मालूम था कि आकाश पर अल्लाह तआला के फ़रिश्ते पुकार-पुकार कर कह रहे थे कि -

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ[223]

(व लक़दिस्तुहज़िआ बिरुसुलिम्मिन क़ब्लिका फ़हाक़ा बिल्लज़ीना सख़िरू मिन्हुम मा कानू बिही यस्तहज़िऊन) और इसी प्रकार उसके फ़रिश्ते पुकार-पुकार कर कह रहे थे कि اِنِّیْ مُهِیْنٌ مَّنْ اَرَادَ اِهَانَتَكَ **(इन्नी मुहीनुन मन अरादा इहानतका)** मैं उसका अपमान करूँगा जो तेरे अपमान का इरादा करेगा ।

हे बादशाह ! इस फ़त्वे को प्रकाशित हुए अभी बहुत समय नहीं हुआ था कि उन मौलवी साहिब का सम्मान लोगों के हृदयों से अल्लाह तआला ने मिटाना आरंभ किया । इस फत्वे के प्रकाशित होने से पूर्व उन को यह सम्मान प्राप्त था कि पंजाब की राजधानी लाहौर जैसे शहर में जो स्वतंत्र स्वभाव लोगों का शहर है जब वह बाज़ारों से गुज़रते थे तो जहाँ तक दृष्टि जाती थी लोग उनके आदर और सम्मान के कारण खड़े हो जाते और हिन्दू इत्यादि अन्य धर्मों के लोग भी मुसलमानों के सम्मान को देख कर उनका सम्मान करते थे और जहाँ जाते लोग उन्हें आँखों पर उठाते और उच्च शासक जैसे गर्वनर तथा गर्वनर जनरल उन से सम्मानपूर्वक मिलते थे, परन्तु इस फत्वे के प्रकाशित करने के पश्चात बिना किसी प्रत्यक्ष सामान के उत्पन्न होने के उनका सम्मान घटना आरंभ हुआ और नौबत अन्ततः यहाँ तक पहुँची कि स्वयं उस सम्प्रदाय के लोगों ने भी उनको छोड़ दिया जिसके

वह नेता कहलाते थे और मैंने उनको अपनी आँखों से देखा है कि स्टेशन पर अकेले अपना सामान जो थोड़ा न था अपनी बगल और पीठ पर उठाए हुए तथा अपने हाथों में पकड़े हुए चले जार रहे हैं, और चारों ओर से धक्के मिल रहे हैं, कोई पूछता नहीं, लोगों में अविश्वसनीयता इतनी बढ़ गई कि बाज़ार वालों ने सौदा देना तक बन्द कर दिया । दूसरे लोगों के माध्यम से सौदा मंगवाते, घर वालों ने सम्बन्ध विच्छेद कर लिया, कुछ लड़कों और पत्नियों ने मिलना-जुलना छोड़ दिया, एक लड़का इस्लाम से मुरतद (धर्म को त्यागने वाला) हो गया। अतः समस्त प्रकार के सम्मानों से हाथ धोकर तथा इबरत (नसीहत) का नमूना दिखा कर इस संसार से कूच कर गए तथा अपने जीवन के अन्तिम दिनों के एक-एक क्षण से इस आयत की सच्चाई का प्रमाण देते चले गए कि قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ **(कुल सीरू फ़िल अर्ज़े सुम्मन्ज़ुरू कैफ़ा काना आक़िबतुलमुकज़्ज़िबीन)** ।

आप(अ) के शत्रुओं की तबाही का दूसरा उदाहरण मैं चिराग़दीन, निवासी जम्मू का प्रस्तुत करता हूँ । यह व्यक्ति पहले हज़रत अक़दस(अ) के अनुयायियों में से था, परन्तु बाद में उसने दावा किया कि वह स्वयं संसार के सुधार के लिए अवतरित हुआ है और आप(अ)के विरुद्ध उसने कई पत्रिकाएँ और लेख प्रकाशित किए और अन्ततः जब इस से भी संतुष्टि नहीं हुई तो आप(अ) के विरुद्ध दुआ की और उस दुआ को प्रकाशित करने का इरादा किया । उस दुआ का लेख यह था कि :-

''हे ख़ुदा ! तेरा धर्म इस व्यक्ति (अर्थात् हज़रत अक़दस(अ)) के कारण मुसीबत में है और यह व्यक्ति लोगों का डराता है कि ताऊन (प्लेग) मेरे ही कारण उतरी है और भूकम्प भी मुझे ही झुठलाने का परिणाम है । तू इस व्यक्ति को झूठा कर और ताऊन को अब उठा ले ताकि इसका झूठा होना सिद्ध हो जाए तथा सत्य और असत्य में अन्तर कर दे ।'' **223**

यह दुआ लिख कर उसने छपने को दी परन्तु ख़ुदा तआला की पकड़ को देखिए कि दुआ के लेख की प्रतियाँ लिखी जा चुकी थीं, परन्तु अभी पत्थर पर नहीं जमाई गई थीं कि वही ताऊन (प्लेग) जिसके उठाए जाने की दुआ उसने इस लिए की थी ताकि हज़रत अक़दस(अ) का यह दावा झूठा हो जाए कि ताऊन मेरी सच्चाई को सिद्ध करने के लिए फैलाई गई

है, उसने उसके घर पर आकर प्रहार किया और पहले तो उसके दो पुत्र कि वे ही उसकी संतान थे ताऊन से ग्रस्त होकर मर गए और उसकी पत्नी उसे छोड़ कर किसी अन्य व्यक्ति के साथ भाग गई, पुत्रों की मृत्यु के पश्चात वह स्वयं भी ताऊन ही से रोगग्रस्त होकर मर गया । मरते समय यह कहता था कि अब तो ख़ुदा ने भी मुझे छोड़ दिया । इस व्यक्ति की मौत ने भी बड़े वैभवशाली शब्दों में इस बात पर साक्ष्य दी कि मामूरों का विरोध कोई साधारण बात नहीं, जो शीघ्र या देर से ख़ुदा के प्रकोप से ग्रस्त करता है ।

चिराग़दीन जम्मूनी के अतिरिक्त अन्य बीसियों व्यक्ति ऐसे हैं जिन्होंने आप(अ) के विरुद्ध मुबाहिले के लिए दुआएँ कीं और अति शीघ्र ख़ुदा की पकड़ में आ गए जैसे कि मौलवी गुलाम दस्तगीर क़सूरी । यह हनफ़ियों में से (इमाम अबू हनीफ़ा के मार्ग को मानने वाले) एक श्रेष्ठ विद्वान और प्रतिष्ठावान व्यक्ति था । उसने भी आपके विरुद्ध दुआ की थी तथा अल्लाह तआला से झूठे और सच्चे के मध्य निर्णय चाहा । यह व्यक्ति भी अतिशीघ्र अर्थात कुछ ही महीनों के अन्दर-अन्दर ताऊन से रोगग्रस्त होकर तबाह हो गया और लोगों के लिए इबरत (नसीहत) का कारण बना ।

एक व्यक्ति फ़क़ीर मिर्ज़ा नाम का निवासी दुलमियाल ज़िला जेहलम का था । उस ने लोगों में यह कहना आरंभ किया कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के सन्दर्भ में मुझे बताया गया है कि इस रमज़ान की सत्ताईस तारीख तक वह मिट जाएँगे और जमाअत अहमदिया के स्थानीय सदस्यों को एक पत्र लिख कर दे दिया, जिसमें उस कश्फ़ की चर्चा की और लिखा कि यदि सत्ताईस रमज़ानुलमुबारक सन् 1321 हिज्री तक मिर्ज़ा साहिब तबाह न हुए या उनका सिलसिला तबाह न हुआ तो मैं प्रत्येक प्रकार का दण्ड सहन करने के लिए तैयार हूँ । उस कागज़ पर बहुत से लोगों के हस्ताक्षर करवा कर जमाअत अहमदिया के सदस्यों को दे दिया । यह कागज़ जैसा कि उस पर लिखा हुआ है सात रमज़ानुलमुबारक सन् 1321 हिज्री को लिखा गया । तत्पश्चात् सत्ताईस रमज़ान तो गुज़र ही गया और ऐसा ही होना चाहिए था । सच्चों पर झूठों की बातों का क्या प्रभाव हो सकता था, परन्तु अगला रमज़ान आया तो उस गांव में ताऊन प्रकट हुई और पहले उस व्यक्ति की पत्नी मरी

फिर यह स्वयं बीमार हुआ और पूरे एक वर्ष के पश्चात् उसी तिथि जिस तिथि को उसने वह पत्र लिख कर दिया था अर्थात सात रमज़ान मुबारक को यह व्यक्ति सख्त तकलीफ और कष्ट उठाकर मर गया और कुछ दिन बाद उसकी पुत्री भी गुज़र गई ।

ये उदाहरण यदि एकत्र किए जाएँ तो सैकड़ों अपितु सहस्त्रों की संख्या तक पहुँच जाएँ, क्योंकि सैकड़ों हज़ारों लोगों ने सबूतों से तंग आ कर तथा हठ में गिरफ्तार होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के विरुद्ध दुआएँ कीं और वह अल्लाह तआला की पकड़ में आ गए, परन्तु सर्वाधिक विचित्र बात यह है कि अल्लाह तआला ने इस तबाही और अपमान के निशान को कई रूप में दिखाया है। जिन लोगों ने यह कहा कि अल्लाह तआला झूठे को सच्चे के जीवन में तबाह करे, उनको आप के जीवन में तबाह कर दिया और जिन लोगों ने कहा कि झूठे का सच्चे के जीवन में तबाह हो जाना कोई सबूत नहीं है अपितु झूठे को लम्बी छूट दी जाती है, जैसा कि मुसैलिमा कज़्ज़ाब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात् तबाह हुआ, उनको अल्लाह तआला ने छूट दी और मुसैलिमा कज़्ज़ाब का समतुल्य बना दिया ।

इस प्रकार के निशानों में से एक उदाहरण मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी साहिब जो अख़बार 'अहले हदीस' के ऐडीटर हैं और अहले हदीस सम्प्रदाय के नेता कहलाते हैं । यह सज्जन अपने विरोध में सीमा से बढ़ गए तो हज़रत अक़दस(अ) ने क़ुर्आनी आदेशानुसार -

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِن بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَآءَنَا وَأَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ 224

(फ़मन हाज्जका फ़ीहे मिन बादे मा जाअका मिनल इल्मे फ़क़ुल तआलौ नदओ अब्नाअना व अब्बाअकुम व निसाअना व निसाअकुम व अन्फ़ुसना व अन्फ़ुसकुम – सुम्मा नब्तहिल फ़नज्अल लानतल्लाहे अलल काज़िबीन) उनको मुबाहिले की दावत दी परन्तु उन सज्जन ने मुबाहिले में अपनी कुशलता न देखी और बावजूद बारम्बार और भिन्न-भिन्न रूपों में स्वाभिमान दिलाने के उन्होंने पलायन किया । हज़रत

अक़्दस(अ) ने एक दुआ लिखी तथा उन से चाहा कि अपने अख़बार में उसे प्रकाशित कर दें और उस में इस माप-दण्ड के माध्यम से निर्णय की इच्छा प्रकट की कि झूठा सच्चे के जीवन में तबाह हो जाए । इस दुआ पर भी मौलवी साहिब ने पलायन का मार्ग अपनाया और निरन्तर और बड़े ज़ोर से अपने अख़बार में लिखना आरंभ किया कि ***यह कदापि कोई मापदण्ड नहीं और मैं निर्णय के इस ढंग को कदापि स्वीकार नहीं करता, क्योंकि क़ुर्आन करीम*** से ज्ञात होता है कि झूठे को लम्बी मुहलत (छूट) दी जाती है और ख़ुदा तआला का कर्म भी इसी की साक्ष्य देता है । अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद मुसैलिमा कज़्ज़ाब जीवित रहा ।

उनकी इस घोषणा का परिणाम यह हुआ कि ख़ुदा तआला ने उनके बताए हुए माप-दण्ड के अनुसार पकड़ा और उनको लम्बी छूट दे दी । हज़रत अक़्दस की मृत्यु के पश्चात उन को जीवित रखा और वह अपने लेख के अनुसार मुसैलिमा कज़्ज़ाब के समरूप सिद्ध हुए तथा उनके जीवन का प्रत्येक दिन अल्लाह की क़ुदरत का एक प्रमाण और उन के मुसैलिमा होने का एक शक्तिशाली सबूत होता है ।

अतः अल्लाह तआला ने आपके शत्रुओं को प्रत्येक रूप में तबाह और अपमानित किया । जिन्होंने इस माप-दण्ड को स्वीकार किया कि झूठा सच्चे के जीवन में तबाह होता है उनको आप(अ) के जीवन में तबाह किया और जिन्होंने इस पर बल दिया कि झूठे का यह निशान होता है कि वह लम्बी मुहलत (छूट) पाता है और सच्चे के बाद जीवित रखा जाता है, उनको लम्बी मुहलत दी । हज़रत अक़्दस(अ) के शत्रुओं में अबू-जहल और मुसैलिमा दोनों प्रकार के लोगों के उदाहरण दिखा कर हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में आसक्त होने का प्रमाण दिया और यह भी सिद्ध किया कि यह सब सामान अल्लाह तआला की ओर से था, मात्र संयोग न था, क्योंकि यदि संयोग होता तो प्रत्येक सदस्य से उसके अपने मान्य मापदण्ड के अनुसार क्यों व्यवहार होता ।

इस प्रकार की तबाहियों के अतिरिक्त जो मुबाहिले की दुआ या बद दुआओं के परिणाम स्वरूप आप(अ) के शत्रुओं को पहुँचीं और भाँति-भाँति

के प्रकोप उतारे और लोगों को इतने कष्टों से ग्रस्त किया कि प्रत्येक हृदय कह रहा है कि इतनी तबाही इस से पूर्व संसार में कभी नहीं आई थी । इस के विवरण की इस स्थान पर आवश्यकता नहीं, क्योंकि यह ऐसी बात है कि प्रत्येक देश और प्रत्येक कौम इस पर साक्षी है । कौन सा देश है जहाँ ताऊन, भूकम्प या इन्फ्लुएन्ज़ा, अकाल अथवा युद्ध ने तबाही नहीं मचाई और शहरों और प्रदेशों को नहीं उजाड़ा ।

लोगों पर जो प्रकोप उतरे हैं उनमें से कुछ इस प्रकार के भी होते थे कि जो लोग आप(अ) पर कोई आरोप लगाते थे उसी विपत्ति में स्वयं ग्रस्त हो जाते थे । उदाहरणतया कुछ लोग कह देते थे कि आप(अ) को (नाऊज़ुबिल्लाह) बर्स (फुलबहरी का रोग) है तो अल्लाह तआला उनको बर्स के रोग में रोगग्रस्त कर देता तथा कुछ लोग आप(अ) के सन्दर्भ में यह प्रसिद्ध कर देते कि आप की ताऊन से मृत्यु हो गई है या होगी तो वे स्वयं ताऊन से मर जाते । डाक्टर अब्दुल हकीम मैडीकल अधिकारी पटियाला ने आप(अ) के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की कि ''फेफड़े के रोग से'' मृत्यु होगी वह अफसर यक्ष्मा रोग (फेफड़ों में ज़ख्म होने का रोग) से मरा । इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण मिलते हैं कि जिस व्यक्ति ने जो झूठ आप(अ) पर बांधा वही उस पर उलट पड़ा और ऐसे प्रकोपयुक्त निशान अल्लाह तआला ने आप के समर्थन में दिखाए कि प्रत्येक व्यक्ति जो द्वेष-भावना से रिक्त होकर उनको देखता है उसे अल्लाह तआला की क़ुदरत और उसके कठोर प्रकोपी होने पर पूर्ण ईमान प्राप्त होता है और वह इस बात को स्वीकार करने पर विवश होता है कि हज़रत अक़दस(अ) अल्लाह तआला के सच्चे बन्दे थे अन्यथा क्या कारण है कि आप के लिए वह इतनी ग़ैरत (स्वाभिमान) दिखाता था और अब भी दिखाता है ।

आठवां सबूत

फ़रिश्तों का सज्दह करना

क़ुर्आन करीम से विदित होता है कि आदम(अ) को पैदा करके अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को आदेश दिया कि उसे सज्दह करें । [225] सज्दह एक

उपासना है और अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु के आगे सज्दह करना चाहे वह कितनी ही महान और वैभवशाली हो वैध नहीं, यहाँ तक कि नबियों और नबियों में से उन के सरदार मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलिही व सल्लम के आगे भी वैध नहीं और यही नहीं कि सज्दह करना ख़ुदा के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए वैध नहीं अपितु अत्यन्त पाप है और इसका कर्ता अल्लाह तआला के सानिध्य और उसकी कृपा से वंचित रह जाता है । अत: सज्दह से अभिप्राय वह सज्दह तो नहीं हो सकता जो उपासना के तौर पर किया जाता है ।

यह भी नहीं कहा जा सकता कि पूर्वकालीन युग में सज्दह करना वैध होगा बाद में निषेध हो गया क्योंकि द्वैतवाद उन पापों में से नहीं जो कभी वैध हों और कभी निषेध हो जाएँ । ख़ुदा का एकेश्वरवाद मूल उद्देश्य है और उसमें किसी समय भी परिवर्तन नहीं हो सकता और यदि मान भी लिया जाए कि पहले ख़ुदा के अलावा कोई सज्दह वैध था परन्तु बाद में उसे द्वैतवाद ठहरा कर अवैध कर दिया गया तो फिर शैतान का अधिकार है कि दावा करे कि जो बात मैं पहले कहता था अन्तत: (नाऊज़ुबिल्लाह) अल्लाह तआला को भी करना पड़ी । मेरी भी तो यही आपत्ति थी कि ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और के सामने सज्दह नहीं कर सकता । अल्लाह के आगे सज्दह करने से तो मैंने कभी इन्कार नहीं किया ।

अतएव किसी रूप में भी अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के आगे सज्दह वैध नहीं हो सकता । न अब वैध है और न पूर्व में कभी वैध था । अत: फ़रिश्तों को सज्दह का आदेश देने का अभिप्राय उपासना करने वाला सज्दह तो नहीं हो सकता, इससे अवश्य कुछ और अभिप्राय है और वह अभिप्राय अरबी शब्दकोष के अनुसार पूर्ण आज्ञाकारी होना है । जिस प्रकार सज्दह का अर्थ उपासना का सज्दह है । सज्दह का अर्थ अज्ञाकारी होना भी है । 'लिसानुल अरब' की जिल्द 4 में सज्दह शब्द के नीचे लिखा है - وَكُلُّ مَنْ ذَلَّ وَخَضَعَ لِمَا اُمِرَ بِهٖ فَقَدْ سَجَدَ[226] **(व कुल्लो मन ज़ल्ला व ख़ज़आ लिमा उमिरा बिही फ़क़द सजदा)** अर्थात् जिसने किसी का आदेश पूर्णतया माना उसके संबंध में कहते हैं कि उस ने सज्दह किया । अत: आदम(अ) को सज्दह करने का आदेश देने का अर्थ यह है कि फ़रिश्ते

उसके आज्ञाकारी हों और बन्दों के लिए फ़रिश्तों का आज्ञाकारी होना यह है कि उनके कार्य में सहायता करें । यह आदेश आदम(अ) से विशेष नहीं अपितु प्रत्येक नबी जो संसार में आता है उसके लिए यही आदेश दिया जाता है अपितु यदि किसी व्यक्ति के लिए फ़रिश्तों को इस प्रकार का आदेश न दिया जाए तो वह मामूर कहला ही नहीं सकता ।

हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन में इस प्रकार की बहुत सी घटनाएँ मिलती हैं कि फ़रिश्तों ने आप स.अ.व. के काम में आप की सहायता की । जैसे बदर के अवसर पर फ़रिश्तों ने काफ़िरों के हृदयों में भय डाला या आप के कंकड़ फेंकने पर ज़ोर से आँधी चली या 'अहज़ाब' के अवसर पर आंधी ने एक सरदार की अग्नि बुझा दी जिससे काफ़िरों की सेना अस्त-व्यस्त हो गई या उदाहरणतया एक यहूदी स्त्री के विष देने पर उसका कपट आप पर प्रकट हो गया । फ़रिश्तों की आज्ञाकारिता का प्रकटन अधिकतर भौतिक नियमों के माध्यम से होता है। वे चूँकि भौतिक नियमों का प्रथम कारण हैं वे ऐसे अवसरों पर जब कि नबी और उसके शत्रुओं का मुकाबला होता है भौतिक नियमों को उसके समर्थन में लगा देते हैं और यही कारण होता है कि जब प्रत्यक्ष कारण नबियों के विरुद्ध होते हैं, परिणाम उनके पक्ष में निकल आता है यह बात उन के सच्चा होने का सबूत होता है ।

यह फ़रिश्तों की सहायता हज़रत मसीह मौऊद(अ) को भी प्राप्त थी, आप के समर्थन में भी फ़रिश्ते लगे रहते थे तथा बड़े विचित्र रूपों में आप को कठिनाइयों से बचाते थे और भौतिक नियमों को आप की सहायता में लगा देते थे । एक बार की घटना है कि आप(अ) और कुछ अन्य लोग जिनमें हिन्दू, मुसलमान, विभिन्न धर्मों के लोग सम्मिलित थे, एक मकान में सो रहे थे । आप(अ) की अचानक आँख खुल गई और आपने अपने हृदय में यह शोर महसूस किया कि मकान गिरने लगा है । मकान के गिरने का प्रत्यक्षतया कोई लक्षण न था, केवल छत में से इस प्रकार की आवाज़ आ रही थी जैसे कि लकड़ी के कीड़े के काटने से आती है । आप ने अपने साथियों को जगाया और कहा कि वे मकान को खाली कर दें, परन्तु उन्होंने कुछ परवाह न की और यह कह कर कि मात्र आप(अ) का भ्रम है अन्यथा कोई खतरा नहीं । फिर सो गए ।

कुछ समय के पश्चात आप ने फिर वही शोर महसूस किया और पुनः उनको जगाया और बहुत बल दिया, इस पर वे लोग आप का मान रखते हुए उठ खड़े हुए, परन्तु शिकायत की कि आप ने अपने भ्रम के अनुसरण में लोगों को अकारण कष्ट दिया । आप(अ) ने अपने हृदय में यह महसूस किया कि यह मकान केवल मेरी प्रतीक्षा कर रहा है, मैं यदि निकला तो मकान तुरन्त गिर जाएगा । इस पर आपने पहले उन लोगों को निकाला और सब से अन्त में स्वयं निकले । अभी आप ने एक पैर सीढ़ी पर रखा था और दूसरा उठाया था कि मकान की छत ज़ोर से गिर पड़ी और लोग अत्यन्त आश्चर्य चकित हुए और आप के आभारी हुए और समझ लिया कि केवल आप(अ) के कारण उनके प्राण बचाए गए हैं ।

इसी प्रकार कभी ऐसा होता था कि कुछ बीमारियों के अवसर पर औषधियाँ मूर्तिवत होकर अपनी वास्तविकता को प्रदर्शित कर देती थीं और प्रत्यक्ष है कि औषधियाँ तो निर्जीव हैं वास्तव में यह फ़रिश्तों की सहायता थी जो औषधियों के प्रभाव के प्रकटन के लिए नियुक्त हैं और प्रत्येक वस्तु का प्रथम कारण हैं । अतः एक बार आप को किसी रोग से अत्यन्त कष्ट था । अनेकों औषधियों के सेवन से कोई लाभ न हुआ, इतने में एक आकृति मूर्तिवत हुई और कहा कि ''ख़ाकसार पिपरमिन्ट'' । [227] जब उस औषधि का सेवन किया गया तो तुरन्त आराम मिल गया ।

कई बार आप के शत्रु आप की हत्या करने का इरादा करते थे परन्तु वे लोग जो आप की हत्या के लिए भेजे जाते थे या तो उनके आने की सूचना आपको पहले से हो जाती थी या उनके हृदय में फ़रिश्ते बदर वालों की तरह कुछ इस प्रकार का भय डाल देते थे कि वे स्वयं ही क़त्ल हो जाते थे, अर्थात तौबा करके आप(अ) के हाथ पर बैअत कर लेते और हज़रत उमर(रज़ि.) की भाँति शत्रुता त्याग कर आज्ञाकारी हो जाते ।

परन्तु इन समस्त घटनाओं से बढ़कर वह महान निशान है जो ताऊन के संबंध में प्रकट हुआ । मैं आगे चलकर वर्णन करूँगा कि ताऊन किस प्रकार आपकी भविष्यवाणियों के अधीन संसार में प्रकट हुई । इस समय इतना कह देना पर्याप्त होगा कि अल्लाह तआला ने आप(अ) को ताऊन हाथी के रूप में दिखाई [228] जो समस्त संसार में तबाही डाल रही है,

परन्तु सब ओर रक्तपात करके आप(अ) के आगे आकर बड़ी शिष्टता के साथ बैठ जाती है । इस स्वप्न का अर्थ यह था कि ताऊन के फ़रिश्तों को आप के समर्थन का आदेश दिया गया है । इस दृश्य के समर्थन में और भी बहुत से इल्हाम हुए । उदाहरणतया यह कि **''आग हमारी गुलाम अपितु गुलामों की (भी) गुलाम है ।''** 229 और आप ने घोषणा कर दी कि अल्लाह तआला ने मुझे बताया है कि मेरी जमाअत के लोग ताऊन से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहेंगे, यद्यपि कुछ घटनाएँ भी हो जाएगी, परन्तु वे इसी प्रकार होंगी जैसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में काफ़िरों के मुकाबले में कुछ मुसलमान भी शहीद हो जाते थे, परन्तु अपेक्षाकृत काफ़िर अधिक मरते थे और सहाबा(रज़ि.) बहुत कम ।

इसी प्रकार यह भी घोषणा की कि बस्तियों में से क़ादियान अपेक्षाकृत सुरक्षित रहेगा 230 और यहाँ इस प्रकार की भयंकर ताऊन नहीं पड़ेगी जैसी कि अन्य स्थानों पर पड़ेगी, घरों में से आप का घर पूर्ण रूप से सुरक्षित रहेगा, उसमें ताऊन की कोई घटना नहीं होगी। इन घोषणाओं के पश्चात हिन्दुस्तान में ताऊन इतनी तीव्रता के साथ फैली कि 'ख़ुदा की पनाह' ! प्रत्येक वर्ष कई-कई लाख लोग ताऊन से मर जाते थे, परन्तु बावजूद इसके कि आप ने अपनी जमाअत के ताऊन का टीका लगाने से रोक दिया, जो ताऊन का एक ही उपचार समझा जाता था । अन्य लोग ताऊन से मरते थे, परन्तु आप की जमाअत को लोग अपेक्षाकृत ताऊन से सुरक्षित रहते थे । निरन्तर और कई वर्ष तक इसी प्रकार होता देख कर लोगों ने सोचा कि निश्चय ही कोई बात है कि इस प्रकार ताऊन के कीटाणु अहमदियों को छोड़ कर अन्य लोगों को पकड़ते हैं । सहस्त्रों लोग इस को देख कर ईमान लाए अपितु मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय के अधिकांश अहमदी वही हैं जो इस निशान को देख कर ईमान लाए थे । यह बात उनके लिए आश्चर्यजनक थी कि ताऊन के कीटाणुओं को कौन बताता है कि अमुक व्यक्ति मिर्ज़ा साहिब का मानने वाला है और अमुक इन्कारी ।

बड़े-बड़े शत्रु जैसा कि पूर्व वर्णित उदाहरणों से प्रकट है ताऊन से ही

तबाह हुए, परन्तु आप की जमाअत बहुत सीमा तक सुरक्षित रही । केवल कभी-कभी और किसी स्थान पर कोई ऐसी घटना हो जाती थी कि उन में से भी कोई इस रोग से रोगग्रस्त हो गए । निरन्तर कई वर्ष तक देश भर में ताऊन के प्रकोप का आना और मानने वालों का अपेक्षाकृत सुरक्षित रहना स्पष्ट तौर पर प्रकट करता है कि आप की उपरोक्त वर्णित रोया (स्वप्न) और आप के इल्हाम **'अग्नि हमारी गुलाम अपितु गुलामों की (भी) गुलाम है'** के अधीन फ़रिश्ते इस रोग के कीटाणुओं को आप के समर्थन अपितु आप के शत्रुओं की तबाही में लगा रहे थे और इस प्रकार आज्ञाकारिता का वह दायित्व पूर्ण कर रहे थे जो प्रत्येक रसूल के संबंध में उनके सुपुर्द किया गया है ।

क़ादियान में भी ऐसा ही हुआ कि दूसरे शहरों की अपेक्षा यहाँ बहुत ही कम ताऊन हुई और तीन वर्ष तक रह कर समाप्त हो गई । हालाँकि अन्य शहरों में दस-दस वर्ष अपितु कुछ स्थानों पर इस से भी अधिक रही ।

आप(अ) के घर के संबंध में तो फ़रिश्तों की आज्ञाकारिता का विचित्र उदाहरण दिखाई दिया अर्थात् बावजूद इसके कि तीन वर्ष तक निरन्तर आपके घर के बायीं ओर भी और दायीं ओर भी ताऊन का प्रकोप हुआ । आप के घर के दायीं ओर वाले संलग्न घर में भी मौतें हुईं और बायीं ओर के घर में भी मौतें हुईं, परन्तु आप का घर जिसमें सौ से अधिक लोग रहते थे तथा निचली सतह पर होने के कारण स्वास्थयवर्धक स्थान पर भी नहीं कहला सकता न केवल यह कि उसमें कोई मौत नहीं हुई अपितु कोई चूहा भी इस से रोगग्रस्त नहीं हुआ, हालाँकि ताऊन का प्रकोप जब किसी गांव में हो तो चूहे तुरन्त मरने आरंभ हो जाते हैं । यह एक विचित्र निशान है और बुद्धिमान के लिए संतोष का कारण । यदि फ़रिश्ते आप का समर्थन नहीं कर रहे थे तो फिर क्या वस्तु थी जो भौतिक परिस्थितियों को जो शासकों और राजाओं के अधिकार में नहीं होती आप के समर्थन और आप की गुलामी में लगाए हुए थी । बड़े-बड़े डाक्टर जो रात-दिन चिकित्सा संबंधी सावधानियों से काम ले रहे थे ताऊन का शिकार होते थे, शहरों से बाहर स्वच्छ मकानों में रहने वाले उसकी पकड़ से बच नहीं सकते थे । टीकाकरण वाले भी सुरक्षित न थे, परन्तु आप के घर के लोग बिना किसी

प्रत्यक्ष कारण, बिना उपचार बिना स्वास्थ्य सुरक्षा साधनों के, बिना आबादी से बाहर जाने के इस संक्रामक रोग के आक्रमण से सुरक्षित रहते, अपितु जानवर तक इसके प्रभाव को स्वीकार न करते । हालाँकि घर में निवास करने वाले बहुत बड़ी संख्या में थे अपितु ताऊन के दिनों में अन्य बहुत से लोग भी विनती करके घर के अन्दर आ जाते थे ।

यदि क़ादियान में ताऊन न आती या यदि क़ादियान में ताऊन आती परन्तु आप के घर के इर्द-गिर्द न आती तो कहा जा सकता था कि संयोग था परन्तु समय से पूर्व यह बात प्रकाशित कर देने के पश्चात् कि ख़ुदा के फ़रिश्ते आप(अ) के समर्थन में हैं और ताऊन को अपनी दासता की ज़ंज़ीर पहनाए हुए हैं, ताऊन का क़ादियान में आना, फिर आप(अ) के घर के इर्द-गिर्द आना, परन्तु आप के घर में किसी व्यक्ति या जानवर का भी उस से प्रभावित न होना एक शक्तिशाली प्रमाण है इस बात का कि फ़रिश्तों को आप की आज्ञापालन का आदेश दिया गया था और वे आप की सुरक्षा पर नियुक्त थे । इस कारण वे भौतिक साधन भी जो उनके प्रबन्ध के अधीन थे आप की सहायता में कार्यरत थे ।

भौतिक साधनों का इस प्रकार आपका समर्थन करना बहुत सी घटनाओं से सिद्ध होता है, परन्तु मैं समझता हूँ इसके उपर्युक्त कुछ उदाहरण पर्याप्त होंगे और उन से इस प्रकार के चमत्कारों की वास्तविकता आप पर स्पष्ट हो जाएगी तथा आप मालूम कर सकेंगे कि जिन्हें इस प्रकार का समर्थन प्राप्त हो वे झूठ बाँधने वाले और झूठे कदापि नहीं हो सकते ।

नौवां सबूत

आकाशीय ज्ञानों का प्रकटन

आप(अ) की सच्चाई का नौवां सबूत वास्तव में यह भी बहुत से सबूतों को समेटे हुए है, यह कि अल्लाह तआला ने आप(अ) पर शक्तिशाली होने के नाते ऐसे ज्ञानों को प्रकट किया जिन की प्राप्ति मानवीय शक्ति से ऊपर है । नबियों के आने का उद्देश्य ही यह होता है कि वे लोगों को उस झरने तक पहुँचाएँ जिस से तृप्त हुए बिना

आध्यात्मिक जीवन स्थापित ही नहीं रह सकता अर्थात् समस्त जीवनों के उद्गम उस एक ख़ुदा से उन्हें संलग्न और संबंधित कर दें । यह बात आध्यात्मिक ज्ञानों की प्राप्ति के बिना नहीं हो सकती । अल्लाह तआला का सानिध्य वही व्यक्ति प्राप्त कर सकता है जिसे उसका आध्यात्म ज्ञान प्राप्त हो तथा उसके सानिध्य के माध्यम ज्ञात हों और उसकी विशेषताओं का सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान रखता हो और दूसरों का वही व्यक्ति आध्यात्मिक बातों में मार्ग-दर्शन कर सकता है जो इन बातों का अधिकांश ज्ञान प्राप्त कर चुका हो ।

अत: किसी मामूर का दावा स्वीकारयोग्य नहीं हो सकता जब तक कि वह ख़ुदा तआला के असीमित ज्ञान से भाग प्राप्त न करे और अल्लाह तआला उसका ज्ञान रूपी पोषण और संरक्षण न करे । अत: हज़रत अक़दस(अ) के दावे की सच्चाई को मालूम करने के लिए हम इस नियम के माध्यम से भी आप के दावे पर विचार करते हैं और देखते हैं कि अल्लाह तआला ने आप पर क्या-क्या ज्ञान खोले हैं ।

अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है - وَعَلَّمَ اٰدَمَ الۡاَسۡمَآءَ كُلَّهَا[231] **(व अल्लमा आदमल अस्माअ कुल्लहा)** और उसने हज़रत आदम(अ) को समस्त ख़ुदाई विशेषताओं का ज्ञान प्रदान किया तथा ख़ुदाई विशेषताओं के अन्तर्गत प्रत्येक प्रकार का ज्ञान आ जाता है क्योंकि ख़ुदा की मा'रिफ़त के अर्थ ख़ुदाई विशेषताओं का ऐसा ज्ञान ही है जो अवलोकन के साथ संबंध रखता है । यह ज्ञान प्रत्येक मामूर (आदिष्ट) को दिया जाता है । अत: अल्लाह तआला हज़रत लूत(अ) के संदर्भ में फ़रमाता है وَلُوۡطًا اٰتَيۡنٰهُ حُكۡمًا وَّعِلۡمًا[232] **(व लूतन आतयनाहो हुक्मन व इल्मन)** और हज़रत दाऊद(अ) और सुलैमान के सन्दर्भ में फ़रमाता है - وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ وَسُلَيۡمٰنَ عِلۡمًا[233] **(व लक़द आतयना दाऊदा व सुलयमाना इल्मन)** और हज़रत यूसुफ़(अ) के सन्दर्भ में फ़रमाता है - وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيۡنٰهُ حُكۡمًا وَّعِلۡمًا[234] **(व लम्मा बलग़ा अशुद्दहूआतयनाहो हुकमन व इलमन)** और हज़रत मूसा(अ) के सन्दर्भ में फ़रमाता है -

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسۡتَوٰۤى اٰتَيۡنٰهُ حُكۡمًا وَّ عِلۡمًا وَكَذٰلِكَ نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ[235]

(व लम्मा बलग़ा अशुद्दहू वस्तवा आतयनाहो हुक्मन व इल्मन व कज़ालिका नज्ज़िल मुहसिनीन) और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सन्दर्भ में फ़रमाता है -

وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا[236] **(व अल्लमका मा लम तकुन ता'लम व काना फ़ज़्लुल्लाहे अलैका अज़ीमन)** कि आपको वह ज्ञान सिखाया है जो आपको पहले मालूम न था फिर और ज्ञानों के प्रकटन का आश्वासन देता है और यह दुआ सिखाता है - قُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا[237] अत: इन आयतों से ज्ञात हुआ कि प्रत्येक मामूर को ख़ुदा तआला की ओर से एक विशेष ज्ञान प्रदान किया जाता है, प्रकार का ज्ञान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी दिया गया । अन्तर केवल यह है कि पूर्वकालीन मामूरों को तो केवल आन्तरिक ज्ञान दिया जाता था परन्तु आप(अ) को अपने अनुकरणीय और स्वामी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण में बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार का ज्ञान दिया गया, अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया गया और उसे वर्णन करने की श्रेष्ठ शैली भी प्रदान की गई और अल्लाह तआला ने दोनों बातों में आपको अद्वितीय बनाया, न तो आन्तरिक ज्ञानों के जानने में कोई व्यक्ति आप का मुकाबला कर सकता है और न उन्हें वर्णन करने में कोई व्यक्ति आप(अ) का मुक़ाबला कर सकता है ।

इन दोनों प्रकार के ज्ञानों में से प्रथम मैं प्रत्यक्ष प्रकार का ज्ञान लेता हूँ । यह चमत्कार आप से पूर्व केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वारा प्रकट किया गया है । पूर्वकालीन नबियों में इसका उदाहरण नहीं मिलता । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो वह्यी आई, उसके सन्दर्भ में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَاِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا
شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ[238]

(व इन कुन्तुम फ़ी रैबिम्मिम्मा नज़्ज़लना अला अब्दिना फ़ातू बिसूरतिन मिम्मिस्लिही वदऊशुहदाअकुम मिन दूनिल्लाहे इन कुन्तुम सादिक़ीन) कह दे कि यदि तुम्हें इस किताब के कारण जो हम ने अपने इस बन्दे पर उतारी है संदेह और शंकाएँ उत्पन्न हो गईं तो फिर उसकी

एक सूरह जैसी ही कोई इबारत ले आओ और उस की तैयारी के लिए अल्लाह तआला को छोड़कर तुम्हारे जितने बुज़ुर्ग हैं सब को अपनी सहायता के लिए एकत्र कर लो, परन्तु स्मरण रखो कि फिर भी तुम उसका उदाहरण लाने पर समर्थ नहीं हो सकोगे । इस आयत में प्रत्येक प्रकार की विशेषताओं में क़ुर्आन करीम को अनुपम ठहराया गया है, जिन में से एक प्रत्यक्ष विशेषता भी है । क़ुर्आन करीम की सुगमता की ओर अन्य स्थानों पर भी अल्लाह तआला ने ध्यान आकर्षण कराया है । अत: फ़रमाता है -

كِتٰبٌ اُحۡكِمَتۡ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتۡ مِنۡ لَّدُنۡ حَكِيۡمٍ خَبِيۡرٍ [239]

(किताबुन उहकिमत आयातोहू सुम्मा फ़ुस्सिलत मिन्लदुन हकीमिनखबीरिन) यह किताब ऐसी है कि इस के आदेश अत्यन्त दृढ़ चट्टान पर स्थापित किए गए हैं और फिर उनको अद्वितीय शैली में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है उस ख़ुदा की ओर से जो बड़ी नीतियों का स्वामी है और घटनाओं से परिचित है अर्थात नीतिवान की ओर से नीतिपूर्ण कलाम ही आना चाहिए और ख़बीर (बहुत खबर रखने वाला) जानता है, कि अब विद्याओं का युग प्रारम्भ होने वाला है अत: ज्ञानपूर्ण चमत्कारों की आवश्यकता है । इसलिए उसने क़ुर्आन करीम की भाषा को व्याख्यात्मक बनाया है अर्थात वह अपनी व्याख्या स्वयं करता है और अपनी विशेषता का स्वयं साक्षी है ।

चूँकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शिष्य और आप (स.अ.व.) के प्रतिबिम्ब थे तथा आप ही के प्रकाश से भाग लेने वाले थे, इसलिए अल्लाह तआला ने आप को भी इस विशेषता से भाग दिया और आप को भी कलाम की सुगमता प्रदान की । मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ कि हज़रत अक़दस(अ) किसी प्रसिद्ध मदरसे के पढ़े हुए न थे, साधारण योग्यता रखने वाले शिक्षक आप की शिक्षा हेतु रखे गए थे जिन्होंने साधारण पाठ्य-पुस्तकों का एक भाग आप को पढ़ा दिया था, आप(अ) कभी अरब देशों की ओर भी नहीं गए थे और न आप ऐसे शहरों में रहे थे जहाँ अरबी का प्रचलन हो, देहाती जीवन और साधारण किताबें पढ़ने से जितना ज्ञान मनुष्य को प्राप्त हो सकता है उतना ही आप को प्राप्त था ।

जब आप(अ) ने दावा किया और संसार के सुधार की ओर ध्यान दिया तो आप के शत्रुओं की दृष्टि सर्व प्रथम उन परिस्थितियों पर पड़ी और उन्होंने सोचा कि यह सब से बड़ा आक्रमण है जो हम उस पर कर सकते हैं और यह प्रसिद्ध करना आरंभ कर दिया कि आप एक मुन्शी (क्लर्क) व्यक्ति हैं और उर्दू लिखने-पढ़ने में चूँकि अभ्यस्त हो गए और लोगों में कुछ लेख अच्छी दृष्टि से देखे गए तो विचार कर लिया कि अब मैं भी कुछ बन गया और दावा कर दिया । आप(अ) अरबी भाषा से अनभिज्ञ हैं इसलिए धार्मिक ज्ञानों के संबंध में राय देने के योग्य नहीं । इस आरोप को प्रत्येक सभा और लेख में प्रस्तुत किया जाता तथा लोगों के हृदय में दुर्भावना उत्पन्न की जाती थी । उन लोगों का यह आरोप तो कि आप(अ) अरबी भाषा से अपरिचित थे बिल्कुल झूठा था क्योंकि आपने सामान्य पाठय-पुस्तकें पढ़ी थीं, परन्तु यह सत्य था कि आप किसी बड़े विद्वान से नहीं पढ़े थे और न नियमानुसार किसी पुराने मदरसे के प्रमाणपत्र प्राप्त थे । इसलिए देश के बड़े विद्वानों में गणना न होती थी और न मौलवी की हैसियत आप को प्राप्त थी ।

जब इस आरोप की अधिक चर्चा हुई और विरोधी मौलवियों ने समय-असमय इसको प्रस्तुत करना आरंभ किया तो अल्लाह तआला ने एक रात में चालीस हज़ार मसदर (तत्व) अरबी भाषा का सिखा दिया और यह चमत्कार प्रदान किया कि आप अरबी भाषा में किताबें लिखें और वादा किया कि आप(अ) को एक ऐसी सुगमता प्रदान की जाएगी कि लोग मुक़ाबला न कर सकेंगे । अत: आप ने अरबी भाषा में एक लेख लिखकर अपनी किताब **''आईना कमालाते इस्लाम''** के साथ प्रकाशित किया और विरोधियों को उसके मुकाबले में किताब लिखने के लिए बुलाया, परन्तु कोई व्यक्ति मुक़ाबले पर न आ सका । तत्पश्चात् निरन्तर आप ने अरबी किताबें लिखीं जो बीस से भी अधिक हैं और कुछ किताबों के साथ दस-दस हज़ार रुपये का इनाम उन लोगों के लिए रखा जो मुकाबले में ऐसी ही सुगम किताबें लिखें, परन्तु इन लेखों का उत्तर कोई विरोधी न लिख सका अपितु कुछ किताबें अरब लोगों के मुकाबले में लिखी गईं और वे भी उत्तर न दे सके और पीठ फेर कर भाग गए । अत: सय्यद रशीद रज़ा साहिब एडीटर ''अलमनार'' को सम्बोधित करके भी एक किताब **240**

लिखी गई और उसे मुकाबले के लिए बुलाया गया, परन्तु वह मुकाबले पर न आया । इसी प्रकार कुछ अन्य अरबों को मुकाबले के लिए निमंत्रण दिया गया, परन्तु वे साहस न कर सके ।

हिन्दुस्तान के मौलवियों ने अपनी पराजय का इन शब्दों में इक़रार किया कि मिर्ज़ा साहिब ये किताबें स्वयं नहीं लिखते अपितु उन्होंने अरबों को छुपा कर रखा हुआ है, वे इन किताबों को लिख कर देते हैं । इस आरोप से स्पष्टतया प्रकट है कि आप की किताबों की अरबी भाषा को वे भी मानते थे, परन्तु उनको यह सन्देह था कि आप स्वयं ये किताबें नहीं लिख सकते, अन्य लोग आपको ये किताबें लिख कर दे देते हैं । इस पर आपने यह घोषणा की कि आप लोग भी अरबों और शामियों (सीरिया वालों) की सहायता से मेरे मुक़ाबले पर किताबें लिख दें, परन्तु बावजूद बार-बार स्वाभिमान को चुनौती देने के कोई सामने न आया और वे किताबें अब तक निरुत्तर पड़ी हैं ।

इन किताबों के अतिरिक्त एक बार आप को इल्हाम हुआ कि आप स्वयं बिना तैयारी के अरबी भाषा में ख़ुत्बा (शुक्रवार या दोनों ईदों के समय जो प्रवचन दिए जाते हैं उसी भाषण को ख़ुत्बा कहा जाता है । अनुवादक) दें,[241] हालाँकि आपने अरबी भाषा में कभी भाषण न दिया था, दूसरे दिन ईदुलअज़्हा थी । इस इल्हाम के अन्तर्गत आप ने ईद के बाद अरबी भाषा में एक लम्बा भाषण दिया जो 'ख़ुत्बा इल्हामिया' के नाम से प्रकाशित हो चुका है उस भाषण की इबारत भी ऐसी उच्च स्तर की थी कि अरब और ग़ैर अरब पढ़कर आश्चर्यचकित होते हैं । इसमें ऐसी सूक्ष्म बातों और रहस्यों का वर्णन किया कि उनके कारण इस ख़ुत्बे की महानता और भी बढ़ जाती है ।

यह ज्ञान से परिपूर्ण चमत्कार आपके अत्यन्त शक्तिशाली चमत्कारों में से है, क्योंकि एक तो उन चमत्कारों पर इसे श्रेष्ठता प्राप्त है जो अधिक प्रभाव केवल उस समय के लोगों पर करते हैं जो देखने वाले हों, द्वितीय इस चमत्कार का इक़रार शत्रुओं के मुख से भी करा दिया गया है । अब जब तक संसार स्थापित है, आप अलैहिस्सलाम का यह चमत्कार भी स्थापित रहेगा, और क़ुर्आन करीम की भाँति आपके शत्रुओं के विरुद्ध सबूत रहेगा तथा प्रकाशमान निशान की भाँति चमकता रहेगा ।

कुछ लोग जब इस चमत्कार को देखकर आप की सच्चाई का इन्कार करने का कोई उपाय नहीं देखते तो इस पर एक ऐतिराज़ किया करते हैं और वह यह कि इस प्रकार के चमत्कार का दावा करना क़ुर्आन करीम का अनादर है क्योंकि क़ुर्आन करीम का दावा है कि उसकी भाषा अद्वितीय है। यदि मिर्ज़ा साहिब को भी अल्लाह तआला ने ऐसी भाषा में किताबें लिखने की सामर्थ्य दे दी जो अपनी विशेषताओं में अनुपम है तो इसमें क़ुर्आन करीम का अनादर हो गया और उसका दावा मिथ्या हो गया। इन लोगों का यह आरोप मात्र द्वेष का परिणाम है अन्यथा यदि ये सोचते तो ज्ञात हो जाता कि बावजूद हज़रत अक़दस की अरबी किताबों के अनुपम होने के क़ुर्आन करीम का दावा सत्य और उचित है और उसका चमत्कारिक स्वरूप विद्यमान है अपितु पहले की अपेक्षा अधिक हो गया है ।

संसार में प्रत्येक श्रेष्ठता दो प्रकार की होती है । पूर्ण श्रेष्ठता और दूसरी इज़ाफ़ी अर्थात् एक श्रेष्ठता तो वह जो अन्य वस्तुओं को दृष्टिगत न रखते हुए होती है और दूसरी वह जो कुछ अन्य वस्तुओं को दृष्टिगत रखकर होती है । इसका उदाहरण मैं क़ुर्आन शरीफ़ से ही प्रस्तुत करता हूँ कि अल्लाह तआला बनी इस्राईल के सन्दर्भ में क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है - وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ[242] **(व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तोकुम अललआलमीन)** ''मैंने तुम को समस्त संसार के लोगों पर श्रेष्ठता दी'' फिर मुसलमानों के सन्दर्भ में फ़रमाता है - كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ[243] **(कुन्तुम ख़ैरा उम्मतिन उख़रिजत लिन्नास)** ''तुम सब से श्रेष्ठ उम्मत हो जो सब लोगों के लिए निकाली गई हो ।'' तो एक ओर बनी इस्राईल को सब संसारों पर श्रेष्ठता देता है और दूसरी ओर मुसलमानों को सब संसारों पर श्रेष्ठता देता है । प्रत्यक्ष तौर पर इस बात में मतभेद दिखाई देता है, परन्तु वास्तव में कोई मतभेद नहीं अपितु एक स्थान पर तो अपने युग के लोगों पर श्रेष्ठता अभिप्राय है और दूसरे स्थान पर पूर्वकालीन और बाद में आने वालों पर । इसी प्रकार हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की किताबों को जो अनुपमता प्राप्त है वह मनुष्यों के कलामों को ध्यान में रख कर है और क़ुर्आन करीम को जो अनुपमता प्राप्त हुई है वह समस्त मानवीय कलामों पर भी है और स्वयं अल्लाह तआला की ओर

से आने वाले अन्य कलामों पर भी, और उन में हज़रत अक़्दस(अ) के इल्हामी ख़ुत्बे और आप की किताबें भी सम्मिलित हैं । अत: क़ुर्आन करीम का अनुपम और अद्वितीय होना वास्तविक है और हज़रत अक़्दस(अ) की किताबों की भाषा का अनुपम होना इज़ाफ़ी (तुलनात्मक) । अत: आपका यह चमत्कार यद्यपि लोगों के लिए सबूत है, परन्तु क़ुर्आन करीम की शान और प्रतिष्ठा को घटाने वाला नहीं ।

मैंने ऊपर वर्णन किया था कि आप(अ) के चमत्कार से क़ुर्आन करीम की शान दोगुनी हो गई है । इसका विवरण यह है कि अनुपमता भी अनेक प्रकार की होती है । एक अनुपमता ऐसी होती है कि अनुपम कलाम को अन्य कलामों पर श्रेष्ठता तो होती है, परन्तु अत्यधिक श्रेष्ठता नही होती । अत: यद्यपि उसको सर्वश्रेष्ठ तो कहेंगे, परन्तु अन्य कलाम भी उसके निकट पहुँचे हुए होते हैं । जैसे घुड़-दौड़ में जब घोड़े दौड़ते हैं तो एक घोड़ा जो प्रथम निकले दूसरे घोड़े से एक बालिश्त भी आगे हो सकता है, एक गज़ भी हो सकता है, और एक घोड़े के खड़े होने के स्थान जितना भी आगे हो सकता है, उससे अधिक भी हो सकता है । यही स्थिति अनुपम कलाम की है कि वह उन से दूसरे कलामों की अपेक्षा जिन के मुकाबले में उसे अनुपम होने का दावा है, साधारण श्रेष्ठता भी रख सकता है और बहुत अधिक श्रेष्ठता भी रख सकता है । अब यह बात कि उस का और अन्य कलामों का अन्तर थोड़ा है या अधिक । इसी प्रकार ज्ञात हो सकता है कि उसके मध्य और उन कलामों के मध्य जिन से सर्वश्रेष्ठ होने का दावेदार है अन्य कलाम आकर खड़े हो सकें कि वे भी अनुपम हों, परन्तु इस की तुलना में वे भी निम्न स्तर के हों । अत: हज़रत अक़्दस की किताबों ने अन्य मनुष्यों के कलामों की तुलना में अपनी अनुपमता सिद्ध करके बता दिया है कि क़ुर्आन करीम अपनी अनुपमता में अन्य कलामों से बहुत ही बढ़ा हुआ है, क्योंकि वे कलाम जिनको क़ुर्आन की तुलना में खड़ा किया जाता था, आप(अ) के कलाम ने उनको पीछे डाल दिया, परन्तु फिर भी आप का कलाम क़ुर्आन करीम के अधीन ही रहा और उसका सेवक ही सिद्ध हुआ । जिस से ज्ञात हुआ कि क़ुर्आन करीम अन्य कलामों से इतना आगे निकला हुआ है कि उसके और अन्य कलामों के मध्य एक विशाल दूरी है ।

इस सुगमता के अतिरिक्त जो आप(अ) को प्रदान हुई, एक प्रत्यक्ष ज्ञान आप को यह दिया गया कि आप को इल्हाम द्वारा अरबी भाषा के ''उम्मुल अलसिनह'' (समस्त भाषाओं की जननी) होने का ज्ञान दिया गया। यह एक महान और अद्भुत ज्ञान था क्योंकि यूरोप के लोग 'समस्त भाषाओं की जननी' के सन्दर्भ में बहुत से प्रयासों के उपरान्त इस परिणाम पर पहुँचे थे कि संस्कृत या पहलवी भाषा समस्त भाषाओं की जननी है, कुछ लोग इन दोनों भाषाओं को भी उस भाषा की जो सर्वप्रथम भाषा थी, शाख़ा ठहराते थे और विचार करते थे कि आरंभिक भाषा संसार से नष्ट हो गई है । यह तो यूरोप के लोगों का विचार था, अरब जिनकी भाषा अरबी है वे भी इस श्रेष्ठता को नहीं मानते थे अपितु यूरोप की शिक्षा के प्रभाव से 'समस्त भाषाओं की जननी' की खोज अन्य देशों की भाषाओं में कर रहे थे । इन परिस्थितियों में आप को अल्लाह तआला की ओर से यह ज्ञान दिया जाना कि वास्तव में अरबी भाषा में उम्मुल अलसिनह (समस्त भाषाओं की जननी) है । एक आश्चर्यजनक प्रकटन था, परन्तु क़ुर्आन करीम पर विचार करने से ज्ञात हुआ कि यह प्रकटन क़ुर्आन करीम की शिक्षा के बिल्कुल अनुकूल था, क्योंकि अल्लााह तआला का वह कलाम जो समस्त संसार की ओर उतरना था उसी भाषा में उतरना चाहिए था जो सब से आरंभिक भाषा होने की दृष्टि से समस्त संसार की भाषा है । जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है - وَمَآ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا بِلِسَانِ قَوۡمِهٖ[244] **(वमा अरसल्ना मिन रसूलिन इल्ला बिलिसाने क़ौमिही)** हम कोई रसूल नहीं भेजते, परन्तु उसी भाषा में उस पर किताब उतारते हैं जो उन लोगों की भाषा होती है जिन की ओर उसे भेजा गया । अत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो समस्त संसार की ओर भेजे गए, तो आप (स.अ.व.) की ओर उसी भाषा में कलाम उतरना चाहिए था जो 'उम्मुल अलसिना' होने के कारण समस्त संसार की भाषा कहला सके और चूँकि आप पर अरबी भाषा में कलाम उतरा है इसलिए अरबी भाषा ही उम्मुल अलसिना है ।

आप(अ) ने इस प्रकटन के प्रमाण में अल्लाह तआला से ज्ञान पाकर ऐसे नियम लिखे जिन से प्रकाशमान दिन की भाँति सिद्ध कर दिया कि वास्तव में अरबी भाषा ही 'उम्मुल अलसिना' और इल्हामी भाषा है और

शेष कोई भाषा उम्मुल अलसिना कहलाने की पात्र नहीं । आप ने इस खोज के संबंध में एक किताब भी लिखना चाही जो खेद कि अपूर्ण रह गई, परन्तु आपने उसमें नियमों के आधार वर्णन कर दिए जिन को प्रसारित करके इस बात को संसार के मस्तिष्क में बैठाया जा सकता है । अल्लाह तआला ने चाहा तो मेरी इच्छा है उन नियमों के अन्तर्गत जो आपने प्रस्तावित किए हैं और उस ज्ञान के अनुसार जो आपने इस किताब में गुप्त रखा है एक किताब लिखूँ जिस में विस्तापूर्वक आप के वर्णन किए हुए दावे को सिद्ध करूँ और यूरोप वालों के तैयार किए हुए 'इल्मुल्लिसान' (भाषा का ज्ञान) से जो इस दावे का समर्थन होता है वह भी वर्णन करूँ और जहाँ यूरोप वालों ने ठोकर खाई है उसे भी खोल दूँ । (नहीं है सामर्थ्य परन्तु अल्लाह की ओर से) यह खोज अरबी भाषा के अनुसार एक ऐसी अद्वितीय खोज है कि संसार के दृष्टि-कोण को इस्लाम के अनुकूल बिल्कुल परिवर्तित कर देगी तथा इस से इस्लाम को अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त होगी ।

इन प्रत्यक्ष ज्ञानों के अतिरिक्त जो आपको दिए गए आन्तरिक ज्ञान जो नबियों का विरसा (पैतृक सम्पत्ति) हैं वे भी आप को प्रदान किए गए और उन ज्ञानों के मुकाबले से सब शत्रु असमर्थ रहे और कोई व्यक्ति आप का मुकाबला न कर सका जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है आप कोई नवीन शरीअत लेकर न आए थे अपितु पूर्वकालीन भविष्यवाणियों के अन्तर्गत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के धर्म की सेवा और प्रचार के लिए अवतरित हुए थे तथा क़ुर्आनी ज्ञानों का प्रसार और शिक्षा देना आपका कार्य था । क़ुर्आन करीम के पश्चात् अब कोई नवीन ज्ञान और शिक्षा आकाश से नहीं उतर सकती । समस्त ज्ञान उसके अन्दर हैं और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात कोई नया शिक्षक नहीं आ सकता, जो व्यक्ति आएगा आप के सिखाए हुए ज्ञानों का नवीनीकरण करने वाला ही होगा तथा उन्हीं को पुनः ताज़ा करेगा । जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद(अ) का एक इल्हाम है -

كُلُّ بَرَكَةٍ مِّنْ مُّحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ [245]

(कुल्लो बरकतिन मिम्मुहम्मदिन सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लमा

फ़तबारका मन अल्लमा व तअल्लमा) प्रत्येक बरकत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आती है । अत: मुबारक है वह जिसने सिखाया अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुबारक है वह जिस ने सीखा अर्थात् मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ।

अत: ज्ञान चूँकि क़ुर्आन करीम पर समाप्त हो गए और जो मामूर आएँगे उनको क़ुर्आन करीम के विशेष ज्ञान ही सिखाए जाएँगे न कि कोई नवीन ज्ञान तथा उनकी सच्चाई का यही निशान होगा कि उनको अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम का विशाल ज्ञान प्रदान करे, जो सिद्ध करने वालों जैसा न हो अपितु ख़ुदा की विशेषताओं का ज्ञान हो, तथा आध्यात्मिक स्तरों का ज्ञान हो और हे बादशाह ! हम देखते हैं कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद(अ) को अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम के ज्ञानों से ऐसी बहुलता के साथ भाग दिया है कि यदि यों कहें कि आप के समय में क़ुर्आन करीम दोबारा उतरा है तो यह कोई अतिश्योक्ति न होगी अपितु बिल्कुल सत्य होगा और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनानुसार होगा, क्योंकि आप (स.अ.व.) से भी एक रिवायत है कि - لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهٗ رَجُلٌ مِنْ فَارَس[246] **(लौ कानलक़ुर्आनो मुअल्लक़न बिस्सुरय्या लनालहू रजुलुन मिन फ़ारस)** कि यदि क़ुर्आन उड़कर सुरय्या नक्षत्र पर चला जाए तो फारसी वंश का एक व्यक्ति उसको वापस ले आएगा ।

सर्वप्रथम तो मैं क़ुर्आन के ज्ञान के उस भाग का वर्णन करता हूँ जिस ने सैद्धान्तिक रूप में इस्लाम की ऐसी सहायता की और विभिन्न धर्मों की तुलना में इस्लाम की शान को इस प्रकार परिवर्तित कर दिया कि विजयी पराजित हो गया और प्रभुत्वशाली अप्रभुत्वशाली । अर्थात् क़ुर्आन करीम जो इस से पूर्व एक निर्जीव किताब समझी जाती थी एक जीवित किताब बन गई तथा उस की विशेषताओं को देख कर उसके विरोधी घबराकर भाग गए ।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद(अ) के आने से पूर्व सामान्यतया मुसलमानों का यह विचार था कि क़ुर्आन के आध्यात्म ज्ञान जो बुज़ुर्गों ने वर्णन किए हैं वे अपनी चरम सीमा को पहुँच गए हैं और अब उन से अधिक और कुछ वर्णन नहीं हो सकता अपितु और जिज्ञासा करना व्यर्थ और धर्म के

लिए हानिकारक है । अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस(अ) को यह ज्ञान दिया कि जिस प्रकार अल्लाह तआला की भौतिक उत्त्पत्ति अपने अन्दर असीमित रहस्य रखती है इसी प्रकार अल्लाह तआला का कलाम भी असीमित अर्थ और आध्यात्म ज्ञान रखता है । यदि एक मक्खी जो अल्लाह तआला की सृष्टि में से अत्यन्त तुच्छ स्तर रखती है । प्रत्येक युग में अपनी गुप्त शक्तियों को प्रकट करती है तथा उसकी बनावट के रहस्यों और उसकी विशिष्टताओं की विशालता और उसके स्वभाव के विवरण का ज्ञान अधिक से अधिक होता जाता है, छोटे-छोटे पौधों और घास की नवीन से नवीन विशिष्टताएँ और प्रभाव ज्ञात होते जाते हैं, तो क्या कारण है कि अल्लाह तआला का कलाम सीमित हो कि कुछ समय तक तो लोग उस से मतलब और ज्ञान प्राप्त करें, तत्पश्चात वह उस खान की भाँति हो जाए जिस का भण्डार समाप्त हो जाता है । अल्लाह का कलाम तो भौतिक वस्तुओं की तुलना में अधिक अर्थों वाला और विशाल उद्देश्यों वाला होना चाहिए । यदि नवीन से नवीन ज्ञान संसार में निकल रहे हैं, यदि दर्शन शास्त्र और विज्ञान तीव्रता के साथ उन्नति करते चले जाते हैं, यदि भूगर्भशास्त्र, पुरातत्वविज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जीव-विज्ञान, खगोल विज्ञान, राजनीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, न्याय शास्त्र, मनोविज्ञान, आध्यात्मक ज्ञान, नीति शास्त्र और इसी प्रकार के नवीन ज्ञान या तो नवीन अन्वेषित हो रहे हैं या उन्होंने पूर्वकालीन युग के ज्ञानों की तुलना में आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त कर ली है तो क्या अल्लाह तआला का कलाम ही ऐसा रुका हुआ पानी होना चाहिए कि वह उसी पर विचार करने वालों को ताज़ा ज्ञान और नवीन अर्थ न दे सके और सैकड़ों वर्षों तक वहीं का वहीं स्थिर रहे ।

इस समय जितना अधर्म और ख़ुदा तआला तथा शरीअत से दूरी दिखाई देती है वह इन ज्ञानों के सीधे या परोक्ष प्रभाव का ही परिणाम है। अत: यदि क़ुर्आन करीम अल्लाह तआला का कलाम है तो चाहिए था कि इन नवीन विद्याओं का आविष्कार या विशालता के साथ इसमें से भी ऐसे आध्यात्म ज्ञान प्रकट हों जो या तो इन विद्याओं के दोषों को प्रकट करें और सबूतों के साथ मनुष्य को सांत्वना दें या यह बताएँ कि जो सन्देह उत्पन्न किया जाता है वह वास्तव में उत्पन्न ही नहीं होता अपितु

मात्र विचार की कमी का परिणाम है ।

इस मूल को स्थापित करके आपने सबूतों द्वारा यह सिद्ध किया कि कुर्आन करीम में इस युग की उन्नति और समस्त परिस्थितियों की चर्चा विद्यमान है अपितु इस युग के कुछ भागों तक की चर्चा है, परन्तु पहले मुसलमान चूँकि इस युग में उत्पन्न नहीं हुए थे वे इन संकेतों को नहीं समझ सके और उन घटनाओं को प्रलय पर चरितार्थ करते रहे ।

उदाहरणतया सूरह 'अत्तक्वीर' में इस युग के बहुत से निशानों की चर्चा है, जैसे-

(١)إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ (٢)وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ (٣)وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ(٤) وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (٥)وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ (٦)وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ (٧) وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ (٨)وَإِذَا الْمَوْءُدَةُ سُئِلَتْ (٩)بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ (١٠)وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ (١١)وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ (١٢)وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ (١٣)وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ[247]

(1) **इज़शशम्सो कुव्विरत** (2) **व इज़न्नुजूमुन्कदरत** (3) **व इज़ल जिबालो सुय्यिरत** (4) **व इज़ल इशारो उत्तिलत** (5) **व इज़ल वुहूशो हुशिरत** (6) **व इज़ल बिहारो सुज्जिरत** (7) **व इज़न्नुफ़ूसो ज़ुव्विजत** (8) **व इज़ल मौऊदतो सुइलत** (9) **बिअय्ये ज़म्बिन क़ुतिलत** (10) **व इज़स्सुहुफ़ो नुशिरत** (11) **व इज़स्समाओ कुशितत** (12) **व इज़ल जहीमो सुइरत** (13) **व इज़ल जन्नतो उज़लिफ़त ।**

अर्थात (1) जब सूर्य को लपेटा जाएगा (2) नक्षत्र धुंधला जाएँगे (3) **'व इज़ल जिबालो सुय्यिरत'** और जब पर्वत अपने स्थान से हटाए जाएँगे अर्थात ऐसे साधन निकल आएँगे कि उनके माध्यम से पर्वतों को काटा जाएगा तथा उनके अन्दर छिद्र कर दिए जाएँगे (4) **'व इज़ल इशारो उत्तिलत'** और जब दस माह की गर्भिणी ऊंटनियाँ बेकार छोड़ दी जाएँगी अर्थात् ऐसा समय आ जाएगा कि नवीन सवारियों के कारण ऊँटनियों का वह महत्व न रहेगा जो अब है (5) **'व इज़ल वुहूशो हुशिरत'** और जब लोगों की धार्मिक ज्ञानों से अनभिज्ञता होगी और वे जानवरों के समान हो जाएँगे और इसी प्रकार वे कौमें जो पहले जानवरों

के समान समझी जाती थीं जैसे यूरोप के रहने वाले कि आज से छः सात सौ वर्ष पूर्व जिस समय एशियाई लोग अत्यन्त सभ्य और समुन्नत थे ये लोग नंगे फिरते थे । संसार में फैला दिए जाएँगे और संसार के शासनों पर अधिकार प्राप्त कर लेंगे और यह भी कि उस युग में कुछ वहशी (जंगली जानवरों की भाँति जीवन यापन करने वाले) जातियां तबाह कर दी जाएँगी कि उनका नाम ही शेष रह जाएगा । यह अरबी भाषा का मुहावरा है कि कहते हैं - हुशिरलवुहूशो अय 'उहलकत' ऐसा ही इस युग में हुआ है कि आस्ट्रेलिया और अमरीका के मूल निवासी कि उनको कहते भी वहशी ही हैं शनैः शनैः इसी प्रकार तबाह कर दिए गए हैं कि अब उन जातियों का उनमें निशान तक उपलब्ध नहीं ।

फिर फ़रमाया कि (6) **'व इज़ल बिहारो सुज्जिरत'** जब दरियाओं को फाड़ा जाएगा अर्थात उन में से नहरें निकाली जाएँगी और (7) **'व इज़न्नूफ़ुसो ज़ुव्विजत'** जब लोग परस्पर एकत्र कर दिए जाएँगे अर्थात् परस्पर संबंधों के ऐसे साधन निकल आएँगे कि दूर-दूर के लोग परस्पर मिला दिए जाएँगे । जैसे टेलीफोन का साधन है कि सहस्त्रों मील दूर के लोगों को परस्पर मिला कर बातें करा देते हैं या रेल और तार और डाक के प्रबन्ध हैं कि उन्होंने समस्त संसार को एक शहर बना दिया है । (8) **'व इज़ल मौऊदतो सुइलत बिअय्ये ज़न्बिन क़ुतिलत'** और जब जीवित धरती में गाढ़ी हुई लड़कियों या स्त्रियों से पूछा जाएगा अर्थात् धार्मिक तौर पर मनुष्य का जीवित गाढ़ देना चाहे वैध हो परन्तु सरकारी कानून इस की अनुमति नहीं देंगे और केवल धार्मिक वैधता का फ़त्वा प्रस्तुत कर देना स्वीकार नहीं किया जाएगा जैसा कि इस युग से पूर्व युगों में होता चला आया है । **व इज़स्सुहुफ़ो नुशिरत** और जब कि किताबें और अख़बार और पत्रिकाएँ प्रसारित की जाएँगी, जैसा कि आजकल है कि समाचार पत्र और किताबों के बाहुल्य को देखकर मनुष्य की बुद्धि स्तब्ध रह जाती है (11) **'व इज़स्समाओ कुशितत'** और जब आकाश का छिल्का उतारा जाएगा, अर्थात् आकाशीय ज्ञानों का प्रकटन होगा, खगोल विद्या की उन्नति के माध्यम से भी तथा क़ुर्आनी ज्ञानों के प्रकटन और प्रकाशित होने के माध्यम से भी (12) **'व इज़लजहीमो सुइरत'** और जब नर्क को भड़का दिया जाएगा, अर्थात् नवीन से नवीन ज्ञान आविष्कृत होंगे जिनके कारण

लोगों को धर्म से घृणा हो जाएगी और हृदयों से ईमान निकल जाएगा तथा भोग-विलास के सामानों की अधिकता के कारण भी लोगों में विकार उत्पन्न हो जाएगा । (13) **'व इज़लजन्नतो उज़लिफ़त'** और जब स्वर्ग निकट कर दिया जाएगा अर्थात् उस युग में अल्लाह तआला की कृपा भी जोश में आएगी और स्वर्ग भी निकट कर दिया जाएगा अर्थात् जब विकार और उपद्रव बढ़ जाएगा और अधर्म उन्नति कर जाएगा, उस समय अल्लाह तआला अपनी ओर से ऐसा साधन कर देगा कि लोगों के ईमान ताज़ा हों तथा धर्म की विशेषता प्रकट हो जाए तथा लोगों के लिए उन कार्यों का करना सरल हो जाए जिनके करने से स्वर्ग प्राप्ति होती है ।

अब आप विचार करके देख लें कि क्या ये समस्त निशान इस युग के नहीं हैं और क्या यह संभव है कि इन निशानों को प्रलय या किसी अन्य युग पर चरितार्थ किया जाए । केवल इज़श्शम्सो कुव्विरत और इज़न्नुजूमुन्कदरत के शब्दों से धोखा खा कर यह विचार कर लेना कि ये बातें प्रलय के समय होंगी कब उचित हो सकता है जबकि उसकी शेष आयतों का प्रलय के साथ कोई संबंध ज्ञात नहीं होता । प्रलय के समय दस माह की गर्भिणी ऊँटनियाँ भला क्यों छोड़ दी जाएँगी ? यदि कहा जाए कि घबराकर, तो इसका उत्तर यह है कि ऊंटनी की क्या चर्चा, उस समय तो पिता, माता, पुत्र, पुत्री, पत्नी, भाई-बहन सब को छोड़ दिया जाएगा । ऐसे निकटस्थ संबंध जिस समय टूट जाएँगे उस समय की चर्चा में ऊँटनी के छोड़ देने की चर्चा यथा-स्थान नहीं रह जाती। इसी प्रकार प्रश्न उत्पन्न होता है कि 'वहशी' क्यों एकत्र किए जाएँगे ? दरियाओं में से उस दिन नहरें क्यों निकाली जाएँगी ? या यह कि दरिया परस्पर क्यों मिलाएँ जाएँगे और धरती में जीवित गाढ़ी गई लड़की के संबंध में उस समय क्यों प्रश्न किया जाएगा ? कर्मों के संबंध में तो सम्पूर्ण विश्व की समाप्ति के पश्चात् शरीरों को एकत्र करने के दिन पूछ-ताछ होगी न कि उस समय जब कि संसार की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो रही होगी । इसी प्रकार इन आयतों के उपरान्त भी ऐसी बातों की चर्चा है जो सिद्ध कर रही हैं कि इसी संसार में सब कुछ होने वाला है जैसे وَالَّيۡلِ اِذَا عَسۡعَسَ ○ وَالصُّبۡحِ اِذَا تَنَفَّسَ [248] **वल्लैले इज़ा अस्असा वस्सुबहे इज़ा तनफ़्फ़सा** और रात की सौगंध जब वह जाती रहेगी और प्रातः की सौगंध जब वह सांस लेगी अर्थात् उदय होने लगेगी और जबकि आरंभ में इज़श्शम्सो

कुव्विरत आ चुका है । यदि इस सूरह में प्रलय की ही चर्चा हो तो सूर्य के लपेटे जाने के पश्चात् रात किस प्रकार चली जाएगी और प्रात: किस प्रकार उदय होने लगेगी । अत: इन बातों का जो इस सूरह में वर्णन हुई हैं प्रलय के साथ कुछ भी संबंध नहीं । हाँ इस युग की परिस्थितियों के ये बिल्कुल अनुकूल हैं और जैसे इस समस्या की पूरी रूप-रेखा इन में खींच दी गई है । अत: वास्तव में इस युग की खराबियों और भौतिक तरक़्क़ियों और पापों की अधिकता और फिर अल्लाह तआला की कृपाओं की इस सूरह में सूचना दी गई थी जिसे पढ़ कर मोमिन का ईमान ताज़ा होता है और सब संदेह और संशय दूर हो जाते हैं ।

यह एक उदाहरण मैंने उन सूचनाओं का प्रस्तुत किया है जो इस युग के संबंध में क़ुर्आन करीम में वर्णन हुई हैं, जिनको हज़रत अक़दस(अ) ने स्वयं वर्णन किया है या जिनको आपके बताए हुए सिद्धान्त के अधीन आपके सेवकों ने क़ुर्आन करीम से प्राप्त किया है अन्यथा इस युग के विकार और परिस्थितियों की सूचनाएँ तथा उनके उपचार क़ुर्आन करीम में इतनी प्रचुरता के साथ वर्णन हुए हैं कि उन्हें देखकर कठोर से कठोर शत्रु भी यह स्वीकार किए बिना नहीं रह सकता कि क़ुर्आन करीम अल्लाह की किताब है जिससे भूत, वर्तमान और भविष्य किसी युग की भी परिस्थितियाँ गुप्त नहीं परन्तु उनके वर्णन करने से मूल विषय रह जाएगा और यह अत्यधिक लम्बा हो जाएगा ।

दूसरा सैद्धान्तिक ज्ञान जो क़ुर्आन करीम के संबंध में आप को प्रदान किया गया, यह है कि क़ुर्आन करीम में कोई दावा बिना सबूत वर्णन नहीं किया जाता । इस सिद्धान्त के स्थापित करने से उसके ज्ञानों के अन्वेषण के लिए एक नवीन द्वार खुल गया है और जब उसे दृष्टि में रखते हुए क़ुर्आन करीम पर विचार किया गया तो ज्ञात हुआ कि वे सहस्त्रों बातें जो इससे पूर्व बतौर दावे के समझी जाती थीं और उनका प्रमाण यह समझ लिया गया था कि ख़ुदा ने कहा है इसलिए स्वीकार कर लो, वे सब अपने सबूत अपने साथ रखती थीं । इस खोज का परिणाम यह हुआ कि मानव स्वभाव ने जो ज्ञानों की उन्नति के कारण इस बलपूर्वक शासन का जुआ उतार फेंकने के लिए तैयार हो रहा था बौद्धिक तौर पर सन्तुष्टि पाकर अत्यन्त उमंग और उत्साह से क़ुर्आन करीम के बताए हुए

सिद्धान्त से लिपट गया और क़ुर्आन करीम की बातों को मानने में एक भार महसूस करने की बजाए एक प्रफुल्लता प्राप्त होने लगी और महसूस होने लगा कि क़ुर्आन करीम एक (दासता के) जुए की भाँति हमारी गर्दनों में नहीं डाला गया अपितु एक परिचित पथ-प्रदर्शक की भाँति हमारे साथ किया गया है । अल्लाह तआला के अस्तित्व के वे शक्तिशाली प्रमाण आपने क़ुर्आन करीम से प्रस्तुत किए जिन्हें वर्तमान विज्ञान खण्डित नहीं कर सकता और जिनके प्रभाव से शिक्षित नास्तिकों का एक वर्ग वापस ख़ुदा की उपासना की ओर आ रहा है ।

इसी प्रकार आपने फ़रिश्तों पर होने वाले आरोपों के उत्तर क़ुर्आन करीम से दिए, नुबुव्वत की आवश्यकता और नबियों की सच्चाई के सबूत क़ुर्आन करीम से वर्णन किए, प्रलय का प्रमाण क़ुर्आन करीम से प्रस्तुत किया, शुभ कर्मों की आवश्यकता और उन के लाभ और निषिद्ध बातों के भयानक परिणाम तथा उनसे बचने की आवश्यकता, ये समस्त समस्याएँ और इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से मामलों के संबंध में आप ने क़ुर्आन करीम के ही वर्णन किए हुए बौद्धिक और काल्पनिक सबूतों द्वारा सिद्ध कर दिया कि क़ुर्आन करीम पर आधुनिक ज्ञानों की खोज का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ सकता, क्योंकि आपने बताया कि यह संभव ही नहीं कि अल्लाह तआला का कर्म और कथन एक दूसरे के विपरीत हों । जो कलाम उसके विपरीत है वह उसका कलाम ही नहीं और जो उस का कलाम है वह उसके कर्म के विपरीत नहीं हो सकता ।

इन ज्ञानों के वर्णन करने का परिणाम यह हुआ कि इस समय केवल आप ही की जमाअत है जो एक ओर तो आधुनिक ज्ञानों की प्राप्ति में पूर्ण-रूप से लगी हुई है और दूसरी ओर राजनैतिक आवश्यकता या वंशगत द्वेष के कारण नहीं अपितु सच्चे तौर पर, अनुसरण के तौर पर नहीं अपितु बुद्धिमत्ता से, इस्लाम की वर्णन की हुई समस्त आस्थाओं पर विश्वास रखती है तथा उनकी सच्चाई को सिद्ध कर सकती है । शेष जितनी जमाअतें हैं वे इन ज्ञानों से अपरिचित और अज्ञान होने कारण या तो आधुनिक ज्ञानों को झूठा कह कर तथा उनकी प्राप्ति को कुफ़्र बता कर अपने काल्पनिक ईमान को सुरक्षित रखे हुए हैं या फिर उनके प्रभाव से प्रभावित होकर धर्म को व्यवहारिक रूप में त्याग बैठी हैं या प्रत्यक्ष में

लोगों के भय से इस्लाम को प्रकट करती हैं परन्तु हृदय में इस्लामी शिक्षा के संबंध में सौ प्रकार के सन्देह और शंकाए रखती हैं ।

तीसरा सैद्धान्तिक ज्ञान क़ुर्आन करीम के संबंध में आपको यह दिया गया है कि मानव बुद्धि क़ुर्आनी शिक्षा के संबंध में कोई संदेह या भ्रम उत्पन्न कर ले उसका उत्तर क़ुर्आन करीम के अन्दर उपलब्ध है । आपने इस विषय को इस विशालता से वर्णन किया है कि मानव बुद्धि स्तब्ध रह जाती है । प्रत्येक प्रकार के भ्रमों और सन्देहों का उत्तर आप ने क़ुर्आन करीम से दिया है और इस प्रकार नहीं कि कह दिया हो, कि क़ुर्आन करीम इस विचार का खण्डन करता है इसलिए यह विचार खण्डनीय है अपितु ऐसे सबूतों द्वारा जो यद्यपि कि वर्णन तो क़ुर्आन करीम ने किए हैं, परन्तु हैं बौद्धिक और ज्ञानसंबंधी, जिनको स्वीकार करने पर प्रत्येक धर्म और जाति के लोग विवश हैं ।

चौथा सैद्धान्तिक ज्ञान क़ुर्आन के संबंध में आप(अ) को यह दिया गया है कि इस से पूर्व लोग सामान्यतया यह तो वर्णन करते थे कि क़ुर्आन करीम समस्त किताबों से सर्वश्रेष्ठ है, परन्तु यह किसी ने सिद्ध नहीं किया था कि पवित्र किताबों या अन्य किताबों पर उसको क्या श्रेष्ठता प्राप्त है । जिसके कारण वह अद्वितीय और अनुपम है । इस विषय को आप ने क़ुर्आन करीम के ही वर्णन किए हुए सबूतों से इतनी विशालता से सिद्ध किया है कि सहसा मनुष्य का हृदय क़ुर्आन करीम पर बलिदान होना चाहता है और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर न्यौछावर, जिनके द्वारा ये शिक्षा हमें प्राप्त हुई ।

पाँचवां सैद्धान्तिक ज्ञान जो आप(अ) को दिया गया है यह है कि क़ुर्आन बहुमुखी अर्थ रखता है इसके कई रहस्य हैं । इसको जिस बुद्धि और जिस योग्यता के व्यक्ति पढ़ें इसमें उनकी बुद्धि और उनकी योग्यता के अनुसार सच्ची शिक्षा विद्यमान है । जैसे कि शब्द एक है परन्तु अर्थ अनेक हैं । यदि साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति पढ़े तो वह उसमें ऐसी मोटी-मोटी शिक्षा देखेगा जिसका स्वीकार करना और समझना उसके लिए कुछ भी कठिन न होगा और यदि मध्यम स्तर के ज्ञान वाला उसे पढ़ेगा तो वह अपने ज्ञान के अनुसार उसमें विषय पाएगा और यदि श्रेष्ठ और उच्च स्तर के ज्ञान वाला व्यक्ति उसे पढ़ेगा तो वह अपने स्तर के अनुसार

उसमें ज्ञान पाएगा । अतएव यह न होगा कि अल्पज्ञान लोग उस किताब का समझना अपनी बुद्धि के स्तर से उच्च पाएँ या उच्च स्तर के ज्ञानी उसे एक साधारण किताब पाएँ और उसमें अपनी रुचि और ज्ञान की उन्नति का सामान न देखें ।

छठा सैद्धान्तिक ज्ञान आप(अ) को क़ुर्आन करीम के संबंध में यह दिया गया कि क़ुर्आन करीम आध्यात्म ज्ञान के अतिरिक्त उन आवश्यक भौतिक ज्ञानों का भी वर्णन करता है जिनका ज्ञान मनुष्य के लिए आवश्यक तथा उन ज्ञानों का प्रकटन युग की उन्नति के साथ विकसित होता जाता है ताकि प्रत्येक युग के लोगों का ईमान ताज़ा हो ।

सातवां सैद्धान्तिक ज्ञान आप(अ) को यह दिया गया कि क़ुर्आन की व्याख्या (तफ़सीर) के संबंध में आप को वे नियम समझाए गए कि जिन्हें ध्यान में रखकर व्यक्ति क़ुर्आन करीम की व्याख्या में ग़लती से सुरक्षित हो जाता है तथा जिन की सहायता से मनुष्य पर नवीन से नवीन ज्ञानों का प्रकटन होता है और प्रत्येक बार क़ुर्आन करीम का अध्ययन उसके लिए अधिक आनन्द और हर्ष का कारण होता है ।

आठवाँ सैद्धान्तिक ज्ञान आप(अ) को क़ुर्आन करीम के संबंध में यह दिया गया कि क़ुर्आन करीम से समस्त आध्यात्मिक उत्थान के स्तर आप को सिखाए गए और जो ज्ञान इससे पूर्व के लोग अपनी बुद्धि द्वारा मालूम कर रहे थे और कई बार गलती कर जाते थे उनके संबंध में आप(अ) को क़ुर्आन करीम से ज्ञान दिया गया और समझाया गया कि समस्त आध्यात्मिक परिस्थितियाँ निम्न से लेकर उच्च तक क़ुर्आन करीम ने क्रमानुसार वर्णन की हैं जिन पर चलकर मनुष्य ख़ुदा तआला तक पहुँच सकता है और उस के ईमान रूपी फल भी खाता जाता है । यह बात पूर्वकालीन लोगों को प्राप्त न थी, क्योंकि वे क़ुर्आन करीम की विभिन्न आयतों से तो सिद्ध करते थे परन्तु समस्त आध्यात्मिक स्तर सामूहिक तौर पर उनको क़ुर्आन करीम से ज्ञात न थे ।

नौवाँ सैद्धान्तिक ज्ञान आप(अ) को यह दिया गया कि सम्पूर्ण क़ुर्आन करीम क्या सूरतें और क्या आयतें समस्त एक विशेष क्रम के साथ उतरा हुआ है । इसका एक-एक शब्द और एक-एक वाक्य यथा-स्थान रखा हुआ है और ऐसा उच्च स्तर का क्रम उसमें पाया जाता है

कि अन्य किताबों का क्रम उसकी तुलना में बिल्कुल तुच्छ हैं, क्योंकि अन्य किताबों के क्रम में केवल एक ही बात ध्यान में रखी जाती है कि उचित विषय एक के बाद एक आ जाएँ, परन्तु क़ुर्आन करीम के क्रम में यह विशेषता है कि इसमें विषयों का क्रम न केवल विषयों की दृष्टि से है अपितु ऐसी शैली से है कि विभिन्न दृष्टिकोणों से उसका क्रम ठहराया जा सकता है अर्थात् यदि विभिन्न अर्थों को ध्यान में रखा जाए तो प्रत्येक अर्थ की दृष्टि से उसके अन्दर क्रम पाया जाता है, यह नहीं कि उसकी एक व्याख्या करें तो क्रम स्थापित रहे और दूसरी व्याख्या करें तो क्रम में दोष आ जाए अपितु जितने अर्थ उसके सही और व्याख्या के नियमानुसार हैं उन सब को ध्यान में रखा गया है और कोई से भी अर्थ लेकर उसकी व्याख्या आरंभ कर दो उसके क्रम में अन्तर नहीं आएगा । यह ऐसी विशेषता है कि किसी मानवीय वाणी में नहीं पाई जाती और न पाई जा सकती है ।

दसवाँ सैद्धान्तिक ज्ञान आप(अ) को यह दिया गया है कि क़ुर्आन करीम में शुभ कर्मों (नेकियों) और दुष्कर्मों (बदियों) के स्तर वर्णन किए गए हैं अर्थात यह बताया गया है कि कौन-कौन से शुभ कर्म से कौन-कौन से शुभ कर्म की प्रेरणा मिलती है और कौन-कौन से दुष्कर्म से कौन-कौन सा दुष्कर्म जन्म लेता है । इस ज्ञान के माध्यम से मनुष्य नैतिकता के सुधार में महान लाभ प्राप्त कर सकता है, क्योंकि इस श्रृँखलाबद्ध ज्ञान के माध्यम से वह बहुत सी नेकियों (शुभ कर्मों) को प्राप्त कर सकता है जिन्हें वह पहले बावजूद प्रयास के प्राप्त नहीं कर सकता था और बहुत से दुष्कर्मों को त्याग सकता है जिन्हें वह बावजूद अत्यधिक प्रयासों के नहीं त्याग सकता था । अतः क़ुर्आन करीम का यह महान चमत्कार आप ने बता दिया है कि उसने मनुष्य को शुभ कर्मों और दुष्कर्मों के झरने बता दिए हैं जहाँ पहुँच कर वह अपनी प्यास को बुझा सकता है या विनाशकारी तूफान को रोक सकता है ।

ग्यारहवाँ सैद्धान्तिक ज्ञान आप(अ) को यह बताया गया है कि सूरह 'फातिहा' क़ुर्आन करीम के समस्त विषयों का सार है और शेष क़ुर्आन के लिए बतौर मतन (किताब की मूल इबारत) है और समस्त सैद्धान्तिक समस्याएँ उसके अन्दर वर्णन की गई हैं । आप ने इस सूरह की बड़ी

विस्तृत और विशाल व्याख्याएँ प्रकाशित कीं उस से और अत्यन्त आनन्दमय, ईमान को ताज़ा करने वाले लेख लेकर वितरित किए । इस ज्ञान के माध्यम से आपने इस्लाम की सुरक्षा-व्यवस्था को सरल कर दिया, क्योंकि प्रत्येक बात जो विस्तार में से मनुष्य की समझ में न आए वह उस सूक्ष्म पर ध्यान देकर उसे समझ सकता है और केवल इसी सूरह को लेकर समस्त संसार के धर्मों का मुकाबला कर सकता है और सम्पूर्ण आध्यात्मिक स्तरों को ज्ञात कर सकता है ।

ये तो कुछ उदाहरण मैंने सैद्धान्तिक ज्ञानों के वर्णन किए हैं इनके अतिरिक्त **बारहवाँ ज्ञान** क़ुर्आन करीम के संबंध में आप(अ) को विस्तार-पूर्वक दिया गया है जिसके अनुसार विभिन्न आयतों के अनुवाद और उनके मआरिफ (ज्ञान) आपने वर्णन किए हैं तथा युग की आवश्यकताओं के अनुसार जो दिशा-निर्देश आपने क़ुर्आन करीम से प्राप्त किए हैं उनका यदि वर्णन किया जाए तो इसके लिए किताबों की कई जिल्दें चाहिएँ । इन ज्ञानों के झरनों ने सिद्ध कर दिया है कि आप(अ) का उस वरदान के उदगम से विशेष सम्बन्ध है, और जो सर्वज्ञ है जिस के सन्दर्भ में आता है - وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ[249] **(वला यूहीतूना बिशैइम्मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाआ)** क्योंकि मनुष्य की सामर्थ्य से बिल्कुल बाहर है कि वह ऐसे ज्ञानों को अपनी बुद्धि द्वारा ज्ञात कर सके । आप के बताए हुए ज्ञान और नियमों के अनुसार जब हम क़ुर्आन करीम का अध्ययन करते हैं तो इस के अन्दर ज्ञान के समुद्र लहरें मारते हुए दिखाई देते हैं जिनका किनारा दिखाई नहीं देता ।

आप(अ) ने आयत لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ[250] **(ला यमस्सुहू इल्लल मुतहहरून)** के विषय की ओर ध्यानाकर्षण करा के अपने विरोधियों को बार-बार ध्यान दिलाया कि यदि आप लोगों के विचारों के अनुसार मैं झूठा हूँ तो फिर क्या कारण है कि ऐसे सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान मुझे प्रदान किए जाते हैं, तथा अपने विरोधियों को बार-बार मुकाबले का निमंत्रण दिया कि यदि तुम से कोई विद्वान या शैख अल्लाह तआला से संबंध रखता है तो मेरे मुकाबले पर क़ुर्आन के ज्ञानों को प्रकट करे और ऐसे किया जाए कि एक स्थान पर एक मध्यस्थ बतौर पर्ची क़ुर्आन करीम का कोई भाग निकाल कर दोनों को दे तथा उसकी व्याख्या आधुनिक ज्ञानों

को दृष्टिगत रखते हुए दोनों लिखें फिर देखा जाए कि अल्लाह तआला किस सदस्य की सहायता करता है, परन्तु बावजूद बारम्बार पुकारने के कोई मुकाबले पर न आया और आता भी क्योंकर ? क्योंकि आप का मुक़ाबला तो अलग रहा, क़ुर्आन के ज्ञानों में आपके सेवकों का भी कोई सामना नहीं कर सकता । क़ुर्आन करीम इस समय जैसे हमारा ही है ।

इस लेख के समाप्त करने से पूर्व मैं आप(अ) की एक फ़ारसी कविता क़ुर्आन करीम के संबंध में लिखता हूँ जिसमें आप ने क़ुर्आनी ज्ञानों के संबंध में लोगों का ध्यानाकर्षण किया है :-

(1) از نورِ پاک قرآن صبح صفا دمید — بر غنچہ ہائے دلہا بادِ صبا وزیدہ

(2) ایں روشنی ولمعاں شمس الضحیٰ ندارد — واں دلبری وخوبی درکس قمر ندیدہ

(3) یوسف بقعرِ چاہ محبوس ماند تنہا — واں یوسفے کہ تن ہا از چاہ برکشیدہ

(4) از مشرقِ معانی صدہا دقائق آورد — قدِّ ہلال نازک زاں ناز کی خمیدہ

(5) کیفیتِ علومش دانی چہ شان دارد؟ — شہد یست آسمانی از وحی حق چکیدہ

(6) آں نیّرِ صداقت چوں رُو بعالَم آورد — ہر بوم شب پرستے درکُنجِ خود خزیدہ

(7) روئے یقیں نہ بیند ہرگز کسے بدُنیا — اِلّا کسے کہ باشد با رویش آرمیدہ

(8) آں کس کہ عالمش شد، شد مخزنِ معارف — واں بے خبر ز عالم کیں عالمے ندیدہ

(9) بارانِ فضلِ رحمٰن، آمد بمقدمِ او — بدقسمت آنکہ، از وے سوئے دگر دویدہ

(10) میلِ بدی نباشد، اِلّا رگے ز شیطاں — آں را بشر بدانم، کز ہر شرے رہیدہ

(11) اے کانِ دلربائی ، دانم کہ از کجائی — تو نورِ آں خدائی، کیں خلق آفریدہ

(12) میلم نماند باکس محبوب من تُوئی بس — زیرا کہ زاں فغاں رس نورت بمارسیدہ 251

अनुवाद :- (1) क़ुर्आन के पवित्र प्रकाश से प्रकाशमान प्रात: का उदय हो गया और हृदयों की कली पर प्रात: की समीर चल पड़ी ।

(2) यह प्रकाश और चमक तो दोपहर के सूर्य में भी नहीं और यह आकर्षण और सौन्दर्य तो किसी चन्द्रमा में भी नहीं ।

(3) यूसुफ़ तो कुएं की तह में अकेला गिरा था परन्तु इस युसूफ़ ने बहुत से लोगों को कुएं में से निकाला है ।

(4) सच्चाइयों के उदगम से ये सैकड़ों सच्चाइयां साथ लाया है ।

कोमल हिलाल (प्रथम तीन रातों का चन्द्र) की कमर उन सच्चाइयों से झुक गई है ।

(5) तुझे क्या पता कि उसके ज्ञानों की वास्तविकता किस शान की है ? वह आकाशीय शहद है जो ख़ुदा की वह्यी से टपका है ।

(6) वह सत्य का सूर्य जब संसार पर उदय हुआ तो रात के पुजारी उल्लू अपने कोनों में जा घुसे ।

(7) संसार में किसी को विश्वास का मुख देखना प्राप्त नहीं होता परन्तु उसी व्यक्ति को जो उस से प्रेम रखता है ।

(8) और जो व्यक्ति उसका विद्वान बन गया मानो वह आध्यात्म ज्ञान का भंडार हो गया और जिस व्यक्ति ने उस विद्वान को नहीं देखा उसे संसार की कुछ खबर ही नहीं ।

(9) दयालु अल्लाह तआला की कृपा-वृष्टि ऐसे व्यक्ति की पेशवाई को आती है, दुर्भाग्यशाली है वह व्यक्ति जो उससे विमुख होकर पलायन कर गया ।

(10) बुराई की ओर प्रेरणा एक शैतानी प्रवृत्ति है मैं तो ऐसे व्यक्ति को बशर (मानव) जानता हूँ जो प्रत्येक बुराई से मुक्ति पाए ।

(11) हे सौन्दर्य की खान मैं जानता हूँ कि तू किस से सम्बन्ध रखती है तू तो उस ख़ुदा का प्रकाश है जिसने इस सृष्टि को उत्पन्न किया है ।

(12) मेरा झुकाव तो किसी की ओर न रहा, मेरा प्रियतम तो केवल तू ही है, क्योंकि उस न्यायकर्ता ख़ुदा की ओर से तेरा प्रकाश हमें पहुँचा है ।*

दसवां सबूत

आप की सच्चाई का दसवां सबूत वह भी वास्तव में सैकड़ों अपितु सहस्त्रों सबूतों को समेटे हुए है, यह है कि आप को अल्लाह तआला ने अत्यन्त बहुलता से अपने परोक्ष (ग़ैब) पर अवगत किया था । अतः ज्ञात हुआ कि आप[अ] ख़ुदा के पैग़म्बर थे । अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में

* प्रस्तुत अनुवाद, अनुवादक द्वारा किया गया है । अनुवादक ।

फ़रमाता है - فَلَا يُظۡهِرُ عَلٰى غَيۡبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰى مِنۡ رَّسُوۡلٍ[252] **(फ़ला युज़्हिरो अला ग़ैबिही अहदन इल्ला मनिर्तज़ा मिन रसूलिन)** अर्थात वह परोक्ष (ग़ैब) पर बहुलता के साथ अवगत नहीं कराता, परन्तु अपने रसूलों को (اَظۡهَرَ عَلَيۡهِ) (अज़्हरा अलयहे का अर्थ है उसको उस पर प्रभुत्व दिया) अत: जिस व्यक्ति को बहुलता के साथ परोक्ष के मामलों पर सूचना प्राप्त हो और उस पर वह्यी स्वच्छ पानी की भाँति हो, जो प्रत्येक प्रकार की गन्दगी से पवित्र हो तथा प्रकाशमान निशान उसे दिए जाएँ और महत्वपूर्ण मामलों से समय से पूर्व उसे सूचित किया जाए वह अल्लाह का मामूर है और उसका इन्कार करना जैसे क़ुर्आन करीम का इन्कार करना है । जिस ने यह नियम वर्णन किया है और सब नबियों का इन्कार करना है जिन्होंने अपनी सच्चाई के प्रमाण में हमेशा इस बात को प्रस्तुत किया है । अत: बाइबल में भी आता है कि झूठे नबी की निशानी है कि जो बात वह अल्लाह की ओर से कहे वह पूरी न हो ।[253]

इस मापदण्ड के अन्तर्गत जब हम हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के दावे को देखते हैं तो आप की सच्चाई ऐसे दिन की भाँति दिखाई देती है जिस का सूर्य सर पर हो । आप पर अल्लाह तआला ने इस बहुलता और निरन्तरता के साथ परोक्ष की खबरें प्रकट कीं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त अन्य किसी नबी की भविष्यवाणियों में उसका उदाहरण नहीं मिलता अपितु सत्य यह है कि उनकी संख्या इतनी अधिक है कि यदि उनको वितरित किया जाए तो उनसे कई नबियों की नुबुव्वत सिद्ध हो जाए । मैं उन परोक्ष की खबरों में से बारह को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करता हूँ ।

ये भविष्यवाणियाँ जो आप(अ) ने कीं बीसियों प्रकार की थीं । कुछ राजनैतिक मामलों से संबंधित थीं, कुछ सामूहिक मामलों से संबंधित, कुछ आकाशीय परिवर्तनों के संबंध में, कुछ धार्मिक मामलों के संबंध में, कुछ मानसिक योग्यताओं के संबंध में, कुछ अनुवांशिक (नस्ली) उन्नति या वंश के समाप्त होने के संबंध में, कुछ अपनी उन्नति के संबंध में, कुछ भविष्य में संसार की परिस्थितियों के संबंध में थीं । अतएव विभिन्न प्रकार की समस्याओं से संबंधित थीं कि उनके प्रकार ही एक लम्बी सूची में वर्णन किए जा सकते हैं ।

अब मैं नीचे आपकी बारह भविष्यवाणियाँ जो पूरी हो चुकी हैं का वर्णन करता हूँ और सर्वप्रथम उस भविष्यवाणी की चर्चा करता हूँ जो अफ़गानिस्तान ही के साथ संबंध रखती है ।

पहली भविष्यवाणी

साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ शहीद तथा मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब शहीद की शहादत और उसके बाद की घटनाओं के संबंध में

हे बादशाह ! अल्लाह तआला आप को अपनी सुरक्षा और शान्ति में रखे और उन गलतियों के दुष्परिणामों से सुरक्षित रखे जिनके करने में आप का कोई हस्तक्षेप न था । आज से चालीस वर्ष पूर्व हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को इल्हाम में बताया गया था कि شَاتَانِ تُذْبَحَانِ وَكُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ[254] **(शाताने तुज़बहाने व कुल्लो मन अलैहा फ़ानिन)** अर्थात् दो बकरे ज़िबह (आलंभन) किए जाएँगे और प्रत्येक जो इस पृथ्वी पर निवास करता है समाप्त हो जाएगा । स्वप्नफल-ज्ञान के अनुसार شَاة **(शात)** की दो कल्पनाएँ हो सकती हैं । एक तो स्त्रियाँ और दूसरे अत्यन्त आज्ञाकारी और फरमाबरदार प्रजा । चूँकि स्त्रियों के अर्थों के साथ अगले शब्द का कोई संबंध ज्ञात नहीं होता, क्योंकि स्त्रियों का ज़िब्ह (आलंभन) होने से कम ही संबंध होता है । अधिकतर प्राण देने वाले पुरुष ही होते हैं । इसलिए प्राय: कल्पना के अनुसार यही अर्थ हो सकते हैं कि दो व्यक्ति जो अपने बादशाह के अत्यन्त आज्ञाकारी और फ़रमाबरदार होंगे, बावजूद इसके कि उन्होंने अपने बादशाह का कोई अपराध न किया होगा तथा उसका कोई कानून भंग न किया होगा तथा क़त्ल के दण्ड के पात्र न होंगे क़त्ल किए जाएँगे, तत्पश्चात् उस देश पर एक सामान्य विनाश आएगा तथा विनाश उसमें डेरा डाल लेगा ।

इस भविष्यवाणी में यद्यपि देश इत्यादि का कोई लक्षण नहीं दिया गया था परन्तु उसके शब्दों से यह अवश्य विदित होता था कि प्रथम तो यह घटना अंग्रेज़ी क्षेत्र में नहीं होगी अपितु किसी ऐसे देश में होगी जहाँ सामान्य कानून का आज्ञाकारी होते हुए भी लोगों के क्रोध और आक्रोश

के परिणाम स्वरूप मनुष्य क़त्ल किए जा सकते हैं । द्वितीय यह कि ये क़त्ल किए गए लोग, इल्हाम किए गए व्यक्ति के अनुयायियों में से होंगे, क्योंकि यदि ऐसा न हो तो फिर उसको केवल दो क़त्ल किए जाने वालों के संबंध में सूचना देने का कोई कारण न था । तृतीय यह बात विदित हुई कि वह क़त्ल अनुचित होगा, किसी राजनैतिक अपराध से संबंधित न होगा । चतुर्थ यह कि इस अनुचित कार्य के प्रतिफल स्वरूप उस देश पर एक सामान्य विनाश आएगा ।

ये चारों बातें मिल कर हे बादशाह ! इस भविष्यवाणी को साधारण भविष्यवाणियों से अधिक ऊँचा कर देती हैं और कोई नहीं कह सकता कि चूँकि इसमें देश का निर्धारण नहीं इसलिए यह भविष्यवाणी संदिग्ध है । इन चारों बातों का सामूहिक तौर पर पूर्ण होना भविष्यवाणी की श्रेष्ठता को सिद्ध करता है क्योंकि ये चारों बातें संयोगवश एकत्र नहीं हो सकतीं।

इस भविष्यवाणी के पश्चात् लगभग बीस वर्ष तक कोई ऐसे लक्षण दिखाई नहीं दिए जिन से यह भविष्यवाणी पूर्ण होती मालूम हो, परन्तु जब कि लगभग बीस वर्ष इस इल्हाम पर व्यतीत हो गए तो ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होने लगीं जिन्होंने इस भविष्यवाणी को आश्चर्यजनक तौर पर पूर्ण कर दिया । संयोग ऐसा हुआ कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की कुछ किताबें कोई व्यक्ति अफ़गानिस्तान ले गया और वहाँ ख़ोस्त के एक विद्वान सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहिब को जो अफ़गानिस्तान की सरकार में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे और बड़े-बड़े अधिकारी उन का संयम और ईमानदारी देख कर उन से निष्ठा रखते थे वे किताबें दीं । आपने उन किताबों को पढ़कर यह निर्णय कर लिया कि हज़रत अक़दस[अ] सच्चे हैं तथा अपने एक शिष्य को और अधिक छान-बीन के लिए भेजा और साथ ही अनुमति दी कि वह उनकी ओर से बैअत भी कर आए । इस शिष्य का नाम मौलवी अब्दुर्रहमान था। उन्होंने क़ादियान आकर स्वयं भी बैअत की और मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहिब की ओर से भी बैअत की और फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की किताबें लेकर वापस अफ़ग़ानिस्तान चले गए और इरादा किया कि पहले काबुल जाएँ ताकि वहाँ अपने बादशाह तक भी निमंत्रण (दा'वत) को पहुँचा दें ।

उनके काबुल पहुँचने पर कुछ अल्पबुद्धि सरकार विरोधियों ने अमीर अब्दुर्रहमान साहिब को उनके विरुद्ध भड़काया और कहा कि यह व्यक्ति मुरतद (धर्म से विमुख) और इस्लाम से बाहर है और क़त्ल योग्य है और उन्हें धोखा देकर उनके क़त्ल का फ़त्वा प्राप्त किया और अत्यन्त अत्याचार करते हुए उन्हें क़त्ल कर दिया । वह जो अपने बादशाह से इतना प्रेम करता था कि पूर्व इसके कि अपने क्षेत्र में जाता पहले अपने बादशाह के पास यह शुभ संदेश लेकर पहुँचा कि ख़ुदा का मसीह और महदी आ गया है । उसके प्रेम और अनुराग का उसको यह प्रतिफल दिया गया कि उसकी गर्दन में कपड़ा डाल कर सांस बन्द करके शहीद कर दिया गया, परन्तु इस घटना में अल्लाहतआला का हाथ था, उसने लगभग बीस वर्ष पूर्व प्रजा में से दो वफ़ादार सदस्यों की बिना किसी कानून के उल्लंघन के क़त्ल किए जाने की सूचना दे दी थी तथा इस सूचना को पूर्ण होकर रहना था । अत: इस क़त्ल द्वारा इन दो व्यक्तियों में से जिनके क़त्ल की सूचना दी गई थी, एक क़त्ल हो गया ।

इस घटना के एक-दो वर्ष पश्चात साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद बैतुल्लाह के हज के इरादे से अपने देश से रवाना हुए, चूँकि हज़रत अक़दस(अ) की बैअत तो कर ही चुके थे, इरादा किया कि जाते समय आप(अ) से भी मिलते जाएँ । अत: इस इरादे से क़ादियान पधारे, परन्तु यहाँ आकर इस से पूर्व जो किताबों के माध्यम से समझा था बहुत कुछ अधिक देखा और हृदय की स्वच्छता के कारण ख़ुदा के नूर की ओर ऐसे आकर्षित किए गए कि हज के इरादे को स्थगित कर दिया और क़ादियान ही रह गए । कुछ माह पश्चात् देश वापस चले गए और निश्चय कर लिया कि अपने बादशाह को भी इस नेमत में भागीदार बनाऊँ जो मुझे प्राप्त हुई है और ख़ोस्त पहुँचते ही चार पत्र काबुल के चार दरबारियों के नाम लिखे। उन पत्रों के काबुल पहुँचने पर जनाब के पिता श्री अमीर हबीबुल्लाह ख़ान साहिब [255] काबुल शासन के उत्तराधिकारी को लोगों ने भड़काया और भाँति-भाँति के झूठे आरोप लगा कर उनको इस बात पर तैयार कर दिया कि उनको पकड़वा कर काबुल बुला लें । ख़ोस्त के गवर्नर के नाम आदेश किया और साहिबज़ादा अब्दुललतीफ़(रज़ि.) काबुल में उपस्थित किए गए । अमीर साहिब ने आप को मुल्लाओं के सुपुर्द किया,

जिन्होंने आप का कोई दोष सिद्ध न पाया, परन्तु कुछ लोगों ने जिन्हें शासन के हित की तुलना में अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का पूरा करना अधिक महत्वपूर्ण होता है । अमीर हबीबुल्लाह खान को भड़काया कि यदि यह व्यक्ति छोड़ दिया गया और लोगों ने इसका प्रभाव स्वीकार कर लिया तो लोगों के हृदयों में जिहाद की उमंग ठण्डी पड़ जाएगी और शासन को हानि पहुँचेगी । अन्ततः उनके संगसार (पत्थरों से मारना) करने का फ़त्वा दे दिया गया । अमीर हबीबुल्लाह खान साहिब ने अपने निकट उन का हित समझ कर उन्हें कई बार तौबा करने के लिए कहा, परन्तु उन्होंने यही उत्तर दिया कि मैं तो इस्लाम पर हूँ तौबा करके क्या काफ़िर हो जाऊँ, मैं किसी प्रकार भी उस सत्य को नहीं त्याग सकता जिसे मैंने सोच-समझ कर स्वीकार किया है । जब उनके अपने दृष्टिकोण से हटने से बिल्कुल निराशा हो गई तो एक बड़े समूह के समक्ष उन्हें शहर से बाहर ले जाकर संगसार (पत्थरों द्वारा मार कर वध करना) कर दिया ।

यह वफ़ादार अपने बादशाह का प्राण न्यौछावर करने वाला कुछ स्वार्थी और मतलब परस्त षड़यंत्रकारियों के षड़यंत्र का शिकार हुआ तथा उन्हांने अमीर साहिब को धोखा दिया कि उसका जीवित रहना देश के हित में न होगा । हालाँकि ये लोग देश के लिए एक शरण होते हैं और ख़ुदा उन के द्वारा देश की विपत्तियाँ टाल देता है । उन्होंने बादशाह के सामने यह बात प्रस्तुत की कि यदि यह व्यक्ति जीवित रहा तो लोग जिहाद के विचार में सुस्त हो जाएँगे, परन्तु यह प्रस्तुत नहीं किया कि यह व्यक्ति जिस सिलसिले में है उसकी यह भी शिक्षा है कि जिस सरकार के अधीन रहो उसका पूर्ण आज्ञापालन करो । अतः उसकी बातों के प्रकाशित करने से अफ़गानिस्तान की घरेलू परस्पर लड़ाइयाँ और आपस के मतभेद दूर होकर समस्त देश अपने बादशाह का सच्चा प्राणों का बलिदान देने वाला हो जाएगा, जहाँ उसका पसीना बहेगा वहाँ अपने रक्त बहाने के लिए तैयार होगा, और यह न बताया कि जिस सिलसिले से यह संबंध रखता है उसकी शिक्षा यह है कि गुप्त षड़यंत्र न करो, रिश्वतें न लो, झूठ न बोलो, मुनाफ़िक़त (द्वयमुखी होना) न करो, और न केवल शिक्षा दी जाती है अपितु उसकी पाबन्दी भी कराई जाती है । अतः यदि उसके विचारों को प्रकाशित किया गया तो एक पल में देश की स्थिति सुधर कर प्रत्येक प्रकार के विकास आरंभ हो

जाएँगे । इसी प्रकार उन्होंने यह न बताया कि यह उस जिहाद का इन्कारी है कि अन्य जातियों पर उनकी ओर से बिना किसी धार्मिक हस्तक्षेप के आक्रमण किया जाए तथा इस्लाम को बदनाम किया जाए, न कि उस वास्तविक सुरक्षात्मक जिहाद का जो स्वयं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किया और न उन राजनैतिक युद्धों का जो एक जाति अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए अन्य जातियों से करती है । उसकी तो केवल यह आस्था है कि बिना इसके कि अन्य जातियों की ओर से धार्मिक हस्तक्षेप हो उनके साथ जिहाद के नाम पर युद्ध नहीं करना चाहिए ताकि इस्लाम पर आरोप न आए । राजनैतिक हितों की सुरक्षा के लिए यदि युद्ध की आवश्यकता पड़े तो निसन्देह युद्ध करें, परन्तु इस का नाम जिहाद न रखें, क्योंकि वह विजय जिसके लिए इस्लाम की प्रसिद्धि को बलिदान किया जाए, उस पराजय से अधिक बुरी है जिसमें इस्लाम के सम्मान को सुरक्षित कर लिया गया हो ।

अतएव अमीर हबीबुल्लाह ख़ान साहिब को अकारण और ग़लत घटनाएँ बता कर सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहिब को शहीद करा दिया गया । इस प्रकार इल्हाम का पहला भाग पूर्णरूपेण पूर्ण हो गया कि شَاتَانِ تُذْبَحَانِ۔ **(शाताने तुज़बहाने)** । इस जमाअत के दो अत्यन्त वफ़ादार और आज्ञाकार व्यक्ति बावजूद समय के बादशाह के हर तरह से आज्ञाकरी होने के ज़िब्ह कर दिए जाएँगे और वह भाग पूर्ण होना शेष रह गया कि इस घटना के पश्चात उस पृथ्वी पर सामान्य रूप से तबाही आएगी और उसके पूर्ण होने में भी देर नहीं लगी । अभी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ की शहादत पर एक माह भी न गुज़रा था कि काबुल में सख़्त हैज़ा फैला और इतनी अधिक संख्या में लोग तबाह हुए कि बड़े और छोटे इस अचानक आई आपदा से घबरा गए और लोगों के हृदय भयभीत हो गए और सामान्यतया लोगों ने महसूस कर लिया कि यह विपत्ति उस सय्यद मज़लूम (नृशंसित) के कारण हम पर पड़ी है । जैसा कि एक असंबंधित व्यक्ति मिस्टर ए.फ्रेक मार्टिन [256] की जो कई वर्षों तक अफ़गानिस्तान की सरकार में चीफ़ इन्जीनियर के पद पर आसीन रह चुके हैं, उस साक्ष्य से सिद्ध होता है जो उन्होंने अपनी किताब ''अन्डर दी एब्सल्यूट अमीर'' [257] नामी में वर्णन की है । ''यह हैज़ा बिल्कुल असंभावित था क्योंकि अफ़गानिस्तान में

हैज़े के पिछले दौरों पर दृष्टि डालते हुए अभी और चार वर्ष तक इस प्रकार का संक्रामक रोग फूट सकता था ।'' अतः यह हैज़ा अल्लाह तआला का एक विशेष निशान था, जिसकी सूचना वह अपने मामूर को लगभग अट्ठाईस वर्ष पूर्व दे चुका था । विचित्र बात यह है कि इस भविष्यवाणी की अधिक दृढ़ता के लिए उसने साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद को भी इस बात की सूचना दे दी थी । अतः उन्होंने लोगों से कह दिया था कि मैं अपनी शहादत के पश्चात एक प्रलय को आते हुए देखता हूँ । इस हैज़े का प्रभाव काबुल के प्रत्येक घराने पर पड़ा । जिस प्रकार जन-साधारण इस आक्रमण से सुरक्षित न रहे, धनवान भी सुरक्षित न रहे तथा उन घरानों में भी उसने तबाही का द्वार खोल दिया जो हर प्रकार के स्वास्थ्य-सुरक्षा के साधन उपलब्ध रखते थे और वे लोग जिन्होंने शहीद सय्यद के संगसार करने में विशेष भाग लिया था, विशेष तौर पर पकड़े गए और कुछ स्वयं पकड़ में आए, कुछ के अत्यन्त निकटस्थ परिजन तबाह हुए ।

अतएव एक दीर्घ समय के पश्चात् अल्लाह तआला का कलाम अक्षरशः पूरा हुआ और उसने अपने प्रकोपी निशानों से अपने मामूर की प्रतिष्ठा को प्रकट किया और बुद्धिमान के लिए ईमान लाने का मार्ग खोल दिया । कौन कह सकता है कि इस प्रकार की भविष्यवाणी करना किसी मनुष्य का काम है । कौन सा मनुष्य इस स्थिति में जब कि उस पर एक व्यक्ति भी ईमान नहीं लाया यह सूचना प्रकाशित कर सकता था कि उस पर किसी समय बड़ी बहुलता से लोग ईमान ले आएँगे, यहाँ तक कि उस का सिलसिला इस देश से निकलकर बाहर के देशों में फैल जाएगा, फिर वहाँ उसके दो अनुयायी उस पर ईमान लाने के कारण न कि किसी अन्य अपराध के कारण शहीद किए जाएँगे और जब इन दोनों की शहादत हो चुकेगी तो अल्लाह तआला उस क्षेत्र पर एक तबाही उतारेगा जो उनके लिए प्रलय का नमूना होगी और अधिकांश लोग उस से तबाह होंगे । यदि बन्दा भी इस प्रकार की सूचनाएँ दे सकता है तो फिर अल्लाह तआला के कलाम और बन्दों के कलाम में अन्तर क्या रहा ?

मैं यहाँ इस सन्देह का निवारण कर देना भी उचित समझता हूँ कि इल्हाम में शब्द - كُلٌّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ **(कुल्लो मन अलैहा फ़ानिन)** है

अर्थात् इस पृथ्वी के समस्त लोग तबाह हो जाएँगे, परन्तु सब लोग तबाह न हुए कुछ लोग तबाह हुए और बहुत से बच गए । मूल बात यह है कि अरबी भाषा के मुहावरे में कुल्लो का शब्द कभी सामान्यतया के लिए और कभी कुछ के अर्थों में भी प्रयोग होता है, आवश्यक नहीं इस शब्द के अर्थ बहुवचन के ही हों । अत: क़ुर्आन करीम में आता है कि मक्खी को अल्लाह तआला ने वह्यी की कि كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ[258] **(कुली मिन कुल्लिस्समराते)** हालाँकि प्रत्येक मक्खी सारे फलों को नहीं खाती । अत: इसके अर्थ यही हैं कि फलों में से कुछ को खा । इसी प्रकार सबा की महारानी के संबंध में फ़रमाता है - وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ[259] **(व ऊतियत मिन कुल्ले शैइन)** उसको प्रत्येक वस्तु दी गई थी, हालाँकि वह संसार के नितान्त छोटे क्षेत्र का शासन था । अत: इस आयत के यही अर्थ हैं कि संसार की नेमतों में से कुछ उसको दी थीं । हाँ यह आवश्यक होता है कि जब कुल्लो का शब्द बोला जाए तो वह अपने अन्दर एक सामान्यतया (सब के लिए का अर्थ) का रखता हो और कुल सदस्यों में से एक विशेष भाग उसमें आ जाए और ये दोनों बातें हैज़े के संक्रामक रोग में जो स्वर्गवासी शहीद की शहादत के पश्चात काबुल में पड़ा पाई जाती थीं । प्रत्येक प्राण उसके भय से कंपायमान था तथा लोगों की एक बड़ी संख्या उसके द्वारा तबाह हुई यहाँ तक कि एक अंग्रेज़ लेखक **260** इल्हाम की वास्तविकता से बिल्कुल अपरिचित था उसे भी अपनी किताब में इस हैज़े की चर्चा विशेष तौर पर प्रकट करके लिखना पड़ी ।

दूसरा आरोप यह किया जा सकता है कि इल्हाम में शब्द تُذْبَحَانِ **(तुज़बहाने)** का है, परन्तु इन दोनों क़त्ल किए गए लोगों में से एक तो गला घोंटकर मारा गया और दूसरे सज्जन संगसार किए गए । यह आरोप भी विचार की कमी और अल्प ज्ञान का ही परिणाम हो सकता है क्योंकि ज़िब्ह के अर्थ अरबी भाषा में तबाह करने के भी होते हैं चाहे किसी भी प्रकार से तबाह किया जाए और क़ुर्आन करीम में अनेकों स्थान पर यह मुहावरा प्रयोग हुआ है । जैसा कि हज़रत मूसा की घटना में आता है कि يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ[261] **(युज़ब्बिहूना अब्नाअकुम व यस्तहयूना निसाअकुम)** तुम्हारे लड़कों को वे ज़िब्ह करते थे और लड़कियों को वे जीवित रखते थे । हालाँकि इतिहास से सिद्ध है कि फ़िरऔनी लोग

लड़कों को ज़िब्ह नहीं करते थे अपितु पहले तो दाइयों को आदेश दिया गया था कि वे बच्चों को मार दें, परन्तु जब उन्होंने दया से काम लिया तो फ़िरऔन ने नदी में फेंकने का आदेश दिया [262] 'ताजुलउरूस' (अरबी शब्द कोष) में है [263]اَلذَّبْحُ اَلْھَلَاکُ **(अज़्ज़िब्हो–अल्हलाको)** । ज़िब्ह के अर्थ तबाह कर देने के भी होते हैं (जिल्द 2, पृष्ठ 141) अत: यह आरोप उचित न होगा कि सय्यद अब्दुल लतीफ़ साहिब संगसार किए गए थे ज़िब्ह नहीं किए गए, क्योंकि ज़िब्ह का शब्द तबाह कर देने के अर्थों में प्रयोग होता है चाहे किसी भी ढंग से तबाह किया जाए ।

दूसरी भविष्यवाणी

ईरानी शासन की क्रान्ति

दूसरी भविष्यवाणी जो मैं हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की अधिकांश भविष्यवाणियों में से वर्णन करना चाहता हूँ वह आपका पड़ोसी शासन अर्थात् ईरान के बादशाह के संबंध में है । 15, जनवरी सन् 1906 ई. को हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम को इल्हाम हुआ कि [264]تزلزل در ایوان کسریٰ فتاد **(तज़ल्ज़ुल दर ईबाने किसरा फ़ताद)** यह इल्हाम सामान्य दिनचर्या के अनुसार सिलसिले के उर्दू और अंग्रेज़ी समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित कर दिया गया । जिस समय यह इल्हाम प्रकाशित हुआ है, ईरान के* बादशाह की स्थिति बिल्कुल सुरक्षित थी, क्योंकि सन् 1905 ई. में देश वासियों की माँगों को स्वीकार करके ईरान के बादशाह ने संसद की स्थापना की घोषणा कर दी थी और सम्पूर्ण ईरान में इस बात कर खुशियाँ मनाई जा रही थीं और बादशाह मुज़फ़्फ़रुद्दीन शाह जन सामान्य में ख्याति प्राप्त कर रहे थे । प्रत्येक व्यक्ति इस बात पर प्रसन्न था कि उन्होंने बिना किसी प्रकार के रक्तपात के देश को उत्तराधिकार के अधिकार प्रदान कर दिए हैं । शेष संसार में भी इस नवीन अनुभव पर जो जापान को छोड़कर शेष एशियाई देशों के लिए बिल्कुल नवीन था, आकांक्षा और आशा की दृष्टि

* इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानीका

लगाए बैठा था और उन भयंकर परिणामों से अपरिचित था जो अपूर्ण शिक्षा और अनुभवहीन लोगों में इस प्रकार का द्विमुखी शासन लागू करने से उत्पन्न हो सकते हैं । ऐसे समय में हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम का यह इल्हाम प्रकाशित करना कि **''तज़ल्ज़ुल दर ईवाने किसरा फ़ताद''** संसार की दृष्टि में विचित्र था । ख़ुदा तआला के लिए वे कार्य साधारण होते हैं जो लोगों को विचित्र दिखाई देते हैं । ईरान ताज़ा स्वतंत्रता पर और शाह मुज़फ़्फ़रुद्दीन अपने मान्य होने पर प्रसन्न हो रहे थे कि सन् 1907 ई. में कुल पचपन वर्ष की आयु में शाह इस संसार से कूच कर गए और उन का पुत्र मिर्ज़ा मुहम्मद अली गद्दी पर बैठा । यद्यपि मुहम्मद अली मिर्ज़ा ने गद्दी पर बैठते ही संसद के स्थायित्व और उत्तराधिकारी शासन के स्थायी होने की घोषणा की परन्तु कुछ ही दिन पश्चात् संसार को वे लक्षण दिखाई देने लगे जिनकी सूचना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम में दी गई थी और हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के इल्हाम के एक ही वर्ष बाद ईरान में उपद्रव के लक्षण दिखाई देने लगे। बादशाह और संसद का विरोध आरंभ हो गया और संसद की मांगों पर बादशाह ने टाल-मटोल आरंभ कर दी । अन्ततः संसद के ज़ोर देने पर उन लोगों को दरबार से पृथक करने का आश्वासन दिया जिनको संसद उपद्रवों का संस्थापक समझती थी, परन्तु साथ ही 'तिहरान' से जाने का भी इरादा कर लिया । इस स्थानांतरण के समय कासिकों की सेना तो बादशाह की अंग रक्षक थी और जातिवादियों के समर्थकों के मध्य मतभेद हो गया और इल्हाम एक रूप में इस प्रकार पूरा हुआ कि ईरान का संसद भवन तोपों से उड़ा दिया गया तथा बादशाह ने संसद को स्थगित कर दिया । बादशाह के इस कृत्य से देश में बग़ावत की एक सामान्य लहर दौड़ गई और लारिस्तान, लाबदजान, अकबराबाद, बू शहर और शीराज़ तथा समस्त दक्षिणी ईरान में शासन के अधिकारियों को निरस्त करने की घोषणा करके उनके स्थान पर प्रजातंत्र के चाहने वालों ने शासन अपने अधिकार में ले लिया । गृह-युद्ध आरंभ हो गया और बादशाह ने देख लिया कि स्थिति गंभीर है । खज़ाना और सामान रूस के देश में भेजना आरंभ कर दिया और पूरा बल लगाया कि बग़ावत समाप्त हो, परन्तु कम होने की बजाए उपद्रव बढ़ता गया, यहाँ तक कि जनवरी सन् 1909 ई.

में इस्फ़हान के क्षेत्र में भी बग़ावत फूट पड़ी और बख़्तियारी सरदार भी क़ौम परस्तों के साथ सम्मिलित हो गए और शाही सेना को सख़्त पराजय दी । बादशाह ने भयभीत होकर उत्तराधिकारी शासन की सुरक्षा का प्रण किया और बार-बार घोषणाएँ कीं कि वह अत्याचारी स्वच्छन्द शासन को कदापि स्थापित नहीं करेगा, परन्तु ख़ुदा के वादे कब टल सकते थे, ऐवाने किसरा में व्याकुलता बढ़ती गई और अन्ततः वह दिन आ गया कि कासिक सेना भी जिस पर बादशाह को गर्व था बादशाह को छोड़कर विद्रोहियों से मिल गई और बादशाह अपनी पत्नी सहित अपने महल को छोड़कर 15, जुलाई सन् 1909 ई. को रूसी दूतावास में शरणागत हो गया और पूरे अढ़ाई वर्ष के पश्चात् हज़रत अक़दस मसीह मौऊद(अ) का इल्हाम ''**तज़ल्ज़ुल दर ईवाने किसरा फ़ताद**'' नितान्त शिक्षात्मक और नसीहत के तौर पर पूरा हुआ । ईरान से अत्याचारी शासन का अन्त हुआ और प्रजातंत्र का नवीन अनुभव जिसके परिणाम ख़ुदा को ज्ञात हैं प्रारंभ हुआ । जून और जुलाई के महीनों में घबराहट, भय, और निराशा के बादल जो किसरा के महल पर छा रहे थे उनका अनुमान वही लोग लगा सकते हैं जो इस प्रकार की परिस्थितियों का अवलोकन कर चुके हों या अल्लाह तआला की ओर से उनको असाधारण विचार शक्ति प्राप्त हुई हो, परन्तु बहरहाल बुद्धिमान के लिए यह निशान हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की सच्चाई का बहुत बड़ा प्रमाण है, परन्तु कम हैं जो लाभ उठाते हैं ।

तीसरी भविष्यवाणी

आथम के संबंध में भविष्यवाणी, जिस से संसार के ईसाइयों पर सामान्यतया और हिन्दुस्तान के ईसाइयों पर विशेषतया सबूत* पूरा हुआ

भविष्यवाणियों का तीसरा उदाहरण मैं उन परोक्ष के मामलों में से वर्णन करता हूँ जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम

* इत्मामे हुज्जत या हुज्जत का पूर्ण होना - किसी को अन्तिम तौर पर बुराई-भलाई समझा देना, तत्पश्चात् यदि फिर वह कार्य करे तो उसका दायित्व उसी पर हो । (अनुवादक)

के ईसाई शत्रुओं के विरुद्ध प्रकाशित कीं ताकि ईसाई संसार पर हुज्जत (तर्क) स्थापित हो । हे बादशाह ! मैं नहीं जानता कि आपको इन परिस्थितियों का ज्ञान है या नहीं कि ईसाई ढंढोरची और प्रचारक मुसलमानों की ग़लत आस्थाओं और उनकी कथित ग़लत रिवायतों से लाभ उठाकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कठोर से कठोर आक्रमण करने के अभ्यस्त हैं, परन्तु उनके आक्रमणों की कठोर आज से तीस चालीस वर्ष पूर्व जिस सीमा को पहुँची हुई थी उसका उदाहरण आज नहीं मिल सकता । उन लोगों की सीमा से बढ़ी हुई गालियों को देखकर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त बलपूर्वक उन का मुकाबला करना प्रारंभ किया और अन्ततः आप के आक्रमणों से घबराकर ईसाई आक्रमणकारी अपने स्थान को छोड़ गए और अब उस लेखन शैली का नाम नहीं लेते जो उन्होंने उस समय अपना रखी थी उन लोगों में से जो सख़्त अपशब्दों से काम लेते थे एक सज्जन डिप्टी अब्दुल्लाह आथम भी थे । एक बार ऐसा हुआ कि मुसलमानों और ईसाइयों ने हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम और उनके मध्य अमृतसर में मुबाहिसा (शास्त्रार्थ) करवा दिया । मुबाहिसे में अब्दुल्लाह आथम साहिब बहुत कुछ हाथ पांव मारते रहे परन्तु उन से कुछ न बना तथा अपनों-परायों में उनको अत्यन्त अपमान झेलना पड़ा । चूँकि मुबाहिसे के मध्य चमत्कारों की भी चर्चा आई थी, इसलिए अल्लाह तआला ने न चाहा कि यह मुबाहिसा बिना किसी चमत्कार के खाली चला जाए । आप(अ) को इल्हाम द्वारा बताया गया कि इस बहस में दोनों सदस्यों में से जो सदस्य जान-बूझ कर झूठ को अपना रहा है और सच्चे ख़ुदा को छोड़ रहा है और एक कमज़ोर मनुष्य को ख़ुदा बना रहा है वह उन्हीं दिनों मुबाहिसे की दृष्टि से अर्थात् प्रतिदिन एक माह लेकर अर्थात "पन्द्रह माह तक 'हाविया' (नर्क का सबसे निचला तल) में गिराया जाएगा और उसे अत्यन्त अपमान का सामना करना होगा बशर्ते कि सत्य की ओर पलायन न करे ।" **265** जब आप(अ) की ओर से अन्तिम भविष्यवाणी भी शामिल कर दी और लिखा कि यदि यह भविष्यवाणी पूरी हो गई तो इस से सिद्ध होगा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जिन को तुमने अपनी किताब "अन्दरूना बाइबल" में (नाऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिका) दज्जाल लिखा है

ख़ुदा के पैग़म्बर और रसूल थे ।

इस भविष्यवाणी में ये दो बातें बताई गई थीं । ख़ुदा बनाने वाला सदस्य डिप्टी आथम पन्द्रह माह के अन्दर अपने हठ, द्वेष और गाली-गलोज के कारण 'हाविया' में गिराया जाएगा । द्वितीय यह कि यदि यह सदस्य सत्य की ओर लौटे और अपनी बात पर लज्जित हो तथा अपनी गलती को समझ जाए तो ऐसी परिस्थिति में वह उस प्रकोप से बचाया जाएगा, यदि दूसरा सदस्य सत्य की ओर न लौटता और अपने हठ पर दृढ़ रहता और तबाह न हो जाता तो भविष्यवाणी झूठी हो जाती, क्योंकि यह भविष्यवाणी बता रही थी कि अल्लाह तआला के निकट आथम की आयु पन्द्रह माह से अधिक है । इसी स्थिति में वह पन्द्रह माह की अवधि में मरेगा जबकि वह हठ पर दृढ़ रहे । एक तनिक से विचार करने पर ज्ञात हो सकता है कि इस भविष्यवाणी की दोनों परिस्थितियों में से दूसरी परिस्थिति के दोनों पहलू पहली परिस्थिति के दोनों पहलुओं से अधिक शानदार हैं, क्योंकि पहली परिस्थिति के दो पहलू ये थे कि यदि आथम हठ पर दृढ़ रहा तो पन्द्रह माह में मर जाएगा और आथम का हठ पर दृढ़ रहना एक स्वाभाविक बात थी, क्योंकि ईसाइयों का एक बड़ा विद्वान था । ईसाइयत के समर्थन और इस्लाम के विरोध में अनेकों किताबें लिख चुका था । सांसारिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी अत्यन्त माननीय था तथा अंग्रेज़ों के साथ उसके बहुत सम्बन्ध थे । इस महान मुबाहिसे में समस्त पादरियों को छोड़कर मुक़ाबले के लिए उसे चुना गया था और बड़े-बड़े पादरी उसके सहायक और नायब बने थे । अतः ऐसे व्यक्ति के संबंध में यही विचार हो सकता है कि उसको ईसाइयत पर पूर्ण विश्वास था और यह कि वह ईसाइयत का इतना समर्थन करने और उसका सब से बड़ा बहसकर्ता सिद्ध होने के पश्चात् मसीह की ख़ुदाई का एक मिनट के लिए भी इन्कारी न होगा और इस्लाम की चमत्कारिक शक्ति का अपने हृदय में कभी विचार नहीं आने देगा, और यह बात कि इस परिस्थिति में वह पन्द्रह माह में मर जाएगा यद्यपि स्वयं में शानदार है परन्तु फिर भी एक पैंसठ वर्ष की आयु के व्यक्ति के संबंध में सन्देह किया जा सकता था कि शायद उसकी आयु ही पूर्ण हो चुकी हो, परन्तु उनकी तुलना में

दूसरी परिस्थिति के दोनों पहलू अधिक शानदार हैं अर्थात यह कि यदि वह सत्य की ओर लौटेगा तो पन्द्रह माह के अन्दर मौत के हाविया में नहीं गिराया जाएगा । इस परिस्थिति का प्रथम पहलू भी कि आथम लौटे इस बात से कि वह अपने हठ पर दृढ़ रहे अधिक शानदार है, क्योंकि किसी मनुष्य की मौत तो मनुष्यों के हाथों से भी आ सकती है परन्तु किसी को पन्द्रह माह तक जीवित रहना किसी के अधिकार में नहीं है अत: यदि भविष्यवाणी की दूसरी परिस्थिति पूरी होती तो वह पहली परिस्थिति के पूर्ण होने की अपेक्षा बहुत शानदार होती और अल्लाह तआला ने जिसके आगे कोई बात असंभव नहीं इस दूसरे पहलू को ही जो अधिक कठिन था अपनाया अर्थात् उसने अपना भय उसके हृदय पर डाल दिया और उस भविष्यवाणी का पहला प्रभाव यह प्रकट हुआ कि आथम ने बहस की सभा के मध्य अपने कानों को हाथ लगाकर कहा कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दज्जाल नहीं कहता है । इस भविष्यवाणी के प्रकाशित होने के पश्चात सम्पूर्ण हिन्दुस्तान की आंखें इस ओर लग गईं कि देखिए इसका क्या परिणाम निकलता है, परन्तु अल्लाह तआला ने पन्द्रह माह की प्रतीक्षा नहीं कराई । इस भविष्यवाणी के प्रकाशित करने के समय से ही आथम की स्थिति परिवर्तित होना आरंभ हो गई और उसने ईसाइयत के समर्थन में किताबें और पत्रिकाएँ लिखने का कार्य बिल्कुल बन्द कर दिया । एक ख्याति प्राप्त प्रचारक और लेखक का अपने कार्य को बिल्कुल त्याग देना और खामोश होकर बैठ जाना साधारण बात न थी अपितु स्पष्ट सबूत था इस बात का कि उसका हृदय महसूस करने लग गया है कि इस्लाम सच्चा है और उस का मुकाबला करने में उसने गलती की है, परन्तु उसने खामोशी पर ही संतोष नहीं किया अपितु एक आध्यात्मिक हाविया में गिराया गया, अर्थात इस विचार का प्रभाव कि उसने इस मुक़ाबले में गलती की है इतना गहरा होता चला गया कि उसे बड़े अद्‌भुत और विचित्र प्रकार के दृश्य दिखाई देने लगे जैसा कि उसने अपने परिजनों और मित्रों से वर्णन किया । कभी तो उसे सांप दिखाई देते जो उसे काटने को दौड़ते, कभी कुत्ते उसे काटने को दौड़ते और कभी भाले लेकर चलने-वाले लोग उसके विचार में उस पर आक्रमण

करते । हालाँकि न तो सांप और कुत्ते इस प्रकार सिधाए जा सकते हैं कि वे विशेष तौर पर अब्दुल्ला आथम को जाकर काटें और न हिन्दुस्तान में अस्त्रों की सामान्य स्वतंत्रता है कि लोग भाले लेकर शहर की सड़कों पर खड़े रहें ताकि अब्दुल्लाह आथम को मार दें । वास्तव में यह एक 'हाविया' थी जो उस शर्मिन्दगी के कारण जो उस के हृदय में ईसाइयत के समर्थन और इस्लाम के विरुद्ध खड़े होने के संबंध में उत्पन्न हो चुकी थी । अल्लाह तआला की ओर से उस बड़ी 'हाविया' के बदले में उत्पन्न की गई थी, जिस में हठ पर दृढ़ रहने की स्थिति में वह डाला जाता । यदि वास्तव में उसका ईमान ईसाइयत पर क़ायम रहता और इस्लाम को वह उसी प्रकार झूठा समझता जिस प्रकार कि पहले झूठा समझता था तो किस प्रकार संभव था कि भ्रमों और खतरों के इस नर्क में पड़ जाता और जानवरों तथा कीड़ों तक को अपना शत्रु समझ लेता और वैचारिक सांप और कुत्ते उसे काटने को दौड़ते । यदि वह अल्लाह तआला को अपने विरुद्ध नहीं समझने लगा था तो क्यों उसे ख़ुदा की समस्त सृष्टि अपने विरुद्ध खड़ी दिखाई देती थी तथा वह ईसाइयत की लिखित और मौखिक हर प्रकार की सहायता का काम सहसा त्याग कर शहरों में भागता फिरता ।

अतएव अल्लाह तआला ने अपने इल्हाम में दूसरा भाग सत्य की ओर लौटने का बताया था जो कि पहले भाग से अधिक कठिन था वह बड़े विचित्र रूप में पूरा हुआ और आथम का हृदय मसीह की ख़ुदाई में सन्देह ग्रस्त होने लगा और इस्लाम की सच्चाई का चित्रण उसके हृदय पर जम गया । तब अल्लाह तआला की सूचना का दूसरा भाग भी पूरा हुआ । अर्थात् बावजूद इसके कि उसे आन्तरिक भय ने मृत्यु के बिल्कुल निकट कर दिया था, पन्द्रह माह तक जीवित रखा गया ताकि अल्लाह तआला की बात पूरी हो कि यदि उसने सत्य की ओर मुख किया तो वह बचाया जाएगा ।

यह एक शक्तिशाली भविष्यवाणी थी जो लोगों की आँखें खोलने के लिए पर्याप्त थी, परन्तु यदि यह खामोशी से गुज़र जाती तो शायद कुछ समय के पश्चात लोग कह देते कि आथम सत्य की ओर नहीं लौटा था यह आप लोगों की बनावट है । इसलिए अल्लाह तआला ने इस

भविष्यवाणी की अधिक व्याख्या के लिए ईसाइयों और मुसलमानों में से एक गिरोह को खड़ा कर दिया जो एक ईसाई के समर्थन में शोर करने लगे कि भविष्यवाणी झूठी निकली और आथम नहीं मरा । इस पर उनको बताया गया कि भविष्यवाणी की दो परिस्थितिया थीं उनमें से दूसरी परिस्थिति बड़ी स्पष्टता के साथ पूर्ण हो गई है परन्तु उन्होंने इन्कार किया और कहा कि आथम सत्य की ओर कदापि नहीं लौटा । इस पर हज़रत अक़दस(अ) ने आथम को निमंत्रण दिया कि उसके ईसाई और मुसलमान वकील जो कुछ कह रहे हैं यदि सत्य है तो उसे चाहिए कि सौगंध खाकर घोषणा करे कि उसके हृदय में इस अवधि में इस्लाम की सच्चाई और ईसाइयत की आस्थाओं के मिथ्या होने के विचार नहीं आए, परन्तु उसने सौगंध खाने से इन्कार कर दिया । हाँ बिना सौगंध के घोषणा कर दी कि मैं अब भी ईसाई धर्म को सच्चा समझता हूँ परन्तु अल्लाह तआला ने जिसका हृदयों और मस्तिष्कों पर अधिकार है उस की उन्हीं घोषणाओं में उसके क़लम से यह निकलवा दिया कि मैं मसीह को अन्य ईसाइयों की भाँति ख़ुदा नहीं समझता । इल्हाम के शब्द जैसे कि ऊपर नक़ल किए गए हैं भविष्यवाणी यह थी जो एक मनुष्य को ख़ुदा बना रहा है वह 'हाविया' में गिराया जाएगा और आथम ने स्वीकार कर लिया कि वह मसीह को ख़ुदा नहीं समझता, परन्तु फिर भी उस पर बल दिया गया कि यदि वह वास्तव में इन दिनों अपने धर्म की सच्चाई के संबंध में असमंजस में नहीं पड़ा और इस्लाम की सच्चाई का अहसास उसके हृदय में उत्पन्न नहीं हो गया था तो वह सौगंध खाकर घोषणा कर दे कि मैं इन दिनों में निरन्तर उन्हीं विचारों पर क़ायम रहा हूँ जो इससे पूर्व मेरे थे । यदि वह सौगंध खा जाए और एक वर्ष तक उस पर ख़ुदा का प्रकोप न आए तो फिर हम झूठे होंगे और यह भी लिखा कि यदि आथम सौगंध खा जाए तो उसे हम एक हज़ार रुपया भी इनाम देंगे । इसका उत्तर आथम ने यह दिया कि उसके धर्म में सौगंध खाना वैध नहीं । हालाँकि इन्जील में हवारियों की बहुत सी क़समें लिखी हैं और ईसाई सरकारों* में कोई बड़ा पदाधिकारी नहीं जिसे बिना सौगंध खाए पद प्रदान किया जाए । यहाँ तक कि बादशाह

* इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानीका

को भी सौगंध दी जाती है, जजों को भी सौगंध दी जाती है, सांसदों को भी सौगंध दी जाती है, सिविल तथा सेना के पदाधिकारियों को भी सौगंध दी जाती है, अदालतों में गवाहों को भी सौगंध दी जाती है अपितु ईसाई अदालतों का तो यह कानून है कि उन्होंने सौगंध को केवल ईसाइयों के लिए विशिष्ट कर दिया । ईसाइयों के अतिरिक्त दूसरों से वे सौगंध नहीं लेतीं अपितु साक्ष्य के समय यह कहलवाती हैं कि मैं जो कुछ कहूँगा ख़ुदा को उपस्थित और दृष्टा समझ कर कहूँगा । अत: जबकि ईसाइयों के निकट सौगंध केवल ईसाइयों का अधिकार है तो उसकी यह आपत्ति बिल्कुल निराधार थी और मात्र सौगंध से बचने के लिए थी, क्योंकि वह उन भयंकर दृश्यों को पहले देख चुका था जो उसे विश्वास दिला रहे थे कि यदि उसने सौगंध खाई तो वह तबाह हो जाएगा । उसके सौगंध खाने से इन्कार करने की वास्तविकता और भी स्पष्ट हो जाती है जबकि हम देखते हैं कि ईसाइयों में कोई बड़ा धार्मिक पद नहीं दिया जाता जब तक कि उम्मीदवार सौगंध नहीं खा लेता । प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के पादरियों को तो जिस से आथम संबंध रखता था दो सौगंधें खाना पड़ती हैं । एक गिरजे से वफादारी की और एक सरकार से वफ़ादारी की । जब उस के समक्ष ये बातें रखी गईं तो वह बिल्कुल ही खामोश हो गया । इधर इनाम की राशि एक हज़ार से बढ़ाकर धीरे-धीरे चार हज़ार तक कर दी गई और यह भी कहा गया एक वर्ष की प्रतीक्षा किए बिना ही यह राशि ले लो और क़सम खा जाओ, परन्तु जबकि उसका हृदय जानता था कि वह अपनी क़ौम से भय खाकर अपनी उस स्थिति को छुपा रहा है जो पन्द्रह माह तक उस पर छाई रही है तो वह सौगंधें क्योंकर खा सकता था । उसने सौगंध न खाई और खामोशी से दिन गुज़ार दिए तथा इस्लाम के विरुद्ध किताबें लिखना या मौखिक तौर पर ईसाइयत का प्रचार करना बिल्कुल त्याग दिया और इसी प्रकार उस भविष्यवाणी की सच्चाई और भी स्पष्ट हो गई और जैसे इस माध्यम से अल्लाह तआला ने शत्रु से मसीह की ख़ुदाई की आस्था से हटने का लिखित इक़रार करा लिया तथा इस्लाम की सच्चाई के संबंध में उसके हृदय में जो विचार (हालाँकि इस मुबाहिसे में जिसके पश्चात भविष्यवाणी की गई थी उसने एक पर्चे में मसीह की

ख़ुदा और समस्त ख़ुदाई विशेषताओं को उसके अस्तित्व में सिद्ध करने का प्रयास किया था) उत्पन्न हुए थे, उनका इक़रार उसके उस व्यवहार के द्वारा कर दिया जो सौगंध की माँग पर उसने धारण किया ।

यह भविष्यवाणी अपनी श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा में ऐसी है कि प्रत्येक सद्स्वभाव मनुष्य इसके द्वारा ईमान में उन्नति कर सकता है और ख़ुदा की झलक को अपनी आँखों से देख लेता है, क्योंकि इस्लाम का एक कट्टर विरोधी और बड़ी क़ौम का एक अग्रिणी सदस्य जो अन्य धर्मों के विरुद्ध बतौर वक्ता प्रस्तुत किया गया हो और जिस की आयु अपने धर्म के समर्थन और अन्य धर्मों के विरोध में गुज़र गई हो, उसके हृदय में अपने धर्म के सन्दर्भ में सन्देह और अन्य धर्मों की सच्चाई के विचार उत्पन्न कर देना उसे विलक्षण दृश्य उसे दिखाना और विचारों के परिवर्तन के बदले में भविष्यवाणी के अनुसार उसको पन्द्रह माह तक जीवित रखना मानव शक्ति से बिल्कुल बाहर है ।

चौथी भविष्यवाणी

अमरीका के झूठे दावेदार 'डोई' के संबंध में भविष्यवाणी जो ईसाइयों के लिए सामान्यतया और अमरीका के निवासियों के लिए विशेषतया सबूत हुई ।

अब मैं एक और भविष्यवाणी जो ईसाइयों पर हुज्जत क़ायम करने के लिए की गई थी, परन्तु उस में अधिकतर पश्चिमी देशों के लोगों पर विवाद को पूर्ण रूप से सिद्ध करना दृष्टिगत था वर्णन करता हूँ । 'अलैगज़ेन्डर डोई' अमरीका का एक प्रसिद्ध व्यक्ति था । यह व्यक्ति वास्तव में आस्ट्रेलिया का रहने वाला था, वहाँ से अमरीका चला गया । सन् 1892 ई. में उसने धार्मिक प्रवचन देने आरंभ किए और शीघ्र ही इस दावे के कारण कि उसे बिना किसी इलाज के स्वास्थ्य प्रदान करने की शक्ति है उसने जन साधारण में मान्यता प्राप्त करना आरंभ कर दी । सन् 1901 ई. में उसने यह दावा किया कि वह मसीह के द्वितीय आगमन के लिए बतौर एलिया के है और उसका मार्ग प्रशस्त करने आया है । चूँकि मसीह के प्रकटन के लक्षणों के पूर्ण होने के कारण धर्म से संबंध रखने

वाले लोगों को मसीह के आने की प्रतीक्षा थी, इस दावे से उसको पर्याप्त उन्नति प्राप्त हुई । उसने एक भू-भाग खरीद कर उस पर 'सीहून' नाम का एक शहर बसाया और घोषणा की कि मसीह इसी शहर में उतरेंगे । बड़े-बड़े धनवान लोगों ने सब से पहले मसीह को देखने के उद्देश्य से लाखों रुपए व्यय करके ज़मीन खरीद कर वहाँ मकान बनवाए और यह उस शहर में एक राजा की भाँति रहने लगा । उसके अनुयायी थोड़े ही समय में एक लाख से अधिक हो गए और समस्त ईसाई देशों में उसके प्रचारक प्रचार के लिए नियुक्त किए गए । उस व्यक्ति को इस्लाम से बड़ी शत्रुता थी और इस्लाम के विरुद्ध हमेशा अपशब्द बोलता रहता था । सन् 1902 ई. में उसने प्रकाशित किया कि यदि मुसलमान ईसाइयत को स्वीकार नहीं करेंगे तो वे सब के सब तबाह कर दिए जाएँगे । इस भविष्यवाणी की सूचना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद(अ) को प्राप्त हुई तो आप(अ) ने तुरन्त उसके विरुद्ध एक विज्ञापन प्रकाशित किया जिस में इस्लाम की श्रेष्ठता का वर्णन करते हुए लिखा कि ईसाइयत की सच्चाई प्रकट करने के लिए करोड़ों लोगों को तबाह करने की क्या आवश्यकता है। मैं ख़ुदा की ओर से मसीह बना कर भेजा गया हूँ । मुझ से मुबाहिला करके देख लो, इस से सच्चे और झूठे धर्म का निर्णय हो जाएगा और लोगों को निर्णय करने में सहायता मिलेगी । **266** यह विज्ञापन आप(अ) का सितम्बर सन् 1902 ई. में प्रकाशित किया गया और यूरोप तथा अमरीका में इतनी अधिक संख्या में प्रकाशित किया गया कि दिसम्बर सन् 1902 ई. से लेकर सन् 1903 ई. के अन्त तक इस विज्ञापन पर अमरीका तथा यूरोप में विभिन्न समाचार-पत्रों में समीक्षाएँ प्रकाशित होती रहीं, जिन में लगभग चालीस समाचार पत्रों ने तो अपनी प्रतियाँ यहाँ भी भेजीं । समाचार पत्रों में इस विज्ञापन के इतने अधिक प्रकाशन से अनुमान लगाया जा सकता है कि कम से कम बीस-पच्चीस लाख लोगों को इस मुबाहिले के निमंत्रण का ज्ञान हो गया होगा ।

डोई ने इस विज्ञापन का उत्तर तो कोई न दिया, इस्लाम के विरुद्ध श्राप देने आरंभ कर दिए तथा उस पर कठोर प्रहार प्रारंभ कर दिए । 14, फरवरी* को उसने प्रकाशित किया कि ''मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ

* डोई के समाचार पत्र में जो 'सीहून' से प्रकाशित होता था

कि वह दिन शीघ्र आए जब इस्लाम संसार से मिट जाए । हे ख़ुदा तू मेरी इस दुआ को स्वीकार कर, हे ख़ुदा तू इस्लाम को तबाह कर ।'' फिर 5 अगस्त सन् 1903 ई. में प्रकाशित किया कि ''इन्सानियत पर इस कठोर कुरूप धब्बे (इस्लाम) को 'सीहून' तबाह करके छोड़ेगा ।'' जब हज़रत अक़्दस ने देखा कि यह व्यक्ति अपने विरोध से नहीं हट रहा तो आप[अ] ने सन् 1903 ई. में एक और विज्ञापन दिया, जिस का नाम था ''डोई और पिगट के संबंध में भविष्यवाणियाँ ।'' इस विज्ञापन में आपने लिखा मुझे अल्लाह तआला ने इस समय इसलिए भेजा है ताकि उस के एकेश्वरवाद (तौहीद) को स्थापित करूँ और द्वैतवाद को नष्ट कर दूँ । और फिर लिखा कि ''अमरीका के लिए ख़ुदा ने मुझे यह निशान दिया है कि यदि डोई मेरे साथ मुबाहिला करे और मेरे मुकाबले पर चाहे प्रत्यक्ष तौर पर अथवा सांकेतिक तौर पर आ जाए, तो ***वह मेरे देखते देखते बड़ी हसरत और कष्ट के साथ इस नश्वर संसार को छोड़ देगा*** ।'' इसके पश्चात् लिखा कि ''डोई को मैंने पहले भी मुबाहिले का निमंत्रण दिया था, परन्तु उसने अब तक उसका कोई उत्तर नहीं दिया, इसलिए उसको आज से सात माह तक उत्तर देने की छूट दी जाती है ।'' फिर लिखा कि ***अत: विश्वास रखो कि ''उसके सीहून पर शीघ्र एक आपदा आने वाली है ।''*** अन्त में उसके उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना दुआ की कि ''हे ख़ुदा ! ***यह फैसला शीघ्र से शीघ्र कर कि पिगट और डोई का झूठ लोगों पर प्रकट कर दे*** ।'' इस विज्ञापन का भी बहुत अधिक संख्या में पश्चिमी देशों में वितरण किया गया तथा यूरोप और अमरीका के अनेकों समाचार-पत्रों उदाहरणतया ग्लास्गो, हेरल्ड इंगलिस्तान, न्यूयार्क कमरशियल, एडवर्टायज़र अमरीका इत्यादि ने इसके सार समाचार-पत्रों में प्रकाशित किए और लाखों लोग उसके लेखों से अवगत हो गए ।

जिस समय यह विज्ञापन प्रकाशित हुआ है उस समय डोई का नक्षत्र बड़े उत्कर्ष पर था । उसके अनुयायियों की संख्या बहुत बढ़ रही थी और वे लोग इतने धनाढ्य थे कि प्रत्येक उपहार उसको प्रस्तुत करते थे तथा उसके कई कारखाने जारी थे । छ: करोड़ के लगभग उसके पास धन-राशि थी तथा बड़े-बड़े नवाबों से अधिक उसका कर्मचारी वर्ग था, उसका

स्वास्थ्य ऐसा अच्छा था कि वह उसे अपना चमत्कार ठहराता था तथा कहता था कि मैं दूसरों को भी अपने आदेश से अच्छा कर सकता हूँ । अत: धन, स्वास्थ्य, सम्प्रदाय, और अधिकार इन चारों बातों से उसे अधिकांश भाग प्राप्त था ।

इस विज्ञापन के प्रकाशित होने पर लोगों ने उस से प्रश्न किया कि वह क्यों आप(अ) के विज्ञापनों का उत्तर नहीं देता, तो उसने कहा कि लोग कहते हैं कि ''तुम अमुक-अमुक बात का उत्तर क्यों नहीं देते । उत्तर ! क्या तुम विचार करते हो कि मैं इन कीड़े-मकोड़ों का उत्तर दूँगा, यदि मैं अपना पैर इन पर रखूँ तो एक क्षण में इनको कुचल सकता हूँ परन्तु मैं इनको अवसर देता हूँ कि मेरे सामने से दूर चले जाएँ तथा कुछ दिन और जीवित रहें ।'' मनुष्य प्राय: कैसी मूर्खता कर लेता है । डोई ने मुकाबले से इन्कार करते हुए मुकाबला कर लिया, उसने विचार न किया कि हज़रत अक़दस(अ) ने स्पष्ट लिख दिया था कि यदि सांकेतिक तौर पर भी मेरे मुकाबले पर आएगा तो कष्ट के साथ मेरे जीवन में ही तबाह होगा । उसने आप(अ) को कीड़ा ठहरा कर और यह कह कर कि यदि मैं उस पर अपना पैर रख दूँ तो कुचल दूँ स्वयं को आप(अ) के मुकाबले पर खड़ा कर दिया और ख़ुदा के प्रकोप को अपने ऊपर उतरवा लिया ।

परन्तु उसका उपद्रव और अहंकार यहीं पर समाप्त नहीं हुआ, उसने कुछ दिन बाद आप(अ) की चर्चा करते हुए आपके संबंध में ये शब्द प्रयोग किए ''मूर्ख मुहम्मदी मसीह'' और यह भी लिखा कि ''यदि मैं ख़ुदा की पृथ्वी पर ख़ुदा का पैग़म्बर नहीं तो फिर कोई भी नहीं ।'' और दिसम्बर सन् 1903 ई. को तो खुला खुला मुकाबले पर आ खड़ा हुआ और घोषणा की कि एक फ़रिश्ते* ने मुझ से कहा है कि तू अपने शत्रुओं पर विजयी होगा जैसे हज़रत अक़दस(अ) की भविष्यवाणी के मुकाबले में आप स.अ.व. की तबाही की भविष्यवाणी प्रकाशित कर दी । यह उसका मुकाबला जो पहले सांकेतिक तौर पर आरंभ हुआ और धीरे-धीरे प्रत्यक्ष की ओर आता गया, शीघ्र फल ले आया और इस अन्तिम आक्रमण के पश्चात चूँकि वह मुकाबले पर आ गया था, हज़रत अक़दस मसीह मौऊद(अ) ने उस के विरुद्ध लिखना छोड़ दिया और فَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ **(फ़न्तज़िर इन्नहुम**

* डोई का समाचार पत्र

मुन्तज़िरून) के आदेशानुसार ख़ुदा के फैसले की प्रतीक्षा करना आरंभ कर दिया । अन्तत: अल्लाह तआला ने जो पकड़ने में धीमी गतिवाला है परन्तु जब पकड़ता है तो कठोरता से पकड़ता है । अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया और पैर जिनको वह उसके मसीह पर रखकर कुचलना चाहता था उसने बेकार कर दिए, उसके मसीह पर पैर रखने की शक्ति तो उसे कहाँ मिल सकती थी वह उन पैरों को पृथ्वी पर भी रखने के योग्य न रहा अर्थात् ख़ुदा का प्रकोप लक़वा के रूप में उस पर उतरा, कुछ दिन बाद कुछ सुधार हो गया, परन्तु दो माह पश्चात् 19, दिसम्बर को दूसरा आक्रमण हुआ तथा उसने रही सही शक्तियाँ भी तोड़ दीं । जब वह बिल्कुल असहाय हो गया तो उसने अपना कार्य अपने सहायकों के सुपुर्द किया और स्वयं एक द्वीप में जिस की जलवायु लक़्वे के लिए लाभप्रद थी रहन-सहन धारण कर लिया परन्तु अल्लाह तआला के प्रकोप ने उसे अब भी न छोड़ा और चाहा कि जिस प्रकार उसने उसके मसीह को कीड़ा कहा था उसको कीड़े की भाँति सिद्ध करके दिखाए और वह वस्तु जिस पर अभिमान करते हुए उसने यह साहस किया था उन्हीं के द्वारा उसे अपमानित करे । अत: ऐसा हुआ कि उसके रोगी होकर चले जाने के पश्चात उसके अनुयायियों के हृदय में संदेह उत्पन्न हुआ कि यह तो अन्य लोगों की दुआ से नहीं अपितु अपने आदेश से अच्छा करता था यह स्वयं ऐसा क्यों रोगी हुआ । उन्होंने उसके चले जाने के पश्चात उस के कमरों की, जिनमें वह किसी अन्य को जाने नहीं देता था तलाशी ली तो उसमें से शराब की बहुत सी बोतलें निकलीं तथा उसकी पत्नी और पुत्र ने साक्ष्य दी कि वह छुपकर बहुत शराब पिया करता था हालाँकि वह अपने अनुयायियों को शराब पीने से बड़ी सख़्ती से रोकता था तथा किसी नशे की आज्ञा नहीं देता था यहाँ तक कि तम्बाकू के सेवन से रोका करता था । उसकी पत्नी ने कहा कि मैं उसकी नितान्त निर्धनता के दिनों में भी वफ़ादार रही हूँ परन्तु अब मुझे यह मालूम करके बड़ा अफ़सोस हुआ है कि उसने एक धनवान वृद्धा से विवाह करने के लिए यह नवीन बात वर्णन करना आरंभ की है कि एक से अधिक विवाह वैध हैं । वास्तव में इस बात की तह में उसका अपने विवाह की इच्छा है, अत: उस ने उस वृद्धा के पत्र जो डोई के पत्रों के उत्तर में आए थे लोगों को दिखाए, इस

पर लोगों का रोष और भी भड़का तथा सम्प्रदाय की उस धन-राशि के हिसाब की जांच-पड़ताल की गई जो उसके पास रहती थी तो ज्ञात हुआ कि उसने उसमें से पचास लाख रुपया हड़प लिया है तथा यह भी प्रकट हुआ कि शहर की कई नौजवान लड़कियों को उसने गुप्त तौर पर एक लाख से अधिक रुपयों के उपहार दिए हैं । इस पर उस सम्प्रदाय की ओर से उसे एक तार और दिया जिसके शब्द ये हैं :-

''सम्पूर्ण सम्प्रदाय पूर्ण सहमति से तुम्हारे अपव्यय (फ़ुज़ूल ख़र्ची), दिखावे, झूठ बोलने, अतिशयोक्तिपूर्ण बातों, लोगों के धन का अनुचित प्रयोग अन्याय और क्रोध पर सख़्त ऐतिराज़ करता है । इसलिए तुम्हें तुम्हारे पद से निलंबित किया जाता है ।''

डोई इन आरोपों का खण्डन न कर सका और परिणामस्वरूप उसके समस्त अनुयायी उसके विरोधी हो गए । उसने चाहा कि स्वयं अपने अनुयायियों के सामने आकर उनको अपनी ओर आकृष्ट करे परन्तु स्टेशन पर सिवाए कुछ लोगों के कोई उसके स्वागत को न आया और किसी ने उसकी बात की ओर ध्यान न दिया, अन्ततः वह अदालतों की ओर गया, परन्तु वहाँ से भी उसे 'क़ौमी फण्ड' पर अधिकार न मिला और केवल एक अल्प गुज़ारा दिया गया । उसकी लाचारी की स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि उसके हब्शी नौकर उसको उठा-उठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर रखते थे, वह कठोर कष्टप्रद और दुखदायी जीवन-यापन करता था । उसके दुःख और कष्ट को देखकर उसके दो-चार मिलने वालों ने जो अभी तक उससे मिलते थे उसे परामर्श दिया कि वह अपना इलाज करवाए, परन्तु वह इलाज कराने से इस कारण इन्कार करता रहा कि लोग कहेंगे कि यह लोगों को तो इलाज से रोकता था और स्वयं इलाज कराता है । अन्ततः जबकि उसके एक लाख से अधिक अनुयायियों में से केवल दो सौ के लगभग शेष रह गए तथा अदालतों में भी निराशा हाथ लगी तथा बीमारी का भी कष्ट बढ़ गया तो इन कष्टों को सहन न कर सका और पागल हो गया और एक दिन उसके कुछ अनुयायी जब उसके प्रवचन सुनने के लिए गए तो उन्होंने देखा कि उसके समस्त शरीर पर पट्टियाँ बंधी हुई हैं । उसने उनसे कहा कि

उसका नाम मैरी है और वह पूरी रात शैतान से लड़ता रहा है और इस युद्ध में उस का सेनापति मारा गया है और वह स्वयं भी घायल हो गया है इस पर उन लोगों को विश्वास हो गया कि यह व्यक्ति बिल्कुल पागल हो गया है और वे भी उसको छोड़ गए और हज़रत अक़दस के ये शब्द कि वह

''मेरे देखते-देखते बड़ी हसरत और दुख के साथ इस नश्वर संसार को छोड़ देगा ।''

8 मार्च सन् 1907 ई. को पूरे हो गए अर्थात डोई हसरत और दुःख के साथ इस संसार से कूच कर गया । उसकी मृत्यु के समय उसके पास मात्र चार व्यक्ति थे और उस की पूंजी कुल तीस रुपयों के लगभग थी ।

हे बादशाह ! इससे बढ़कर हसरत और इस से बढ़कर कष्टदायक कोई अन्य मृत्यु हो सकती है ? निश्चय ही यह एक शिक्षाप्रद घटना है और पश्चिमी देशों के लिए स्पष्ट निशान । अतः बहुत से समाचार-पत्रों ने इस बात को स्वीकार किया कि हज़रत अक़दस(अ) की भविष्यवाणी पूरी हो गई है और वे ऐसा करने पर विवश थे । उदाहरणतया मैं कुछ समाचार-पत्रों के नाम लिख देता हूँ, 'डोनविल गज़ट' अमरीकी समाचार-पत्र इस घटना की चर्चा करते हुए लिखता है :-

''यदि अहमद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके अनुयायी इस भविष्यवाणी के जो कुछ माह हुए पूर्ण हो गई है नितान्त स्वच्छता के साथ पूर्ण होने पर गर्व करें तो उन पर कोई आरोप नहीं ।'' (7 जून 1907 ई.)

अमरीका का समाचार पत्र ''ट्रुथ सीकर'' लिखता है :-

''चैलेंज करने वाले की प्रत्यक्ष घटनाएँ अधिक समय तक जीवित रहने के विरुद्ध थीं, परन्तु वह विजयी हुआ ।''

अर्थात् हज़रत अक़दस(अ) की आयु डोई से अधिक थी और वह आप(अ) के मुकाबले में जवान था ।

अमरीका के बोस्टन शहर का समाचार पत्र 'हेरल्ड' लिखता है :-

''डोई की मृत्यु के पश्चात् हिन्दुस्तानी नबी की प्रतिष्ठा शिखर पर पहुँच गई, क्योंकि क्या यह सत्य नहीं कि उन्होंने डोई की मृत्यु की भविष्यवाणी की थी कि यह उनके अर्थात् मसीह के

जीवन में घटित होगी और बड़ी हसरत और कष्ट के साथ उसकी मृत्यु होगी। डोई की आयु पैंसठ वर्ष की थी और भविष्यवाणी करने वाले की पचहत्तर वर्ष की ।''

इन कुछ उद्धरणों से परिणाम निकाला जा सकता है कि इस भविष्यवाणी का प्रभाव ईसाई अपितु नास्तिक समाचार-पत्रों के सम्पादकों के हृदयों पर नितान्त गहरा पड़ा था और वे उसके आश्चर्यजनक परिणामों से ऐसे प्रभावित हो गए थे कि उस प्रभाव को समाचार-पत्रों में प्रकट करने से भी न झिझके । अत: यह बात बिल्कुल निश्चित है कि जब पश्चिमी देशवासियों के सामने यह निशान पूरे जोश से प्रस्तुत किया गया तो अपने बीसियों सहधर्मी सम्पादकों की साक्ष्य की उपस्थिति में वे इस की सच्चाई का इन्कार नहीं कर सकेंगे और इस बात को स्वीकार करने पर विवश होंगे कि इस्लाम ही सच्चा धर्म है । इसमें प्रवेश किए बिना मनुष्य मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता और अपने प्राचीन विचार और आस्थाएँ त्याग कर वे लोग इस्लाम के स्वीकार करने तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने में आपत्ति नहीं करेंगे अपितु उसके लक्षण अभी से आरंभ हो गए हैं और अमरीका में इस समय दो सौ से अधिक लोग अहमदी हो चुके हैं ।

पांचवीं भविष्यवाणी

लेखराम के संबंध में भविष्यवाणी जो हिन्दुस्तानियों के लिए सबूत बनी

जब मैं आप(अ) की उन भविष्यवाणियों में से एक भविष्यवाणी का वर्णन करता हूँ जो हिन्दुस्तान वालों पर इस्लाम की सच्चाई प्रकट करने के लिए की गई थीं, जिन्होंने अपने समय पर पूर्ण होकर लाखों लोगों के हृदय हिला दिए और इस्लाम की सच्चाई को उनको दिल ही दिल में स्वीकार करा दिया और अनेकों लोग प्रत्यक्ष में निरन्तर इस्लाम ला रहे हैं ।

इस भविष्यवाणी का विवरण यह है कि चालीस-पचास वर्ष से हिन्दुओं

का एक सम्प्रदाय निकला है जिसे आर्य समाज कहते हैं । इस सम्प्रदाय ने वर्तमान युग में इस्लाम की दुर्दशा देखकर यह इरादा किया है कि मुसलमानों को हिन्दू बनाया जाए और इस उद्देश्य के लिए हमेशा उस के धार्मिक नेता इस्लाम के विरुद्ध अत्यन्त गन्दा और अश्लील साहित्य प्रकाशित करते रहते हैं। इन नेताओं में से सर्वाधिक गालियाँ देने वाला और आरोप लगाने वाला एक व्यक्ति लेखराम नामक था । हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने उसके साथ बहुत बार बातचीत की और उससे इस्लाम की सच्चाई को मनवाया, परन्तु वह अपनी हठ में बढ़ता गया और क़ुर्आन करीम की आयतों के ऐसे-ऐसे गन्दे अनुवाद प्रकाशित करता रहा कि एक सभ्य व्यक्ति के लिए उनका पढ़ना भी कठिन है । उस व्यक्ति के निकट जैसे संसार में सर्वाधिक बुरा और दुष्ट वह था जो समस्त मानव कलाओं और कौशलों का संग्रह था और सर्वाधिक निरर्थक किताब वह थी जो समस्त ज्ञानों का ख़ज़ाना है, परन्तु सूर्य का प्रकाश एक रोगग्रस्त आंख की दृष्टि को आघात ही पहुँचाता है । यही स्थिति उसकी थी । जब बहस ने विस्तार रूप धारण किया, यह व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सन्दर्भ में गाली-गलोज में बढ़ता ही चला गया और हज़रत अक़दस अलैहिस्सलातो वस्सलाम के संबंध में उपहास करता और कहता रहा कि मुझे कोई निशान क्यों नहीं दिखाते, तो अन्ततः हज़रत अक़दस अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उसके संबंध में अल्लाह तआला से दुआ की और आप को बताया गया कि उसके लिए यह निशान है कि यह शीघ्र तबाह किया जाएगा । इस भविष्यवाणी के प्रकाशित करने से पूर्व आप(अ) ने लेखराम से पूछा कि यदि इस भविष्यवाणी के प्रकाशित करने से उसे दु:ख पहुँचे तो उसे प्रकट न किया जाए, परन्तु उसने इसके उत्तर में लिखा कि मुझे आप की भविष्यवाणियों से कोई भय नहीं है । आप निसन्देह भविष्यवाणी प्रकाशित करें । चूँकि भविष्यवाणी में समय का निर्धारण नहीं था और लेखराम समय-निर्धारण की मांग करता था । आप(अ) ने इस भविष्यवाणी के प्रकाशित करने में उस समय तक विलम्ब किया जब तक अल्लाह तआला की ओर से समय ज्ञात हो जाए । अन्ततः अल्लाह तआला की ओर से यह सूचना पाकर कि 20, फरवरी 1893 ई. से लेकर छ: वर्ष के अन्दर लेखराम पर एक कष्टदायक प्रकोप आएगा जिसका

परिणाम मृत्यु होगा यह भविष्यवाणी प्रकाशित कर दी । साथ ही अरबी भाषा में यह इल्हाम भी प्रकाशित किया जो लेखराम के संबंध में था अर्थात् [267] عِجْلٌ جَسَدٌ لَّهٗ خُوَارٌ ۔ لَهٗ نَصَبٌ وَّعَذَابٌ **(इज्लुन जसदुन लहू ख़ुवार लहू नसबुन व अज़ाबुन)** अर्थात् यह व्यक्ति गोशाला-ए-सामिरी की भाँति एक बछड़ा है जो यों ही शोर मचाता है अन्यथा इसमें आध्यात्मिक जीवन का कुछ अंश नहीं । उस पर एक विपत्ति आएगी और प्रकोप आएगा । तत्पश्चात आपने लिखा कि अब मैं समस्त धार्मिक सम्प्रदायों पर प्रकट करता हूँ कि यदि इस व्यक्ति पर छः वर्ष की अवधि में आज की तिथि से अर्थात 20 फरवरी 1893 ई. से कोई ऐसा प्रकोप नहीं उतरा जो साधारण कष्टों से विचित्र और विलक्षण और अपने अन्दर ख़ुदाई भय रखता हो तो समझो कि मैं ख़ुदा की ओर से नहीं ।

इस भविष्यवाणी के कुछ समय पश्चात आपने दूसरी भविष्यवाणी जिसमें उस व्यक्ति की तबाही के सन्दर्भ में अधिक विवरण था प्रकाशित की । उसके शब्द ये थे :-

وَبَشَّرَنِیْ رَبِّیْ وَقَالَ مُبَشِّرًا سَتَعْرِفُ یَوْمَ الْعِیْدِ وَالْعِیْدُ اَقْرَبُ
وَمِنْهَا مَا وَعَدَنِیْ رَبِّیْ وَاسْتَجَابَ دُعَائِیْ فِیْ رَجُلٍ مُّفْسِدٍ عَدُوِّاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
مُسَمّٰی لیکھرام الْفَشَاوَرِیْ وَاَخْبَرَنِیْ رَبِّیْ اَنَّهٗ مِنَ الْهَالِکِیْنَ ۔اِنَّهٗ کَانَ
یَسُبُّ نَبِیَّ اللّٰهِ وَیَتَکَلَّمُ فِیْ شَانِهٖ بِکَلِمٰتٍ خَبِیْثَةٍ فَدَعَوْتُ عَلَیْهِ وَبَشَّرَنِیْ
بِمَوْتِهٖ فِیْ سِتِّ سَنَةٍ اِنَّ فِیْ ذَالِكَ لَاٰیٰتٍ لِّلطَّالِبِیْنَ [269]

व बशशरनी रब्बी व क़ाला मुबश्शिरन
सता'रिफ़ो यौमलईदे वल्ईदो अक़रबू

(व मिन्हा मा वअदनी रब्बी वस्तिजाबा दुआई फ़ी रजुलिन मुफ़्सिदिन अदुव्विलाहे व रसूलिही मुसम्मा लेखराम अलफ़िशावरी व अख़बरनी रब्बी इन्नहू मिनल हालिकीन इन्नहू काना यसुब्बो–नबिय्यलाहे व यतकल्लमो फ़ी शानिही बिकलिमातिन ख़बीसतिन फ़दऔतो अलैहे व बशशरनी रब्बी बिमौतिही फ़ी सित्ते सनतिन इन्ना फ़ी ज़ालिका लआयातिल्लित्तालिबीन)

अर्थात अल्लाह तआला ने मुझे शुभ संदेश दिया है कि तू एक ईद

का दिन देखेगा और वह दिन ईद के दिन से बिल्कुल मिला हुआ होगा और फिर लिखा कि अल्लाह तआला की ओर से मुझ पर जो कुछ कृपाएँ हुई हैं उनमें से एक यह है कि एक व्यक्ति लेखराम के संबंध में उसने मेरी दुआ स्वीकार कर ली है और मुझे सूचना दी है कि वह हिलाक (तबाह) हो जाएगा । यह व्यक्ति रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियाँ दिया करता था । अत: मैंने उसके विरुद्ध दुआ की । मेरे रब्ब ने मुझे बताया कि यह छ: वर्ष की अवधि में मर जाएगा । इसमें अभिलाषियों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं ।

तदोपरांत और अधिक विवरण ज्ञात हुआ और वह आप की किताब 'बरकातुद्दुआ' के टायटिल पेज पर शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया कि ''लेखराम पेशावरी से संबंध में एक और सूचना'' और उसमें यह लिखा गया कि ''आज से 2 अप्रैल सन् 1893 ई. अनुसार 14, रमज़ान सन् 1310 हिज्री (दिन सोमवार - लेखक) है प्रात: काल थोड़ी सी अर्ध-निद्रा की स्थिति में मैंने देखा कि मैं एक विशाल मकान में बैठा हुआ हूँ और कुछ मित्र भी मेरे पास उपस्थित हैं, इतने में एक व्यक्ति, शक्तिशाली, महाकाय, भयानक शक्ल वाला जैसे उस के मुख मंडल से रक्त टपकता है मेरे सामने आकर खड़ा हो गया । मैंने दृष्टि उठा कर देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह एक नई बनावट और स्वभाव का व्यक्ति है जैसे वह मनुष्य नहीं अत्यधिक सख्ती और नितान्त कठोरता से काम लेने वाले फ़रिश्तों में से है, उस का भय हृदयों पर छाया हुआ था और मैं उसे देखता ही था कि उसने मुझ से पूछा कि लेखराम कहाँ है ? और एक अन्य का नाम लिया कि वह कहाँ है तब मैंने उस समय समझा कि यह व्यक्ति लेखराम और दूसरे व्यक्ति को दण्ड देने के लिए नियुक्त किया गया है । [270]

और मुबारक पुस्तक ''आईना कमालाते इस्लाम'' में आप[अ] ने लेखराम के संबंध में अपनी एक कविता में यह पद प्रकाशित किए :-

الا اے دُشمنِ نادان و بے راہ　　بترس از تیغ بُرّانِ محمّدؐ

الا اے منکر از شانِ محمّدؐ　　ہم از نورِ نمایانِ محمّدؐ

کرامت گرچہ بے نام ونشان است　　بیا بنگر ز غلمانِ محمّدؐ [271]

(अनुवाद :- हे पथ-भ्रष्ठ और मूर्ख शत्रु सतर्क हो जा और मुहम्मद

(स.अ.व) की काटने वाली तलवार से डर । हे मुहम्मद (स.अ.व.) की शान तथा उसके स्पष्ट प्रकाश के इन्कारी सतर्क रह । यद्यपि कि चमत्कार अब लुप्त हो चुका है परन्तु तू आ और मुहम्मद (स.अ.व.) के दासों में देख ले । अनुवादक)

इन समस्त भविष्यवाणियों से स्पष्ट होता है कि आप[अ] को विभिन्न समयों में सूचना दी गई थी कि :-

(1) लेखराम पर कोई प्रकोप उतारा जाएगा जिसका परिणाम मृत्यु होगा ।

(2) यह प्रकोप (अज़ाब) छ: वर्ष की अवधि में आएगा ।

(3) यह प्रकोप जिस ईद के साथ के दिन आएगा वह दिन ईद के दिन से बिल्कुल मिला हुआ दिन होगा अर्थात् ईद से पहले का दिन या ईद के बाद का दिन ।

(4) लेखराम से वही व्यवहार किया जाएगा जो गौशाला सामिरी से किया गया था और वह व्यवहार यह था कि गौशाला के टुकड़े-टुकड़े करके जलाया और दरिया में डाल दिया गया था ।

(5) उसकी हलाकत (तबाही) के लिए एक व्यक्ति जिसकी आँखों से रक्त टपकता था नियुक्त किया गया है ।

(6) वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलवार से भस्म होगा ।

ये निशान और लक्षण इतने स्पष्ट हैं कि इन के वर्णन और अर्थ के संबंध में कुछ भी सन्देह नहीं रह जाता । इन भविष्यवाणियों को पूरे पाँच वर्ष गुज़र गए और कुछ भी नहीं हुआ । मिर्ज़ा साहिब झूठे निकले । ईदुलफ़ित्र जो शुक्रवार को हुई थी दूसरे दिन शनिवार को दोपहर ढलने के पश्चात लेखराम किसी अज्ञात व्यक्ति के तेज़ खंजर से घायल किया गया और रविवार के दिन मर गया तथा अल्लाह तआला का कलाम अपने समस्त विवरण के साथ पूरा हुआ । इल्हाम में था कि वह छ: वर्ष के अन्दर मरेगा, वह छ: वर्ष के अन्दर ही मर गया । बताया गया था कि उसकी घटना ईद के दिन से मिले हुए दिन को होगी और मोमिनों के लिए वह ईद का दिन होगा । अत: ऐसा ही हुआ कि वह ईद के दूसरे ही दिन घायल किया गया था कि उसको कोई व्यक्ति जिस के चेहरे से

रक्त टपकता हुआ मालूम होता था, हिलाक (तबाह) करेगा । अतः ऐसा ही हुआ । बताया गया था कि उसको मुहम्मद की तलवार ही बध करेगी अतः वह बध किया गया । सूचना दी गई थी कि उसका हाल गौशाला सामिरी की भाँति होगा । अतः जिस प्रकार सामिरी की गोशाला के शनिवार के दिन टुकड़े-टुकड़े किए गथे थे, वह भी शनिवार के दिन ही टुकड़े-टुकड़े किया गया और जिस प्रकार गौशाला सामिरी को प्रथम जलाया गया फिर उसकी राख दरिया में डाली गई थी । इसी प्रकार लेखराम भी हिन्दू होने कारण प्रथम जलाया गया और फिर उसकी राख दरिया में डाली गई ।

उसके बध की घटनाओं का विवरण यह बताया जाता है कि एक व्यक्ति उसके पास आया जिसके संदर्भ में कहा जाता है कि उसकी आँखों से रक्त टपकता था । उसने लेखराम से कहा कि वह मुसलमान से हिन्दू होना चाहता है । लेखराम ने लोगों के समझाने के बावजूद कि उसे अपने पास रखना उचित नहीं उसको अपने पास रखा । लेखराम को उस पर बहुत विश्वास हो गया था । उसने वही दिन उसको आर्य बनाने के लिए नियुक्त किया जिस दिन वह घायल किया गया, वह शनिवार का दिन था और लेखराम कुछ लिख रहा था, उसने उस अज्ञात व्यक्ति से कोई किताब उठाकर देने के लिए कहा । इस पर उस व्यक्ति ने अपने ढंग से तो यह प्रकट किया कि जैसे वह किताब उठा कर ला रहा है, परन्तु निकट पहुँचते ही उसने लेखराम के पेट में खंजर घोंप दिया और फिर उसे कई बार घुमाकर हिलाया ताकि अंतड़ियाँ कट जाएँ और फिर वह व्यक्ति जैसा कि लेखराम के परिजनों का बयान है लुप्त हो गया । लेखराम मकान के दूसरे तल पर था और उसके मकान के नीचे द्वार के पास उस समय बहुत से लोग एकत्र थे, परन्तु कोई व्यक्ति गवाही नहीं देता कि वह व्यक्ति नीचे उतरा है । लेखराम की पत्नी और माँ को यही विश्वास था कि वह घर में ही है, परन्तु उसी समय लोगों के तलाश करने पर वह मकान में नहीं मिला ख़ुदा जाने कहाँ लुप्त (ग़ायब) हो गया । तो लेखराम अत्यन्त दु:ख के प्रकोप से ग्रस्त होकर रविवार को जो बिल्कुल वही दिन था जो आपको कश्फ में दिखाया गया था कि एक भयानक व्यक्ति जिस के चेहरे से रक्त टपकता है, लेखराम का पता पूछता है मर गया और अल्लाह

तआला के पैग़म्बर की सच्चाई के लिए एक निशान ठहरा तथा उन लोगों के लिए जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बरकत वाले अस्तित्व के विरुद्ध गालियाँ देते हैं शिक्षा और नसीहत का कारण बना ।

छठी भविष्यवाणी

राजकुमार दिलीप सिंह के संबंध में भविष्यवाणी जो सिखों के लिए सबूत हुई

अब मैं उन भविष्यवाणियों में से एक भविष्यवाणी वर्णन करता हूँ जो अपने समय पर पूर्ण होकर सिखों के लिए इस्लाम की सच्चाई और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई के लिए प्रमाण हुई । जब अंग्रेज़ों ने पंजाब को विजय किया तो देश के हितों के अन्तर्गत राजा दिलीप सिंह साहिब को जो पंजाब शासन के उत्तराधिकारी थे परन्तु अभी कम आयु के थे, अंग्रेज़ इंग्लैण्ड ले गए । वह वहीं रहे और उन्हें वापस आने की अनुमति नहीं दी गई, यहाँ तक कि पंजाब पर अंग्रेज़ों का पूर्ण रूप से अधिकार हो गया । ग़दर के पश्चात् देहली का शासन भी नष्ट हो गया तथा किसी भी प्रकार का ख़तरा न रहा उस समय राजा दिलीप सिंह साहिब ने पंजाब आने का इरादा किया और सामान्यतया यह प्रसिद्ध हो गया कि वे आने वाले हैं । हज़रत अक़दस[अ] को इल्हाम द्वारा बताया गया कि वह इस इरादे में सफल नहीं होंगे । 272 अत: आपने बहुत से लोगों को विशेषकर हिन्दुओं को इस संबंध में सूचना दे दी, सांकेतिक तौर पर एक विज्ञापन भी लिख दिया कि ''एक नव आगन्तुक रईसे पंजाब को विपत्ति का सामना करना होगा ।'' 273 जिस समय यह इल्हाम प्रकाशित किया गया, किसी को विचार न था कि वह हिन्दुस्तान आने से रोक दिए जाएँगे अपितु यह सूचना अत्यन्त गर्म थी कि वह सन्निकट हिन्दुस्तान पहुँचने वाले हैं, परन्तु इसी अवधि में सरकार को ज्ञात हुआ कि राजा दिलीप सिंह साहिब का हिन्दुस्तान में आगमन सरकारी हितों के विरुद्ध होगा क्योंकि ज्यों-ज्यों उन के आगमन की सूचना फैलती जाती थी सिखों में प्राचीन रिवायतें ताज़ा होकर उत्तेजना उत्पन्न होती जाती थी और भय

था कि उन के आगमन पर कोई झगड़ा हो जाए । अत: अदन तक पहुँचने के पश्चात वह रोक दिए गए और यह रोक दिए जाने की सूचना उस समय ज्ञात हुई जबकि लोग यह समझ चुके थे कि अब वह कुछ ही दिनों में हिन्दुस्तान में प्रवेश करने वाले हैं । सिखों की आशाओं पर पानी फिर गया, परन्तु अल्लाह अन्तर्यामी और प्रतापी का प्रताप प्रकट हुआ कि वह लोगों के हृदयों को उस समय पढ़ लेता है जब वे स्वयं अपने विचारों से परिचित नहीं होते ।

सातवीं भविष्यवाणी

ताऊन (प्लेग) की भविष्यवाणी, जिस से सिद्ध किया गया कि अल्लाह तआला सूक्ष्म से सूक्ष्म साधनों का स्वामी है ।

अफ़गानिस्तान और उसके निकटवर्ती देश के संबंध में हज़रत अक़दस(अ) की भविष्यवाणियाँ वर्णन करने के पश्चात मैंने चार भविष्यवाणियाँ ऐसी वर्णन की हैं जिन से तीन जातियों पर हुज्जत पूर्ण की गई है । अब मैं एक ऐसी भविष्यवाणी वर्णन करता हूँ, जिससे समस्त हिन्दुस्तान की समस्त जातियाँ तथा उन के माध्यम से समस्त संसार पर हुज्जत स्थापित की गई है और अल्लाह तआला ने यह सिद्ध किया है कि वह सूक्ष्म से सूक्ष्म साधनों पर अधिकार रखता है तथा उन्हें अपने मामूर (आदिष्ट) के समर्थन में लगाता है । इस प्रकार की भविष्यवाणियाँ भी हज़रत अक़दस(अ) ने बहुत सी की हैं जो अपने-अपने समय पर पूर्ण हो चुकी हैं और कुछ भविष्य में पूर्ण होंगी, परन्तु मैं उन में से उदाहरण स्वरूप ताऊन (प्लेग) की भविष्यवाणी को लेता हूँ जिस में यह विशेषता है कि उसकी सूचना रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी दी थी और फ़रमाया था कि यह रोग मसीह मौऊद(अ) के समय में फूटेगा । [274]

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार रमज़ान माह की तेरहवीं (13वीं) तिथि को चन्द्र ग्रहण और अट्ठाईसवीं तिथि को सूर्य-ग्रहण हुआ तो उस समय हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम को बताया गया कि यदि लोगों ने इस निशान से लाभ न

उठाया और तुझे स्वीकार न किया तो उन पर सामान्य रूप से एक प्रकोप उतरेगा । अत: आप के शब्द ये हैं :-

وَحَاصِلُ الْكَلَامِ اَنَّ الْكُسُوْفَ وَالْخُسُوْفَ اٰيَتَانِ مُخَوِّفَتَانِ وَاِذَا اجْتَمَعَا فَهُوَ تَهْدِيْدٌ شَدِيْدٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ وَاِشَارَةٌ اِلٰى اَنَّ الْعَذَابَ قَدْ تَقَرَّرَ وَاُكِّدَ مِنَ اللّٰهِ لِاَهْلِ الْعُدْوَانِ[275]

(व हासिलुल कलामे अन्नल कसूफा वल्ख़सूफ़ा आयताने मुख़व्विफ़ताने व इज़्जतमआ फ़हुवा तहदीदुन शदीदुन मिनर्रहमाने व इशारतुन इला अन्नल अज़ाबा क़द तक़र्रा व उक्किदा मिनल्लाहे लि अहलिल उदवान)

अर्थात् चन्द्र और सूर्य ग्रहण अल्लाह तआला की ओर से दो भयभीत करने वाले निशान हैं और जब इस प्रकार इकट्ठे हो जाएँ जिस प्रकार अब इकट्ठे हुए हैं तो अल्लाह तआला की ओर से चेतावनी स्वरूप तथा इस बात की ओर संकेत होते हैं कि प्रकोप नियुक्त हो चुका है उन लोगों के लिए जो उपद्रव से न हटें । तत्पश्चात अल्लाह तआला ने इस भविष्यवाणी को पूर्ण करने के लिए आप(अ) के हृदय में प्रेरणा की कि आप(अ) एक संक्रामक रोग के लिए दुआ करें । अत: आप अपने एक अरबी क़सीदह (कविता) में जो सन् 1894 ई. प्रकाशित हुआ है फ़रमाते हैं :-

فَلَمَّا طَغَى الْفِسْقُ الْمُبِيْدُ بِسَيْلِهٖ   تَمَنَّيْتُ لَوْ كَانَ الْوَبَاءُ الْمُتَبِّرُ

فَاِنَّ هَلَاكَ النَّاسِ عِنْدَ اُولِي النُّهٰى   276   اَحَبُّ وَاَوْلٰى مِنْ ضَلَالٍ يُدَمِّرُ

अर्थात् जब नष्ट कर देने वाला पाप एक तूफान की भाँति बढ़ गया तो मैंने अल्लाह तआला से चाहा कि काश ! एक विपत्ति पड़े जो लोगों को नष्ट कर दे, क्योंकि बुद्धिमानों के निकट लोगों का मर जाना इससे अधिक रुचिकर और उत्तम समझा जाता है कि वह तबाह कर देने वाली पथ-भ्रष्टता (गुमराही) में ग्रस्त हो जाएँ ।

तत्पश्चात् सन् 1897 ई. में आप(अ) ने अपनी किताब ''सिराजे मुनीर'' में लिखा कि इस ख़ाकसार को इल्हाम हुआ है - يَامَسِيْحَ الْخَلْقِ عَدْوَانَا[277] **(या मसीहुल ख़ल्क़े अदवानन)** अर्थात् हे प्रजा के लिए मसीह हमारे अनेकों रोगों के लिए ध्यान कर । फिर फ़रमाते हैं

''देखो यह किस युग की सूचनाएँ हैं और न मालूम किस समय पूरी होंगी । एक वह समय है कि दुआ से मरते हैं और दूसरा वह समय आता है कि दुआ से जीवित होंगे ।'' [278] जिस समय यह अन्तिम भविष्यवाणी प्रकाशित हुई है उस समय ताऊन केवल बम्बई में पड़ी थी और एक वर्ष रह कर रुक गई थी और लोग प्रसन्न थे कि डाक्टरों ने उसके फैलने को रोक दिया है, परन्तु अल्लाह तआला की ओर से सूचनाएँ इसके विपरीत कह रह थीं, जबकि लोग इस रोग के आक्रमण को एक अस्थायी आक्रमण विचार कर रहे थे । पंजाब में मात्र एक दो गांव में यह रोग बहुत थोड़ा पाया जाता था, शेष कुल प्रान्त सुरक्षित था और बम्बई की ताऊन भी प्रत्यक्षतया दबी हुई मालूम होती थी । उस समय आप(अ) ने एक और घोषणा की और उसमें बताया कि एक आवश्यक बात है जिसके लिखने पर मेरी सहानुभूति की भावना ने मुझे प्रोत्साहित किया है और मैं भली भाँति जानता हूँ कि जो लोग आध्यात्मिकता से अज्ञान हैं उसको हंसी और उपहास से देखेंगे, परन्तु मेरा कर्त्तव्य है कि मैं इसे प्रजा की सहानुभूति में प्रकट करूँ और वह यह है कि आज 6, फरवरी सन् 1898 ई. दिन रविवार है मैंने स्वप्न में देखा कि अल्लाह तआला के फ़रिश्ते पंजाब के विभिन्न स्थानों में काले रंग के पौधे लगा रहे हैं और वे पेड़ नितान्त कुरूप, काले रंग के, भयानक और छोटे आकार के हैं । मैंने कुछ लगाने वालों से पूछा कि ये कैसे पेड़ हैं ? तो उन्होंने उत्तर दिया कि ये ताऊन के पेड़ हैं जो शीघ्र ही देश में फैलने वाली है । मुझ पर यह बात संदिग्ध रही कि उसने यह कहा कि अगले वर्ष शीतकाल में यह रोग फैलेगा या यह कि उसके बाद के शीतकाल में फैलेगा, परन्तु अत्यन्त भयानक दृश्य था जो मैंने देखा । [279] मुझे इस से पूर्व ताऊन के संबंध में इल्हाम भी हुआ और वह यह है :-

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ إِنَّهٗ اٰوَى الْقَرْيَةَ [280]

(इन्नल्लाहा ला युग़य्यिरो मा बिक़ौमिन हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फुसेहिम इन्नहू अवलक़रियता) अर्थात् जब तक हृदयों का पापरूपी संक्रामक रोग दूर नहीं होगा तब तक प्रत्यक्ष संक्रामक रोग भी दूर नहीं होगा । इस इश्तिहार के अन्त में कुछ फारसी कविता के पद भी लिखे हैं जो ये हैं :-

گرآں چیزے کہ می بینم عزیراں نیز دیدندے — زدنیا توبہ کردندے بچشم زار وخونبارے

خورِتاباں سیہ گشت است از بدکاری مردم — زمیں طاعوں ہمی آرد پئے تخویف وانذارے

بہ تشویشِ قیامت ماند ایں تشویش گر بینی — علاجے نیست بہرِ دفع آن جز حُسنِ کردارے

من از ہمدردی است گفتم تو خود ہم فکر کُن بارے — 281 خرد از بہر ایں روز است اے دانا و ہشیارے

(अनुवाद :- (1) जो वस्तु मैं देख रहा हूँ यदि मेरे परिजन भी देख लेते तो वे रक्त के आँसू और रुदन करने वाली आँख के साथ संसार से तौबा कर लेते ।

(2) लोगों के दुराचार के कारण प्रकाशमान सूर्य धुंधला हो गया है और अल्लाह तआला इस प्लेग को लोगों को डराने और भयभीत करने के लिए लाया है ।

(3) यदि तू उस दृश्य को देखे तो प्रलय का दृश्य होगा उसके निवारण के लिए अच्छे सदाचार के अतिरिक्त कोई माध्यम नहीं है ।

(4) मैंने तुझे सहानुभूति के तौर पर बताया है तू एक बार सोच ले । हे दक्ष और चतुर ! बुद्धि तो इसी दिन के लिए दी गई है ।)*

इन भविष्यवाणियों से स्पष्ट है कि आपने सन् 1894 ई. से पूर्व एक भयंकर प्रकोप और फिर स्पष्ट शब्दों में संक्रामक रोग की भविष्यवाणी की और फिर जब कि हिन्दुस्तान में ताऊन (प्लेग) प्रकट ही हुई थी कि आपने विशेष तौर पर पंजाब के विनाश की सूचना दी और आने वाली ताऊन को प्रलय का रूप बताया और फ़रमाया कि यह ताऊन उस समय तक नहीं जाएगी जब तक कि लोग हृदयों का सुधार न करेंगे ।

तत्पश्चात जो कुछ हुआ शब्द उसकी अदायगी नहीं कर सकते, ताऊन का प्रारंभ यद्यपि बम्बई से हुआ था और अनुमान चाहता था कि इसका प्रकोप वहीं अधिक होना चाहिए परन्तु वह तो पीछे रह गया और पंजाब में ताऊन ने अपना डेरा जमा लिया तथा इस कठोरता से आक्रमण किया कि कभी-कभी एक-एक सप्ताह में तीस-तीस हज़ार लोगों की मृत्यु हुई और एक-एक वर्ष में कई-कई लाख लोग मर गए । सैकड़ों डाक्टर नियुक्त किए गए और अनेकों प्रकार के इलाज निकाले गए, परन्तु कुछ लाभ न हुआ । प्रति वर्ष ताऊन और अधिक वेग और कठोरता के साथ

* प्रस्तुत अनुवाद अनुवादक की ओर से किया गया है । (अनुवादक)

आक्रमणकारी हुई तथा सरकार मुँह देखती की देखती रह गई । बहुत से लोगों के हृदयों ने महसूस किया कि यह प्रकोप (अज़ाब) मसीह मौऊद के इन्कार के कारण है और सहस्त्रों नहीं अपितु लाखों लोगों ने इस प्रकोपी निशान को देखकर सत्य को स्वीकार किया तथा अल्लाह तआला के मामूर पर ईमान लाए और उस समय तक ताऊन की तीव्रता में कमी नहीं आई जब तक अल्लाह तआला ने अपने मामूर को न बताया कि ताऊन चली गई, बुख़ार रह गया । तत्पश्चात ताऊन की तीव्रता का टूटना आरंभ हो गया और निरन्तर कम होती चली गई, परन्तु कुछ इल्हामों से ऐसा विदित होता है कि इस रोग के अभी कुछ और आक्रमण होंगे । इस देश में भी और अन्य देशों में भी । अल्लाह तआला अपने निर्बल बन्दों को अपनी शरण में रखे ।

मेरे निकट यह भविष्यवाणी ऐसी स्पष्ट तथा मोमिन और काफ़िर से अपनी सच्चाई को स्वीकार कराने वाली है कि इसके पश्चात भी यदि कोई व्यक्ति दुराग्रह करता है तो उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय है, जिस की आंखें हों वह देख सकता है कि :-

(1) ताऊन की सूचना एक दीर्घ समय पूर्व दी गई थी और उपचार पद्धति में कोई ऐसी पद्धति आविष्कृत नहीं हुई जिससे इतने दीर्घ समय पूर्व रोगों की सूचना दी जा सके ।

(2) ताऊन के प्रकट होने पर यह बताया गया था कि यह अस्थायी आक्रमण नहीं है अपितु प्रति वर्ष यह रोग आक्रमण करता चला जाएगा ।

(3) यह भी समय से पूर्व बताया गया था कि यह रोग पंजाब में अत्यन्त तीव्र होगा, अतः बाद की घटनाओं ने सिद्ध कर दिया कि यह रोग पंजाब में ही सब से अधिक फैला और यहाँ ही सर्वाधिक मौतें हुईं ।

(4) डाक्टरों ने निरन्तर भविष्यवाणियां कीं कि अब यह रोग वश में आ गया है, परन्तु आप(अ) ने बताया कि इसकी तीव्रता उस समय तक समाप्त न होगी जब तक अल्लाह तआला की ओर से इसका निदान न होगा । ऐसा ही हुआ कि इसका प्रकोप निरन्तर नौ वर्ष तक बड़ी कठोरता के साथ होता रहा ।

(5) अन्त में अल्लाह तआला ने स्वयं दया करके उसकी तीव्रता को तोड़ देने का वादा किया और आप(अ) को बताया गया कि ताऊन चली

गई, बुख़ार रह गया । अतः इस इल्हाम के बाद ताऊन की तीव्रता टूट गई और पंजाब में बुख़ार का सख़्त आक्रमण हुआ जिस से लगभग कोई घर खाली नहीं रहा तथा सरकारी रिपोर्टों में स्वीकार किया गया कि बुख़ार का यह आक्रमण असाधारण था ।

आठवीं भविष्यवाणी

महान भूकम्प की भविष्यवाणी जो समस्त धर्मावलम्बियों पर सबूत हुई, जिस से सिद्ध किया गया कि अल्लाह तआला पृथ्वी की गहराइयों पर भी वैसा ही शासन रखता है जैसा कि उसके धरातल के ऊपर रहने वाली वस्तुओं पर

अब मैं एक भविष्यवाणी उन भविष्यवाणियों में से प्रस्तुत करता हूँ जो इस बात को प्रकट करने वाली हैं कि अल्लाह तआला का अधिकार पृथ्वी के अन्दर भी वैसा ही है जैसा कि पृथ्वी के ऊपर । यह भविष्यवाणी उस महान भूकम्प के संबंध में है जो पंजाब में 4 अप्रैल सन् 1905 ई. को आया । उसके द्वारा भी समस्त धर्मावलम्बियों पर इस्लाम की सच्चाई और मसीह मौऊद की सच्चाई के संबंध में हुज्जत स्थापित हुई । इस भूकम्प के संबंध में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ये इल्हाम प्रकाशित किए थे । **''भूकम्प का धक्का,** عَفَتِ الدِّيَارُ مَحِلُّهَا وَمَقَامُهَا[282] **(अफ़तिद्दियारो महिल्लोहा व मक़ामोहा)''** अर्थात् एक भयानक भूकम्प आएगा, जिससे लोगों के स्थायी निवास स्थान भी नष्ट हो जाएँगे तथा अस्थायी निवास के केम्प भी नष्ट हो जाएँगे ये इल्हाम सिलसिला अहमदिया के अनेकों समाचार पत्रों में उसी समय प्रकाशित कर दिए गए तथा उन इल्हामों का अपने प्रत्यक्ष शब्दों में पूर्ण होना कल्पना से ऐसा अप्रत्याशित था कि विचार किया गया कदाचित इस से अभिप्राय ताऊन की तीव्रता हो, परन्तु अल्लाह तआला के निकट कुछ और ही निश्चित था । काँगड़े की ज्वाला मुखी पहाड़ी जो दीर्घकाल से बिल्कुल शान्त चली आ रही थी तथा जिसका ज्वाला उगलना भ्रम-पूजक हिन्दुओं से एक देवी द्वारा भेंट लेने के अतिरिक्त अन्य किसी योग्य नहीं समझी जाती थी और जिसके संबंध में भूगर्भ विज्ञान के विशेषज्ञों का

विचार था कि अपनी प्रस्फुटन शक्ति को नष्ट कर चुकी है और इससे किसी विनाश की आशंका नहीं रही है तथा जिसके आस-पास सैकड़ों वर्ष पूर्व के निर्मित बड़े-बड़े बहुमूल्य मन्दिर विद्यमान थे और हज़ारों लोग जिन के दर्शन के लिए जाते रहते थे । इस आशंका रहित पहाड़ी को शक्तिशाली और प्रतापी अस्तित्व की ओर से आदेश पहुँचा कि वह अपने अन्दर एक नवीन तीव्रता उत्पन्न करे तथा उसके मामूर की सच्चाई पर साक्ष्य दे ।

भूकम्प के इल्हाम में जैसा कि उसके शब्दों से विदित होता है कि भूकम्प के ऐसे स्थान पर सब से अधिक विनाशकारी होने की सूचना दी गई है जहाँ ऐसे मकान अधिक हों जो अस्थायी निवास के लिए होते हैं और ऐसे मकान या तो धर्मशालाएँ और होटल होते हैं या कैम्प की सैनिक बैरकें जिनमें फौजें आती जाती रहती हैं और जो स्थायी निवास के लिए नहीं होतीं । यह नहीं कहा जा सकता कि इल्हाम عَفَتِ الدِّيَارُ مَحِلُّهَا وَمَقَامُهَا **(अफ़तिद्दियारो महिल्लोहा व मक़ामोहा)** में مَحِلُّهَا **(महिल्लोहा)** का शब्द مُقَامُهَا **(मक़ामोहा)** के शब्द से पूर्व रखना उपर्युक्त बात पर बल देने के लिए नहीं है अपितु इसलिए है कि इस पद में कवि (हज़रत लबीद(रज़ि.) बिन रबीआ आमिरी) ने अत्यानुप्रास (तुक) की पाबन्दी के कारण शब्द महल को शब्द 'मक़ाम' से पहले रखा है क्योंकि अल्लाह तआला को हज़रत लबीद(रज़ि.) का यह चरण इल्हाम के लिए चुनने में कोई विवशता नहीं थी। वह इसके स्थान पर कोई अन्य इबारत उतार सकता था या चूँकि यह चरण अकेला ही इल्हाम किया था, यह किसी अन्य इल्हामी चरण के साथ संलग्न नहीं था कि उस के अनुप्रास (तुकबन्दी) का ध्यान होता वह उसी के शब्दों को आगे-पीछे कर सकता था । अतः यह शब्द वास्तव में इसी बात को प्रकट करने के लिए क़ायम रखे गए कि भूकम्प एक ऐसे स्थान पर आएगा जहाँ बहुत अधिक अस्थायी निवास की इमारतें बनी हुई हैं और जैसा कि प्रकट है, ऐसी इमारतें छावनियों, भ्रमण स्थलों, दर्शन स्थलों में ही अधिक होती हैं । अतएव ऐसे ही स्थानों में से किसी एक में भूकम्प के आने की सूचना दी गई थी ।

इन इल्हामों के प्रकाशित करने के एक लम्बे समय के पश्चात् जबकि

किसी को विचार और आशंका भी न थी कांगड़े की खामोश ज्वाला मुखी पहाड़ी गति में आई और 4, अप्रैल सन् 1908 ई. के प्रात: काल जबकि लोग नमाज़ों से फ़ारिग़ हुए ही थे उसने सैकड़ों मील तक पृथ्वी को हिला दिया । कांगड़ा और उसके मन्दिर और उसकी धर्मशालाएँ नष्ट हो गईं, आठ मील पर धर्मशाला की छावनी थी उसकी बैरकें पृथ्वी के साथ मिल गईं और उन कोठियों की जो ग्रीष्म-काल में अंग्रेज़ों के निवास हेतु थीं ईंट से ईंट बज गई । डलहौज़ी और बक्लोह की छावनियों की इमारतें भी टुकड़े-टुकड़े हो गईं, अन्य शहरों और देहात को भी सख्त आघात पहुँचा और बीस हज़ार लोग इस भूकम्प से मृत्यु का शिकार हुए । भूगर्भशास्त्री स्तब्ध रह गए कि इस भूकम्प का क्या कारण था, परन्तु वे क्या जानते थे कि इस भूकम्प का कारण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को झुठलाना था तथा इसका उद्देश्य लोगों को उसके दावे की ओर ध्यान दिलाना था । वे इसका कारण पृथ्वी के नीचे खोज रहे थे, परन्तु वास्तव में इसका कारण पृथ्वी के ऊपर था और कांगड़े की शांत ज्वालामुखी पहाड़ी अपने रब्ब का आदेश पूरा कर रही थी । इस भूकम्प के अतिरिक्त आपने अन्य बहुत से भूकम्पों की सूचना दी जो अपने समय पर आए और कुछ अभी आएँगे ।

नौवीं भविष्यवाणी

महान विश्वयुद्ध की भविष्यवाणी जो सम्पूर्ण संसार के लिए सबूत हुई, जिससे सिद्ध किया गया कि अल्लाह जिस प्रकार जड़ पदार्थों और वनस्पतियों पर शासन करता है उसी प्रकार उन लोगों के हृदयों पर भी जो शासन के अहंकार में ग्रस्त होकर स्वयं को ख़ुदा तआला की ख़ुदाई से बाहर समझते हैं

नौवां उदाहरण मैं उन भविष्यवाणियों में से चुनता हूँ जो सम्पूर्ण संसार के लिए हुज्जत हुईं और जिन से सिद्ध किया गया कि अल्लाह तआला की शक्ति के अधिकार में उसी प्रकार शासकों के हृदय भी हैं जिस प्रकार कि जन-साधारण के । इसी प्रकार मनुष्य भी आज्ञा का पालन करता है जिस प्रकार अन्य सृष्टि । यह भविष्यवाणी सन् 1905 ई. में

प्रकाशित की गई थी और इसमें उस महान विश्वयुद्ध की सूचना दी गई थी जिसने पिछले कुछ वर्ष संसार के प्रत्येक क्षेत्र को स्तब्ध और व्याकुल कर रखा था तथा लोगों के होश उड़ा दिए थे और अब भी उसका प्रभाव पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ अपितु कहीं न कहीं से उसकी अग्नि की ज्वाला सर निकाल ही लेती है ।

मूल शब्द जिनमें इस युद्ध की सूचना दी गई थी एक महान विप्लव की सूचना देते थे, परन्तु इसके जो लक्षण बताए गए थे वे प्रकट करते थे कि भूकम्प के अतिरिक्त यह कोई अन्य विपत्ति है तथा अन्य इल्हाम भी इस विचार का समर्थन करते थे । अत: वे इल्हाम जिनमें इस युद्ध की सूचना दी गई थी ये हैं :-

تازہ نشان، تازہ نشان کا دھکّا۔ زَلْزَلَةُ السَّاعَةِ۔ قُوْا اَنْفُسَكُمْ۔ [283] نَزَلْتُ لَكَ۔ لَكَ نُرِىْ اٰيَاتٍ وَ نَهْدِمُ مَا يَعْمُرُوْنَ۔ قُلْ عِنْدِىْ شَهَادَةٌ مِّنَ اللّٰهِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّؤْ مِنُوْنَ كَفَفْتُ عَنْ بَنِىْ اِسْرَآءِ يْلَ۔ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَ هَامَانَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خَاطِئِيْنَ۔ [284]

(''ताज़ा निशान, ताज़ा निशान का धक्का, ज़ल्ज़लतुस्साअते – क़ू अन्‌फ़ुसकुम नज़ल्तो लका नुरी आयातिन व नहदिमो मा या'मरून – कुल इन्दी शहादतुम्मिनल्लाहे फ़हल अन्तुम मौमिनून, कफ़फ्तो अन बनी इस्राईल, इन्ना फ़िरऔना व हामाना व जुनूदहुमा कानू ख़ातिईन, स्पष्ट विजय, हमारी विजय, [285] اِنِّىْ مَعَ الْاَفْوَاجِ اٰتِيْكَ بَغْتَةً [286] **(इन्नी मअल अफ़्वाजे आतीका बग़ततन)** । यह इल्हाम बार-बार हुआ । पर्वत गिरा और भूकम्प आया, [287] ज्वाला मुखी, [288]

مَصَالِحُ الْعَرَبِ۔ مَسِيْرُ الْعَرَبِ [289] عَفَتِ الدِّيَارُ كَذِكْرِىْ [290] اُرِيْكَ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ۔ [291] يُرِيْكُمُ اللّٰهُ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ [292] لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ [293]

(मसालिहुल अरब, मसीरुल अरब, अफ़तिद्दियारो कज़िकरी, उरीका ज़ल्ज़लतस्साअते, यूरीकुमुल्लाहो ज़ल्ज़लतस्साअते, लिमनिलमुल्कुल यौमा लिल्लाहिल वाहिदिल क़हहार ।'')

अनुवाद :- प्रलय का नमूना भूकम्प, अपने प्राणों को बचाओ, मैं तेरे

लिए उतरा, हम तेरे लिए बहुत से निशान दिखाएँगे और जो कुछ संसार बना रहा है, उसको ध्वस्त कर देंगे । तू कह दे कि मेरे पास अल्लाह की ओर से एक साक्ष्य है, क्या तुम ईमान लाओगे । मैंने बनी इस्राईल के कष्ट को दूर कर दिया । फिरऔन, हामान और उन दोनों की सेनाएँ ग़लती पर हैं । स्पष्ट विजय, हमारी विजय, मैं सेनाओं के साथ तेरे पास आऊँगा और अचानक आऊँगा । पर्वत गिरा और भूकम्प आया, ज्वालामुखी पर्वत । अरबों के लिए ऐसे मार्ग निकलेंगे कि उन पर चलना उन के लिए लाभप्रद होगा तथा अरब लोग अपने घरों से निकल खड़े होंगे । घरों को इस प्रकार उड़ा दिया जाएगा जिस प्रकार मेरी स्तुति वहाँ से मिट गई है ।

इस भूकम्प की और अधिक व्याख्या आपने अपनी एक कविता में की है जिसका सार यह है - यह भूकम्प ऐसा तीव्र होगा कि उससे मनुष्यों, देहात और खेतों पर तबाही आ जाएगी, एक व्यक्ति नग्न होने की स्थिति में भूकम्प की चपेट में आ जाए तो उस से यह न हो सकेगा कि कपड़े पहन सके, यात्रियों को उससे नितान्त कष्ट होगा और कुछ लोग उसके प्रभाव से दूर-दूर तक भटकते निकल जाएँगे, पृथ्वी में गड्ढे पड़ जाएँगे, रक्त की नालियाँ बहेंगी, पर्वतों की नदियाँ रक्त से लाल हो जाएँगी, समस्त संसार पर यह आपदा आएगी और समस्त मनुष्य बड़े हों या छोटे और सारे शासन इस आघात से कमज़ोर हो जाएँगे और विशेषकर 'ज़ार' की स्थिति अत्यधिक खराब हो जाएगी, जानवरों तक पर उस का प्रभाव पड़ेगा तथा उनके होश जाते रहेंगे और वे अपनी बोलियाँ भूल जाएँगे ।

इसके अतिरिक्त आपको इल्हाम हुआ **किश्तियाँ चलती हैं ता हों कुश्तियाँ** **294** ''लन्गर उठा दो'' **295** और आप[अ] ने यह भी लिखा कि यह सब कुछ सोलह वर्ष की अवधि में होगा । पहले आप को एक इल्हाम हुआ था, जिस से ज्ञात होता था कि भूकम्प आप के जीवन में आएगा, परन्तु फिर इल्हाम द्वारा यह दुआ सिखाई गई कि हे ख़ुदा ! मुझे यह भूकम्प न दिखा । अतः ऐसा ही हुआ कि यह युद्ध सोलह वर्ष के अन्दर तो हुआ परन्तु आप के जीवन में न हुआ ।

जैसा कि मैं पूर्व में लिख चुका हूँ कि इस भविष्यवाणी में भूकम्प का शब्द है, परन्तु इससे अभिप्राय विश्व-युद्ध था । अब मैं उन सबूतों का वर्णन करता हूँ जिन से ज्ञात होता है कि इस भविष्यवाणी में विश्व-युद्ध

की ही सूचना दी गई थी ।

(1) भूकम्प का शब्द युद्ध के लिए भी प्रयोग किया जाता है अपितु प्रत्येक प्रचंड आपदा के लिए । क़ुर्आन करीम में भी यह शब्द महान युद्ध के अर्थों में प्रयोग हुआ है । अल्लाह तआला सूरह 'अहज़ाब' में फ़रमाता है -

إِذْ جَآءُوكُم مِّن فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونَا ۝ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زِلْزَالًا شَدِيدًا [296]

(इज़ जाऊकुम मिन फ़ौक़ेकुम व मिन अस्फ़ला मिन्कुम व इज़ ज़ाग़तिल अब्सारो व बलग़तिल कुलूबुल हनाजिरा व तज़ुन्नूना बिल्लाहिज़्ज़ुनूना हुनालिकब्तुलियल मौमिनूना व ज़ुलज़िलू ज़िलज़ालनन शदीदन) अर्थात् स्मरण करो उस समय को जब शत्रु तुम्हारे ऊपर की ओर से भी और नीचे की ओर से भी आक्रमणकारी हुआ था, आँखें फिर गई थीं और हृदय मुख में आ गए थे और तुम अल्लाह तआला के संबंध में भिन्न-भिन्न प्रकार के भ्रम करने लग गए थे । इस अवसर पर मौमिनों की परीक्षा की गई थी और वे एक सख़्त आपदा में फंस गए थे । अत: जबकि भूकम्प का शब्द प्रत्येक आपदा पर बोला जा सकता है और क़ुर्आन करीम में युद्ध के लिए प्रयोग हुआ है । अत: भविष्यवाणी के शब्द सार्थक हैं यदि इस भविष्यवाणी के अर्थ भूकम्प की बजाए कुछ और किए जाएँ ।

(2) जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस भविष्यवाणी को प्रकाशित किया तो उस समय यह नोट भी लिख दिया कि ''यद्यपि प्रत्यक्ष शब्द भूकम्प की ओर ही संकेत करते हैं परन्तु संभव है कि यह साधारण भूकम्प न हो अपितु कोई अन्य प्रचंड विपत्ति हो जो प्रलय का दृश्य दिखाए जिस का उदाहरण कभी इस युग ने न देखा हो तथा प्राणों और इमारतों पर सख़्त तबाही आए ।'' [297]

अत: समय से पूर्व इल्हाम वाले का मस्तिष्क भी इस ओर गया था कि आश्चर्य नहीं कि भूकम्प से अभिप्राय कोई अन्य विपत्ति हो और यद्यपि विरोधियों ने इस बात पर विशेष बल दिया कि आप भूकम्प के शब्द के

कुछ अन्य अर्थ न लें, परन्तु आप(अ) ने निरन्तर उन के आरोपों के उत्तर में यही लिखा कि जबकि ख़ुदाई मुहावरों में अर्थों की भिन्नता पाई जाती है तो मैं इस शब्द को एक अर्थ में सीमित नहीं कर सकता । भविष्यवाणी की श्रेष्ठता यह है कि अधिकांश ऐसी निशानियाँ बताती हैं जिनका समय से पूर्व बताना मनुष्य का कार्य नहीं । फिर वह समय भी बताती है कि इस घटना का उदाहरण पूर्वकालीन युग में नहीं मिलेगा ।

(3) भविष्यवाणी के शब्द स्वयं बता रहे हैं कि इस से अभिप्राय भूकम्प नहीं हो सकता अपितु कोई आपदा अभिप्राय है क्योंकि :-

(क) भविष्यवाणी में बताया गया है कि वह भूकम्प समस्त संसार पर आएगा और भूकम्प एक समय पर समस्त संसार पर नहीं आते, अपितु पृथक-पृथक क्षेत्रों पर आते हैं ।

(ख) भविष्यवाणी से ज्ञात होता है कि यह भूकम्प के क्षण यात्रियों पर कठिन होंगे और वे मार्ग भूल जाएँगे, जबकि भूकम्प का प्रभाव यात्रियों पर कुछ भी नहीं होता । भूकम्प उन लोगों के लिए भयानक होता है जो घरों और शहरों में रहने वाले हों । वह विपत्ति जिस से यात्री मार्ग मूल जाए तथा वह भटकता फिरे युद्ध ही होता है, क्योंकि वह युद्ध की रेखाओं को चीर कर बाहर नहीं जा सकता तथा इधर-उधर भागा-भागा फिरता है ।

(ग) भविष्यवाणी से विदित होता है कि इस भूकम्प का प्रभाव खेतों और बागों पर भी होगा । जबकि भूकम्पों का प्रभाव खेतों और बाग़ों पर नहीं होता है । खेतों और बाग़ों पर युद्ध का ही प्रभाव होता है, क्योंकि दोनों ओर की तोपों से वे बिल्कुल नष्ट हो जाते हैं तथा कभी ऐसा होता है कि युद्ध के हितों का ध्यान रखकर खेत और बाग़ों को काट दिया जाता है ।

(घ) भविष्यवाणी से मालूम होता है कि पक्षियों पर भी इस भूकम्प का प्रभाव अत्यधिक होगा और वे अपनी बोलियाँ भूल जाएँगे तथा उनकी संवेदन-शक्ति क्षीण हो जाएगी । भूकम्प का प्रत्यक्ष रूप में यह प्रभाव नहीं होता, क्योंकि उसकी गति थोड़े समय तक रहती है और यदि पक्षी वायु में उड़ जाएँ तो उन्हें इसका अहसास भी नहीं होता, परन्तु युद्ध में यह बात पाई जाती है कि दिन-रात की गोलाबारी और पेड़ों के कट जाने

के कारण जानवर ऐसे क्षेत्रों में से प्रायः समाप्त हो जाते हैं और उनकी संवेदन-शक्ति जाती रहती है ।

(ङ) भूकम्प के इल्हामों में एक वाक्य - كَفَفْتُ عَنْ بَنِيْ اِسْرَاءِيْلَ **(कफ़फ़्तो अन बनीइस्राईल)** है जिस का अर्थ यह है कि मैंने बनी इस्राईल को उपद्रव से बचा लिया । प्रत्यक्ष भूकम्प से इस बात का कोई संबंध नहीं। इसलिए इन इल्हामों से अभिप्राय कोई ऐसी ही घटना थी, जिस से बनीइस्राईल को लाभ पहुँचेगा । यह मैं आगे वर्णन करूँगा कि यह विश्वयुद्ध की निशानी थी जो पूरी हुई । मैं यह भी बताऊँगा कि इस भविष्यवाणी की चर्चा क़ुर्आन करीम में भी है ।

(च) इल्हाम के शब्दों से ज्ञात होता है कि यह युद्ध है, क्योंकि भूकम्प के इल्हामों में बताया गया है कि फ़िरऔन, हामान और उनकी सेनाएँ गलती पर थीं और यह ज्ञात होता है जर्मनी के क़ैसर की ओर संकेत है जो स्वयं को अल्लाह तआला का प्रतिनिधि बताता था, जिस प्रकार फ़िरऔन अपने संबंध में कहता था कि اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى[298] **(अना रब्बोकुमुलआ'ला)** और उसके मंत्री से अभिप्राय आस्ट्रेलिया का राजा है जिसका अपना कोई महत्व न था अपितु जर्मनी के वारलार्ड के आदेश और संकेत पर चलता था । यदि भूकम्प से अभिप्राय प्रत्यक्ष भूकम्प लें तो - اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خَاطِئِيْنَ **(इन्ना फ़िरऔना व हामाना व जुनूदहुमा कानू ख़ातिईन)** का अर्थ सम्झना कठिन हो जाता है ।

(छ) भूकम्प के इन इल्हामों के साथ اِنِّيْ مَعَ الْاَفْوَاجِ اٰتِيْكَ بَغْتَةً **(इन्नी मअल अफ़्वाजे आतीका बग़ततन)** का इल्हाम भी बारम्बार हुआ है, जिस से ज्ञात होता है कि किसी युद्ध ही की ओर संकेत है ।

(ज) इल्हामों से ज्ञात होता है कि ज्वालामुखी पर्वत फटेगा और उसके साथ अरब के हित सम्बद्ध होंगे तथा वे घरों से निकल खड़े होंगे । यह लेख प्रत्यक्ष भूकम्प पर कदापि चरितार्थ नहीं हो सकता । इस से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि ज्वालामुखी से अभिप्राय स्वभावों की वह गुप्त उत्तेजना है जो किसी घटना के कारण भड़क जाएगी । उस समय अरब लोग भी देखेंगे कि चुप रहना उनके हितों के विपरीत है, अतः वे भी अपने घरों से निकल खड़े होंगे तथा इस अवसर से लाभान्वित होंगे ।

(ञ) इल्हामों में बताया गया है कि उस दिन बादशाहत अल्लाह

तआला के हाथ में होगी । इससे भी विदित होता है कि सरकारें कमज़ोर हो जाएँगी और अल्लाह तआला अपना शासन शक्तिशाली निशानों से स्थापित करेगा ।

(ट) एक इल्हाम यह है कि **'पर्वत गिरा और भूकम्प आया'** । यह बात बच्चे तक जानते हैं कि भौतिक भूकम्प पर्वत गिरने के परिणाम स्वरूप उत्पन्न नहीं होते अपितु भूकम्पों के कारण पर्वत गिरते हैं । अत: ज्ञात हुआ कि पर्वत गिरने और भूकम्प आने से भौतिक भूकम्प अभिप्राय नहीं अपितु रूपक के तौर पर कुछ और अभिप्राय है और वह यही कि कोई बड़ी विपत्ति आएगी, जिसके परिणाम स्वरूप संसार में भूकम्प आएगा और लोग परस्पर युद्ध करने लगेंगे ।

(4) इस बात का चौथा प्रमाण कि भूकम्प से अभिप्राय कोई और आपदा थी यह है कि उन्हीं दिनों के अन्य इल्हाम भी एक युद्ध की ओर संकेत करते थे, जैसे यह इल्हाम कि **'लंगर उठा दो ।'** अर्थात् प्रत्येक जाति अपने समुद्री बेड़ों को आदेश देगी कि वे हर समय समुद्र में जाने के लिए तैयार रहें और इसी प्रकार यह इल्हाम कि - **'किश्तियाँ चलती हैं ता हों कुश्तियाँ'** अर्थात् बड़ी बहुतात से जहाज़ इधर से उधर और उधर से इधर फिरेंगे और समुद्री युद्ध का अवसर खोजेंगे ।

यह बात सिद्ध करने के पश्चात् कि इस भविष्यवाणी में भूकम्प से अभिप्राय विश्व-युद्ध है जो पिछले दिनों हुआ है । अब मैं इस भविष्यवाणी के विभिन्न भागों के संबंध में वर्णन करना चाहता हूँ कि वे किस प्रकार पूरे हुए । सर्वप्रथम तो यह देखना चाहिए कि इस भविष्यवाणी में यह बताया गया था कि इस का आरंभ इस प्रकार होगा कि कोई विपत्ति आएगी, जिसके परिणामस्वरूप समस्त संसार पर भूकम्प आएगा । अत: इसी प्रकार इस युद्ध का आरंभ हुआ । आस्ट्रिया, हंगरी के राजकुमार और पत्नी के क़त्ल की विपत्ति इस युद्ध के छिड़ने का कारण हुई न कि राष्ट्रों के राजनैतिक मतभेद । दूसरी बात इस भविष्यवाणी में यह बताई गई थी कि इस महान आपदा का प्रभाव समस्त संसार पर होगा । अत: यह बात अत्यन्त प्रकाशमान दिवस के समान पूरी हुई । इस से पूर्व एक भी विपत्ति ऐसी नहीं आई जिसका प्रभाव इतनी विशालता के साथ सम्पूर्ण संसार पर पड़ा हो । यूरोप तो स्वयं इस युद्ध का केन्द्र ही था, एशिया भी इसमें

लिप्त हुआ, चीन में युद्ध हुआ, जापान युद्ध में सम्मिलित हुआ, हिन्दुस्तान इस युद्ध में शामिल हुआ तथा जर्मन जहाज़ ने हिन्दुस्तानी तटों पर आक्रमण किया, ईरान में अंग्रेज़ी सेनाओं का तुर्कों से युद्ध हुआ तथा जर्मन कमिश्नर के साथ ईरानियों का झगड़ा हुआ, इराक, शाम, फ्लस्तीन, साइबेरिया में युद्ध हुआ, अफ्रीक़ा में भी चारों ओर युद्ध हुआ, दक्षिणी अफ्रीका की सरकार ने दक्षिणी क्षेत्र में जर्मन पश्चिमी अफ्रीका पर आक्रमण किया और स्वयं दक्षिणी अफ्रीका में विद्रोह हुआ, पूर्वी अफ्रीका में जर्मन उपनिवेश में युद्ध हुआ, पश्चिमी तट पर कैमरून में युद्ध हुआ, पश्चिमी तट पर स्वेज़ नहर और तराबलस से संलग्न मिस्र की सीमा पर युद्ध हुआ, मलेशिया के क्षेत्र में जर्मन जहाज़ ने आक्रमण किया और अन्ततः पकड़ा गया, न्यूगिनी में युद्ध हुआ, अमरीका के तट पर अंग्रेज़ी और जर्मन बेड़ों में युद्ध हुआ तथा कनाडा और संयुक्त यूरोप युद्ध में शामिल हुआ और दक्षिणी अमरीका के विभिन्न प्रान्तों ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की । अतएव संसार का कोई क्षेत्र नहीं जो इस युद्ध के प्रभाव से सुरक्षित रहा हो ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि पर्वत और शहर उड़ाए जाएँगे और खेत नष्ट होंगे । अतः ऐसा ही हुआ । अनेकों पहाड़ियाँ गोलाबारी की अधिकता और बारूदी सुरंगे लगाने से बिल्कुल नष्ट हो गईं और बहुत से शहर बरबाद हो गए, यहाँ तक कि जर्मनी को उनकी पुनः आबादी के लिए अरबों रुपया दण्डस्वरूप देना पड़ा है इस उद्देश्य के लिए वह अब तक क्षतिपूर्ति की राशि अदा कर रहा है तथा खेतों और बागों की जो हानि हुई है उनकी तो कोई सीमा ही नहीं रही । जिस देश की सेना आगे बढ़ी उसने दूसरे देश के खेत और शहर उजाड़ दिए तथा हरियाली का नाम और चिन्ह तक न छोड़ा । चूँकि सहस्त्रों मील पर तोपखाने का फैलाव था, इससे भी इतनी हानि हुई जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि जानवरों के होश और संवेदना उड़ जाएगी, अतः ऐसा ही हुआ । जिन प्रदेशों में युद्ध हो रहा था वहाँ के जानवर हतबुद्धि होकर मिट गए ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि पृथ्वी अस्त-व्यस्त हो जाएगी ।

अतः फ्रांस, सर्विया, और रूस के क्षेत्रों में गोलाबारी की अधिकता से अनेकों स्थानों पर इतने बड़े-बड़े गड्ढे पड़ गए कि नीचे से पानी निकल आया और इसी प्रकार खाइयों के युद्ध की पद्धति पर बल देने के कारण देश का प्रत्येक भाग खोद दिया गया और ऐसा हुआ कि उन प्रदेशों को देख कर यह नहीं ज्ञात होता था कि यह प्रदेश कभी आबाद था अपितु ऐसा विदित होता था कि भट्टों की समाप्त न होने वाली श्रृंखला है या पहाड़ी गुफाएँ हैं ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि नदियों के जल रक्त से लाल हो जाएँगे और रक्त की नदियाँ बहेंगी । अतः बिना अतिश्योक्ति इसी प्रकार हुआ । कभी इतना रक्तपात होता था कि नदियों का जल वास्तव में मीलों-मील तक लाल हो जाता था । प्रत्येक सीमा पर इतना युद्ध हुआ कि कहा जा सकता है कि रक्त की नालियां बह पड़ीं ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि वह घड़ी यात्रियों पर बड़ी कठिन होगी और कुछ उन में से मार्ग भूले फिरेंगे । अतः ऐसा ही हुआ । पृथ्वी पर सेनाओं के फैल जाने से और समुद्र में पन्डुब्बियों के फैल जाने से और समुद्र में पन्डुब्बियों के आक्रमणों से यात्रियों को जो कष्ट हुआ उसका अनुमान नहीं किया जा सकता । जिस समय युद्ध आरंभ हुआ है उस समय सहस्त्रों, लाखों लोग शत्रु-देशों में घिर गए और कुछ सहस्त्रों मील का चक्कर लगा कर घरों को पहँचे । युद्ध के मध्य भी अधिकांश बार सैनिक सिपाहियों को कुछ शत्रु अधिकृत बाधाओं में चले जाने के कारण सैकड़ों मील की यात्रा करके जाना पड़ता था और अंग्रेज़ सिपाही फ्रांस में यात्री होने के कारण मार्ग भूल जाते थे । अतः इस प्रकार की दुर्घटनाओं की अधिकता के कारण अन्ततः फ्रेंच भाषा में उनकी रजमेण्टों इत्यादि के नाम प्लेटों पर लिखकर उनकी गर्दनों में लटकाए गए ताकि जहाँ जाएँ वह प्लेटें दिखा कर गन्तव्य पर पहुँच सकें ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि यूरोप जो कुछ इमारतें बना रहा है वे मिटा दी जाएँगी । अतः ऐसा ही हुआ । इस युद्ध ने प्रत्यक्ष इमारतों के गिराने के अतिरिक्त यूरोपियन सभ्यता की बुनियादों को भी हिला दिया है और अब वह इस स्थिति से निकलने के लिए बहुत ज़ोर से हाथ पैर मार रहा है जो स्वयं उसके हाथों ने तैयार किया था,

परन्तु सफल नहीं होता । निश्चय ही संसार देख लेगा कि युद्ध से पूर्व की यूरोपियन सभ्यता अब सफल नहीं रहेगी अपितु उसके स्थान पर ऐसे रीति-रिवाज जन्म ले लेंगे कि परिणाम स्वरूप उसे इस्लाम की ओर ध्यान देना पड़ेगा तथा यह ख़ुदा की ओर से प्रारब्ध हो चुका है, कोई इस बात को रोक नहीं सकता ।

एक निशानी यह बताई गई कि बनी इस्राईल को जो कष्ट पहुँच रहा था उस से वह बचा लिए जाएँगे । अतः यह बात भी बड़े स्पष्ट रूप में पूरी हुई । इसी युद्ध के मध्य और इसी युद्ध के कारण मिस्टर बिल्फोर [299] जो अब लार्ड बिल्फोर हैं, इस बात की घोषणा की कि यहूदी जो देशहीन फिर रहे हैं उन का क़ौमी घर अर्थात् फ्लस्तीन उनको दे दिया जाएगा और संयुक्त राष्ट्र इस बात को भी अपना लक्ष्य बनाएँगे कि इस युद्ध के पश्चात् जो अन्याय उन से होता चला आया है दूर कर दिया जाए । अतः इस आश्वासन के अनुसार युद्ध के पश्चात् फ्लस्तीन तुर्क शासन से पृथक कर लिया गया और यहूदियों का क़ौमी घर ठहरा दिया गया । अब वहाँ शासन इस प्रकार चलाया जा रहा है किसी दिन वहाँ यहूदियों का क़ौमी घर बन सके । चारों और से वहाँ यहूदी एकत्र किए जा रहे हैं और उनकी वह पुरानी मांग पूरी कर दी गई है जो वे अपने क़ौमी तौर पर एकत्र होने के संबंध में प्रस्तुत करते चले आ रहे थे ।

इस निशानी के संबंध में एक विचित्र बात यह है कि उसकी ओर क़ुर्आन करीम ने भी संकेत किया है । सूरहः बनी इस्राईल में आता है -

وَقُلْنَا مِنْ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اسْكُنُوا الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ
جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا [300]

(व कुल्ना मिम्बादिही लि बनी इस्राईलस्कुनुलअर्ज़ा फ़ इज़ा जाआ वा'दुल आख़िरते जिअना बिकुम लफ़ीफ़न) अर्थात् फ़िरऔन को तबाह करने के पश्चात हमने बनी इस्राईल से कहा कि इस पृथ्वी पर रहो । फिर जब तत्पश्चात आने वाली बात के वादे का समय आएगा तो हम उस समय तुम सब को एकत्र करके ले आएँगे ।

कुछ व्याख्याकारों ने इस **'अलअर्ज़'** (पृथ्वी) से अभिप्राय मिस्र लिया है तथा तत्पश्चात आने वाली बात के वादे से अभिप्राय प्रलय को लिया

है, परन्तु ये दोनों बातें उचित नहीं, क्योंकि बनी इस्राईल को मिस्र में रहने की आज्ञा नहीं, अपितु पवित्र भू-भाग में निवास करने की आज्ञा मिली थी और वहाँ ही वे रहे । इसी प्रकार وَعْدُ الْاٰخِرَةِ **(वा'दुलआख़िरह)** से भी प्रलय अभिप्राय नहीं, क्योंकि प्रलय का संबंध पवित्र भू-भाग में रहने के साथ कुछ भी नहीं, उचित अर्थ यह है कि पवित्र भू-भाग में निवास करने की आज्ञा दी गई है और फिर यह कह कर कि जब **'वा'दुलआख़िरह'** आएगा तो हम फिर तुम्हें एकत्र करके ले आएँगे । इस बात का संकेत किया कि एक समय ऐसा आएगा कि तुम्हें यह स्थान त्यागना पड़ेगा, परन्तु **'वा'दुलआख़िरह'** के समय अर्थात मसीह मौऊद[अ] के पुन: अवतरण के समय हम तुम्हें फिर एकत्र कर के ले आएँगे । अत: ''तफ़सीर (व्याख्या) فتح البيان **(फ़त्हुल बयान)**'' में लिखा है - وَعْدُ الْاٰخِرَةِ نُزُوْلُ عِيْسٰى مِنَ السَّمَآءِ[301] **(वा'दुलआख़िर नुज़ूलो ईसा मिनस्समाए)** इसी सूरह के प्रथम रुकूअ में अल्लाह तआला ने यहूदियों के संबंध में दो युगों की चर्चा की है, जिन में से दूसरे युग के संबंध में फ़रमाता है -

فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءٗا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا[302]

(फ़ इज़ा जाआ वा'दुलआख़िरते लियसूऊ वुजूहकुम व लियदख़ुलुल्मस्जिदा कमा दख़लूहो अव्वला मर्रतिन व लियुतब्बिरू माअलौ तत्बीरा) ।'' अत: जब वा'दुल आख़िरह आ गया ताकि तुम्हारी शक्लों को बिगाड़ दें और जिस प्रकार पहली बार मस्जिद में प्रवेश किया था, इस बार भी मस्जिद में प्रवेश करें तथा जिस वस्तु पर अधिकार पाएँ उसे नष्ट कर दें । इस आयत से ज्ञात होता है कि तत्पश्चात वादे से अभिप्राय वह युग है जो मसीह के पश्चात् यहूदियों पर आएगा क्योंकि उस **'वा'दुल आख़िरह'** के पश्चात् एकत्र किए जाने की बजाए यहूदी अस्त-व्यस्त कर दिए गए थे । इसलिए मानना पड़ता है कि दूसरे स्थान पर **'वा'दुल आख़िरह'** से मसीह के पुन: अवतरण के बाद का युग अभिप्राय है और جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا **(जिअना बिकुम लफ़ीफ़ा)** से अभिप्राय यहूदियों का वह एक स्थान पर एकत्र होना है जो इस समय फ्लस्तीन में किया जा

रहा है कि समस्त संसार से एकत्र करके वहाँ लाकर बसाए जा रहे हैं और हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम के इल्हाम كَفَفْتُ عَنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ **(कफ़फ़्तो अन बनी इस्राईल)** से अभिप्राय उस विरोध का दूर होना है जो संयुक्त राष्ट्र बनी इस्राईल (यहूद) से रखते थे तथा उन को कोई क़ौम घर बनाने की आज्ञा नहीं देती थीं ।

एक निशानी इस युद्ध के लिए यह निर्धारित की गई थी कि यह युद्ध बहरहाल सोलह वर्ष के अन्दर होगा । अतः ऐसा ही हुआ । सन् 1905 ई. में इसके संबंध में इल्हाम हुए और सन् 1914 ई. में अर्थात् नौ वर्ष पश्चात यह युद्ध प्रारंभ हो गया ।

इस युद्ध की एक निशानी यह बताई गई थी कि तमाम बेड़े उस समय तैयार रखे जाएँगे, और हम देखते हैं कि इस युद्ध के मध्य युद्ध में व्यस्त जातियों के अतिरिक्त अन्य सरकारों को भी अपने बेड़े हर समय तैयार रखने पड़ते थे ताकि ऐसा न हो कि किसी जाति का बेड़ा उनके समुद्र में कोई अनुचित कार्य कर बैठे तथा उनको युद्ध में अकारण युद्धरत होना पड़े तथा इस उद्देश्य से भी ताकि अपने अधिकारों की सुरक्षा करें ।

इस युद्ध की एक निशानी यह बताई गई थी कि जहाज़ पानी में इधर-उधर चक्कर लगाएँगे ताकि एक दूसरे के साथ युद्ध करें अर्थात् समुद्री तैयारियाँ भी बड़े ज़ोर से होंगी और समस्त समुद्रों में नौकाएँ (किश्तियाँ) चक्कर लगाती फिरेंगी । अतः जितने जहाड़ इस युद्ध में प्रयोग हुए और समुद्रों का जितना पहरा इस युद्ध में दिया गया है इस से पूर्व कभी इस का उदाहरण नहीं मिलता विशेषकर छोटे युद्ध पोत अर्थात् विनाशकारी और पनडुब्बियों ने इस युद्ध में इतना भाग लिया है जितना पहले कभी नहीं लिया था और इल्हाम में किश्तियों के शब्द से इसी ओर संकेत किया गया था कि इस युद्ध में बड़े जहाज़ों की अपेक्षा छोटे जहाज़ों से अधिक काम लिया जाएगा ।

इस आपदा की एक निशानी यह बताई गई थी कि वह अचानक आएगी । अतः यह युद्ध भी ऐसा अचानक हुआ कि लोग हैरान हो गए और बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञों ने इक़रार किया कि यद्यपि वे एक युद्ध की प्रतीक्षा कर रहे थे, परन्तु इतनी शीघ्र उसके फूट पड़ने की उन्हें आशा न थी । आस्ट्रिया के राजकुमार और उसकी पत्नी का क़त्ल होना था कि

समस्त संसार अग्नि में कूद पड़ा ।

एक निशानी इस युद्ध की यह बताई गई थी कि इस के मध्य ऐसे अवसर निकलेंगे कि अरब लोगों के लिए लाभप्रद होंगे तथा अरब लोग इन अवसरों से लाभ उठाएँगे तथा सब के सब युद्ध के लिए निकल खड़े होंगे। अतः ऐसा ही हुआ । तुर्कों के युद्ध में सम्मिलित होने पर अरबों ने देखा कि वह कौमी स्वतंत्रता की अभिलाषा जो सदियों से उनके हृदयों में उत्पन्न होकर मर जाती थी, उसे पूरा करने का अवसर आ गया है । वे सब एक साथ तुर्कों के विरुद्ध उठ खड़े हुए और फ़ौज के बाद फ़ौज के साथ तुर्कों के मुकाबले के लिए निकल पड़े और अन्ततः स्वतंत्रता प्राप्त कर ली ।

एक निशानी यह थी कि जिस प्रकार मेरी चर्चा मिट गई है उसी प्रकार घर मिटा दिए जाएँगे । अतः ऐसा ही हुआ । सर्वाधिक भोग-विलास में ग्रस्त क्षेत्र फ्रांस का पूर्वी क्षेत्र था, समस्त यूरोप को मदिरा वहीं से उपलब्ध कराई जाती थी तथा भोग-विलास के इच्छुक सम्पूर्ण पश्चिमी देशों से वहाँ एकत्र होते थे । अतः इस क्षेत्र को सर्वाधिक हानि उठाना पड़ी । जिस प्रकार वहाँ से ख़ुदा की चर्चा मिट गई थी वहाँ के घर और दीवारें इसी प्रकार मिटा दिए गए ।

एक निशानी यह बताई गई थी कि हमारी विजय होगी, अर्थात् जिस सरकार के साथ मसीह मौऊद[अ] की जमाअत होगी उसे विजय प्राप्त होगी। अतः ऐसा ही हुआ । अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद की दुआओं के कारण बर्तानिया को इस भयंकर विपत्ति से मुक्ति प्रदान की यद्यपि उसके कूटनीतिज्ञ तो यह विचार करते होंगे कि उनकी नीतियों से यह विजय हुई, परन्तु यदि घटनाओं पर विस्तारपूर्वक एक दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होता है कि अद्भुत संयोग अंग्रेज़ों की विजय का कारण हुए हैं । जिससे स्पष्ट होता है कि यह विजय आकाशीय हस्तक्षेप से हुई है न कि केवल मानवीय नीतियों से ।

एक निशानी जो अपने अन्दर कई निशानियाँ रखती है यह बताई गई थी कि इस युद्ध में 'ज़ार' का हाल अत्यधिक खराब होगा । जिस समय यह भविष्यवाणी की गई उस समय की परिस्थितियाँ उसके शब्दों के पूरा होने के बिल्कुल विपरीत थीं, परन्तु भविष्यवाणी पूरी हुई और प्रत्येक के

लिए आश्चर्य का कारण बनी ।

इस भविष्यवाणी में वास्तव में कई भविष्यवाणियाँ हैं । इसमें बताया गया है कि इस महान आपदा तक 'ज़ार' को कोई हानि नहीं पहुँचेगी । जब यह युद्ध होगा, उस समय उसको आघात पहुँचेगा, परन्तु आघात इस प्रकार का नहीं होगा कि वह मारा जाए, क्योंकि जो व्यक्ति मारा जाए उसके सन्दर्भ में यह नहीं कहा जाता कि उस का हाल ज़ार (बेहाल) है । अत: इल्हाम के शब्द बताते हैं कि उस समय उसको मौत नहीं आएगी अपितु वह अत्यन्त कष्टदायक प्रकोपों में ग्रस्त होगा । फिर यह भी ज्ञात होता है कि इस आपदा के साथ ही ज़ारों का अन्त हो जाएगा, क्योंकि उस समय का कारण किसी व्यक्ति विशेष को नहीं अपितु ज़ार को पद की हैसियत से बताया गया है । अब देखिए कि यह निशानी किस शान के साथ पूरी हुई । इस युद्ध से पूर्व ज़ार के विरुद्ध बहुत से षड़यंत्र किए गए, परन्तु वह बिल्कुल सुरक्षित रहा । तत्पश्चात् यह युद्ध हुआ और अल्लाह तआला का बताया हुआ समय आ गया तो वह इस प्रकार अचानक पकड़ा गया कि सब लोग आश्चर्य में हैं । जैसे कि परिस्थितियों से ज्ञात होता है, जिस समय रूस में विद्रोह फूटा है उस समय रूस का 'ज़ार' सीमा पर सेना के निरीक्षण के लिए गया हुआ था और जब वह राजधानी से चला है उस समय कोई ऐसा उपद्रव न था । तत्पश्चात् गर्वनर की कुछ गलतियों से उत्तेजना उत्पन्न हुई, परन्तु सरकारों में इस प्रकार की उत्तेजनाएँ उत्पन्न हो ही जाती हैं । इतनी दृढ़ता से स्थापित सरकारें ऐसी उत्तेजनाओं से तुरन्त नहीं मिट जातीं, परन्तु अल्लाह तआला इस अवसर पर कार्य कर रहा था । 'ज़ारे रूस' ने लोगों में उत्तेजना की स्थिति मालूम करके गर्वनर को कठोरता बरतने की आज्ञा दे दी, परन्तु इस बार कठोरता ने दिनचर्या के विपरीत प्रभाव किया । लोगों की उत्तेजना और भी अधिक हो गई । बादशाह ने उस गवर्नर को परिवर्तित करके एक और गर्वनर नियुक्त कर दिया और स्वयं राजधानी की ओर चला ताकि उसके जाने से लोगों की उत्तेजना शान्त हो जाए, परन्तु मार्ग में उसे सूचना मिली कि लोगों की उत्तेजना तीव्रता पर है और यह कि उसको इस समय राजधानी की ओर नहीं आना चाहिए, परन्तु बादशाह ने इस परामर्श को कोई महत्व नहीं दिया और विचार किया कि उसकी

उपस्थिति में कोई उपद्रव नहीं हो सकता और आगे बढ़ता गया । ट्रेन कुछ ही दूर आगे गई थी कि ज्ञात हुआ कि विद्रोह हो गया है और विद्रोहियों ने मंत्री कार्यालयों पर अधिकार कर लिया है और देशीय सरकार स्थापित हो गई है । यह सब कुछ एक ही दिन में हो गया, अर्थात् 12, मार्च सन् 1817 ई. की प्रात: से सायं काल तक संसार का सब से महान और सब से अधिक शक्तिशाली बादशाह जो स्वयं को 'ज़ार' कहता था अर्थात् किसी के शासन को न मानने वाला और सब पर शासन करने वाला । वह सरकार से निलंबित होकर अपनी प्रजा के अधीन हो गया और 15, मार्च को विवश होकर उसे अपने हाथ से यह घोषणा लिखना पड़ा कि वह और उसकी सन्तान रूस की गद्दी से पृथक होते हैं । अत: हज़रत अक़दस[अ] की भविष्यवाणी के अनुसार ज़ारों के वंश के शासन का हमेशा के लिए अन्त हो गया, परन्तु अभी अल्लाह के कलाम के कुछ भागों का पूरा होना शेष था । निकोलस [303] द्वितीय (ज़ारे रूस) यह समझा था कि वह शासन से निलंबित होकर अपने और अपने पत्नी और बच्चों के प्राण बचा लेगा और खामोशी से अपनी व्यक्तिगत सम्पत्तियों की आय पर निर्वाह कर लेगा, परन्तु उसका यह इरादा पूरा न हो सका । 15, मार्च को वह सरकार से निलंबित हुआ और 21, मार्च को क़ैद करके स्कासीलो (Skosilo) भेज दिया गया और 22 मार्च को अमरीका ने और 24, मार्च को इंगलैण्ड, फ्रांस और इटली ने विद्रोहियों की सरकार को मान्यता दे दी और ज़ार की समस्त आशाओं पर पानी फिर गया, उसने देख लिया कि उस की मित्र सरकारों ने जिन की सहायता पर उसे विश्वास था और जिन के लिए वह जर्मनी से युद्ध कर रहा था, एक सप्ताह के अन्दर-अन्दर उसकी विद्रोही प्रजा की सरकार स्वीकार कर ली है तथा उसके समर्थन में कमज़ोर सी आवाज़ भी नहीं उठाई, परन्तु इस कष्ट से अधिक कष्ट उसके लिए निश्चित थे ताकि वह अपनी हालते ज़ार (दुर्दशा) से अल्लाह तआला के कलाम को पूरा करे । यद्यपि वह बंदी हो चुका था, परन्तु रूस की सरकार की बागडोर शाही वंश के एक सदस्य राजकुमार दिलवाउ (Dilvao) के हाथ में थी जिसके कारण क़ैद में उसके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार हो रहा था और वह अपने परिवार सहित बागबानी और इसी प्रकार के अन्य कार्यों में समय गुज़ारता था, परन्तु

जुलाई में उस राजकुमार को भी पृथक होना पड़ा और सरकार की बागडोर करनस्की [304] (Kerensky) के हाथ में दी गई, जिससे क़ैद की कठोरताएँ बढ़ गईं तथापि मानवीय सीमाओं से आगे नहीं निकली थीं । परन्तु 7, नवम्बर को बोलशविक विद्रोह ने करनस्की की सरकार का भी अन्त कर दिया । अब ज़ार की वह भयानक स्थिति आरंभ हुई जिसे सुनकर पत्थर से पत्थर हृदय मनुष्य भी कांप जाता है । ज़ार को स्कोसीलो के राजमहल से निकाल कर विभिन्न स्थानों में रखा गया और अन्ततः उन अत्याचारों को स्मरण कराने के लिए जो वह साइबेरिया की जेल के द्वारा अपनी असहाय प्रजा पर किया करता था, अकीटेरिनबर्ग भेज दिया गया । यह एक छोटा सा शहर है जो यूराल पर्वत के पूर्व की ओर स्थित है तथा मास्को से चौदह सौ चालीस (1440) मील की दूरी पर है और इस स्थान पर वे सब मशीनें तैयार होती हैं जो साइबेरिया की खानों में जहाँ रूसी राजनैतिक क़ैदी कार्य किया करते थे प्रयोग की जाती हैं जैसे हर समय उसके सामने उसके कर्मों का ब्यौरा रखा रहता था ।

मात्र मानसिक यातनाओं पर ही संतोष नहीं किया गया अपितु स्वेट ने उसके खान-पान में भी तंगी आरंभ की और उसके रोगी बच्चे को असभ्य सिपाही उसके और उसकी पत्नी के सामने नितान्त निर्ममता से मारते और उसकी पुत्रियों को अत्यन्त अत्याचार के तौर पर यातना देते, परन्तु इन अत्याचारों से उन का हृदय ठंडा न होता था और नवीन से नवीन आविष्कार करते रहते थे । अन्ततः एक दिन 'ज़ारीना' को सामने खड़ा करके उस की नौजवान पुत्रियों के साथ बलात्कार किया गया और जब ज़ारीना अपना मुख रोते हुए दूसरी ओर कर लेती तो अत्याचारी सिपाही संगीने मार कर उसे विवश करते कि वह उधर मुख करके देखे जिधर अत्याचारी निर्दयी लोगों का समूह मानवता से गिरी हुई कार्यवाहियों में व्यस्त था । ज़ार इसी प्रकार के अत्याचारों को देखता और उस से अधिक कठोरताएँ सहन करता हुआ जितनी कि शायद कभी किसी व्यक्ति पर नहीं आई होंगी 16, जुलाई; सन् 1918 ई. कुल परिवार सहित अत्यन्त कठोर अज़ाब के साथ क़त्ल कर दिया गया और अल्लाह तआला के नबी की बात पूरी हुई कि :-

'ज़ार भी होगा तो होगा उस घड़ी ब हाले ज़ार' [305]

'ज़ार' दुखों और कष्टों को सहन करता हुआ मर गया । युद्ध समाप्त हो गया, कैसर और आस्ट्रिया के बादशाह अपनी सरकारों से पृथक हो गए, शहर उजड़ गए, पर्वत उड़ गए, लाखों लोग मारे गए, रक्त की नदियाँ बह गईं, संसार उथल-पुथल हो गया, परन्तु खेद कि संसार अभी अल्लाह तआला के पैग़म्बर की सच्चाई का प्रमाण माँग रहा है । अल्लाह तआला के भंडार अज़ाब से खाली नहीं जिस प्रकार कि दया से खाली नहीं, परन्तु मुबारक हैं वे जो समय पर समझ जाते हैं और अल्लाह तआला से लड़ने की बजाए उससे मैत्री करने के लिए दौड़ते हैं और उसके निशानों से अंधों की भाँति नहीं गुज़र जाते, अल्लाह तआला की उन पर कृपाएँ होती हैं तथा उसकी बरकतों से वे भाग प्राप्त करते हैं और संसार के लिए मुबारक हो जाते हैं ।

दसवीं भविष्यवाणी

क़ादियान की उन्नति का निशान

इस समय तक तो मैंने वे निशान वर्णन किए हैं जो या तो केवल भय की दृष्टि से थे या दोनों दृष्टि कोणों से थे । अब मैं तीन ऐसे निशान वर्णन करता हूँ जो केवल शुभ संदेश का दृष्टिकोण अपने अन्दर रखते हैं । ये तीन उदाहरण जो मैं वर्णन करूँगा ये भी ऐसे ही हैं कि अपने सामान्य रूप के कारण मित्र और शत्रु में प्रसारित हैं और प्रत्येक धर्म और जाति के लोगों में से इस के साक्षी मिल सकते हैं और उस समय से कि उन का ज्ञान अल्लाह तआला की ओर से दिया गया, हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की किताबों और डायरियों में प्रकाशित होते चले आए हैं ।

सर्व प्रथम मैं उस भविष्यवाणी की चर्चा करता हूँ जो क़ादियान की उन्नति के संबंध में है और वह यह है कि हज़रत अक़दस[अ] को बताया गया कि क़ादियान का गाँव उन्नति करते-करते एक बहुत बड़ा शहर हो जाएगा, जैसे कि बम्बई और कलकत्ता के शहर हैं जैसे कि नौ-दस लाख की जन संख्या तक पहुँच जाएगा और उसकी जनसंख्या उत्तर और पूर्व में फैलते हुए ब्यास तक पहुँच जाएगी [306] जो क़ादियान से नौ मील की दूरी पर बहने वाली एक नदी का नाम है । यह भविष्यवाणी जब प्रकाशित

हुई है उस समय क़ादियान की स्थिति यह थी कि उसकी जनसंख्या दो हज़ार के लगभग थी । कुछ पक्के मकानों के अतिरिक्त शेष समस्त मकान कच्चे थे । मकानों का किराया इतना गिरा हुआ था कि चार-पाँच आने मासिक पर मकान किराए पर मिल जाता था । मकानों की ज़मीन इतनी सस्ती थी कि दस-बारह रुपए में निवास-योग्य मकान बनाने के लिए ज़मीन मिल जाती थी, बाज़ार की स्थिति यह थी कि दो-तीन रुपए का आटा एक समय में नहीं मिल सकता था, क्योंकि लोग ज़मींदार वर्ग के थे और स्वयं अनाज पीस कर रोटी पकाते थे, शिक्षा के लिए एक सरकारी स्कूल था जो प्राइमरी तक था तथा उसी का शिक्षक कुछ वेतन लेकर डाकखाने का कार्य भी कर दिया करता था, डाक सप्ताह में दो बार आती थी, समस्त इमारतें कस्बे की चार दीवारी के अन्दर थीं और इस भविष्यवाणी के पूरा होने के प्रत्यक्ष कोई साधन न थे क्योंकि कादियान रेल से ग्यारह मील की दूरी पर स्थित है और उसकी सड़क बिल्कुल कच्ची है और जिन देशों में रेल हो, उन में उसके किनारों पर जो शहर स्थित हों उन्हीं की जनसंख्या बढ़ती है। क़ादियान में कोई कारखाना न था कि उसके कारण मज़दूरों की संख्या के साथ शहर की उन्नति हो जाए, कोई सरकार का विभाग क़ादियान में न था कि उसके कारण क़ादियान की उन्नति हो, न ज़िले का स्थान था न तहसील का यहाँ तक कि पुलिस चौकी भी न थी, क़ादियान में कोई मण्डी भी न थी जिसके कारण यहाँ की आबादी उन्नति करती । जिस समय यह भविष्यवाणी की गई है उस समय हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के अनुयायी भी कुछ सौ से अधिक न थे कि उनको आदेश देकर यहाँ बसाया जाता तो शहर बढ़ जाता ।

निसन्देह कहा जा सकता है कि चूँकि आप(अ) ने दावा किया था, इसलिए आशा थी कि आप के अनुयायी यहाँ आकर बस जाएँगे, परन्तु प्रथम तो कौन कह सकता था कि इतने अनुयायी हो जाएँगे जो क़ादियान की आबादी को आकर बढ़ा देंगे, द्वितीय इसका उदाहरण कहाँ मिलता है कि अनुयायी अपने व्यवसाय छोड़ कर पीर (गुरू) के ही पास आ बैठें और वहीं अपना घर बना लें । हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम का जन्म स्थान नासिरा अब तक एक गाँव है, हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन

सहरवर्दी, हज़रत शैख़ सरहिन्दी, मुजद्दिद अलिफ़ सानी, हज़रत बहाउद्दीन साहिब नक़्शबन्द रहमतुल्लाह अलैहिम जो साधारण क़स्बों में पैदा हुए या वहाँ जाकर बसे उनके जन्म स्थान या निवास स्थान वैसे के वैसे ही रहे, उन में कोई उन्नति न हुई या यदि हुई तो बहुत कम, जो हमेशा उन्नति के युग में हो जाती है । शहरों का बढ़ना तो ऐसा कठिन होता है कि कभी बादशाह भी यदि आर्थिक दृष्टिकोण को ध्यान में न रखते हुए शहर बसाते हैं तो उनके बसाए हुए शहर उन्नति नहीं करते तथा कुछ समय पश्चात् उजड़ जाते हैं और क़ादियान वर्तमान आर्थिक दृष्टिकोण ध्यान में रखते हुए अत्यन्त खराब स्थान पर स्थित है, न तो रेल के किनारे पर है कि लोग व्यापार के लिए आकर बस जाएँ और न रेल से इतनी दूर है कि लोग रेल से दूर होने के कारण उसी को अपना सामाजिक केन्द्र बना लें । अत: उसकी जन संख्या का उन्नति पाना प्रत्यक्षतया बिल्कुल असंभव था । आश्चर्य जनक बात यह है कि क़ादियान किसी नदी या नहर के किनारे पर भी स्थित नहीं कि ये दोनों बातें भी कभी व्यापार के बढ़ाने और उसे उन्नति दे कर कस्बे की आबादी बढ़ाने में सहायक होती हैं ।

अत: बिल्कुल विपरीत परिस्थितियों में तथा बिना किसी प्रत्यक्ष साधनों की उपलब्धता के हज़रत अक़दस मसीह मौऊद[अ] ने भविष्यवाणी की कि कादियान बहुत उन्नति कर जाएगा । इस भविष्यवाणी के प्रकाशित होने के पश्चात अल्लाह तआला ने आप की जमाअत को भी उन्नति देना आरंभ किया और साथ ही उनके हृदयों में यह इच्छा भी उत्पन्न करना आरंभ कर दी कि वे क़ादियान आकर बसें तथा लोगों ने बिना किसी प्रेरणा के शहरों और कस्बों को छोड़कर क़ादियान में बसना आरंभ कर दिया तथा उनके साथ-साथ अन्य लोगों ने भी यहाँ आकर बसना प्रारंभ कर दिया । अभी इस भविष्यवाणी के पूर्णरूप से पूर्ण होने में तो समय है, परन्तु जिस सीमा तक यह भविष्यवाणी पूर्ण हो चुकी है वह भी आश्चर्य जनक है । इस समय क़ादियान की जनसंख्या चार हज़ार अर्थात दोगुनी से भी अधिक है । चार दीवारी के स्थान पर मकान बन कर कस्बे ने बाहर की ओर फैलना आरंभ कर दिया है । इस समय क़स्बे की पुरानी आबादी से लगभग एक मील तक नई इमारतें बन चुकी हैं और बड़ी-बड़ी पक्की इमारतें और खुली सड़कों ने एक छोटे से कस्बे को एक शहर का स्थान दे दिया है, बाज़ार अत्यन्त विशाल हो गए हैं और मनुष्य जब चाहे

सहस्त्रों का सामान खरीद सकता है, एक प्राइमरी स्कूल के स्थान पर दो हाई स्कूल बन गए है, जिनमें से एक हिन्दुओं का स्कूल है एक कन्याओं का स्कूल है और एक धार्मिक ज्ञानों का कालेज है, डाकखाना जिसमें सप्ताह में दो बार डाक आती थी और स्कूल का अध्यापक वेतन लेकर उसका काम कर दिया करता था, अब उसमें सात-आठ लोग दिन भर कार्य करते हैं तब कहीं काम समाप्त होता है । तार का प्रबंध हो रहा है, एक सप्ताह में दो बार निकलने वाला समाचार पत्र प्रकाशित होता है, दो साप्ताहिक उर्दू और एक साप्ताहिक अंग्रेज़ी समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं एक अर्ध मासिक समाचार पत्र प्रकाशित होता है और दो मासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं, पाँच प्रेस जारी हैं जिन में से मशीन प्रेस है, बहुत सी किताबें प्रति वर्ष प्रकाशित होती हैं, बड़े-बड़े शहरों की डाक इधर-उधर हो जाए तो हो जाए परन्तु क़ादियान का नाम लिख कर पत्र डालें तो सीधा यहीं पहुँचता है। अतः अत्यन्त विपरीत परिस्थितियों में क़ादियान ने वह उन्नति की है जिसका उदाहरण संसार के किसी किनारे पर नहीं मिल सकता । आर्थिक तौर पर शहरों की उन्नति के लिए जो नियम निर्धारित हैं उन सब को पीछे छोड़ते हुए उसने उन्नति प्राप्त करके अल्लाह तआला के कलाम की सच्चाई प्रकट की है जिस से वे लोग जो क़ादियान की पूर्व स्थिति और उसके स्थान को जानते हैं चाहे वे अन्य धर्मों के ही क्यों न हों इस बात को स्वीकार करने पर विवश हो जाते हैं कि निसन्देह 'यह असाधारण संयोग है' परन्तु खेद कि लोग यह नहीं देखते कि क्या सब असाधारण संयोग मिर्ज़ा साहिब ही के हाथ पर एकत्र हो जाते थे ।

ग्यारहवीं भविष्यवाणी

आर्थिक सहायता के संबंध में

शुभ संदेशों वाली भविष्यवाणियों में से उदाहरण के तौर पर द्वितीय उस भविष्यवाणी को प्रस्तुत करता हूँ जो आपकी आर्थिक सहायता से संबंधित थी यह भविष्यवाणी विचित्र परिस्थितियों और विचित्र रूप में की गई थी और वास्तव में आप(अ) की महान भविष्यवाणियों में से यह सर्व प्रथम भविष्यवाणी थी । इसका विवण यों है कि एक बार आप(अ) के

पिताश्री बीमार हुए, उस समय तक आप को इल्हाम होना आरंभ नहीं हुए थे । एक दिन जबकि पिताश्री की बीमारी प्रत्यक्षतया ज्ञात होता था कि जाती रही है केवल कुछ पेचिश की शिकायत शेष थी । आप को सब से पहला इल्हाम وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ[307] **(वस्समाए वत्तारिक़)** हुआ । चूँकि 'तारिक़' रात के आने वाले को कहते हैं, इसलिए आपने समझ लिया कि (इसमें मृत्यु के आने की सूचना है) और आज रात होने पर पिताश्री मृत्यु को प्राप्त हो जाएँगे और यह इल्हाम मातमपुर्सी के तौर (किसी के मरने पर सहानुभूति प्रकट करना) पर है जो अल्लाह तआला ने आप पर अत्यन्त कृपा दृष्टि से की है तथा आने वाले कष्ट में आप को सांत्वना प्रदान की है । चूँकि आप के वंश की बहुत से आय-स्रोत आप(अ) के पिता श्री के जीवन तक ही थे, क्योंकि उन को पेन्शन और इनाम मिला करता था । इसी प्रकार अधिकांश सम्पत्ति भी उनके जीवन तक ही उनके पास थी । इसलिए इस इल्हाम पर मानव होने के कारण आपके हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि जब पिताश्री का निधन हो जाएगा तो हमारी आय के कई मार्ग बन्द हो जाएँगे, सरकारी पेन्शन और इनाम भी बन्द हो जाएगा और सम्पत्ति का भी अधिकांश भाग भागीदारों के हाथों में चला जाएगा । इस विचार का आना था कि तुरन्त दूसरा इल्हाम हुआ जो एक बड़ी भविष्यवाणी पर आधारित था और उसके शब्द ये थे कि اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ[308] **(अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू)** क्या ख़ुदा तआला अपने बन्दे के लिए पर्याप्त न होगा । इस इल्हाम में चूँकि अल्लाह तआला की ओर से आप(अ) के भरण-पोषण और आप की आवश्यकताओं के पूरा करने का वादा था । आपने कई हिन्दुओं और मुसलमानों को इसकी सूचना दे दी ताकि वे उसके साक्षी रहें और एक हिन्दू सज्जन को जो अब तक जीवित हैं अमृतसर भेजकर इस इल्हाम की मुहर बनवाई । इस प्रकार सैकड़ों व्यक्ति इस इल्हाम से परिचित हो गए । इस इल्हाम की वास्तविकता को और अधिक स्पष्ट करने के लिए अल्लाह तआला ने यह प्रबंध किया कि आप के वंश में कुछ विवाद हो गए, । उनके कारण आप की सम्पत्ति से संबंधित आप के वंश में से ही बहुत से दावेदार खड़े हो गए, आप के बड़े भाई सम्पत्ति के प्रबंधक थे । उनका परिजनों से कुछ मतभेद हो गया । आपने उन को परामर्श दिया कि उन से सद्व्यवहार

करना चाहिए, परन्तु उन्होंने आप के परामर्श को स्वीकार न किया । अन्ततः अदालत तक नौबत पहुँची और उन्होंने आप से दुआ के लिए कहा। आप ने दुआ की तो ज्ञात हुआ कि भागीदार जीतेंगे और आप के भाई साहिब हारेंगे । अतः इसी प्रकार हुआ । सम्पत्ति का दो तिहाई से अधिक भाग भागीदारों को दिया गया और आपके भाई साहिब और आपके भाग में अत्यन्त थोड़ा भाग आया । यद्यपि यह सम्पत्ति जो आप के भाग में आई आप की आवश्यकताओं के लिए तो पर्याप्त थी, परन्तु जो कार्य आप करने वाले थे उसके लिए यह आय पर्याप्त न थी । उस समय इस्लाम के प्रचार के लिए उस महान किताब की तैयारी में व्यस्त थे जिसका नाम 'बराहीन अहमदिया' है और जिसके लिए निश्चित था कि धार्मिक संसार में हलचल मचा दे और इस किताब के प्रकाशित होने के लिए अधिक राशि की आवश्यकता थी । इस निराशा की स्थिति में अल्लाह तआला ने आशा के द्वार खोल दिए और ऐसे लोगों के हृदयों में प्रेरणा उत्पन्न कर दी जो धर्म से सामान्यतया संबंध नहीं रखते तथा इस किताब को प्रकाशित करने के लिए सामान उपलब्ध करा दिया, परन्तु इस किताब के चार भाग ही अभी प्रकाशित हुए थे कि खर्च और भी बढ़ गए, क्योंकि जिस ओर से आप[अ] आक्रमण का मुख फेरना चाहते थे उधर से मुख फिर गया, परन्तु स्वयं आप के विरुद्ध लोगों में जोश उत्पन्न हो गया । क्या हिन्दू, क्या ईसाई और क्या सिख सज्जन सब मिलकर आप पर आक्रमणकारी हुए और आप के इल्हामों पर उपहास आरंभ कर दिया। उन का उद्देश्य तो यह था कि उन इल्हामों की श्रेष्ठता को आघात पहुँचे तो वह प्रभाव जो आप की किताबों से लोगों के हृदयों पर पड़ा है मिट जाए और इस्लाम के मुकाबले पर उनको पराजय हो, परन्तु मुसलमानों में से भी कुछ ईर्ष्यालु आप[अ] के विरोध पर खड़े हो गए और जैसे एक ही समय में चारों और से आक्रमण आरंभ हो गया । इस बात का सरलतापूर्वक अनुमान लगाया जा सकता है कि जिस व्यक्ति पर अपने और पराए आक्रमणकारी हो जाएँ, उसके लिए कैसी कठिनाइयों का सामना होता है । अतः लोगों के आरोपों का उत्तर देने और इस्लाम की प्रतिष्ठा को कायम रखने के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता हुई और अल्लाह तआला ने उसका भी प्रबन्ध कर दिया । तत्पश्चात तीसरा परिवर्तन आरंभ

हुआ । अर्थात् अल्लाह तआला ने आप को बताया कि आप ही मसीह मौऊद हैं और पहले मसीह की मृत्यु हो चुकी है । इस दावे पर वे लोग भी जो इस समय तक आप(अ) के साथ थे पृथक हो गए और कुल चालीस लोगों ने आप की बैअत की । उस समय जैसे समस्त संसार से युद्ध आरंभ हो गया तथा जो लोग पहले सहायक थे उन्होंने भी विरोध में अपनी शक्ति लगाना आरंभ कर दिया । अब तो खर्चे अनुमान से अधिक बढ़ने लगे । एक तो विरोधियों के आरोपों के उत्तर प्रकाशित करना, दूसरे अपने दावे को लोगों के सामने प्रस्तुत करना और उसके सबूत देना, तीसरे छोटे-छोटे विज्ञापनों का वितरण करना ताकि सम्पूर्ण देश को आप के दावे से अवगत हो जाए । यही व्यय अधिक थे, परन्तु अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत के प्रकटन के लिए और व्यय के द्वार भी खोल दिए अर्थात् आप को आदेश दिया गया कि आप क़ादियान में अतिथि-निवास (मेहमान ख़ाना) निर्मित करें और लोगों में घोषणा करें कि वे क़ादियान आकर आपके मेहमान हुआ करें तथा धार्मिक जानकारियों में बढ़ोतरी किया करें या यदि कोई सन्देह हों तो उन का निवारण किया करें । सब सहायकों का पृथक हो जाना प्रकाशन-कार्य का अतिरिक्त हो जाना, उस पर अधिक भार अतिथि-निवास का निर्माण और अतिथि-सत्कार का व्यय ऐसी कठिनाइयों के उत्पन्न करने का कारण हो सकता था कि सारा कार्य अस्त-व्यस्त हो जाता, परन्तु अल्लाह तआला ने इन कुछ दर्जन लोगों के हृदय में जो आप के साथ थे और जिन में से कोई व्यक्ति भी धनवान नहीं कहला सकता था तथा अधिकांश निर्धन लोग थे ऐसे शिष्टाचार उत्पन्न कर दिए कि उन्होंने हर प्रकार का कष्ट सहन किया, परन्तु धार्मिक कार्यों में कमी नहीं आने दी और वास्तव में यह उनका साहस कार्य नहीं कर रहा था अपितु अल्लाह तआला का वादा **अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू** काम कर रहा था ।

यह वह युग था जबकि जमाअत अहमदिया पर चारों ओर से कठोरता की जाती थी, मौलवियों ने फ़त्वा दे दिया कि अहमदियों को क़त्ल कर देना, उनके घरों को लूट लेना, उनकी सम्पत्तियों का छीन लेना, उनकी स्त्रियों का बिना तलाक दूसरे स्थान पर निकाह कर देना वैध ही नहीं पुण्य का कारण है । उद्दण्ड और बदमाश लोगों ने जो

अपने लोभ और लालच को प्रकट करने के लिए बहाने तलाश करते रहते हैं, इस फ़त्वे को कार्यान्वित करना आरंभ कर दिया, अहमदी घरों से निकाले और सेवाओं (नौकरियों) से निलंबित किए जा रहे थे, उनकी सम्पत्तियों पर बलात कब्ज़ा किया जा रहा था और कई लोग इन झंझटों से मुक्ति का कोई उपाय न पाकर पलायन करने पर विवश हो गए थे, और चूँकि पलायन का स्थान उनके लिए क़ादियान ही था । उनके क़ादियान आने पर अतिथि-सत्कार का व्यय और भी बढ़ गया था, उस समय जमाअत एक दो हज़ार लोगों तक उन्नति कर चुकी थी, परन्तु उन में से प्रत्येक शत्रुओं के आक्रमणों का शिकार हो रहा था । एक दो हज़ार लोग जो हर समय अपने प्राण, अपने सम्मान, अपनी सम्पत्ति तथा अपने माल की सुरक्षा की चिन्ता में लगे हुए हों तथा रात-दिन लोगों के साथ मुबाहिसों (शास्त्रार्थों) और झगड़ों में व्यस्त हों उनका समस्त संसार में इस्लाम के प्रचार के लिए रुपया उपलब्ध कराना तथा धर्म सीखने के उद्देश्य से क़ादियान आने वालों के अतिथि सत्कार का भार उठाना और फिर अपने सताए हुए प्रवासी भाइयों के व्ययों को सहन करना एक आश्चर्यजनक बात है, सैकड़ों लोग दोनों समय जमाअत के दस्तर ख़्वान (चादर जिस पर भोजन लगाया जाता है) पर भोजन करते थे और कुछ गरीबों की अन्य आवश्यकताओं का भी प्रबन्ध करना पड़ता था । पलायन करके आने वालों की अधिकता और मेहमानों की बहुतात से मेहमान खाने के अतिरिक्त प्रत्येक घर मेहमानखाना बना हुआ था । हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर का प्रत्येक कमरा एक स्थायी मकान था, जिसमें कोई न कोई अतिथि या प्रवासी खानदान रहता था । अत: भार मानव-सहन शक्ति से बहुत अधिक था । प्रत्येक सुबह जब होती तो अपने साथ ताज़ा आजमायश और नए दायित्व लाती और प्रत्येक शाम जो आती अपने साथ ताज़ा आज़मायश और नए दायित्व लाती, परन्तु **अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू** की शीतल वायु चिन्ताओं को तिनकों की भाँति उड़ा कर फेंक देती और वे बादल जो आरंभ में सिलसिले की इमारत की बुनियादों को उखाड़ कर फेंक देने की धमकी देते थे थोड़ी ही देर में दया और कृपा के बादल आ जाते तथा उनकी एक-एक बूंद के गिरते समय **अलैसल्लाहो बिकाफ़िन**

अब्दहू का उत्साहवर्धक स्वर उत्पन्न होता। इस कठिनाई के समय का नक्शा मेरे निकट अफ़गानिस्तान के लोग भली-भाँति अपने मस्तिष्कों में उत्पन्न कर सकते हैं, क्योंकि पिछले दिनों में वहाँ भी प्रवासियों का एक समूह गया था, अफ़गानिस्तान एक नियमबद्ध सरकार थी जो उन की व्यवस्था में व्यस्त थी । फिर उनमें से अधिकांश लोग अपने खर्चे स्वयं भी सहन करते थे । मेहमानों की अपेक्षा मेज़बानों (अतिथि सत्कार करने वाले) की संख्या अत्यधिक थी । अफ़गानिस्तान के लगभग एक करोड़ निवासी केवल एक दो लाख लोगों के मेज़बान बने थे, परन्तु इसके बावजूद मेहमानों की सेवा करने में कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा । इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि दो हज़ार निर्धन लोगों की जमाअत पर जब एक ही समय में सैकड़ों मेहमानों और निर्धन प्रवासियों का भार पड़ा होगा और साथ ही इस्लाम के प्रचार के कार्य के लिए भी उनको रुपया व्यय करना पड़ता होगा और वह भी ऐसे समय में जब कि उनके स्वयं के घरों में भी लड़ाई जारी थी, तो उन लोगों की गर्दनें भार के नीचे कितनी दब गई होंगी ।

सिलसिले की ये आवश्यकताएं एक दो दिन के लिए न थीं न एक दो मास के लिए और न एक दो वर्ष के लिए अपितु प्रति वर्ष कार्य उन्नति करता जाता था और अल्लाह तआला अपनी कृपा से इस कार्य के लिए स्वयं ही व्यवस्था कर देता था । सन् 1898 ई. में हज़रत अक़दस(अ) ने जमाअत के बच्चों की धार्मिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए एक हाई स्कूल खोल दिया, जिससे खर्चों में और उन्नति हुई, फिर एक मासिक पत्रिका अंग्रेज़ी और एक उर्दू में इस्लाम के प्रचार हेतु जारी की, इससे खर्चों में और भी बढ़ोतरी हुई, परन्तु अल्लाह तआला समस्त व्यय उपलब्ध करता चला गया, यहाँ तक कि उस समय एक अंग्रेज़ी हाई स्कूल के अतिरिक्त एक धार्मिक कालेज, एक कन्या विद्यालय, कई प्राइमरी और मिडिल स्कूल, हिन्दुस्तानी प्रचारकों का एक समूह, मारीशस मिशन, सीलोन मिशन, इंगलिस्तान मिशन, अमरीकन मिशन, तथा अन्य बहुत से विभाग, लेखन, प्रचार, शिक्षा, दीक्षा, सामान्य प्रबंध, न्याय और फ़त्वा इत्यादि के विभाग हैं तथा तीन चार लाख के लगभग वार्षिक व्यय है । ये सब अल्लाह तआला अपनी कृपा से अपने वादे **अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू**

के अन्तर्गत उपलब्ध करा रहा है ।

हमारी जमाअत निर्धनों की जमाअत है, क्योंकि अल्लाह तआला का नियम है कि प्रारंभ में निर्धन लोग ही उसके सिलसिले में प्रवेश करते हैं जिन्हें देखकर लोग कह दिया करते हैं -

مَا نَرٰكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ [309]

(मा नराकत्तबअका इल्लल्लज़ीन हुम अराज़िलोना बादियर्राय) और इसमें उसकी नीति यह होती है ताकि कोई व्यक्ति यह न कहे कि यह सिलसिला मेरी सहायता से फैला और ताकि मूर्ख विरोधी भी इस प्रकार का आरोप न लगा सकें । अत: ऐसी जमाअत से इतना भार उठवाना ख़ुदा की ओर से सहायता के अभाव में नहीं हो सकता। यह निर्धन जमाअत सरकारी कर उसी प्रकार अदा करती है जिस प्रकार अन्य लोग अदा करते हैं, ज़मीनों के लगान देती है, सड़कों और अस्पतालों इत्यादि के खर्चों में भाग लेती है । अत: समस्त खर्च जो अन्य लोगों पर हैं वह भी अदा करती है और फिर धर्म-प्रचार और उसके स्थायित्व के लिए भी धन देती है । निरन्तर पैंतीस वर्ष से इस भार को वहन करती चली आ रही है । इस युग में निसन्देह अधिक समृद्धशाली और मान्य लोग इस जमाअत में सम्मिलित हो गए हैं, परन्तु उतनी ही खर्चों में भी बढ़ोतरी हो गई है। अतएव क्या यह बात आश्चर्यजनक नहीं कि जबकि शेष संसार बावजूद उन से अधिक धनाढ्य होने के अपने व्यक्तिगत खर्चों की तंगी की ही शिकायत करता रहता है । इस जमाअत के लोग लाखों रुपया वार्षिक बिना एक वर्ष का अवकाश डालने अल्लाह के मार्ग में खर्च कर रहे हैं और मात्र अल्लाह तआला की कृपा से इस बात के लिए भी तैयार है कि यदि उन से कहा जाए कि अपने समस्त माल अल्लाह तआला के मार्ग में दे दो तो वे तुरन्त दे दें। यह बात कहाँ से उत्पन्न हो गई ? निश्चय ही **अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू** का इल्हाम उतारने वाले ने लोगों के हृदयों में परिवर्तन उत्पन्न किया है अन्यथा कौन सी शक्ति थी जो उस समय जबकि हज़रत मसीह मौऊद[अ] को साधारण खर्चों की चिन्ता थी, इतने बढ़ जाने वाले खर्चों को पूर्ण करने का वादा करती और उस वादे को पूरा करके दिखा

देती । भला मुसलमान कहलाने वाले करोड़ों लोग संसार में विद्यमान हैं वे कितना रुपया इस्लाम के प्रचार के लिए उपलब्ध करते हैं । हमारी जमाअत की संख्या का यदि अधिक से अधिक अनुमान लगाया जाए तो जितना रुपया वह इस्लाम के प्रचार पर व्यय करती है यदि उसी हिसाब से हिन्दुस्तान के अन्य मुसलमान भी व्यय करें तो आठ-दस करोड़ रुपया वार्षिक उनको इस रूप में व्यय करना चाहिए जबकि उनकी आर्थिक स्थिति हमारी जमाअत की भाँति हो, परन्तु उनमें रियासतों के बड़े-बड़े उत्तराधिकारी और करोड़पति व्यापारी भी हैं, यदि उनको भी ध्यान में रख लिया जाए तो वार्षिक पन्द्रह सोलह करोड़ रुपया इस्लाम के प्रचार पर केवल हिन्दुस्तान के मुसलमानों को खर्च करना चाहिए, परन्तु वे तो हमारी जमाअत के चार पाँच लाख की तुलना में एक-दो लाख रुपया भी खर्च नहीं करते । यह अन्तर इसलिए है कि हमारे अन्दर **अलैसल्लाहो बिकाफ़िन अब्दहू** का वादा अपना कार्य कर रहा है ।

बारहवीं भविष्यवाणी

जमाअत की उन्नति के संबंध में आप की भविष्यवाणी जो पूर्ण होकर मित्र और शत्रु पर सबूत हो रही है

अब मैं उन शुभ संदेशों पर आधारित भविष्यवाणियों में से एक भविष्यवाणी को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करता हूँ जो इस शिक्षा के प्रचार के संबंध में की गई थी, जिस के साथ आप[अ] अवतरित किए गए थे, अर्थात् वे ज्ञान और मआरिफ़ जो क़ुर्आन करीम में वर्णन किए गए हैं, परन्तु लोग उन से अज्ञान होने के कारण लापरवाह हो चुके थे । यह भविष्यवाणी भी ऐसी है कि लाखों लोग इसके साक्षी हैं और उस समय की गई थी कि जब उसके पूर्ण होने के सामान उपलब्ध न थे इस

भविष्यवाणी के शब्द ये थे :-

''मैं तेरी तब्लीग़ (प्रचार) को संसार के किनारों तक पहुँचाऊँगा'' [310] मैं तेरे स्वच्छ हृदय और हार्दिक प्रेमियों का समूह भी बढ़ाऊँगा और उन की संख्या और मालों में बरकत दूँगा और उनमें बढ़ोतरी प्रदान करूँगा।'' [311] (अल्लाह तआला) इस (अहमदिया सम्प्रदाय) को उन्नति देगा यहाँ तक कि उनका बाहुल्य और बरकत नज़रों (दृष्टि) में अद्भुत हो जाएगी [312] يَأْتُونَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ **(यातूना मिन कुल्ले फ़ज्जिन अमीक़)** अर्थात् संसार के प्रत्येक देश से लोग तेरी जमाअत में प्रवेश हेतु आएँगे । [313] إِنَّا أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ **(इन्ना आ'तैना कलकौसर)** हम तुझे प्रत्येक वस्तु में बाहुल्य प्रदान करेंगे जिन में जमाअत भी सम्मिलित है । अंग्रेज़ी में भी आप को इसके संबंध में इल्हाम हुआ ''आई शैल गिव यू ए लार्ज पार्टी ऑफ इस्लाम'' [314] (I shall give you a large party of Islam) मैं तुम्हें मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत दूँगा । [315] ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ **(सुल्लतुम्मिनल अव्वलीना व सुल्लतुम्मिनल आख़िरीना)** पहलों में से भी एक बड़ी जमाअत तुम्हें दी जाएगी और पिछलों में से भी । जिस के अर्थ यह भी हैं कि पूर्वकालीन नबियों की उम्मतों में से भी एक बड़ा समूह तुम पर ईमान लाएगा और मुसलमानों में से भी एक बड़ी जमाअत तुम पर ईमान लाएगी । [316] يَا نَبِيَّ اللّٰهِ كُنْتُ لَا أَعْرِفُكَ **(या नबिय्यल्लाहे कुन्तो ला आरिफ़ोका)** पृथ्वी कहेगी (अर्थात् पृथ्वी पर रहने वाले) कि हे अल्लाह के नबी! मैं तुझे नहीं पहचानती थी । [317] إِنَّا نَرِثُ الْأَرْضَ نَأْكُلُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا **(इन्ना नरिसुलअर्ज़ा नाकुलुहा मिन अतराफ़िहा)** हम पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे उसे उसके किनारों की ओर से खाते आएँगे ।

इन इल्हामों में से अधिकांश तो ऐसे समय में हुए और उसी समय प्रकाशित भी कर दिए गए जबकि आप पर एक व्यक्ति भी ईमान नहीं लाया था और कुछ बाद में हुए जब सिलसिला स्थापित हो चुका था, परन्तु वे भी ऐसे समय में हुए हैं जबकि सिलसिला अपनी आरंभिक अवस्था में था, उस समय आप का इस इल्हाम को प्रकाशित कर देना कि एक समय ऐसा आएगा कि आप के साथ एक बड़ी जमाअत हो जाएगी और केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं अपितु समस्त देशों में आप(अ) के

अनुयायी फैल जाएँगे तथा प्रत्येक धर्म के लोगों में से निकल कर लोग आप के धर्म में प्रवेश करेंगे तथा उन्हें अल्लाह तआला बहुत बढ़ाएगा और किसी देश के लोग भी आप के प्रचार से बाहर नहीं रहेंगे । क्या यह एक साधारण बात है ? क्या मानव-मस्तिष्क अनुमानों के आधार पर ऐसी बात कह सकता है ?

यह ज्ञान का युग है और लोग अपने पहले धर्म को जिसकी सच्चाई जन्मदिन से उनके मस्तिष्क में बैठाई जा रही थी त्याग रहे हैं । आजकल मसीही, मसीही नहीं रहे, हिन्दू हिन्दू नहीं रहे, यहूदी यहूदी नहीं रहे और पारसी पारसी नहीं रहे अपितु एक बौद्धिक धर्म इन धर्मों की रीतियों की चादर में लिपटा हुआ सर्वस्व फैल रहा है, नामों में भिन्नता है परन्तु समस्त संसार के विचारों में एकता हो रही है । इस स्थिति में आप का यह दावा करना कि जो लोग अपने पूर्वकालीन नबियों से उकता कर प्रकृति (नेचर) के अनुसरण में व्यस्त हैं आप को स्वीकार कर लेंगे, प्रत्यक्षतया असंभव दावा था, फिर आप उर्दू, अरबी और फ़ारसी के अतिरिक्त अन्य कोई भाषा नहीं जानते तथा आप हिन्दुस्तान के रहने वाले थे, जिस देश के निवासी आज से तीस वर्ष पूर्व अरब और ईरान में नितान्त तुच्छ और तिरस्कृत समझे जाते थे, कब आशा की जा सकती थी कि अरब, ईरान, अफ़गानिस्तान, शाम और मिस्र के रहने वाले एक हिन्दुस्तानी पर ईमान ले आएँगे, कौन कह सकता था कि हिन्दुस्तान के अंग्रेज़ी पढ़े हुए लोग जो क़ुर्आन करीम को मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कलाम ठहराने लगे थे इस बात को स्वीकार कर लेंगे कि इस युग में भी अल्लाह तआला अपने बन्दों से कलाम करता है और फिर ऐसे व्यक्ति से जो अंग्रेज़ी का एक शब्द नहीं जानता, जो उनके निकट सब से बड़ा पाप था । फिर कौन सी बुद्धि थी जो यह प्रस्तावित कर सकती थी कि पश्चिमी भाषाओं से अज्ञान, पाश्चात विद्याओं और शिक्षाओं से अपरिचित, पश्चिमी रीति-रिवाजों से अनभिज्ञ मनुष्य जो अपने प्रान्त से भी बाहर कभी नहीं गया (हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम पंजाब से बाहर केवल अलीगढ़ तक गए हैं) वह उन देशों के लोगों तक अपने विचारों को पहुँचा देगा और फिर वे ज्ञान और आधुनिक कौशलों के विशेषज्ञ और एशिया वालों को कीड़ों-मकोड़ों से भी तुच्छ समझने वाले

लोग उसकी बातों को सुन भी लेंगे और स्वीकार भी कर लेंगे, और फिर किस मनुष्य की बुद्धि में आ सकता था कि अफ़्रीक़ा निवासी जो एशिया से बिल्कुल पृथक हैं उसकी बातों पर कान रखेंगे तथा उस पर ईमान लाएँगे, हालाँकि उनकी भाषा जानने वाला पूरे हिन्दुस्तान में कोई नहीं मिल सकता । ये समस्त बाधाएँ एक ओर थीं और अल्लाह तआला का कलाम (वाणी) एक ओर था और अन्ततः वही हुआ जो अल्लाह तआला ने कहा था । वह व्यक्ति जो बिल्कुल अकेला एक छोटे से आंगन में टहल-टहल कर अपने इल्हामों को लिख रहा था और समस्त संसार में अपनी स्वीकारिता की सूचनाएँ दे रहा था, हालाँकि उस समय उसे उसके क्षेत्र के लोग भी नहीं जानते थे । बावजूद समस्त बाधाओं के अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन से उठा और एक बादल की भाँति गरजा और लोगों के देखते-देखते ईर्ष्यालुओं और शत्रुओं के कलेजों को छलनी करता हुआ सम्पूर्ण आकाश पर छा गया । हिन्दुस्तान में वह बरसा, बुख़ारा में वह बरसा, पूर्वी अफ्रीका में वह बरसा, मारीशस द्वीप में वह बरसा, दक्षिणी अफ्रीक़ा में वह बरसा, पश्चिमी अफ्रीका के देशों नाइजेरिया, गोल्ड-कोस्ट, सैराल्यून में वह बरसा, आस्ट्रेलिया में वह बरसा, इंग्लैण्ड, जर्मनी और रूस के प्रदेशों को उसने सींचा तथा अमरीका में जाकर उसने सिंचाई की ।

आज संसार का कोई महाद्वीप नहीं जिसमें मसीह मौऊद की जमाअत नहीं और कोई धर्म नहीं जिसमें से उसने अपना भाग प्राप्त नहीं किया, ईसाई, हिन्दू, बुद्ध, पारसी, सिख, यहूदी समस्त जातियों में से उसको मानने वाले मौजूद हैं तथा यूरोपियन, अमरीकन, अफ़रीकन, और एशिया के निवासी उस पर ईमान लाए हैं । यदि उसने जो कुछ समय से पूर्व बता दिया था वह किस प्रकार पूरा हो गया ? क्या यह आश्चर्यजनक बात नहीं कि वह यूरोप और अमरीका जो इस से पूर्व इस्लाम को खा रहे थे मसीह मौऊद[अ] के द्वारा अब इस्लाम उन्हें खा रहा है । कई सौ व्यक्ति इस समय तक इंग्लैण्ड में और इसी प्रकार अमरीका में इस्लाम ला चुका है तथा रूस, जर्मनी और इटली के कुछ लोगों ने भी इस सिलसिले को स्वीकार किया है । वही इस्लाम जो अन्य सम्प्रदायों (फ़िरकों) के हाथ से पराजय पर पराजय झेल रहा था, अब मसीह मौऊद की दुआओं से

शत्रु को प्रत्येक मैदान में नीचा दिखा रहा है और इस्लाम की जमाअत को बढ़ा रहा है । फ़ल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन ।

ग्यारहवाँ सबूत

आप(अ) का प्रेम अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की कुछ भविष्यवाणियों को वर्णन करने के पश्चात् अब मैं आप के दावे की सच्चाई के ग्यारहवें सबूत का वर्णन करता हूँ और वह सबूत यह है कि अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है [318]وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا **(वल्लज़ीना जाहदू फ़ीना लनहदियन्नहुम सुबुलना)** अर्थात् जो लोग हमारे मार्ग में सच्चा प्रयास करते हैं हम उनको अपने मार्ग दिखा देते हैं तथा उन पर उन्हें चलाते हैं। इसी प्रकार अल्लाह तआला फ़रमाता है [319]قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ **(क़ुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाहा फत्तबिऊनी युहबिबकुमुल्लाह)** कह दे कि यदि तुम्हें अल्लाह से प्रेम है तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तआला तुमसे प्रेम करने लगेगा ।'' इन दोनों आयतों से विदित होता है कि अल्लाह तआला से सच्चा प्रेम तथा उसका सच्चा अनुराग उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम और उसके सच्चे अनुराग का हमेशा यह परिणाम हुआ करता है कि मनुष्य ख़ुदा तआला से जा मिलता है और उसका प्रिय हो जाता है । अत: इस उम्मत के लोगों की सच्चाई का यह भी एक मापदण्ड है कि उन के हृदय ख़ुदा के प्रेम से परिपूर्ण हों तथा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण उन का आचरण हो और इस मापदण्ड के अनुसार भी हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की सच्चाई प्रकाशमान दिन की भाँति सिद्ध है ।

प्रेम का विषय एक ऐसा विषय है कि मुझे इस पर कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं । प्रत्येक देश के कवि उसके विवरण को अज्ञात समय से वर्णन करते चले आए और समस्त धर्म इस पर ईमान और ख़ुदा तक

पहुँचने का आधार रखते चले आए हैं, परन्तु समस्त कवियों के वर्णन से बढ़कर पूर्ण प्रेम की पूर्ण व्याख्या वह है जो अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में वर्णन की है अर्थात्

قُلْ إِن كَانَ اٰبَاؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ
وَأَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ
إِلَيْكُم مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهٖ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِيْنَ [320]

(क़ुल इन काना आबाओकुम व अब्नाओकुम व इख़वानोकुम व अज़्वाजोकुम व अशीरतोकुम व अम्वालोनिक़्तरफ़्तुमूहा व तिजारतुन तख़शौना कसादहा व मसाकिनो तरज़ौनहा अहब्बा इलयकुम्मिनल्लाहे व रसूलिही व जिहादिन फ़ी सबीलिही फ़तरब्बसू हत्ता यातियल्लाहो बिअमरिही वल्लाहो ला यहदिल क़ौमल फ़ासिक़ीन) कह दे कि यदि तुम्हारे बाप-दादे और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ, और तुम्हारे पति और तुम्हारे परिजन और तुम्हारे माल जो तुमने कमाए हैं और व्यापार जिस के बिगड़ जाने से तुम भयभीत रहते हो और मकानों को जिन्हें तुम पसन्द करते हो । अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अल्लाह तआला के मार्ग में कार्य करने से तुम्हें अधिक प्रिय हैं तो तुम्हें अल्लाह तआला से कोई प्रेम नहीं, तब तुम अल्लाह तआला के प्रकोप की प्रतीक्षा करो और अल्लाह तआला ऐसे अवज्ञाकारियों को कभी अपना मार्ग नहीं दिखाता अर्थात् पूर्ण प्रेम का लक्षण यह है कि मनुष्य उसके लिए प्रत्येक वस्तु को बलिदान कर दे । यदि इस बात के लिए वह तैयार नहीं तो मौखिक बातें उसके लिए कुछ लाभप्रद नहीं । यों तो प्रत्येक व्यक्ति कह देता है कि मुझे अल्लाह तआला से प्रेम है तथा उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम है अपितु मुसलमान कहलाने वाला कोई व्यक्ति भी न होगा जो यह कहता हो कि मुझे अल्लाह तआला और उस के रसूल से प्रेम नहीं है, परन्तु देखना यह है कि इस इक़रार (स्वोकारोक्ति) का प्रभाव उसके कर्मों पर, उसके शरीरों पर और उसके कथनों पर क्या पड़ता है । वे ही लोग जो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के प्रेम में स्वयं को मुग्ध बताते हैं और आप

स.अ.व. की प्रशंसा में कविताएँ पढ़ते और सुनते रहते हैं अपितु कुछ तो स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में कविताएँ कहते भी हैं। आप (स.अ.व.) के आदेशों के पालन करने की ओर उनका बिल्कुल ध्यान नहीं होता । वे अल्लाह तआला के प्रेम का दावा तो करते हैं, परन्तु उस से मिलने के लिए कुछ भी प्रयास नहीं करते । हम देखते हैं कि यदि किसी का परिजन आ जाए तो वह सौ कार्य छोड़कर उससे मिलता है । अपने मित्रों और प्रियजनों की भेंट का अवसर प्राप्त हो तो अति प्रसन्न हो जाता है । शासकों के समक्ष भेंट करने का अवसर प्राप्त हो तो प्रसन्नता से फूला नहीं समाता, अपितु लोग अल्लाह तआला से प्रेम का दावा करते हैं परन्तु नमाज़ के निकट नहीं जाते या नमाज़ पढ़ते हैं तो इस प्रकार कि कभी पढ़ी कभी न पढ़ी अथवा यदि नियमानुसार भी पढ़ी तो ऐसी जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं कि ज्ञात नहीं होता कि सज्दह से उन्होंने सर कब उठाया फिर कब वापस रख दिया, जिस प्रकार मुर्ग़ा चोचें मारकर दाने चुगता है ये सज्दह कर लेते हैं, न विनय होती है न गिड़गिडाहट । इसी प्रकार अल्लाह तआला उपवास का प्रतिफल स्वयं को ठहराता है, परन्तु लोग अल्लाह तआला के प्रेम का दावा करते हुए उसका हाथ पकड़ने के लिए नहीं जाते तथा उसका सानिध्य प्राप्त करने का प्रयास नहीं करते, अल्लाह तआला का प्रेम प्रकट करते हैं परन्तु लोगों के अधिकारों का हनन करते हैं, झूठ बोलते हैं, लांछन लगाते हैं, चुगली करते हैं, अल्लाह तआला से प्रेम का वर्णन करते हैं, परन्तु क़ुर्आन करीम का अध्ययन और उस पर विचार और चिन्तन की सामर्थ्य उन्हें नहीं मिलती । क्या जिस प्रकार आजकल लोग क़ुर्आन करीम से व्यवहार करते हैं उसी प्रकार अपने प्रियजनों के पत्रों से भी किया करते हैं ? क्या इन पत्रों को लपेट कर रख छोड़ते हैं और उनको पढ़कर उनका मतलब समझने का प्रयास नहीं करते । अतः प्रेम का दावा और बात है और वास्तविक प्रेम और बात है प्रेम कभी कर्म और त्याग से पृथक नहीं होता और इस प्रकार का प्रेम और इस प्रकार का प्यार हमें इस युग में सिवाए हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम और आप के प्रचारकों के अन्य किसी व्यक्ति में दिखाई नहीं देता ।

आप (स.अ.व.) के जीवन की परिस्थितियाँ बताती हैं कि जब से

आपने होश संभाला, उसी समय से अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम में मुग्ध थे तथा उन का प्रेम आपकी रोम-रोम में समाया हुआ था । आप वाल्यवस्था ही से शरीअत के नियमों के पाबन्द थे तथा एकान्तवास को पसन्द करते थे । जब आप शिक्षा से निवृत हुए तो आपके पिताश्री ने बहुत चाहा कि आप को किसी स्थान पर नौकरी दिलवा दें, परन्तु आप ने इस बात को पसन्द नहीं किया तथा बारम्बार के आग्रह पर भी इन्कार करते रहे तथा ख़ुदा के स्मरण को संसार के कार्यो पद प्रमुख कर लिया, आप एक अत्यन्त सम्माननीय वंश के सदस्य थे । यदि आप(अ) चाहते तो आपको सम्माननीय पर प्राप्त हो सकता था, जैसा कि आप के बड़े भाई को एक सम्माननीय पद प्राप्त था, परन्तु आप ने इससे पहलू ही बचाया । यह नहीं था कि आप आलसी थे और आलस्य के कारण आप(अ) ने ऐसा किया, क्योंकि आप(अ) के बाद के जीवन ने सिद्ध कर दिया कि आप(अ) जैसा परिश्रमी व्यक्ति संसार के किसी भी कोने पर मिलना कठिन है । एक क़ादियान के निकट रहने वाला सिख जिसके पूर्वजों के सम्बन्ध आप(अ) के पिताश्री के साथ थे सुनाया करते थे तथा बावजूद धार्मिक भिन्नता होने के अब तक इस घटना को सुनाते समय उसकी आँखों में आँसू आ जाते कि एक बार हमें आप(अ) के पिताश्री ने आप(अ) के पास भेजा और कहा कि जाओ उन से कहो कि वह मेरे साथ अधिकारियों के पास चलें, मैं उनको तहसीलदारी का पद दिलाने का प्रयास करूँगा । वह कहता है कि जब हम आप(अ) के पास गए तो आप एक कमरे में एकान्त में बैठे हुए कोई पुस्तक पढ़ रहे थे, जब हमने आप(अ) से कहा कि आप के पिताश्री आपको सम्माननीय पद दिलाने हेतु कहते हैं । आप(अ) क्यों उनके साथ नहीं जाते । तो आप(अ) ने कहा कि मेरी ओर से उनकी सेवा में निवेदन करो कि मैंने जिसकी नौकरी करना थी कर ली अब वह मुझे क्षमा ही कर दें तो उचित है ।

उन दिनों आप का कार्य यह होता था कि क़ुर्आन करीम का अध्ययन करते रहते तथा हदीसों की किताबें देखते या रूमी रहमतुल्लाह की मसनवी का अध्ययन करते तथा यतीमों और असहायों का एक समूह प्राय: आप के पास आ जाता था, जिनमें आप अपना भोजन बांट देते और प्राय: बिल्कुल ही खाली पेट (भूखे) रहते और कभी-कभी केवल चने

भुनवा कर चबा लेते तथा आपका एकान्तवास इतना बढ़ा हुआ था कि अनेक बार ऐसा होता कि घर के लोग आप(अ) को भोजन भेजना तक भूल जाते ।

एक बार आप(अ) इस विचार से कि पिताश्री की दृष्टि से पृथक हो जाऊँ तो कदाचित वह मुझे सांसारिक कार्यों में लगाने का विचार छोड़ दें, क़ादियान से सियालकोट चले गए और वहाँ भरण-पोषण हेतु अस्थायी तौर पर आप(अ) को नौकरी भी करना पड़ी, परन्तु यह नौकरी आप(अ) की इबादत (उपासना) में बाधा न थी, क्योंकि केवल किसी से मांगने से बचने के लिए आप(अ) ने यह नौकरी की थी कोई सांसारिक उन्नति उद्देश्य न था । इस स्थान पर आप(अ) को पहली बार इस बात का ज्ञान हुआ कि इस्लाम अत्यन्त दयनीय स्थिति में है और अन्य धर्मों के लोग उसे खाने के लिए तत्पर हैं । इसका साधन यह हुआ कि सियालकोट में पादरियों का एक बड़ा केन्द्र था । वे प्रतिदिन बाज़ारों और कूचों में अपने धर्म का प्रचार करते तथा लोगों के हृदयों में इस्लाम के विरुद्ध सन्देह उत्पन्न करते थे और आप(अ) यह देखकर आश्चर्य में पड़ जाते थे कि कोई व्यक्ति उनका मुक़ाबला नहीं करता । यह वह युग था कि लोग समझते थे कि ईसाइयत सरकार का धर्म है, भय खाते थे कि इसका मुकाबला करेंगे तो हानि पहुँचेगी । सिवाए एक के अधिकांश विद्वान पादरियों की बातों का खण्डन करने से भय खाते थे और जो लोग मुकाबला भी करते वे उन के प्रहारों के सामने पराजित हो जाते, क्योंकि क़ुर्आन करीम का ज्ञान ही उन्हें प्राप्त न था। इस स्थिति को देखकर आप(अ) ने पादरियों का मुकाबला करने का साहस किया और बड़े ज़ोर से बहस और मुबाहिसा आरंभ किया और फिर इस मुकाबले के द्वार को आर्यों और अन्य जातियों के लिए भी विस्तृत कर दिया, कुछ समयोपरान्त आप(अ) को आपके पिताश्री ने वापस बुला लिया और फिर यह विचार करके कि अब तो आप(अ) नौकरी कर चुके हैं, शायद अब नौकरी करना स्वीकार कर लें । पुन: आप(अ) की नौकरी के लिए प्रयास किया परन्तु आप(अ) उन से क्षमा ही माँगते रहे । हाँ यह देखकर कि आप(अ) के पिताश्री सांसारिक कष्टों में बहुत घिरे हुए हैं उनके कहने पर यह कार्य अपने दायित्व में ले लिया

कि उनकी ओर से उनके मुक़द्दमों की पैरवी कर दिया करें । इन मुक़द्दमों के मध्य में आप का ख़ुदा की ओर झुकाव और भी प्रकट हुआ । एक बार ऐसा हुआ कि आप(अ) मुक़द्दमे की पैरवी के लिए गए । मुक़द्दमे के प्रस्तुत होने में विलम्ब हो गया, नमाज़ का समय हो गया । आप लोगों के रोकने के बावजूद नमाज़ के लिए चले गए और जाने के पश्चात ही मुक़द्दमे की पैरवी के लिए बुलाए गए, परन्तु आप नमाज़ में व्यस्त रहे, नमाज़ से निवृत्त होकर अदालत में आए । सरकारी नियमानुसार चाहिए तो यह था कि मजिस्ट्रेट एक तरफा डिग्री देकर आप(अ) के विरुद्ध फैसला सुना देता, परन्तु अल्लाह तआला को आप(अ) की यह बात ऐसी रुचिकर लगी कि उसने मजिस्ट्रेट के ध्यान को इस ओर से फेर दिया तथा उसने आप की अनुपस्थिति को ध्यान में न लाते हुए फैसला आप के पिताश्री के पक्ष में कर दिया । एक सज्जन जो आपके बचपन के मित्र थे, सुनाते थे कि वह लाहौर में नौकर थे आप(अ) भी किसी महत्वपूर्ण मुकद्दमे की पैरवी के लिए जिसकी अपील सर्वोत्तम न्यायालय में प्रस्तुत थी, वहाँ गए तथा वह मुक़द्दमा ऐसा था कि उसमें पराजित होने से आपके पिता श्री के अधिकारों और परिणामस्वरूप आप(अ) के अधिकारों को कठोर आघात पहुँचता था । वह वर्णन करते हैं कि जब आप मुक़द्दमे से वापस आए तो अति प्रसन्न थे । मैं समझा कि आप मुक़द्दमा जीत गए हैं तभी तो इतने प्रसन्न हैं । मैंने भी प्रसन्नता से मुक़द्दमे में सफलता की मुबारकबाद प्रस्तुत की तो आपने फ़रमाया कि मुक़द्दमे में तो हम हार गए हैं, प्रसन्न इसलिए हैं कि अब कुछ दिन एकान्तवास में ख़ुदा को स्मरण करने का अवसर प्राप्त होगा ।

जब आप(अ) इस प्रकार के मामलों से उकता गए तो आपने अपने पिताश्री को एक पत्र लिखा जिसमें इस प्रकार के कार्यों से अवकाश प्रदान करने की विनती की थी, इस पत्र को मैं यहाँ नक़ल कर देता हूँ, ताकि ज्ञात हो कि आप(अ) आरंभिक आयु से ही संसार से कितनी घृणा करते थे तथा ख़ुदा के स्मरण में व्यस्त रहने को रुचिकर समझते थे । यह पत्र आप(अ) ने उस समय के नियमानुसार फ़ारसी भाषा में लिखा था जो निम्नलिखित हैं :-

''حضرت والد مخدوم من سلامت! مراسم غلامانہ وقواعد فدویانہ بجا آوردہ، معروض حضرت والا میکند، چونکہ دریں ایام برای العین مے بینم وبچشم سر مشاہدہ میکنم کہ در ہمہ ممالک وبلاد ہر سال چناں وبائے مے افتد کہ دوستاں را از دوستاں وخویشاں را از خویشاں جدا میکند۔ وہیچ سالے نمے بینم کہ ایں نائرہ عظیم وچنیں حادثہ الیم درآں سال شور قیامت نبفگند۔ نظر برآں دل از دنیا سرد شدہ است و روا ز خوف جاں زرد واکثر ایں دو مصرعہ شیخ مصلح الدین سعدی شیرازی بیاد مے آیند واشک حسرت ریختہ میشود۔

مکن تکیہ بر عمرِ نا پائیدار   مباش ایمن از بازیٔ روزگار

ونیز ایں دو مصرعہ ثانی از دیوانِ فرخ نمک پاش جراحتِ دل میشود۔

بدنیائے دُوں دل مبند اے جواں   کہ وقت اَجَل مے رسد ناگہاں

لہٰذا میخواہم کہ بقیہ عمر در گوشۂ تنہائی نشینم ودامن از صحبتِ مردم بچینم وبیاد او سبحانہٗ مشغول شوم، مگر گزشتہ را عذرے ومافات را تدار کے شود۔

عمر بگزشت نماند است جزایامے چند   بہ کہ در یاد کسے صبح کنم شامے چند

کہ دنیا را اساسے محکم نیست وزندگی را اعتبارے نے وَالْکَیِّسُ مَنْ خَافَ عَلٰی نَفْسِہٖ مِنْ اٰفَۃِ غَیْرِہٖ۔ والسّلام

अनुवाद :- ''मेरे पिताजी आप सुरक्षित रहें । मैं सेवकता और विनम्रता के साथ आपकी सेवा में विनती करता हूँ कि जैसा इस समय मैं देख रहा हूँ कि समस्त शासनों में ऐसा संक्रामक रोग फैल रहा है जो मित्रों को मित्र से, परिजनों को परिजनों से पृथक कर रहा है तथा कोई भी वर्ष ऐसा नहीं गुज़रा कि ऐसी भयानक और दर्दनाक घटना जो प्रलयकारी हो न आई हो। इसी को दृष्टि में रखते हुए हृदय संसार से उचाट हो गया है और चेहरा प्राण जाने के भय से पीला पड़ गया है तथा प्राय: मुझे शैख मुस्लिहुद्दीन सादी शीराज़ी के ये दो पद स्मरण हो आते हैं और ख़ेद के आँसू जारी हो जाते हैं :-

अस्थायी जीवन पर तू भरोसा मत कर और समय के उलट-फेर से निर्भय न हो और दीवाने फरसख़ (हज़रत अक़दस का आरंभिक दिनों का उपनाम है) के ये दो पद भी घायल हृदय पर नमक छिड़कते हैं । हे

योद्धा इस तिरस्कृत संसार से हृदय न लगा, क्योंकि मृत्यु का समय अचानक आएगा । इसीलिए मेरी अभिलाषा है कि शेष जीवन एकान्तवास में व्यतीत कर दूँ और लोगों के मेल-जोल से स्वयं को अलग कर दूँ तथा अल्लाह तआला की चर्चा में व्यस्त रहूँ । कदाचित गुज़रे हुए के लिए कोई बहाना और जो तुझ से छूट गया उसका निवारण हो जाए । जीवन व्यतीत हो गया और कुछ क़दमों के अलावा कुछ न रहा । उत्तम है कि किसी की चर्चा में मैं कुछ सुब्हें और कुछ शामें गुज़ार दूँ, क्योंकि संसार का आधार दृढ़ नहीं है और जीवन का कोई भरोसा नहीं ।

जब आप के पिताश्री का निधन हो गया तो आप(अ) ने समस्त कार्यों से पृथकता धारण कर ली तथा धर्म के अध्ययन, उपवास और रात को जागने में समय व्यतीत करने लगे तथा समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से इस्लाम के शत्रुओं का उत्तर देते रहे । इस युग में लोग एक-एक पैसे के लिए लड़ते हैं, परन्तु आपने अपनी कुल सम्पत्ति अपने बड़े भाई के सुपुर्द कर दी । आप(अ) के लिए भोजन उन के घर से आ जाता है और वह जब आवश्यकता समझते कपड़े बनवा देते और आप(अ) न सम्पत्ति की आय से कुछ भाग लेते और न उसका कोई कार्य करते । लोगों को नमाज़, रोज़े का ध्यान दिलाते, इस्लाम का प्रचार करते, निर्धनों और असहायों का भी ध्यान रखते, और तो आप के पास उस समय कुछ था नहीं, भाई के यहाँ से जो भोजन आता, उसी को निर्धनों में बांट देते और कभी-कभी दो-तीन तोला भोजन पर ही निर्वाह करते और कभी यह भी शेष न रहता और भूखे ही रह जाते । यह नहीं था कि आपकी सम्पत्ति थोड़ी थी और आप(अ) समझते थे कि निर्वाह हो रहा है । उस समय एक पूर्ण गाँव आप और आपके भाई का साझेदारी में था, इसके अतिरिक्त जागीर इत्यादि की भी आय थी ।

इसी अवधि में आप(अ) ने इस्लाम की दयनीय स्थिति देखकर अल्लाह तआला के समक्ष दुआ विनय और गिड़गिड़ाने के साथ आरंभ की तथा अल्लाह तआला की ओर से संकेत पाकर 'बराहीन अहमदिया' नामक किताब लिखी जिस के संबंध में घोषणा की कि इसमें इस्लाम की सच्चाई के तीन सौ सबूत दिए जाएँगे । यह किताब ख़ुदा के अस्तित्व, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और

इस्लाम पर होने वाले आरोपों के निवारण हेतु एक भारी प्रहार सिद्ध हुई और यद्यपि कि अपूर्ण रही, परन्तु इस रूप में भी मित्र और शत्रु से प्रशंसा प्राप्त किए बिना नहीं रही तथा बड़े-बड़े विद्वानों ने इस किताब के सम्बन्ध में राय प्रकट की कि यह किताब तेरह सौ वर्ष की अवधि में अपना उदाहरण स्वयं ही है । इस्लाम के उत्तम दिनों के महान लेखकों को ध्यान में रखते हुए यह प्रशंसा अपने उद्देश्य की स्वयं ही व्याख्या करती है । इसके अतिरिक्त जो भी पत्रिका या समाचार पत्र निकलता, आप[अ] उसमें इस्लाम की श्रेष्ठता और उसकी वास्तविकता को प्रकट करते तथा इस्लाम के शत्रुओं का उत्तर देते, यहाँ तक कि सब जातियां आप की शत्रु हो गईं, परन्तु आप[अ] ने लेशमात्र परवाह न की ।

यह वह समय था कि एक ओर तो ईसाई रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियाँ दे रहे थे और दूसरी ओर आर्य अपशब्दों से काम ले रहे थे, परन्तु हिन्दुस्तान के विद्वान एक दूसरे के विरुद्ध कुफ्र के फ़त्वे प्रकाशित कर रहे थे, इस्लाम पैरों तले रोंदा जा रहा था, परन्तु विद्वानों को रफ़आ यदैन और हाथ सीने पर बांधें या नाभि पर, आमीन ऊँचे स्वर में कहें या आहिस्ता अथवा इसी प्रकार की अन्य समस्याओं से फ़ुरसत न थी । उस समय आप ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो इस्लाम के शत्रुओं के मुकाबले पर सीना ताने हुए थे तथा मुसलमानों में शुभ कर्मों को प्रचलन देने की ओर ध्यान दे रहे थे । आप[अ] इस बहस में न पड़ते कि हनफ़ियों का तर्क उचित है या अहले हदीस का अपितु इस बात पर बल देते कि जिस बात को भी सत्य समझो उस का पालन करके दिखाओ तथा अधर्म और अवैध को वैध समझने का परित्याग करके अल्लाह तआला के आदेशों का अनुसरण करना आरंभ कर दो । पंडित दयानन्द प्रवर्तक आर्य समाज से आपने मुकाबला किया, लेखराम, जीवन दास, मुरलीधर, इन्दरमन अतः जितने भी आर्य धर्म के नेता थे उनमें से प्रत्येक से आप[अ] बहस की बुनियाद डालते और उस समय तक उसका पीछा न छोड़ते, जब तक वह इस्लाम पर आक्रमण करने से पृथक न हो जाता या तबाह न हो जाता । इसी प्रकार ईसाइयों के गालियाँ देने वाले प्रचारकों का आप[अ] मुकाबला

करते, कभी फ़तह मसीह से, कभी आथम से, कभी मार्टिन से, कभी हावल से, कभी राइट से, कभी तालिब मसीह से तथा इस पर भी आप को सन्तुष्टि न होती, अंग्रेज़ी में अनुवाद करवा कर सहस्त्रों, लाखों की संख्या में विज्ञापन यूरोप और अमरीका को भिजवाते और जिस व्यक्ति के सन्दर्भ में सुनते कि इस्लाम में रुचि है, तुरन्त उस से पत्राचार करते और इस्लाम का निमंत्रण देते। अतः मिस्टर विब (Mr. Alexander Webb) अमरीका का पुराना मुसलमान आप(अ) के उसी समय के प्रयासों का परिणाम है । यह व्यक्ति नितान्त आदरणीय है और किसी समय संयुक्त राज्य अमरीका की ओर से दूत के पद पर आसीन था, आप ने उसकी इस्लाम से रुचि का हाल सुनकर उस से पत्राचार किया और अन्ततः उस सदस्वभाव व्यक्ति ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तथा अपने पद से अलग हो गया । अतः अल्लाह तआला के एकेश्वरवाद के प्रचार और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई के प्रमाणित करने की आप(अ) को धुन लगी हुई थी और आप(अ) एक क्षण के लिए भी इससे लापरवाह नहीं रहते थे । तत्पश्चात् आप(अ) ने दावा किया तो उस समय से आप(अ) का काम और भी विशाल हो गया । कोई इस्लाम का शत्रु नहीं निकला, जिसके मुकाबले पर आप खड़े न हुए हों । जहाँ किसी के सन्दर्भ में सुना कि वह इस्लाम पर आक्रमण करता है तुरन्त उसका मुक़ाबला आरंभ कर दिया । डोई जो अमरीका का झूठा नबी था जिसकी चर्चा पहले आ चुकी है जब उसकी इस्लाम से शत्रुता का हाल आप(अ) ने सुना तो समुद्र पार से उसका मुकाबला आरंभ कर दिया, पिगट (Mr. Piggott) ने इंग्लैण्ड में ख़ुदा होने का दावा किया तो उसे तुरन्त ललकारा । अतएव संसार के किसी भी कोने पर जहाँ कहीं भी कोई इस्लाम का शत्रु उत्पन्न हुआ, उसे वहीं जा कर पकड़ा और नहीं छोड़ा जब तक कि वह अपने उत्पात से हट नहीं गया या मर नहीं गया । आपने चौहत्तर वर्ष की आयु पाई तथा जीवन-पर्यन्त रात-दिन इस्लाम की सेवा में व्यस्त रहे । कई बार महीनों लेखन में इतने व्यस्त रहते कि कोई नहीं कह सकता था कि आप(अ) कब सोते हैं और अल्लाह तआला और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आप(अ) को इतना प्रेम था कि इस्लाम के कार्य को अपना कार्य समझते

थे । यदि कोई अन्य व्यक्ति इस्लाम की सेवा करता तो उसके नितान्त आभारी होते, कभी-कभी रात का अधिकांश भाग निरन्तर जागते हुए कार्य में व्यस्त रहते, यदि कोई अन्य व्यक्ति एक-दो दिन प्रूफ़रीडिंग या कापियाँ देने के कार्य में आप(अ) की सहायता करता तो उसे संयोग से रात को भी कार्य करना पड़ता तो यह न समझते थे कि उसने इस्लाम का कार्य किया और अपने कर्त्तव्य को निभाया है अपितु इतना धन्यवाद और आभार प्रकट करते जैसे उसने आपकी कोई व्यक्तिगत सेवा की है और आपको अपना कृतज्ञ बना लिया है । बावजूद कमज़ोरी और बीमारी के आप(अ) ने अस्सी से अधिक किताबें लिखीं तथा सैकड़ों विज्ञापन इस्लाम के प्रचार हेतु लिखे और सैकड़ों भाषण दिए तथा प्रतिदिन लोगों को इस्लाम की विशेषताओं के संबंध में शिक्षा देते रहे और आप को इसमें इतनी तन्यमता थी कि प्राय: डाक्टर आपको आराम के लिए कहते तो आप(अ) उनको उत्तर देते कि मेरा आराम तो यही है कि इस्लाम धर्म का प्रचार और इस्लाम के विरोधियों का सर कुचलता रहूँ । यहाँ तक कि आप(अ) अपने निधन के दिन तक इस्लाम की सेवा में सेवारत रहे और जिस सुबह आप का स्वर्गवास हुआ उसकी प्रथम शाम तक एक किताब के लेखन में जो हिन्दुओं को इस्लाम का निमंत्रण देने के उद्देश्य से थी व्यस्त थे । इस से उस तपन और आर्द्रता और उस निस्वार्थता तथा लगन का पता लग सकता है जो आप(अ) को अल्लाह तआला के प्रताप के प्रकटन और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए थी ।

मैं लिख चुका हूँ कि केवल प्रेम का दावा प्रेम का पता लगाने के लिए वास्तविक मापदण्ड नहीं है, परन्तु वह व्यक्ति जिसने अपने प्रत्येक कर्म और प्रत्येक गति से अपने प्रेम और प्यार को सिद्ध कर दिया हो उसका दावा उसकी हार्दिक भावनाओं के प्रकटन का श्रेष्ठ माध्यम है, क्योंकि सच्चे प्रेमी की हार्दिक भावनाएँ उसकी असाधारण सेवाओं से भी बढ़कर होती हैं और उसके सच्चे होने के कारण दूसरे के हृदय को भी प्रभावित करती रहती हैं । अत: मैं आप की दो फ़ारसी कविताएँ कि उन में से एक अल्लाह तआला के प्रेम में है और एक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम में, इस स्थान पर नक़ल करता हूँ :-

(1) قُربان تُست جانِ من اے یارِ مُحسنم　　بامن کدام فرق تو کردی کہ من کنم

(2) ہر مطلب و مراد کہ می خواستم زغیب　　ہر آرزو کہ　بود بخاطر معیّنم

(3) از جود دادۂ ہمہ آں مدّعائے من　　و از لطف کردۂ گذر خود بمسکنم

(4) ہیچ آگہی نبود زعشق و وفا مرا　　خود ریختی متاعِ محبّت بدامنم

(5) ایں خاکِ تیرہ راتو خود اکسیر کردۂ　　بُود آں جمالِ تو کہ نمود است احسنم

(6) ایں صیقلِ دلم نہ بزُہد و تعبّد است　　خود کردۂ بلُطف و عنایات روشنم

(7) صد منّتِ تو ہست بریں مشتِ خاکِ من　　جانم رہینِ لُطفِ عمیمِ تو ہم تنم

(8) سہل است ترک ہردو جہاں گر رضائے تو　　آید بدست اے پنہ و کہف و مامنم

(9) فصلِ بہار و موسمِ گل نایدم بکار　　کاندر خیال رُوئے تو ہر دم بگلشنم

(10) چوں حاجتے بود با دیب　دگر مرا　　من تربیت پذیر زربِّ مہیمنم

(11) زانساں عنایتِ ازلی شد قریب من　　کآمد ندائے یار زہر کوئے و برزنم

(12) یارب　مرا بہر قدمم استوار دار　　واں روز خود مباد کہ عہد تو بشکنم

(13) در کوئے تو اگر سرِ عشاق را زنند 321 اوّل کسے کہ لافِ تعشق زند منم

(अनुवाद :- (1) हे मेरे उपकार करने वाले मित्र मेरे प्राण तुझ पर न्यौछावर हैं तूने मेरे साथ कौन सा भेद रखा है कि मैं रखूँ ।

(2) प्रत्येक उद्देश्य और मनोकामना जिसे मैंने परोक्ष से मांगा और प्रत्येक इच्छा जो मेरे हृदय में थी ।

(3) तूने अपनी महरबानी से मेरी वे मनोकामनाएं पूरी कर दीं तथा कृपा करते हुए तू मेरे घर में आया ।

(4) मुझे प्रेम और वफ़ादारी के सन्दर्भ में कोई ज्ञान न था तूने स्वयं ही प्रेम की यह दौलत मेरे दामन में डाल दी ।

(5) तूने उस काली मिट्टी को स्वयं अक्सीर (ऐसा रसायन जो तांबे को सोना बना दे) बना दिया वह केवल तेरा ही सौन्दर्य है जो मुझे अच्छा लगा ।

(6) मेरे हृदय की यह स्वच्छता संयम और उपासना की अधिकता के कारण नहीं अपितु तूने मुझे स्वयं अपनी महरबानियों से प्रकाशमान कर दिया है ।

(7) मैं एक मुट्ठी भर मिट्टी हूँ जिस पर तेरे सैकड़ों उपकार हैं, तेरी महरबानियों से मेरा तन-मन आभारी है ।

(8) दोनों लोकों का परित्याग मेरे लिए सरल है यदि तेरी प्रसन्नता मिल जाए हे मेरी शरण, हे मेरे दुर्ग हे मेरे शान्ति निकेतन !

(9) वसन्त ऋतु और फूलों का मौसम मेरे लिए बेकार हैं क्योंकि मैं तो हर समय तेरे चेहरे के विचार के कारण एक उद्यान में हूँ ।

(10) मुझे किसी दूसरे शिक्षक की आवश्यकता क्यों हो मैं तो अपने ख़ुदा से प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए हूँ ।

(11) उसकी अनश्वर कृपा मेरे इतनी निकट हो गई कि यार की आवाज़ मेरे हर गली-कूचे से आने लगी ।

(12) हे मेरे रब्ब मुझे दृढ़ता प्रदान कर और ऐसा कोई दिन न आए कि मैं तेरे साथ की हुई प्रतिज्ञा को भंग कर दूँ ।

(13) यदि तेरे कूचे में प्रेमियों के सर उतारे जाएं तो सब से पहला व्यक्ति जो प्रेम का दावा करेगा वह मैं हूँगा ।)*

(1) عجب نُوریست در جانِ محمدؐ — عجب لعلیست در کانِ محمدؐ

(2) ز ظلمتہا ولے آنگہ شود صاف — کہ گردد از محبّانِ محمدؐ

(3) عجب دارم دلِ آں ناکساں را — کہ رُو تا بند از خوانِ محمدؐ

(4) ندانم ہیچ نفسے در دوعالم — کہ دارد شوکت و شانِ محمدؐ

(5) خدا زاں سینہ بیزار است صد بار — کہ ہست از کینہ دارانِ محمدؐ

(6) خدا خود سوزد آں کرمِ دنی را — کہ باشد از عُدوّانِ محمدؐ

(7) اگر خواہی نجات از مستیٔ نفس — بیا در ذیل مَستانِ محمدؐ

(8) اگر خواہی کہ حق گوید ثنایت — بشو از دل ثنا خوانِ محمدؐ

(9) اگر خواہی دلیلے عاشقش باش — محمدؐ ہست بُرہانِ محمدؐ

(10) سرے دارم فدائے خاکِ احمدؐ — دلم ہر وقت قُربانِ محمدؐ

(11) بگیسوئے رسول اللہ کہ ہستم — نثارِ رُوئے تابانِ محمدؐ

---

* प्रस्तुत अनुवाद, अनुवादक की ओर से है । (अनुवादक)

(12) دریں رہ گر گشندم در بسو زند نتابم رُو ز ایوانِ محمدؐ

(13) بکارِ دیں نترسم از جہانے کہ دارم رنگ ایمانِ محمدؐ

(14) بسے سہل است از دنیا بُریدن بیادِ حسن واحسانِ محمدؐ

(15) خدا شد در رہش ہر ذرۂ من کہ دیدم حسنِ پنہانِ محمدؐ

(16) دِگر اُستاد را نامے ندانم کہ خواندم درد بستانِ محمدؐ

(17) بدیگر دلبرے کارے ندارم کہ ہستم کشتۂ آنِ محمدؐ

(18) مرا آں گوشۂ چشمے باید نخواہم جز گلستانِ محمدؐ

(19) دلِ زارم بہ پہلویم مجوئید کہ بستیمش بدامانِ محمدؐ

(20) من آں خوش مرغ از مرغانِ قدسم کہ دارد جابہ بُستانِ محمدؐ

(21) تو جانِ ما منور کردی از عشق فدایت جانم اے جانِ محمدؐ

(22) دریغا گردہم صد جاں دریں راہ نباشد نیز شایانِ محمدؐ

(23) چہ ہیبت ہا بدادند ایں جواں را کہ ناید کس بمیدانِ محمدؐ

(24) الا اے دشمن نادان و بے راہ بترس از تیغِ بُرّانِ محمدؐ

(25) رہِ مولیٰ کہ گم کر دند مردم بجو در آل و اعوانِ محمدؐ

(26) الا اے مُنکر از شانِ محمدؐ ہم از نورِ نمایانِ محمدؐ

(27) کرامت گرچہ بے نام ونشان است 322 بیا بنگر ز غِلمانِ محمدؐ

(अनुवाद :- (1) मुहम्मद (स.अ.व) के प्राण में अदभुत प्रकार का प्रकाश है तथा मुहम्मद (स.अ.व) की खान में अदभुत प्रकार का रत्न है।

(2) अंधकारों से हृदय उस समय पवित्र हो जाता है जब वह मुहम्मद (स.अ.व) के मित्रों में सम्मिलित हो जाता है ।

(3) मैं उन बेहूदा लोगों के हृदयों पर आश्चर्य करता हूँ जो मुहम्मद (स.अ.व) के दस्तरख़्वान से मुख मोड़ लेते हैं ।

(4) मैं दोनों लोकों में किसी ऐसे मनुष्य को नहीं जानता जिसमें मुहम्मद (स.अ.व) जैसा वैभव और प्रताप हो ।

(5) अल्लाह तआला उस व्यक्ति से हमेशा रुष्ट रहता है जो मुहम्मद (स.अ.व) से द्वेष रखता हो ।

(6) अल्लाह तआला स्वयं ही उस तुच्छ कीड़े को भस्म कर देता है जो मुहम्मद (स.अ.व) के शत्रुओं में से हो ।

(7) यदि तुझे तामसिक वृत्ति से मुक्ति चाहिए तो मुहम्मद (स.अ.व) के दीवानों में से हो जा ।

(8) और यदि तू चाहता है कि अल्लाह तआला तेरी प्रशंसा करे तो तू हार्दिक निष्ठा के साथ मुहम्मद (स.अ.व) का प्रशंसक बन जा ।

(9) यदि तू उसके सत्य का प्रमाण चाहता है तो तू उसका प्रेमी बन जा, क्योंकि मुहम्मद (स.अ.व) ही मुहम्मद का प्रमाण है ।

(10) मेरा सर अहमद (स.अ.व) की ख़ाक पर न्यौछावर है और मेरा हृदय हर समय मुहम्मद (स.अ.व) पर बलिदान रहता है ।

(11) रसूलुल्लाह (स.अ.व) के काकुल की सौगंध कि मैं मुहम्मद (स.अ.व) के प्रकाशमान मुख मंडल पर आसक्त हूँ ।

(12) इस मार्ग में यदि मुझे मार दिया जाए या अग्नि के सुपुर्द कर दिया जाए तो भी मैं मुहम्मद (स.अ.व) की चौखट से विमुख नहीं हूँगा ।

(13) धर्म हेतु मैं संसार से भी नहीं डरता क्योंकि मुझ में मुहम्मद (स.अ.व) के ईमान का रंग है ।

(14) मुहम्मद (स.अ.व) के उपकारों और कृपाओं को स्मरण करके संसार से विरक्त होना नितान्त सरल है ।

(15) मेरा प्रति कण उसके मार्ग में न्यौछावर है क्योंकि मैंने मुहम्मद (स.अ.व) के गुप्त सौन्दर्य को देख लिया है ।

(16) मैं किसी अन्य शिक्षक का नाम नहीं जानता, मैं तो केवल मुहम्मद (स.अ.व) की पाठशाला में पढ़ा हुआ हूँ ।

(17) मैं किसी अन्य प्रियतम से कोई मतलब नहीं रखता क्योंकि मैं तो मुहम्मद (स.अ.व) के प्रेम से वधित हूँ ।

(18) मुझे तो केवल उसकी कृपा-दृष्टि की आवश्यकता है और मुझे मुहम्मद (स.अ.व) के उद्यान के अतिरिक्त कुछ नहीं चाहिए ।

(19) मेरे शोक ग्रस्त हृदय को मेरे अन्दर तलाश न करो क्योंकि हमने उसे मुहम्मद (स.अ.व) के दामन से संलग्न कर दिया है ।

(20) मैं पवित्रात्मा रूपी पक्षियों में से वह श्रेष्ठ पक्षी हूँ जो मुहम्मद (स.अ.व) के उद्यान में बसेरा रखता है ।

(21) तूने हमारे प्राणों को प्रेम और अनुराग से प्रकाशमान बना दिया है । हे मुहम्मद तुझ पर मेरा प्राण न्यौछावर हो ।

(22) यदि मैं इस मार्ग में सैकड़ों प्राण भी दे दूँ तो भी यह अफ़सोस रहेगा कि यह मुहम्मद (स.अ.व) की शान के यथा-योग्य नहीं ।

(23) उसने इस जवान को कैसा रोब प्रदान किया कि कोई भी मुहम्मद (स.अ.व) के मैदान में (मुकाबले पर) नहीं आता ।

(24) हे पथ-भ्रष्ट और मूर्ख शत्रु सतर्क हो जा और मुहम्मद (स.अ.व) की काटने वाली तलवार से डर ।

(25) अल्लाह का मार्ग जिसे लोगों ने भुला दिया उसे मुहम्मद (स.अ.व) के सहाबा और सन्तान में तलाश कर ।

(26) हे मुहम्मद (स.अ.व) की शान तथा उन के स्पष्ट प्रकाश के इन्कारी सतर्क हो जा ।

(27) यद्यपि कि चमत्कार अब लुप्त हो चुका है परन्तु तू आ और मुहम्मद (स.अ.व) के दासों में देख ले ।)*

अब आप विचार करें कि जिस व्यक्ति ने बचपन से लेकर मृत्यु तक अपनी आयु का प्रति क्षण और प्रति पल अल्लाह तआला के स्मरण तथा उसके प्रताप के प्रकटन और उसके कलाम के प्रचार और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम और आप (स.अ.व.) के धर्म के अनुसरण और आप (स.अ.व.) की लाई हुई शरीअत (धार्मिक-विधान) की दृढ़ता में व्यय कर दिया हो तथा अपनों और अपरिचितों को अल्लाह तआला और उसके रसूल के सम्मान की सुरक्षा के लिए अपना शत्रु बना लिया हो और अपना प्रत्येक कण इस्लाम की सेवा में लगा दिया हो, क्या ऐसा व्यक्ति पथ-भ्रष्ट, गुमराह, उपद्रवी और दज्जाल हो सकता है । यदि ये कर्म उपद्रवयुक्त हैं, यदि इस प्रकार का प्रेम कुफ़्र का लक्षण और प्रतीक है, यदि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से प्रेम गुमराही का लक्षण है तो ख़ुदा की क़सम -

---

* प्रस्तुत अनुवाद, अनुवादक की ओर से है । (अनुवादक)

यह गुमराही ख़ुदा मुझे सारी करे नसीब
यह कुफ्र मुझ को बख़्श दे सारे जहान का

अल्लाह तआला साक्षी है तथा उसका कलाम साक्षी है और सद्बुद्धि साक्षी है कि ऐसा व्यक्ति कदापि, कदापि गुमराह और झूठा नहीं हो सकता। यदि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इतना प्रेम और उसका इतना अनुसरण और आज्ञाकारिता और उनके आदेशों के प्रचार-प्रसार हेतु इतना प्रयास करके तथा उनके लिए पूर्वजों और बाद में आने वालों से अधिक स्वाभिमान प्रदर्शित करके भी कोई व्यक्ति झूठा और दज्जाल ही बनता है तो समस्त संसार में कभी कोई व्यक्ति हिदायत (पथ-प्रदर्शन) का पात्र नहीं हुआ और न भविष्य में कभी होगा ।

बारहवां सबूत

आप(अ) की जीवनदायिनी शक्ति

बारहवें सबूत के तौर पर मैं हज़रत अक़्दस(अ) की जीवनदायिनी शक्ति को प्रस्तुत करता हूँ और यह सबूत पूर्व सबूतों की भाँति सहस्त्रों सबूतों का संग्रह है । इस समय मुसलमानों का ईसाइयों की भाँति यह विचार है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम शारीरिक मृतकों को जीवित किया करते थे, परन्तु जैसा कि मैं पहले उल्लेख कर चुका हूँ कि यह विचार क़ुर्आनी शिक्षा की दृष्टि से द्वैतवाद है तथा ईमान को नष्ट करने वाला है, परन्तु इसमें भी कुछ सन्देह नहीं कि हज़रत मसीह(अ) शेष नबियों की भाँति अवश्य मुरदे जीवित किया करते थे । अल्लाह तआला का कलाम (वाणी) इस पर साक्षी है तथा इस का इन्कारी अल्लाह तआला के कलाम का इन्कारी है । ये मुरदे आध्यात्मिक मुरदे होते थे और वास्तव में पैग़म्बर इन्हीं मुरदों को जीवित करने के लिए आया करते हैं और कोई नबी नहीं गुज़रा जिसने इस प्रकार के मुरदे जीवित न किए हों । आदम से लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक समस्त पैग़म्बर इसी उद्देश्य के लिए अवतरित किए गए थे कि मुर्दों को जीवित करें । दृढ़ संकल्प पैग़म्बरों

की सच्चाई परखने का एक मापदण्ड यह भी है कि उनके हाथों से मुर्दे जीवित हों और यदि यह चमत्कार न दिखा सकें तो उसकी नुबुव्वत का दावा अवश्य संदिग्ध हो जाता है और जो व्यक्ति इस प्रकार के मुर्दे जीवित करके दिखा दे वह निश्चय ही अल्लाह तआला का पैग़म्बर है क्योंकि यह जीवित करना अल्लाह तआला की आज्ञा के बिना नहीं हो सकता और जिसे अल्लाह की आज्ञा प्राप्त हो गई उस के सच्चे होने में क्या संदेह रहा ।

हे बादशाह ! यह निशान हज़रत अक़दस(अ) के हाथों पर अल्लाह तआला ने इस बहुतात से प्रकट किया है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पश्चात अन्य किसी नबी के इतिहास तथा उसकी परिस्थितियों से इस स्पष्टता के साथ इस निशान के प्रकटन का ज्ञान नहीं होता । (वल्लाहो आ'लमो बिस्सवाब) । हज़रत अक़दस(अ) उस समय संसार में पधारे थे जिस समय न केवल आध्यात्मिक मृत्यु ही संसार पर छाई हुई थी अपितु मरे हुए लोगों को इतना समय हो गया था कि शरीर गल-सड़ गए थे और टूट-फूट आरंभ हो गई थी । यह ऐसी कठिन मृत्यु थी कि इस मृत्यु की शोकदायक स्थिति से स्मस्त पैग़म्बर लोगों को डराते आए हैं । अतः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व आलिही व सल्लम फ़रमाते हैं -

إِنَّهُ لَمْ يَكُنْ نَبِيٌّ بَعْدَ نُوحٍ إِلَّا قَدْ أَنْذَرَ الدَّجَّالَ قَوْمَهُ وَإِنِّي أُنْذِرُكُمُوهُ[323]

(इन्नहू लम यकुन नबिय्युन बादा नूहिन इल्ला क़द अन्ज़रद्दज्जाला क़ौमहू व इन्नी उन्ज़िरोकुमूहो) अर्थात् हज़रत नूह(अ) के पश्चात् कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने दज्जाल के उपद्रव से अपनी जाति को न डराया हो और मैं भी तुम को उस से डराता हूँ । अतः दज्जाली उपद्रव से मारे हुए लोगों से अधिक जीवन से दूर अन्य मुर्दे नहीं हो सकते तथा ऐसे आशाओं की सीमा से गुज़रे हुए मुर्दों का जीवित करना वास्तव में एक बहुत बड़ा कठिन कार्य था, परन्तु आप(अ) ने यह कार्य किया तथा सहस्त्रों, लाखों मुर्दे जीवित करके दिखा दिए तथा एक ऐसी जमाअत उत्पन्न कर दी जिसका उदाहरण रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जमाअत को अपवादित करके अन्य जमाअतों में नहीं मिलता । हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के अपनी जाति के साथ राजनैतिक संबंध भी थे,

इसलिए उनकी समस्त जाति उन पर ईमान लाकर भी उनके साथ न थी अपितु अधिकांश लोग राजनैतिक परस्थितियों को दृष्टि में रखकर उनके साथ चलने पर विवश थे । जो लोग उन पर ईमान लाकर उन के साथ हुए उनके संबंध में अल्लाह तआला फ़रमाता है - فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰىٓ اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ[324] **(फ़मा आमना लिमूसा इल्ला ज़ुर्रियतुम्मिन क़ौमिही)** अर्थात् मूसा(अ) का अनुसरण नहीं किया परन्तु उन की जाति के कुछ नवयुवकों ने । यह तो मिस्र में ठहरने की स्थिति थी, मिस्र से निकलकर भी आप की जाति का अधिकांश भाग आप की सच्चाई को हार्दिक तौर पर स्वीकार नहीं करता था । हां राजनैतिक तौर पर आप के साथ था । अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मूसा(अ) की जाति के एक भाग ने मिस्र से निकलने के पश्चात् उन से कहा :-

يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ[325]

(या मूसा लन नौमिना लका हत्ता नरल्लाहा जहरतन फ़अख़ज़त्कुमुस्साइक़तो व अन्तुम तन्ज़ुरुन) (बक़रह : रुकूअ 6) हे मूसा ! तेरी बात कदापि न मानेंगे जब तक कि अल्लाह तआला को अपनी आंखों से न देख लें । अत: तुम्हें ख़ुदा के प्रकोप ने पकड़ लिया इस स्थिति में कि तुम देख रहे थे । इसी प्रकार क़ुर्आन करीम से भी ज्ञात होता है और इन्जीलों तथा इतिहासों से भी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर भी बहुत ही कम लोग ईमान लाए थे और उन में से जो स्वच्छ हृदय थे और जिन्होंने वास्तविक जीवन पाया था वे तो बहुत ही कम थे, परन्तु हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम चूँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आध्यात्मिक लाभों के जारी करने और आप (स.अ.व.) की बरकतों को संसार में प्रसारित करने के लिए आए थे और मसीहे मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का स्थान ऊँचा रखते थे। आप(अ) के द्वारा अल्लाह तआला ने बहुत से मुर्दे जीवित किए तथा ऐसे मुर्दे जीवित किए कि यदि उन पर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झरने का पानी न छिड़का जाता तो उन के जीवित होने की कोई आशा ही नहीं की जा सकती थी ।

क्या यह विचित्र बात नहीं कि इस समय जब कि चारों ओर धर्म में नई बातों का समावेश, रीति-रिवाज, संसार की अभिलाषा, दुराचार, धर्म से घृणा, ख़ुदा के कलाम से लापरवाही, शरीअतों का अपमान, शुभ-कर्मों से स्वच्छन्दता, दुआ से निश्चिन्त, धार्मिक लज्जा का अभाव दिखाई दे रहा है। हज़रत अक़दस ने एक ऐसी जमाअत उत्पन्न कर दी है जो बावजूद शिक्षित होने के अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, उसके फरिश्तों, दुआ, चमत्कारों, ख़ुदा की वाणी, प्रलय और प्रतिफल के लिए उठाए जाने, स्वर्ग तथा नर्क पर पूर्ण विश्वास रखती है तथा इस्लामी शरीअत की यथाशक्ति पाबन्द है । इस जमाअत में तलाश करने पर ही कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो नमाज़ों की अदायगी में लापरवाही करता हो और यह जो कुछ कमी है यह भी प्रारंभिक स्थिति का परिणाम है और धीरे-धीरे दूर हो रही है । क्या यह विचित्र बात नहीं कि जबकि कालेजों के विद्यार्थी तथा आधुनिक शिक्षा के इच्छुक धर्म से पूर्णतया घृणा करते हैं और धर्म को राजनैतिक संगठन का माध्यम समझते हैं । हज़रत अक़दस(अ) के द्वारा नए शिक्षित लोगों की एक ऐसी जमाअत तैयार हुई है और हो रही है जिस के सज्दे के स्थान आंसुओं से भीग जाते हैं, जिसके सीने रुदन के जोश से हांडी की भाँति उबलते हैं और जो इस्लाम के प्रचार और इस्लाम के नाम को ऊँचा करने के लिए समस्त राजनैतिक उत्थानों और धन प्राप्ति पर प्रमुख करके शेष सभी को उस पर बलिदान कर रही है । इसमें अधिकांश लोग संसार की प्राप्ति कर सकते हैं, परन्तु ख़ुदा के धर्म को निर्बल देख कर तथा ज्ञानरूपी जिहाद की आवश्यकता महसूस करके समस्त उमंगों पर लात मार कर धर्म की सेवा में लग गए हैं तथा थोड़े को अधिक पर प्रमुखता दे रहे हैं, तथा भूखे रहने को पेट भरने की अपेक्षा अधिक रुचिकर समझते हैं, उनके मुखों पर अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम है, उन के हृदयों में अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रेम है, उनके कर्म अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की महानता को प्रकट कर रहे हैं, उनके मुख मण्डलों से अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रेम टपक रहा है, वे इसी संसार में बसते हैं, उनके कान

स्वतंत्रता के स्वरों से अपरिचित नहीं, उनके मस्तिष्क स्वतंत्रता के विचारों से अनभिज्ञ नहीं, उनकी आखें स्वतंत्रता के पराक्रमों को देखने से असमर्थ नहीं, उन्होंने भी वह सब कुछ पढ़ा और सुना है जो अन्य लोग पढ़ते और सुनते हैं, परन्तु इसके बावजूद जब उन्होंने यह देखा कि इस्लाम इस समय इतना स्वतंत्रता का मुहताज नहीं जितना कि दासता का । दज्जाल के उपद्रव ने इस्लाम को जो हानि पहुँचाई है वह उस विशाल व्यवस्था के माध्यम से पहुँचाई है जो उसने इस्लाम को जड़ से उखाड़ने के लिए धारण की थी और यह कि इस्लाम की उन्नति इस समय केवल एक बात चाहती है कि समस्त लोग अल्लाह तआला के होकर एक झंडे के नीचे आ जाएँ बड़े-छोटे, अमीर-गरीब, विद्वान और मूर्ख, अपनी-अपनी समस्त शक्तियों और साधनों को एक स्थान पर लाकर रख दें और एक हाथ पर एकत्र हो जाएँ ताकि सामूहिक तौर पर कुफ्र और उत्पात का मुकाबला किया जाए, तो उन्होंने अल्लाह तआला के आदेश तथा इस्लाम के हित को अपने विचारों पर प्रमुखता दी तथा समय के प्रभावों से प्रभावित होने से इन्कार कर दिया तथा अपने हाथ से अपनी गर्दनों में आज्ञाकारिता की रस्सी डाल ली तथा प्रसन्नतापूर्वक इस बात के लिए तैयार हो गए कि इस्लाम की भलाई को दृष्टि में रखकर जिस ओर और जिधर भी वह हाथ संकेत करे जिस पर वे एकत्र हो गए हैं वे बिना किसी आपत्ति और बिना किसी बहाने के उधर को चल देंगे तथा किसी बलिदान से संकोच नहीं करेंगे, और किसी कष्ट को विचार में न लाएँगे और यही नहीं कि उन्होंने मुख से यह इक़रार किया अपितु व्यवहारिक तौर पर इसी प्रकार करके भी दिखाया और इस समय उनमें से अनेक अपनी मातृभूमि से दूर, अपने परिवार से दूर रुपयों के लिए नहीं अपितु कठिन आर्थिक कष्ट उठाकर और प्राणों को संकट में डालकर समय के ख़लीफ़ा के अनुसरण में इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं और बहुत हैं जो इस प्रतीक्षा में हैं कि उन्हें कब आदेश प्राप्त होता है कि वे भी समस्त सांसारिक संबंधों को तोड़कर अल्लाह तआला के प्रताप के प्रकटन हेतु अपने घरों से निकल खड़े हों مِنْهُمْ مَنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَنْ يَّنْتَظِرُ[326] **(मिन्हुम मन क़ज़ा नहबहू व मिन्हुम मंय्यन्तज़िर) फ़जज़ाहुमुल्लाहो अन्ना अहसनल जज़ाए ।**

वे अल्लाह तआला के लिए मारें खाते हैं, घरों से निकाले जाते हैं,

उनको गालियाँ दी जाती हैं, तिरस्कृत समझा जाता है, परन्तु वे सब कुछ सहन करते हैं क्योंकि उनके हृदय प्रकाशमान हो गए तथा उनकी आन्तरिक आंखें खुल गई हैं और उन्होंने वह कुछ देख लिया जो दूसरों ने नहीं देखा, वे मारें खाते हैं परन्तु दूसरों की भलाई चाहते हैं, अपमानित किए जाते हैं, परन्तु दूसरों के लिए सम्मान चाहते हैं ।

वह कौन है जो इस समय इस्लाम की सुरक्षा और उसके प्रचार के लिए अमरीका में अकेला लड़ रहा है और यद्यपि एक विशाल समुद्र में एक बुलबुले की भाँति पड़ा हुआ है, परन्तु उसका हृदय नहीं घबराता । वह एक मुर्दा था जिसे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मसीह ने अपने हाथ से जीवित किया है तथा वह इसलिए बिल्कुल अकेला अमरीका को इस्लाम की दासता की परिधि में लाने के लिए प्रयासरत है कि वह जानता है कि एक जीवित करोड़ों मुर्दों पर भारी है ।

वे कौन हैं जो इंग्लैण्ड में इस्लाम का प्रचार कर रहे हैं । वे यही मसीहे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवित किए हुए लोग हैं और यद्यपि शारीरिक तौर पर इंग्लैण्ड ने हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त कर ली है परन्तु वे यह जानते हैं कि इंग्लैण्ड की आत्मा (रूह) मर चुकी है, वह ख़ुदा से दूर जा पड़ा है, वह उस जीवन के पानी की बोतलें लेकर जिस से मसीह ने उनको जीवित किया है दूसरों को जीवित करने के लिए निकल खड़े हुए हैं, इंग्लैण्ड का प्रताप, उसका धन, उसका शासन उनको भयभीत नहीं करता क्योंकि उनको विश्वास है कि वे जीवित हैं और इंग्लैण्ड मुर्दा । फिर जीवित मुर्दे से क्यों भयभीत हो तथा उस से क्यों घबराए ।

पश्चिमी अफ्रीका का तट जहाँ ईसाइयत ने अपने पैर पसारने आरंभ किए थे और लाखों लोगों को ईसाई बना लिया था तथा एक व्यक्ति की उपासना के लिए लोग एकत्र किए जा रहे थे वहाँ कौन एक ख़ुदा के नाम को ऊँचा करने के लिए गया और द्वैतवाद की तोप के आगे सीना तान कर खड़ा हुआ । वही मसीह मौऊद की फूंक से जीवित होने वाले लोग जो उस समय इस्लाम की सुरक्षा के लिए खड़े हुए जब लोग इस्लाम की मृत्यु का विश्वास कर बैठे थे तथा उसके प्रभाव को मिटता हुआ देखने लगे थे ।

किसने मारीशस की ओर ध्यान दिया और उस एक ओर पड़े हुए द्वीप के निवासियों को जीवन प्रदान करने का कार्य अपने दायित्व में लिया, किसने लंका को जो नितान्त पुरातन ऐतिहासिक रिवायतों का स्थान है जा कर अपनी आवाज़ से चौंकाया, कौन रूस और अफ़गानिस्तान के लोगों को जीवन की नैमत प्रदान करने के लिए गया । ये ही मसीह मौऊद के जीवित किए हुए लोग ।

क्या यह जीवन की निशानी नहीं कि चालीस करोड़ मुसलमानों में से कोई दिखाई नहीं देता जो इस्लाम का प्रचार और धर्म के प्रसार के लिए अपने घर से निकला हो, परन्तु एक मुट्ठी भर अहमदियों में से सैकड़ों इस कार्य पर लगे हुए हैं और उन लोगों को मुसलमान बना रहे हैं जिनके सन्दर्भ में विचार भी नहीं किया जाता था कि वे कभी इस्लाम का नाम भी सुनेंगे ।

यदि इस जमाअत के लोगों में नया जीवन उत्पन्न नहीं हुआ तो उन्होंने संसार का नक्शा किस प्रकार परिवर्तित कर दिया तथा उनमें देशों का अकेले मुकाबला करने का साहस क्योंकर उत्पन्न हुआ और किस बात ने उन्हें विवश किया कि वे देश छोड़कर अन्य देशों में धक्के खाते फिरें, क्या उनके माता-पिता नहीं, उनकी पत्नियाँ और बच्चे नहीं, उनके बहन-भाई नहीं, उनके मित्र और परिचित नहीं, उनको कोई अन्य कार्य नहीं ? फिर किस वस्तु ने उनको संसार से हटा कर धर्म की ओर लगा दिया, इसी बात ने कि उन्होंने जीवन की रूह पाई और मुर्दा वस्तुओं को उस जीवित ख़ुदा के लिए जो समस्त जीवनों का उदगम है छोड़ दिया वह उनमें समावेश कर गया और वे उस में समा गए । فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ[327] **(फ़तबारकल्लाहो अहसनुल ख़ालिक़ीन)** ।

मैंने मसीह मौऊद(अ) की जिस जीवनदायिनी शक्ति का उल्लेख किया है यह संदिग्ध रहेगी यदि मैं उस जीवन के प्रभाव को वर्णन न करूँ जो वास्तविक जीवन का मापदण्ड है और वह यह है कि हज़रत अक़दस(अ) ने अपनी जीवन-दायिनी शक्ति से लोगों के हृदयों में ऐसा जीवन उत्पन्न किया कि उनमें से अधिकांश न केवल जीवित ही हुए अपितु उनको भी मुर्दों को जीवन देने की शक्ति दी गई । यदि यह शक्ति आप(अ) के द्वारा अन्य को न मिलती तो यह सन्देह रहता कि शायद आप(अ) के मस्तिष्क

की बनावट ही ऐसी है कि आप(अ) पर वे ज्ञान खोले जाते हैं जो आप वर्णन करते हैं और आप(अ) वे दृश्य देख लेते हैं जो अपने समय पर पूरे हो जाते हैं और आपके ध्यान में वह प्रभाव उत्पन्न हो गया है जिससे आप(अ) की इच्छाएँ दुआ के रूप में पूर्ण हो जाती हैं, परन्तु नहीं, आप इस ख़ज़ाने को अपने साथ ही नहीं ले गए अपितु जो लोग सच्चे तौर पर आप के साथ संबंध रखते हैं उनको भी ये सब शक्तियाँ अपने पदों की दृष्टि से प्राप्त होती हैं। आप के प्रेम और आप के साथ संबंध के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला अपने ज्ञानों की वर्षा हृदयों पर उतारता है और इस समय आपकी जमाअत में से बहुत से हैं जो अल्लाह तआला की कृपा से क़ुर्आन करीम के अर्थों का वर्णन करने में एक तीव्रगामी घोड़े से अधिक तीव्र हैं तथा जिनके वर्णन में वह प्रभाव है कि सन्देहों और शंकाओं की रस्सियाँ उनकी एक ही चोट से कट जाती है और क़ुर्आन जो लोगों के लिए एक सीलबन्द लिफ़ाफा था हमारे लिए खुली किताब है । उसकी कठिनाइयाँ हमारे लिए सरल की जाती हैं तथा उसकी बारीकियाँ हमारे लिए प्रकट कर दी जाती हैं । संसार का कोई धर्म या विचारधारा नहीं जो इस्लाम के विरुद्ध हो, जिसे ख़ुदा की कृपा से हम केवल क़ुर्आन करीम की तलवार से टुकड़े-टुकड़े न कर दें और कोई आयत ऐसी नहीं जिस पर किसी ज्ञान द्वारा कोई आरोप आता हो और अल्लाह तआला की गुप्त वह्यी हमें उसके उत्तर से अवगत न कर दे ।

अल्लाह तआला की ओर से इल्हाम या कश्फ़ों का होना भी आप(अ) तक सीमित नहीं रहा । अपितु आप(अ) के द्वारा जीवित होने वालों में बहुत हैं जिन्हें अल्लाह तआला इल्हाम करता है और रोया दिखाता है जो अपने समय पर पूर्ण होकर उनके और उन के मित्रों के ईमान को ताज़ा करने वाली होती है । वह उनसे कलाम करता है तथा उन पर अपनी प्रसन्नता के मार्ग खोलता है जिस से उनको संयम के मार्गों पर चलने में सहायता प्राप्त होती है तथा उनका हृदय दृढ़ होता है और साहस बढ़ता है ।

दुआओं की स्वीकारिता और ख़ुदाई सहायता आने के सन्दर्भ में भी हज़रत अक़दस(अ) का वरदान जारी है और आप के द्वारा जीवित होने वाले लोग इस जीवन-दायिनी शक्ति को अपने अन्दर महसूस करते हैं, अल्लाह

तआला इस जमाअत के अधिकांश लोगों की दुआएँ अन्य लोगों से अधिक सुनता है तथा अपनी सहायता उनके लिए उतारता है तथा उनके शत्रुओं का विनाश करता है और उनके प्रयासों के उत्तम परिणाम उत्पन्न करता है तथा उन्हें अकेला नहीं छोड़ता और उनके लिए स्वाभिमान दिखाता है ।

अत: हज़रत अक़्दस(अ) ने न केवल मुर्दे ही जीवित किए अपितु ऐसे लोग उत्पन्न कर दिए जो स्वयं भी मुर्दे जीवित करने वाले हैं । ये कार्य सिवाए उन आदरणीय नबियों के जो अल्लाह तआला के विशेष प्रिय होते हैं अन्य कोई नहीं कर सकता । हम विश्वास रखते हैं कि यह सब वरदान आप(अ) को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिला और आप का कार्य वास्तव में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही कार्य था كُلُّ بَرَكَةٍ مِّنْ مُّحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَبَارَكَ مَنْ عَلَّمَ وَتَعَلَّمَ[328] **(कुल्लो बरकतिन मिम्मुहम्मदिन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमा फ़तबारका मन अल्लमा व तअल्लमा)** ।

परिशिष्ट

मैं समझता हूँ कि हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए ये बारह सबूत जो मैंने वर्णन किए हैं पर्याप्त हैं और जो व्यक्ति भी सत्य-प्राप्ति की नीयत से इन पर विचार करेगा वह विश्वसनीय सत्य तक पहुँच जाएगा कि हज़रत अक़्दस(अ) अल्लाह तआला के मसीह और उसके मामूर तथा पैग़म्बर हैं और यह कि अब किसी अन्य मसीह की प्रतीक्षा व्यर्थ है तथा प्यासों की भाँति आप(अ) पर ईमान लाने के लिए दौड़ेगा । इस श्रृंखला में श्रृंखलाबद्ध होने को अपने लिए कल्याणकारी समझेगा जिसे मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तैयार किया है ।

एक मुसलमान कहलाने वाले व्यक्ति के लिए अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साक्ष्य से अधिक किस वस्तु का महत्व हो सकता है और जैसा कि मैं वर्णन कर आया हूँ, हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम के दावे के सन्दर्भ में अल्लाह तआला की साक्ष्य भी विद्यमान हैं तथा उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की साक्ष्य भी

उपलब्ध हैं अपितु प्रत्येक नबी की जिसका कलाम सुरक्षित है आप के दावे की सच्चाई पर साक्ष्य उपलब्ध है । बुद्धि कहती है कि इस युग में एक सुधारक आना चाहिए । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो निशानियाँ मसीह मौऊद और महदी-ए-मा'हूद की वर्णन की थीं वे पूर्ण हो चुकी हैं । आपका पवित्र जीवन आपके दावे पर साक्षी है । इस्लाम के जिन शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए मसीह मौऊद को आना था और जिस रूप में उनको परास्त करना था वे शत्रु इस समय उपस्थित हैं तथा मसीह मौऊद ने उनको परास्त कर दिया है, मुसलमानों के आन्तरिक उत्पात और विकार उस सीमा तक पहुँच गए हैं कि उन से बढ़कर क़ुर्आन करीम की उपस्थिति में विकारों और उत्पातों का उत्पन्न होना असंभव है और उन का निवारण भी हज़रत अक़दस(अ) ने श्रेष्ठ से श्रेष्ठ ढंग से कर दिया है । अल्लाह तआला ने आपके साथ जीवन पर्यन्त ऐसा व्यवहार किया जो वह अपने रसूलों और प्रियजनों से करता है । प्रत्येक मैदान में आपको विजय प्रदान की और प्रत्येक दुष्कृत्य से आपको सुरक्षित रखा आप(अ) के शत्रुओं के साथ भी वही व्यवहार हुआ जो मामूरों और पैग़म्बरों के शत्रुओं के साथ हुआ करता है । प्रकृति के नियमों तक को उसने आप की सेवा में तथा पृथ्वी और आकाश को आपके समर्थन में लगा दिया । क़ुर्आनी ज्ञान के द्वार आप पर खोल दिए तथा क़ुर्आनी ज्ञानों को प्रकाशित करने के साधन आप के लिए उपलब्ध कर दिए । यहाँ तक कि आप(अ) ने उन लोगों को जो ज्ञान कौशल की खान समझे जाते थे मुकाबले के लिए बुलाया परन्तु कोई आप(अ) के मुकाबले पर न आ सका और चमत्कारिक तौर पर आप का कलाम विजयी रहा और لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ[329] **(ला यमस्सुहू इल्ललमुतह्हरून)** के ख़ुदा के वादे ने आप की सच्चाई पर साक्ष्य दी, फिर आप पर परोक्ष का द्वार खोला गया और आपको अल्लाह तआला ने सहस्त्रों परोक्ष के मामलों पर सूचित किया जो अपने समय पर पूर्ण होकर ख़ुदा के प्रताप और तेज को प्रकट करने का कारण हुए । अल्लाह तआला का नियम है कि वह परोक्ष के मामलों पर बहुतात के साथ अपने पैग़म्बरों के अतिरिक्त किसी को परिचित नहीं करता । आप(अ) ने अपनी समस्त आयु अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रेम में व्यय कर दी । ऐसे व्यक्ति

अल्लाह तआला की चौखट से धक्के नहीं दिए जाते । आपने एक पवित्र और काम करने वाली जमाअत उत्पन्न कर दी है जिसमें से एक समूह ऐसा है जिस का ख़ुदा तआला से विशेष संबंध है और जो दूसरे लोगों को जीवित करने तथा आध्यात्मिक मामलों को खोलने की योग्यता रखता है, धर्म पर मुग्ध है तथा सांसारिक बंधनों से पृथक, इस्लाम का हमदर्द तथा इसके अलावा से विमुख । अतः बावजूद इन सब साक्ष्यों के आप(अ) के दावे को स्वीकार न करना तथा आप(अ) पर ईमान न लाना किसी प्रकार उचित तथा अल्लाह तआला की दृष्टि में रुचिकर नहीं हो सकता और वास्तव में वह व्यक्ति जो इस्लाम से प्रेम रखता हो तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रेमी हो तथा अपने व्यक्तिगत हितों पर इस्लाम के हितों को प्रमुखता देता हो उस से आशा ही नहीं की जा सकती कि इस स्पष्टीकरण के पश्चात् चुप रहे और सत्य को स्वीकार करने में विलम्ब करे । यदि उपरोक्त सबूत आप की सच्चाई को सिद्ध नहीं करते तो फिर अन्य कौन से सबूत हैं जिनके द्वारा पूर्वकालीन नबियों की सच्चाई सिद्ध हुई और जिनके कारण नबियों पर ईमान लाया जाता है। यदि उन से बढ़कर अपितु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त शेष समस्त नबियों के संबंध में इतने सबूत भी नहीं मिलते जितने ऊपर वर्णन हुए तो फिर क्या कारण है कि उन पर ईमान लाया जाता है । यदि ईमान केवल माता-पिता से सुनी-सुनाई बातों को दोहराने का नाम नहीं अपितु जांच-पड़ताल करके किसी बात को स्वीकार करने का नाम है तो फिर दो बातों में से एक अवश्य स्वीकार करना पड़ेगी । या तो समस्त नबियों का इन्कार करना पड़ेगा या हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे को स्वीकार करना पड़ेगा । मैं हे बादशाह ! आप जैसे विवेकशील और प्रवीण शासक से यही आशा करता हूँ कि आप बाद में चर्चा किए गए दूसरे मार्ग को अपनाएँगे और अल्लाह तआला के पैग़म्बर को जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चाई के प्रकटन तथा इस्लाम को विजयी करने और मुसलमान कहलाने वालों को पुनः मुसलमान बनाने के लिए आया है स्वीकार करने में विलम्ब नहीं करेंगे, क्योंकि अल्लाह तआला की इच्छा को स्वीकार करना उसके इरादे के अनुसार बहुत सी बरकतों का कारण होता है तथा उसकी इच्छा के

विपरीत खड़ा हो जाना कभी भी बरकत वाला नहीं होता ।

इस्लाम की स्थिति इस समय दयनीय है और संभव नहीं कि जो व्यक्ति इस धर्म से सच्चा प्रेम रखता हो उसका हृदय इस स्थिति को देखकर उस समय तक प्रसन्न हो सके जब तक वह उसकी सफलता के लिए साधन उपलब्ध न कराए तथा उसे हर प्रकार के खतरों से सुरक्षित न देख ले । शत्रु तो उसकी शत्रुता में इतने अग्रसर हैं कि उनको इसमें कोई विशेषता ही दिखाई नहीं देती । सर से पाँव तक दोष ही दोष निकालते हैं । जो मित्र कहलाते हैं वे भी या तो हृदय से उस से घृणा करते हैं या उसकी ओर उनका कोई ध्यान नहीं । इस्लाम उनकी जीभों पर है परन्तु कंठ से नीचे नहीं उतरता । उनका समस्त ध्यान राजनीति की ओर है । यदि कोई देश हाथ से निकल जाए तो वे धरती और आकाश को सर पर उठा लेते हैं, परन्तु यदि सहस्त्रों और लाखों लोग इस्लाम को त्याग कर ईसाई या हिन्दू हो जाएँ तो उन्हें कुछ परवाह नहीं । सांसारिक हितों की प्राप्ति के लिए तो उन में स्वयंसेवकों की कोई कमी नहीं, परन्तु धर्म-प्रचार के लिए उनमें से एक भी बाहर नहीं निकलता । टर्की के बादशाह की ख़िलाफ़त का यदि कोई इन्कारी हो तो उनके शरीर में आग लग जाती है परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रिसालत (रसूल होना) का कोई खण्डन कर दे तो उन का स्वाभिमान जोश में नहीं आता । उनकी यह स्थिति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है । हिन्दुस्तान की स्थिति तो अब यह है कि अन्य धर्मों के लोगों में प्रचार करना तो दूर की बात है, उनकी ओर से इस्लाम पर जो आक्रमण होते हैं यदि उन का भी उत्तर दिया जाए तो स्वयं मुसलमान कहलाने वाले लोगों के कंठ रुंध जाते हैं तथा उसे समय के हित के विरुद्ध बताते हैं । अत: इस्लाम एक व्यर्थ वस्तु की भाँति घरों से निकालकर फेंक दिया गया है और केवल उसका नाम राजनैतिक लाभों की प्राप्ति हेतु रख लिया गया है । इस स्थिति के निवारण करने तथा इस्लाम को कष्ट से बचाने के लिए केवल एक ही साधन है कि मसीह मौऊद(अ) को स्वीकार किया जाए तथा उसी के दामन से स्वयं को आबद्ध किया जाए। उसकी छाया में आने के बिना उन्नति का कोई मार्ग खुला नहीं । अब तलवार का जिहाद इस्लाम के लिए लाभप्रद नहीं हो सकता, जब तक ईमान में सुधार न होंगे तथा लोग

इस्लाम का सही अर्थ न समझेंगे, और फिर अल्लाह तआला की रस्सी को सब के सब दृढ़तापूर्वक न पकड़ लेंगे इस्लाम की उन्नति और उत्थान के सामान उत्पन्न नहीं हो सकते । संसार ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ऐतिराज़ किया था कि आप (स.अ.व.) ने (नाऊज़ुबिल्लाह) तलवार के द्वारा इस्लाम का प्रसार किया था अन्यथा हृदय पर प्रभाव करने वाले सबूत आप के पास नहीं थे तथा स्वयं मुसलमान इस बात का समर्थन करते थे । अब अल्लाह तआला चाहता है कि इस आरोप को अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से दूर करे तथा उस ने इस उद्देश्य से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से एक व्यक्ति को मसीह करके भेजा है ताकि उसके द्वारा सबूतों और तर्कों की तलवार से शत्रु को पराजित करे और इस्लाम को विजयी, ताकि संसार को ज्ञात हो कि जो कार्य एक सेवक कर सकता है स्वामी उसे प्रथम श्रेणी में कर सकता था । अब इस माध्यम के अतिरिक्त इस्लाम की सहायता का अन्य कोई साधन नहीं । अल्लाह तआला चाहता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शत्रुओं को आप (स.अ.व.) की गुलामी में दाख़िल करे और उसका एक ही मार्ग है कि उस सच्चे इस्लाम को जो मसीह मौऊद[अ] लाया है उस सही मार्ग से जो मसीह मौऊद[अ] ने बताया है उस निस्वार्थ ईमान के साथ जो मसीह मौऊद[अ] ने हृदयों में उत्पन्न किया है संसार के समक्ष प्रस्तुत किया जाए तथा भूले-भटकों को सद्मार्ग पर लाया जाए । यदि अल्लाह तआला की इच्छा होती कि किसी अन्य माध्यम से इस्लाम को उन्नति दे तो वह पूर्व के सब मार्गों को बन्द क्यों करता ? अत: मसीह मौऊद[अ] से दूर रहना जैसे इस्लाम की उन्नति और उत्थान में बाधा उत्पन्न करना है तथा शत्रुओं को अवसर देना है कि वे रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर आक्रमण करें तथा आपके सम्मान पर तीर चलाएँ, जिसे कोई स्वाभिमानी मुसलमान सहन नहीं कर सकता ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि वह उम्मत किस प्रकार नष्ट हो सकती है जिसके एक ओर मैं हूँ और दूसरी ओर मसीह मौऊद[अ] **330** जिस से ज्ञात होता है कि उसी व्यक्ति का ईमान सुरक्षित रह सकता है जो इन दोनों दीवारों के अन्दर आ जाए । अत:

मसीह मौऊद(अ) के आ जाने के उपरान्त जो उस पर ईमान नहीं लाता वह अल्लाह तआला की सुरक्षा से बाहर है, और जो मसीह मौऊद(अ) के मार्ग में बाधा बनता है वह वास्तव में इस्लाम का शत्रु है तथा इस्लाम की उन्नति उसे अच्छी नहीं लगती । अन्यथा वह उस दीवार के स्थापित होने में क्यों बाधा डालता, जिसके द्वारा इस्लाम सुरक्षित होता है, वह अल्लाह तआला के प्रकोप की तलवार के नीचे है, उचित होता कि उसकी माँ उसे जन्म न देती और वह मिट्टी रहता, इस अशुभ दिन को न देखता ।

हे बादशाह ! मसीह मौऊद(अ) के आगमन के साथ अल्लाह तआला के बड़े-बड़े वादे संलग्न हैं, उसके द्वारा इस्लाम को एक नया जीवन दिया जाएगा जिस प्रकार एक शुष्क पेड़ तीव्र वर्षा से जो यथा-समय पर पड़ती है हरा हो जाता है उसी प्रकार मसीह मौऊद(अ) के आगमन से इस्लाम हरा-भरा होगा और एक नवीन शक्ति और स्फूर्ति तथा नई रूह उन लोगों को दी जाएगी जो मसीह मौऊद(अ) पर ईमान लाएँगे । अल्लाह तआला ने देर तक धैर्य से काम लिया और चुप रहा, परन्तु अब वह चुप नहीं रहेगा, वह कभी इस बात की अनुमति नहीं देगा कि उस के बन्दे को उसका भागीदार बनाया जाए, उसका बेटा बना कर या आकाश पर जीवित मान कर या मृतकों को जीवित करने वाला और नवीन सृष्टि उत्पन्न करने वाला ठहराकर, वह दया करने वाला है परन्तु स्वाभिमानी भी है, उसने देर तक प्रतीक्षा की कि उस की पवित्र किताब की ओर लोग कब ध्यान देते हैं, परन्तु मुसलमान उस की ओर से विमुख हो गए वे और व्यर्थ बातों की ओर ध्यान देने लगे परन्तु उन्होंने अल्लाह तआला के कलाम को कोई महत्व न दिया तथा यह आयत उन्हें स्मरण न रही कि - يَارَبِّ اِنَّ قَوۡمِی اتَّخَذُوۡا ھٰذَا الۡقُرۡاٰنَ مَهۡجُوۡرًا[331] **(या रब्बे इन्ना क़ौमित्तख़ज़ू हाज़ल क़ुर्आना महजूरा)** अतः अल्लाह तआला ने उन की ओर से मुख फेर लिया और अब वह उस समय तक उनकी ओर मुख नहीं करेगा जब तक वह उसके मसीह मौऊद(अ) के हाथ में अपना हाथ देकर इस बात का इक़रार नहीं करते कि वे भविष्य में इससे लापरवाही नहीं करेंगे तथा अपनी पिछली गलतियों का निवारण करेंगे । लोगों ने संसार से प्रेम किया परन्तु अल्लाह तआला से प्रेम न किया तो अल्लाह

तआला ने संसार भी उन से ले लिया और उन पर अपमान की मार मारी, उन्होंने मुसलमान कहला कर अल्लाह तआला के प्रियतम को तो पृथ्वी में दफ़्न किया परन्तु हज़रत मसीह को जीवित आकाश पर जा बैठाया, तो उसने भी उनको पृथ्वी पर मसल दिया और ईसाइयों को उन से सरों पर लाकर सवार किया । उनकी यह स्थिति परिवर्तित नहीं हो सकती जब तक कि वे अपना आन्तरिक सुधार न करें । प्रत्यक्ष युक्तियाँ आज कुछ काम नहीं दे सकतीं क्योंकि यह समस्त तबाही अल्लाह तआला के प्रकोप के फलस्वरूप है, जब तक मुसलमान अल्लाह तआला से मैत्री नहीं करेंगे उस समय तक दिन-प्रतिदिन अपमानित ही होते चले जाएँगे । अत: मुबारक वह जो अल्लाह तआला से मैत्री करने को दौड़ता है निश्चय ही वह अपमान से सुरक्षित रखा जाएगा और अल्लाह तआला की सहायता उसके साथ होगी और उसका हाथ उसके आगे-आगे होगा ।

हे बादशाह ! मसीह मौऊद[अ] का आगमन कोई साधारण घटना नहीं अपितु बहुत बड़ी घटना है । मसीह मौऊद वह है जिसे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भेजा है [332] और फ़रमाया है कि - चाहे कठिन से कठिन कष्ट उठा कर भी उसके पास जाना पड़े तब भी मुसलमानों को उसके पास जाना चाहिए । [333] उसके सन्दर्भ में संसार के समस्त धर्मों में भविष्यवाणियाँ पाई जाती हैं और कोई नबी नहीं जिसने उसके आने की सूचना न दी हो । अत: जिस मनुष्य की इतने नबियों ने सूचना दी है तथा अपनी उम्मतों को उसके आगमन का प्रतीक्षक बनाया है वह कितना बड़ा मनुष्य होगा और कैसा मुबारक होगा, वह व्यक्ति जिस को उसका युग मिल जाए और वह उसकी बरकतों से भाग प्राप्त कर ले ।

हे बादशाह ! अल्लाह तआला के मामूर और पैग़म्बर दिन-प्रतिदिन नहीं आया करते और विशेष कर इस प्रकार के महान पैग़म्बर कि जिस प्रकार का मसीह मौऊद[अ] है । रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम द्वारा अन्य किसी व्यक्ति के सन्दर्भ में इतने शुभ समाचारों का वर्णन नहीं । वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए ख़लीफ़ाओं की मुहर है और उसके पश्चात् प्रलय के समय की ही प्रतीक्षा की जा सकती है । अत: उसके युग का एक-एक दिन मूल्यवान है इतना

मूल्यवान कि संसार और जो कुछ उस में है उस की तुलना में तुच्छ और अधम है । सौभाग्यशाली है वह मनुष्य जो उसके महत्व को समझता है और उस पर ईमान लाकर अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करना चाहता है क्योंकि वह अपने उत्पन्न होने के उद्देश्य को पा गया तथा बन्दगी का रहस्य उस पर खुल गया ।

हे बादशाह ! जब अल्लाह तआला की ओर से कोई मामूर आता है तो उस की जमाअत हमेशा एक समान स्थिति में नहीं रहती, वह निर्धनों से आरंभ होती है और बादशाहों पर जाकर अन्त होता है तथा एक समय ऐसा आता है कि वह उस क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त कर लेती है, जिसकी ओर वह मामूर जिसने उस जमाअत को स्थापित किया था, भेजा गया था। अत: हमेशा यही स्थिति नहीं रहेगी कि हमारी जमाअत निर्धनों की जमाअत रहे अपितु यह दिन दुगुनी और रात चौगुनी उन्नति करेगी, संसार की सरकारें मिल कर भी उसकी उन्नति और विकास की गति को रोक नहीं सकतीं । एक दिन ऐसा आएगा कि यह समस्त जमाअतों और सम्प्रदायों को खा जाएगी । जैसा कि हज़रत अक़दस(अ) का इल्हाम है कि तेरे मानने वाले प्रलय तक तेरे इन्कार करने वालों पर विजयी रहेंगे [334] और जैसा कि आप(अ) का इल्हाम है कि वह लोगों को जो आपकी बैअत में शामिल न होंगे कम करता चला जाएगा [335] और ऐसा होगा कि संसार के बादशाह भविष्य में इसी जमाअत में से होंगे, यह पराजित नहीं रहेगी अपितु विजयी हो जाएगी तथा परास्त नहीं रहेगी अपितु विजय प्राप्त कर लेगी जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्हाम है कि :- **''बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे''** [336] परन्तु प्रत्येक कार्य का एक समय होता है । एक ही कार्य एक समय में मनुष्य को बड़े सम्मान का उत्तराधिकारी बना देता है और दूसरे समय में उस कार्य को कोई पूछता भी नहीं ! रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर प्रारंभ में ईमान लाने वाले आज तक संसार के सरदार बने हुए हैं, परन्तु जो उस समय ईमान लाए जब इस्लाम को प्रभुत्व प्राप्त हो चुका था, उनमें से अधिकांश के लोग नाम भी नहीं जानते । अत: जो व्यक्ति उस समय कि यह जमाअत निर्बल समझी जाती है ईमान लाता है वह अल्लाह तआला के निकट प्राथमिकता पाने वालों में लिखा जाएगा तथा विशेष इनामों का

उत्तराधिकारी होगा तथा महान बरकतों को देखेगा । यद्यपि बहुत सा समय व्यतीत हो चुका है परन्तु फिर भी सम्मान के द्वार अभी खुले हैं और अल्लाह तआला का सानिध्य प्राप्त करना अभी सरल है । अत: मैं इस बात की ओर आप का ध्यान आकर्षित करता हूँ कि इस समय के महत्व को समझें और -

رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا [337]

(रब्बना इन्नना समिअना मुनादियंय्युनादी लिलईमाने अन आमिनू बिरब्बेकुम फ़आमन्ना) कहते हुए इस आवाज़ पर लब्बैक (उपस्थित हूँ) कहें जिसे स्वंय अल्लाह तआला ने ऊँचा किया है ताकि आप उसके मान्य और प्रिय हो जाएँ ।

मैं आप से सच-सच कहता हूँ कि अहमदियत के बाहर अल्लाह तआला नहीं मिल सकता । प्रत्येक व्यक्ति जो अपने हृदय को टटोलेगा उसे ज्ञात हो जाएगा कि उसके हृदय में अल्लाह तआला और उसकी बातों पर वह विश्वास और दृढ़ता नहीं जो निश्चित और विश्वसनीय बातों पर होना चाहिए और न वह अपने हृदय में वह प्रकाश पाएगा जिसके अभाव में अल्लाह तआला का चेहरा दिखाई नहीं दे सकता । यह विश्वास यह दृढ़ता और यह प्रकाश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के बाहर कहीं नहीं मिल सकता, क्योंकि अल्लाह तआला चाहता है कि सब को एक बिन्दु पर एकत्र करे, परन्तु क्या कोई जो मृत्यु पर दृष्टि रखता है उस जीवन पर प्रसन्न हो सकता है जो अल्लाह तआला से दूरी में व्यतीत हो और जिसमें अल्लाह तआला के प्रकाश से भाग न मिले । अत: इस प्रकाश को प्राप्त कीजिए और उस विश्वास की ओर दौड़िए जो अहमदियत ही में प्राप्त हो सकता है जिस के बिना जीवन बिल्कुल निरर्थक और आनन्द-विहीन है । दूसरों से अग्रसर रहिए ताकि भावी नस्लों में भी आप का नाम आदर और सम्मान के साथ लिया जाए और युग के अन्त तक आप के नाम पर रहमतें भेजने वाले उपस्थित रहें ।

निसन्देह अल्लाह तआला के सिलसिलों में प्रवेश करने वाले लोग बड़े भार के नीचे दब जाते हैं परन्तु प्रत्येक भार कष्टदायक नहीं होता, क्या वह मनुष्य जो अपनी पूर्ण वर्ष की आय सर पर रख कर अपने घर लाता है, भार महसूस करता है या वह मां जो अपना बालक गोद में उठाए

फिरती है भार महसूस करती है ? इसी प्रकार अल्लाह तआला के धर्म की सेवा में भाग लेना तथा उसके लिए प्रयास करना मोमिन के लिए भार नहीं होता, दूसरे उसे भार समझते हैं परन्तु वह उसे बिल्कुल आराम समझता है । अतः इन दायित्वों से न घबराइए जो सत्य को स्वीकार करने से मनुष्य पर आते हैं तथा अल्लाह तआला के उपकारों को स्मरण करते हुए और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की कृपाओं को सोचते हुए इस भार के नीचे अपना कन्धा दे दीजिए जिसका उठाना प्रत्येक मुसलमान का कर्त्तव्य है । आप बादशाह हैं परन्तु अल्लाह तआला के समक्ष आप और अन्य लोग समान हैं । जिस प्रकार उन पर इस्लाम की सेवा अनिवार्य है आप पर भी अनिवार्य है और जिस प्रकार उन के लिए अल्लाह तआला के मामूरों को स्वीकार करना आवश्यक है, आपके लिए भी आवश्यक है । अतः अल्लाह तआला के आदेशों और उनके वितरणों को स्वीकार कीजिए तथा उसके स्थापित किए हुए सिलसिले में प्रवेश करके अल्लाह तआला के इनामों से भाग लीजिए कि उन में सब से छोटा आपके सम्पूर्ण शासन से बड़ा और अधिक मूल्यवान है ।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं - مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَلَيْسَ مِنَّا[338] **(मन फ़ारक़ल जमाअता शिबरन फ़लैसा मिन्ना)** अतएवं अल्लाह तआला की स्थापित की हुई जमाअत से पृथक रहना नितान्त भय का स्थान है और विशेषतया बादशाहों के लिए कि उन पर दोहरे दायित्व लागू होते हैं । एक उनके अपने और एक उनकी प्रजा के । बहुत से मूर्ख धर्म के मामले में भी अपने बादशाह की ओर देखते हैं । अतः अल्लाह तआला के निकट उनकी गल्तियों के उत्तरदायी उनके बादशाह समझे जाते हैं । जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने 'क़ैसर' को पत्र लिखा था तो आप (स.अ.व.) ने उसको इसी बात की ओर ध्यान दिला कर सत्य को शीघ्र स्वीकार करने की प्रेरणा दी थी और लिखा था कि فَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَعَلَيْكَ إِثْمُ الْأَرِيْسِيِّيْنَ[339] **(फ़इन तवल्लैता फ़अलैका इस्मुल अरीसीना)** कि यदि तूने इन्कार कर दिया तो तुझ पर ज़मीदारों का पाप भी होगा । अतः आप सत्य को स्वीकार करके अपनी प्रजा के मार्ग से वह बाधा हटा दें जो अब आपके मार्ग में बाधित है ताकि उसके पाप आप को न दिए जाएँ अपितु उन के शुभ कर्म आप को प्राप्त हों

क्योंकि जिस प्रकार वह बादशाह जो सत्य का इन्कार करके दूसरों के लिए बाधा बनता है उन के पापों में भागीदार ठहराया जाता है, इसी प्रकार वह बादशाह जो सत्य को स्वीकार करके दूसरों के लिए सत्य को स्वीकार करने का मार्ग खोलता है उनके पुण्य में भागीदार किया जाता है ।

यह संसार कुछ दिनों का है और न मालूम कौन कब तक जीवित रहेगा । अन्तत: प्रत्येक को मरना है और अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत होना है । उस समय सही आस्थाओं और शुभ कर्मों के अतिरिक्त और कुछ काम नहीं आएगा । निर्धन भी इस संसार से खाली हाथ जाता है और धनवान भी, न बादशाह अब तक इस संसार से कुछ ले गए न निर्धन। साथ जाने वाला केवल ईमान है या शुभ कर्म । अत: अल्लाह तआला के मामूर पर ईमान लाइए ताकि अल्लाह तआला की ओर से आप को शान्ति प्रदान की जाए और इस्लाम की आवाज़ को स्वीकार कीजिए ताकि सलामती (सुरक्षा) से आप को भाग मिले । मैं आज इस कर्त्तव्य को पूर्ण कर चुका जो मुझ पर था । अल्लाह तआला का पैग़ाम (संदेश) मैंने आपको पहुँचा दिया है । अब स्वीकार करना, न करना आप का काम है । हां मुझे आप से आशा अवश्य है कि आप मेरे पत्र पर पूर्णरूप से विचार करेंगे और जब इसको बिल्कुल सत्य और उचित पाएँगे तो समय के मामूर पर ईमान लाने में संकोच न करें । अल्लाह तआला करे ऐसा ही हो ।

وَاٰخِرُ دَعْوٰنَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ **(व आख़िरो दा'वाना अनिलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन !)**

✻✻✻
✻

दा'वतुल अमीर

1. अलहज्ज : 79
2. यसइयाह बाब : 62 आयत-2, ब्रिट्रिश एण्ड फारन बाइबल सोसायटी, अनारकली लाहौर, प्रकाशन 1906 ई.
3. तिरमिज़ी अब्वाबुल अहकाम बाब मा जाआ फ़ित्तश्दीद अला मंय्यक्ज़ा लहू बिशयइन लयसा लहू अंय्याख़ुज़हू
4. मुस्नद अहमद बिन हम्बल जिल्द-5, पृष्ठ 207
5. अन्नहल : 51
6. फ़ातिर : 25
7. आले इमरान : 82
8. अलयवाक़ीत वलज़वाहिर जिल्द-2, पृष्ठ-22, प्रकाशित मिस्र 1321 हिज्री में 'लमा' के स्थान पर 'मा' का शब्द है ।
9. अलबक़रह : 187
10. मआलिमुत्तंज़ील फ़ित्तफ़्सीर वत्तावील, लेखक अबू मुहम्मद अलहुसैन बिन मसऊद, भाग तृतीय, पृष्ठ 243, प्रकाशित 'दारुल फ़िक्र' में इस रिवायत के शब्द ये हैं :-
    ''लयातियन्ना अला जहन्नमा ज़मानुन लैसा फ़ीहा अहदुन व ज़ालिका बअदा मा यलबसूना अहक़ाबन''
11. अन्निसा : 173
12. अल माइदह : 118
13. आले इमरान : 56
14. दुर्रे समीन फारसी, पृष्ठ-112, प्रथम संस्करण
15. बनी इस्राईल : 94
16. बनी इस्राईल : 94
17. शरह मवाहिबुल्लुदुन्नियह, लेखक - इमाम ज़रक़ानी, जिल्द - 1, पृष्ठ - 35, प्रकाशित - मिस्र 1325 हिज्री ।
18. आले इमरान : 145
19. अज़्ज़ुमुर : 31
20. बुख़ारी किताबुल मनाक़िब, बाब कौलुन्नबी सल्लल्लाहो अलयहे व

सल्लम लौ कुन्तो मुत्तख़िज़न ख़लीलन
21. बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब मरज़ुन्नबिय्ये सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम
22. तबक़ात इब्ने सअद, जिल्द-3, पृष्ठ-38, 39, 1405 हिज्री में बैरूत से प्रकाशित ।
23. मज्म'अ बहारुल अन्वार, जिल्द-1, पृष्ठ 286 मत्बअ अलआली अलमुन्शी नवलकिशोर, 1314 हिज्री ।
24. अज़्ज़ुमुर : 68
25. अर्रअद : 12
26. 'इब्ने माजा', किताबुल फ़ितन, बाब शिद्दतुज़्ज़मान सन् 1988 में बैरूत से प्रकाशित ।
27. 'बुख़ारी' किताबुल अंबिया, बाब नुज़ूल ईसब्ने मरयम
28. अत्तौबह : 26
29. आले इमरान : 155
30. अज़्ज़ुमुर : 7
31. अल आराफ़ : 27
32. अल बक़रह : 58
33. अल हदीद : 26
34. अश्शूरा : 28
35. हा मीम अस्सज्दह : 11
36. अत्तलाक़ : 11, 12
37. अत्तहरीम : 12, 13
38. अवारिफ़ुल मआरिफ़, लेखक शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी, भाग प्रथम, पृष्ठ 45
39. 'बुख़ारी' किताबुल मनाक़िब बाब मनाक़िब उमर बिन अलख़त्ताब
40. अल अहज़ाब : 41
41. बुख़ारी किताबुल मनाक़िब, बाब ख़ातमुन्नुबुव्वत
42. अल कौसर : 4
43. 'मुस्लिम' किताबुल हज्ज, बाब-फ़ज़्लुस्सलाते बिमस्जिदी मक्का बल मदीना

44. 'मुस्लिम' किताबुल अमारह, बाब-वुजूबुल वफाए बि बै'अतिल ख़लीफ़तुल अव्वल फ़ल अव्वल
45. 'मुस्लिम' किताबुलहज्ज, बाब-फ़ज्लुस्सलात बिमस्जिदी मक्का बल मदीना
46. तकमिला मज्मआ बहारुल अन्वार, जिल्द-4, पृष्ठ-85, मतबअ अल आली अलमुन्शी नवल किशोर-1314 हिज्री
47. अलफ़ातिहः : 6, 7
48. अन्निसाअ : 67 से 71
49. अन्निसाअ : 146, 147
50. अल आराफ़ : 34 से 36
51. 'मुस्लिम' किताबुल फ़ितन, बाब ज़िक्रुल दज्जाल व सिफ़तहू व मा माअहू
52. अलफुरकान : 53
53. अलमुनाफ़िक़ून : 2
54. अल बक़रह : 257
55. अल बक़रह : 191
56. अलहज्ज : 40, 41
57. फ़ला तुतिइल काफ़िरीना व जाहिदहुम बिही जिहादन कबीरन, (अलफुरक़ान : 53)
58. ✻- फ़इनिअतज़लूकुम फ़लम युक़ातिलूकुम व अल्क़ौ इलयकुमुस्सलमा फ़मा जअलल्लाहो लकुम अलयहिम सबीलन (अन्निसाअ : 91)
✻- व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीन युक़ातिलूनकुम वला ता'तदू इन्नल्लाहा ला युहिब्बुल मौ'तदीन (अल बक़रह : 191)
✻- ला यन्हाकुमुल्लाहो अनिल्लज़ीना लम युक़ातिलूकुम फ़िद्दीने व लम युख़रिजूकुम मिन दियारेकुम अनतबर्रूहुम व तुक़सितू इलयहिम इन्नल्लाहा युहिब्बुल मुक़सितीन (अलमुमतहिनह : 9)
59. अल बक़रह : 190
60. आले इमरान : 80, 81
61. अद्दुख़ान : 39, 40
62. अल हजर : 22

63. इब्राहीम : 35
64. अल्लैल : 13
65. ताहा : 135
66. अलअन्आम : 131, 132
67. अल हजर : 10
68. अबूदाऊद-किताबुल मलाहिम, बाब मा युज़करो फ़िल मिअते
69. हुजजुलकरामह फ़ी आसारिल क़ियामते, लेखक-नवाब मुहम्मद सिद्दीक़ हसन खान, पृष्ठ 133, 1209 हिज्री भोपाल से प्रकाशित ।
70. अलफ़ुरक़ान : 31
71. 'बुख़ारी' किताबुत्तौहीद, बाब कौलुल्लाहे तआला व नज़अलमवाज़ीनल क़िस्ते लियौमिल क़ियामत
72. 'मजमउल बहार' लेखक-शैख़ मुहम्मद ताहिर, जिल्द-1, पृष्ठ-372, मुस्नद अहमद बिन अंबल, जिल्द-6, पृष्ठ-91
73. 'बुख़ारी' किताबुल अज़ान, बाब वुजूबे सलातिलजमाअते
74. दुर्रे समीन फ़ारसी, पृष्ठ 96, प्रथम संस्करण, ज़ियाउल इस्लाम प्रेस
75. 'इब्ने माजा' किताबुल फ़ितन, बाब शिद्दतुज़्ज़मान-1988 ई. में बैरूत से प्रकाशित ।
76. 'कन्ज़ुलउम्माल' (लेखक-अल्लामा अलाउद्दीन अली अलमुत्तक़ी बिन हुसामुद्दीन अल हिन्दी अलबुरहान अन्नूरी, अलमुतवफ़्फ़ा-975 हिज्री)
77. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 225, रिवायत 48495, 1975 ई. में हलब में प्रकाशित ।
78. 'इब्ने माजा' किताबुल फ़ितन, बाब अश्रातुस्साअत
79. 'मुस्लिम' किताबुल फ़ितन, बाब तक़ूमुस्साअत वर्रूम अक्सरुन्नास
80. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन, बाब मा जाआ इज़ा ज़हबा किस्रा फ़ला किस्रा बा'दहू
81. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिल क़ियामत, पृष्ठ 344, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री
82. 'इब्ने माजा' किताबुलफ़ितन किताब बदउल इस्लामो ग़रीबन
83. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी फ़ितनतिदज्जाल
84. 'मुस्नद अहमद बिन हंबल' जिल्द 2, पृष्ठ 90

85. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अश्नातिस्साअत
86. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिल क़ियामत, पृष्ठ 298, 1209 हिज्री में भोपाल से प्रकाशित ।
87. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुल फ़ितन बाब मा जाआ सतकूनो फ़ित्नतुन कक़ितइल्लैलिल मुज़लिम
88. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिल क़ियामत, पृष्ठ 297, 1209 हिज्री भोपाल से प्रकाशित
89. 'कन्ज़ुलउम्माल', जिल्द 14, पृष्ठ 573 रिवायत 39726 हलब से प्रकाशित, 1209 हिज्री
90. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 296, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
91. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिल क़ियामत, पृष्ठ 296, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
92. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुस्सलात बाब मा जाआ फ़ी वस्फ़िस्सलात ।
93. 'मिश्कात' किताबुलइल्म अलफ़स्लुस्सालिस, पृष्ठ 38, क़दीमी कुतुबख़ाना आराम बाग़ कराची से प्रकाशित 1368 हिज्री ।
94. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 297, भोपाल से प्रकाशित, 1209 हिज्री ।
95. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, रिवायत 39726 हलब से प्रकाशित, 1975 ई. ।
96. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 297, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
97. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 297 भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
98. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 295, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
99. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अश्रातिस्साअत ।
100. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 296, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
101. 'मुस्लिम' किताबुलइलम बाब रफ़उलइल्म व क़ब्ज़तोहू व ज़हूरुलजहल

वलफ़ितनते फ़ी आख़िरिज़्ज़मान ।

102. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिल क़ियामत पृष्ठ 296, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री, 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 224, रिवायत 38465, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
103. 'मुस्लिम' किताबुलइल्म बाब रफ़उलइल्म व क़ब्ज़तोहू व ज़हूरुलज़हल वलफ़ितनते फ़ी आख़िरिज़्ज़मान ।
104. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामह पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
105. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 574, रिवायत 39639 हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
106. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिल क़ियामत, पृष्ठ 299, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
107. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 351, भोपाल से प्रकाशित, 1209 हिज्री, 'बहारुलअन्वार' लेखक शैख मुहम्मद बाक़िर अलमज्लिस जिल्द 52, पृष्ठ 304, बैरूत (लबनान) से प्रकाशित 1983 ई. ।
108. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब माजाआ फ़ी अश्रातिस्साअत ।
109. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 299, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
110. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुल फ़ितन, बाब मा जाआ फ़ी अश्रातिस्साअत ।
111. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत पृष्ठ 298, भोपल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
112. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अश्रातिस्साअत ।
113. 'युरफ़उलइल्मो व युकसरुलजहलो', बुख़ारी किताबुन्निकाह बाब यक़िल्लुर्रिजाल व यकसरुन्निसाअ ।
114. 'तिरमिज़ी, अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अश्रातिस्साअत ।
115. 'मुस्नद अहमद बिन हंबल' जिल्द 3, पृष्ठ 439 ।

116-117. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 297, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।

118. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन, बाब मा जाआ फ़ी रफ़्इल अमानत ।

119. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसरिलक़ियामत, पृष्ठ 295, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
120. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 297, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
121. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 295, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
122. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 564, रिवायत 39609, हलब से प्रकाशित, 1975 ई. ।
123. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 297, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
124. 'मुस्नद अहमद बिन हंबल' जिल्द 3, पृष्ठ 439 ।
125. 'मुस्लिम' किताबुल्लिबास, बाब अन्निसाउलकासियात, अलमारियात, अलमाइलात अलमुमीलात ।
126. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 297, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री, 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 573, रिवायत 39639, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
127. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 573, रिवायत 39639, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
128. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
129. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री, 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 573, रिवायत 39639, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
130. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अन्नद्दज्जाला ला यदख़ुलुलमदीनह ।
131. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब फ़िलख़सफ़ ।
132. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 296, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
133. 'मुस्लिम' किताबुलफ़ितन बाब जिकरुद्दज्जाल ।
134. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अश्रातिस्साअत ।

135. 'मुस्लिम' किताबुलईमान, बाब नूज़ूल ईसबने मरयम हाकिमन बिशरीअते नबिय्यिना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ।
136. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 613, रिवायत 39709, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
137. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
138. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 299, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री, 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 573, रिवायत 39639, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
139. अल बक़रह : 280 ।
140. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन' बाब मा जाआ फ़ी फ़ितनतिद्दज्जाल ।
141. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
142. 'मुस्लिम' किताबुलफितन बाब ला तकूमुस्साअतो हत्ता युहसिरलफ़रात अन जबलिन मिन ज़हबिन ।
143. 'मुस्लिम' किताबुलफ़ितन बाब ज़िकरुद्दज्जाल व सिफतोहू वमा माअहू ।
144. 'हिज़्क़ील' बाब 38, आयत 2, बाइबल सोसायटी, अनारकली, लाहौर, प्रकाशन 1944 ई. (भावार्थ) ।
145. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
146. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री, 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 574, रिवायत 39639, हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
147. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
148. 'हुजजुलकरामह' फ़ी आसारिलक़ियामत, पृष्ठ 298, भोपाल से प्रकाशित 1209 हिज्री ।
149. 'सुनन दारे क़ुतनी' बाब सिफ़तो सलातिलख़ुसूफ़े वलकुसूफ़े व हैअतेहिमा, जिल्द 2, पृष्ठ 65, 1966 ई. में मिस्र से प्रकाशित ।

150. 'मती' बाब 24, आयत 29, बाइबल सोसायटी अनारकली लाहौर प्रकाशन 1994 ई. ।
151. अलक़ियामह : 7 से 10 ।
152. 'अक़रबुलमवारिद' जिल्द 2, पृष्ठ 1037, अन्तर्गत शब्द 'क़मर' 1403 हिज्री में ईरान से प्रकाशित ।
153. यूसुफ : 5 ।
154. अस्साफ़्फ़ात : 103 ।
155. अलकहफ़ : 5 ।
156. 'ताजुलउरूस' जिल्द 7, पृष्ठ 318, अन्तर्गत शब्द 'दजल' 1403 हिज्री में ईरान से प्रकाशित ।
157. 'अक़रबुलमवारिद' जिल्द 1, पृष्ठ 320, अन्तर्गत शब्द 'दजल' ।
158. 'लिसानुलअरब' जिल्द 4, पृष्ठ 294, अन्तर्गत शब्द 'दजल' दार इहयाउत्तुरासुलअरबी' से प्रकाशित ।
159. 'मिश्कात' बाब क़िस्सतुब्ने सय्याद, अल फस्लुल अव्वल, पृष्ठ 478, क़दीमी कुतुबखाना, आराम बाग़ कराची 1368 हिज्री, 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी ज़िकरिब्ने सय्याद ।
160. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन, बाब मा जाआ फ़ी अन्नद्दज्जाला ला यदख़ुलुल मदीनह ।
161. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी अन्नद्दज्जाल ला यद्ख़ुलुलमदीनह ।
162. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़ी ज़िकरिब्ने सय्याद ।
163. यूनुस : 16, 17 ।
164. अलबिदायतो बन्निहायतो लिअब्वाबुलफ़िदाए अलहाफ़िज़ इब्ने कसीर भाग तृतीय, पृष्ठ 27, 1966 में बैरूत में प्रकाशित ।
165. 'बुख़ारी' बाब कैफ़ा काना बदउलवह्यी इला रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलयहे व सल्लम ।
166. 'इशाअतुस्सुन्नह', जिल्द 6, नं. 7 पृष्ठ 176 ।
167. 'इशाअतुस्सुन्नह', जिल्द 7, पृष्ठ 169, 170 ।
168. 'नुज़ूलुल मसीह' पृष्ठ 214, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 18, पृष्ठ 590 ।
169. अत्तौबह : 33 ।

170. 'तफ़्सीर जामिउलबयान' लेखक अबी जाफ़र मुहम्मद बिन जुरैर अत्तिब्री, निधन 310 हिज्री, जिल्द 28, पृष्ठ 58, मिस्र में प्रकाशित 1329 हिज्री ।
171. 'बराहीन अहमदिया' चारोंभाग, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 1, पृष्ठ 27, 28 ।
172. 'तास्सुराते क़ादियान' लेखक मलिक फ़ज़ल हुसैन, पृष्ठ 67, मुस्लिम प्रिंटिंग प्रेस, लाहौर दिसम्बर 1938 ई. में
यह शेर (छंद) इस प्रकार है :-
सब मरीज़ों की है तुम्हीं पै निगाह
तुम मसीहा बनो ख़ुदा के लिए
173. 'यूहन्ना' बाब 19, आयत 31 से 34 ब्रिटिश एण्ड फ़ारन बाइबल सोसायटी, लाहौर, 1906 ई. में प्रकाशित (भावार्थ) ।
174. मती, बाब 12, आयत 39, 40 ब्रिटिश एण्ड फ़ारन बाइबल सोसायटी, लाहौर, 1906 ई. में प्रकाशित (भावार्थ) ।
175. यूहन्ना, बाब 10, आयत 16, ब्रिटिश एण्ड फ़ारन बाइबल सोसायटी, लाहौर, 1906 ई. में प्रकाशित ।
177. अलमौमिनून : 51 ।
178. अलजिन्न : 27, 28 ।
179. जनम साखी भाई बाला हिन्दी, प्रकाशक पंजाब यूनीवर्सिटी, चण्डीगढ़, पृष्ठ 211, 212 ।
180. आले इमरान : 20 ।
181. फ़ातिर : 25 ।
182. अलहजर : 3 ।
183. 'मिश्कात' किताबुलइल्म, अलफ़स्लुस्सालिस, पृष्ठ 38, क़दीमी कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची 1368 हिज्री, 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 6, पृष्ठ 43, रिवायत 767 हैदराबाद से प्रकाशित 1313 हिज्री में शब्द इस प्रकार उपलब्ध हैं - ''ला यब्क़ा मिनल इस्लामे इल्लस्महू'' ।
184. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलईमान, बाब मा जाआ फ़ी मंय्यमूतो व हुवा यश्हदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाह ।
185. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 10, पृष्ठ 168, रिवायत 28869, हलब में

प्रकाशित 1971 ई. ।

186. 'बुख़ारी' किताबुल जनायज़, बाब 'मा जाआ फ़ी क़ब्रिन्नबिय्ये व अबी बकरिन व उमर रज़ियल्लाहो अन्हुम ।
187. अन्नहल : 22 ।
188. अलअंबिया : 96 ।
189. अलमौमिनून : 101
190. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुत्तफ़्सीर, तफ़्सीर सूरह आले इमरान अन्तर्गत आयत - वमा काना लिनबिय्यिन अंय्यगुल्ला... अन्त तक ।
191. आले इमरान : 50 ।
192. अल अन्फ़ाल : 25 ।
193. अन्नहल : 21 ।
194. अर्रअद : 17 ।
195. अलहज्ज : 74 ।
196. आले इमरान : 50 ।
197. अल बक़रह : 31 ।
198. अत्तहरीम : 7 ।
199. अल बक़रह : 35 ।
200. अल हज्ज : 53 ।
201. अन्नज्म : 20, 21 ।
202. 'बुख़ारी' किताबुत्तफ़्सीर, तफ़्सीर सूरह 'अन्नज्म' बाब क़ौलोहू फ़स्जुल्लाह वा'बुदू (हाशिया) ।
203. अल हज्ज : 53 ।
204. अश्शूरा : 12 ।
205. अलवाक़िअह : 80 ।
206. 'बराहीन अहमदिया' चारों भाग, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 1, पृष्ठ 20 से 23 ।
207. अज़्ज़ारियात : 57 ।
208. अल आराफ़ : 157 ।
209. हूद : 109 ।
210. अत्तीन : 7 ।

211. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 527, रिवायत 39506 हलब से प्रकाशित 1975 ई. ।
212. अल बक़रह : 280 ।
213. अल फ़ातिहः : 5 ।
214. अल फ़ातिहः : 6 ।
215. ताहा : 115 ।
216. अल मुजादिलह : 22 ।
217. अलमौमिन : 52 ।
218. अलहश्र : 7 ।
219. अलहाक़्क़ह : 45 से 47 ।
320. अलअन्आम : 22 ।
321. अलअन्आम : 11, 12 ।
322. तज़किरह, पृष्ठ 34, चतुर्थ संस्करण ।
223. हक़ीक़ुतलवह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 388, 392 (भावार्थ)
224. आले इमरान : 62 ।
225. व इज़ क़ुल्ना लिलमलाइकतिस्जुदू लेआदम (अल बक़रह : 35) ।
226. लिसानुल अरब, जिल्द 4, पृष्ठ 189, 190, अन्तर्गत शब्द 'सजदा' प्रथम संस्करण, मिस्र से प्रकाशित, 1300 हिज्री, लिसानुलअरब, जिल्द 6, पृष्ठ 76, अन्तर्गत शब्द 'सजदा' बैरूत (लबनान) से प्रकाशित ।
227. तज़किरह, पृष्ठ 527, चतुर्थ संस्करण ।
228. तज़किरह, पृष्ठ 430, चतुर्थ संस्करण ।
229. तज़किरह, पृष्ठ 397, चतुर्थ संस्करण ।
230. 'किश्ती नूह', पृष्ठ 4, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19, पृष्ठ 2, तज़किरह, पृष्ठ 429, चतुर्थ संस्करण ।
231. अल बक़रह : 31 ।
232. अलअंबिया : 75 ।
233. अन्नम्ल : 16 ।
234. यूसुफ़ : 23 ।

235. अलक़सस : 15 ।
236. अन्निसाअ : 114 ।
237. ताहा : 115 ।
238. अल बक़रह : 24 ।
239. हूद : 2 ।
240. अलहुदा वत्तब्सिरतो लिमंय्यरा, किताब 1320 हिज्री में पूर्ण हुई और 12, जून 1902 को प्रकाशित हुई ।
241. 'अलहकम' 1, मई 1900 ई. पृष्ठ 5 ।
242. अल बक़रह : 48 ।
243. आले इमरान : 111 ।
244. इब्राहीम : 5 ।
245. तज़किरह पृष्ठ 45, चतुर्थ संस्करण ।
246. अल मौ'जमुलकबीर लिलहाफ़िज़ अबीक़ासिम सुलैमान इब्नेअहमद तिबरानी, जिल्द 18, पृष्ठ 353, हदीस नं. 900 मक्तबह इब्ने तैमियह क़ाहिरा में 'रजुल' के स्थान पर 'रिजाल' का शब्द है ।
247. अत्तक्वीर : 1 से 14 ।
248. अत्तक्वीर : 18, 19 ।
249. अल बक़रह : 256 ।
250. अलवाक़ियह : 80 ।
251. बराहीन अहमदिया चारों भाग, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 304, 305 ।
252. अल जिन्न : 27, 28 ।
253. 'इस्तिस्ना' बाब 18, आयत 22, बाइबल सोसाइटी अनारकली, लाहौर 1994 में प्रकाशित ।
254. तज़किरह, पृष्ठ 88, चतुर्थ संस्करण ।
255. अमीर हबीबुल्लाह ख़ान शासक अफ़ग़ानिस्तान अपने पिता अब्दुर्रहमान की मृत्योपरान्त 1, अक्टूबर 1901 ई. में गद्दी पर बैठा उसके समय में डेविरन्ड लाइन निर्धारित की गई तथा ब्रिटेन ने अफ़ग़ानिस्तान को स्वतंत्रता देने का वादा किया, 20, फ़रवरी 1919 को उसने घाटी अलंगार में क़िला अस्सिराज (नौ'मान) के निकट

गोश में पड़ाव डाल रखा था कि उसका वध कर दिया गया (उर्दू जामिअ इन्साइक्लोपीडिया जिल्द 1, पृष्ठ 537 लाहौर से प्रकाशित, 1987 ई. 'उर्दू दाइरए मआरिफ़ इस्लामिया' जिल्द 7, पृष्ठ 886, 887, दानिशगाह पंजाब, लाहौर से प्रकाशित) ।

256. Frank, A. Martin
257. "Under The Absolute Amir" Published in 1907.
258. अन्नहल : 70 ।
259. अन्नम्ल : 24 ।
260. देखिए हाशिया नं. 256, 257 ।
261. अल बक़रह : 50 ।
262. 'ख़ुरूज' बाब 1, आयत 22, बाइबल सोसायटी, लाहौर, 1994 में प्रकाशित ।
263. 'ताजुलउरूस' जिल्द 2, पृष्ठ 138, अन्तर्गत शब्द 'ज़िब्ह' प्रथम संस्करण 1306 हिज्री में मिस्र से प्रकाशित ।
264. तज़किरह, पृष्ठ 519, चतुर्थ संस्करण ।
265. जंगे मुक़द्दस, पृष्ठ 210, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 6, पृष्ठ 292 ।
266. रेव्यू आफ़ रेलीजन्स, सितम्बर 1902, पृष्ठ 342 से 345 (भावार्थ) ।
267. तज़किरह, पृष्ठ 229, चतुर्थ संस्करण ।
268. आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 5, पृष्ठ 649 से 651 (भावार्थ) ।
269. 'इस्तिफ़्ता' पृष्ठ 11, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12, पृष्ठ 119 ।
270. बरकातुद्दुआ, पृष्ठ 33, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 6 ।
271. आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 5, पृष्ठ 639 ।
272. हक़ीक़तुलवह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 22, पृष्ठ 248 ।
273. अलहक़ मुबाहिसा लुधियाना, पृष्ठ 122, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 4,पृष्ठ 124 ।
774. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 343, रिवायत 38878 हलब से प्रकाशित, 1975 ई. ।
275. 'नूरुलहक़' भाग द्वितीय, पृष्ठ 46, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 8, पृष्ठ

232 ।

276. 'ख़ुत्बा इल्हामिया' पृष्ठ 303, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 16, पृष्ठ 303 ।
277. अय्यामुस्सुलह, पृष्ठ 120, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 14, पृष्ठ 346 ।
278.
279. तज़किरह, पृष्ठ 314, 315, चतुर्थ संस्करण ।
280. तज़किरह, पृष्ठ 313, 314, चतुर्थ संस्करण ।
281. अय्यामुस्सुलह, पृष्ठ 137, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 14, पृष्ठ 363 ।
282. तज़किरह, पृष्ठ 515, चतुर्थ संस्करण ।
283. तज़किरह, पृष्ठ 534, चतुर्थ संस्करण ।
284. तज़किरह, पृष्ठ 537, चतुर्थ संस्करण ।
285. तज़किरह, पृष्ठ 543, चतुर्थ संस्करण ।
286. तज़किरह, पृष्ठ 543, चतुर्थ संस्करण ।
287. तज़किरह, पृष्ठ 559, चतुर्थ संस्करण ।
288. तज़किरह, पृष्ठ 563, चतुर्थ संस्करण ।
289. तज़किरह, पृष्ठ 563, चतुर्थ संस्करण ।
290. तज़किरह, पृष्ठ 566, चतुर्थ संस्करण ।
291. तज़किरह, पृष्ठ 609, चतुर्थ संस्करण ।
292. तज़किरह, पृष्ठ 608, 609, चतुर्थ संस्करण ।
293. तज़किरह, पृष्ठ 625, चतुर्थ संस्करण ।
294. तज़किरह, पृष्ठ 615, चतुर्थ संस्करण ।
295. तज़किरह, पृष्ठ 550, चतुर्थ संस्करण ।
296. अल अहज़ाब : 11, 12 ।
297. तज़किरह, पृष्ठ 540, चतुर्थ संस्करण ।
298. अन्नाज़िआत : 25 ।
299. Balfour Arthur James (1848-1930 ई.) प्रसिद्ध ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अनेकों पदों पर पदासीन रहा, ब्रिटिश कन्ज़रवेटिव पार्टी में 50 वर्ष तक अपनी पोजीशन स्थापित रखी, 1902 से 1905 ई. प्रधान मंत्री रहा, उसने विदेश मंत्री की हैसियत से 1917 ई. में बिलफोर घोषणा द्वारा फ़लस्तीन को यहूदियों का क़ौमी देश बनाने की मांग

का समर्थन किया । (दी न्यू इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, जिल्द 1, पृष्ठ 757, 758)

300. बनी इस्राईल : 105 ।

301. तफ़्सीर 'फ़तहुलबयान' लेखक अबू तय्यिब सिद्दीक बिन हसन, तफ़्सीर सूरह 'बनी इस्राईल' आयत 'फ़इज़ा जाआ वा'दुल आख़िरते' के अन्तर्गत, जिल्द 5, पृष्ठ 371, 1301 हिज्री में मिस्र से प्रकाशित ।

302. बनी इस्राईल : 8 ।

303. निकोलस (ज़ारे रूस) Nicholas of Russia (1868-1918) रूसी बादशाहों में से अन्तिम बादशाह था । 26 मई 1895 ई. में मास्को में राज्याभिषेक हुआ । निरंकुश और अन्यायी था । रूसी क्रान्ति ने मार्च 1917 ई. में उसे सत्ता त्यागने पर विवश कर दिया । उसे प्रथम ज़ार के महल स्कव सैलो और फिर टोयोलिस्क में बन्दी रखा गया । 16, जुलाई 1918 ई. बालशविकों ने एकाटेरिनवर्ग के एक तहख़ाने में उसके खानदान सहित उसे क़त्ल कर डाला । (उर्दू जामिअ इन्साइक्लोपीडिया, जिल्द 2, पृष्ठ 1741, प्रकाशित लाहौर, 1988 ई. इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, संस्करण 11, जिल्द 19, पृष्ठ 655)

304. केरन्सकी अलेक्ज़ेन्डर फ्यूड्रोविच Kerensky Alexander Feodorovich (1881-1970) रूसी राजनीतिज्ञ जो रूसी क्रान्ति सोशलिस्ट पार्टी से संबंध रखता था । 1912 ई. में वह Fourth Duma के लिए निर्वाचित हुआ । तत्पश्चात् कानून मंत्री तथा War Minister बनाया गया । 1917 ई. में अस्थायी तौर पर प्रधानमंत्री राजकुमार ''लूव'' का उत्तराधिकारी बना, उसकी अनीति से 'लेनिन' नवम्बर में उसकी सत्ता उलटने के योग्य हो गया । रूस की क्रान्ति के पश्चात् अमरीका में शरण ली । (इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका, संस्करण 12, जिल्द 31, पृष्ठ 680, प्रकाशित लन्दन 1922 ई. उर्दू जामिअ इन्साइक्लोपीडिया जिल्द 2, पृष्ठ 1201, 1988 में लाहौर से प्रकाशित) ।

305. तज़किरह, पृष्ठ 540, चतुर्थ संस्करण ।

306. तज़किरह, पृष्ठ 782, चतुर्थ संस्करण ।
307. तज़किरह, पृष्ठ 24, चतुर्थ संस्करण ।
308. तज़किरह, पृष्ठ 25, चतुर्थ संस्करण ।
309. हूद : 28 ।
310. तज़किरह, पृष्ठ 312, चतुर्थ संस्करण ।
311. तज़किरह, पृष्ठ 141, चतुर्थ संस्करण ।
312. तज़किरह, पृष्ठ 297, चतुर्थ संस्करण ।
313. तज़किरह, पृष्ठ 476, चतुर्थ संस्करण ।
314. तज़किरह, पृष्ठ 103, चतुर्थ संस्करण ।
315. तज़किरह, पृष्ठ 103, चतुर्थ संस्करण ।
316. तज़किरह, पृष्ठ 595, चतुर्थ संस्करण ।
317. तज़किरह, पृष्ठ 466, चतुर्थ संस्करण ।
318. अल अन्कबूत : 70 ।
319. आले इमरान : 32 ।
320. अत्तौबः : 24 ।
321. आईना कमालात इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 658 ।
322. आईना कमालाते इस्लाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 5, पृष्ठ 649 ।
323. 'तिरमिज़ी' अब्वाबुलफ़ितन बाब मा जाआ फ़िद्दज्जाल 324 यूनुस : 84 ।
324. अल बक़रह : 56 ।
326. अल अहज़ाब : 24 ।
327. अलमौमिनून : 15 ।
328. तज़किरह पृष्ठ 45, चतुर्थ संस्करण ।
329. अल वाक़िअह : 80 ।
330. 'कन्ज़ुलउम्माल' जिल्द 14, पृष्ठ 347, रिवायत 38858 हलब में प्रकाशित 1975 ई., व इम्मिन अहलिल किताब ।
331. अल फ़ुरक़ान : 31 ।
332. 'दुर्रे मन्सूर' लेखक अल्लामा जलालुद्दीन अस्सुयूती, जिल्द 2, पृष्ठ 242, अन्तर्गत आयत ''व इम्मिन अहलिल किताब'' ।
333. 'इब्ने माजा' किताबुलफ़ितन, बाब ख़ुरूजुलमहदी दार इहयाउल

किताबिलअरबिय्यह (1953 ई.) द्वारा प्रकाशित ।

334. तज़किरह, पृष्ठ 279, चतुर्थ संस्करण ।

335. तज़किरह, पृष्ठ 275, चतुर्थ संस्करण ।

336. तज़किरह, पृष्ठ 10, चतुर्थ संस्करण ।

337. आले इमरान : 194 ।

338. मजमउज़्ज़वाइद व मंबउल्फ़वाइद लेखक हाफ़िज़ नूरूद्दीन अली बिन अबी बकरिन, जिल्द 5, पृष्ठ 224, 1353 हिज्री में क़ाहिरा से प्रकाशित । इस हदीस के शब्द इस प्रकार हैं - ''मन फ़ारक़ल जमाअता शिब्रन फ़क़द फ़ारक़ल इस्लाम'' ।

339. 'मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 1, पृष्ठ 263 ।

Dawat-ul-Ameer (In Hindi)
By

Hadhrat Mirza Bashiruddin Mahmood Ahmad (ra)
Khalifat-ul-Masih II